उर्दू हिन्दी कोष

AN URDU HINDI DICTIONARY

मुद्रक—[illegible],
श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस सिटी

उर्दू हिन्दी कोष

संपादक

प्रो. टि. [illegible]नाथन, एम ए, बि एस सि,
अध्यापक, मैसूर विश्वविद्यालय

मेसर्स. वि. शेषाद्रि एंड कम्पनी,
बलेपेट, बैंगलोर सिटी

श्री [illegible] ज्ञान मन्दिर, जयपुर

प्रथम बार] (अप्रैल, १९३६) [मूल्य [illegible]

हिन्दी की नयी पुस्तक !

हिन्दी शिक्षण विधान

लेखक—श्री एम. वि. जम्बुनाथन, एम. ए., बी. एस-सी.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचारक सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन के अवसर पर अध्यापक जम्बुनाथन जी के लिखित "दक्षिण भारतियों को हिन्दी सिखाने के बेहतरीन तरीक़े" शीर्षक निबंध का परिवर्द्धित और परिष्कृत रूप। उक्त सम्मेलन ने इस निबंध की मुक्तकंठ से प्रशंसा की और पुरस्कार में लेखक को एक स्वर्ण पदक भी प्रदान किया। इस छोटी सी पुस्तक में भाषा सिखाने के आधुनिक सिद्धांत और मूलतत्व अच्छी तरह समझाये गये हैं और यह भी साफ़ साफ़ बताया गया है कि हिन्दी के सिखाने में इनका कैसे प्रयोग होना चाहिये। 'कर्णविधान' या Direct Method के अनुसार अहिन्दी भाषा-भाषियों को हिन्दी सिखाने के अच्छे से अच्छे तरीक़े बड़ी खोज से और अनुभव के आधार पर, उदाहरणों सहित, निर्दिशित किये गये हैं। हिन्दी भाषा शिक्षण में नये साहित्य का निर्माण करनेवाली यह पुस्तक हिन्दी भाषा के अध्यापकों तथा प्रचारकों को अत्यंत आवश्यक और उपयोगी है।

शीघ्र प्रकाशित होगी।

एम. वि. शेषाद्रि एंड कम्पनी,
बलेपैठ, बंगलोर सिटी।

प्रस्तावना

इस छोटे से कोष में अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाओं के वे शब्द जमा किये गये हैं जो हिन्दी में आकर उसके अंग हो गये हैं, या अब भी हो रहे हैं। यह बड़े तअज्जुब की बात है कि हिन्दी में आज तक कोई ऐसा कोष नहीं निकला है जिसमें इस श्रेणी के सभी शब्द दाखिल हों। राष्ट्रभाषा के नाते जो लोग हिन्दी सीखने लगे हैं उनको इस कमी के कारण बहुत तकलीफ उठानी पड़ती है। ऐसे लोगों की सुविधा के ख्याल से यह कोष रचा गया है, हालाँकि हिन्दी भाषा-भाषियों को भी यह कोष उपयोगी हो सकता है।

इस कोष के सब शब्दों के प्रामाणिक उच्चारण और अर्थ देने में मैंने कोई बात उठा नहीं रखी है। इस काम में मुझे मेरे मित्र मौलवी महम्मद खाँ का पूरा पूरा सहयोग मिला है। आपके द्वारा कुछ नये शब्द प्राप्त हुए जो 'परिशिष्ट' में जोड़ दिये गये हैं। इन सब सहायताओं के लिये मैं आपका बड़ा आभारी हूँ।

एम० वि० जम्बुनाथन

हिन्दी मुहावरा कोष

संपादक—एम० वि० जम्बुनाथन

स्कूल व कालिजों के विद्यार्थियों को, खासकर दक्षिण भारत के हिन्दी सीखनेवालों के लिये, अत्यंत उपयोगी पुस्तक। इसमें उर्दू-हिन्दी के प्रचलित पाँच हज़ार से अधिक मुहावरे और उनके विविध अर्थ दिये गये हैं। छपाई-सफाई सुंदर। पृष्ठ-संख्या लगभग २००। दाम सिर्फ १॥)

दक्षिण भारतीय साहित्य

दक्षिण भारत के उत्तमोत्तम ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद हो रहा है। शीघ्र प्रकाशन होगा।

एम० वि० शेषाद्रि एंड कम्पनी,
बलेपेट, बेंगलौर सिटी।

अवतरणिका

उर्दू जबान

हिन्दी और उर्दू एक ही भाषा हैं। उर्दू फारसी लिपि में लिखी जाती है और हिन्दी नागरी लिपि में। हिन्दुस्तान के मुसलमान लोग जो फारसी लिपि का इस्तेमाल करते हैं इस मुश्तरक जबान को उर्दू कहना ज्यादा पसद करते हैं, और इस भाषा में अरबी फारसी के लफ्ज ठूस ठूस कर भर देते हैं। अगर दोनों की लिपि एक ही रहती तो हिन्दी उर्दू में उतना फर्क नहीं रह जाता जितना आज जान पडता है। उर्दू का जिक्र करते समय यह बात याद रखने लायक है कि उर्दू जबान की पैदाइश हिन्दुस्तान में ही हुई थी। उर्दू भारत की भाषा है। लेकिन उर्दू (याने फारसी) लिपि हिन्दुस्तान से बाहर की चीज है। वह विदेशी लिपि है। और इस बात पर जोर देने की आवश्यकता भी मालूम होती है कि आजकल उर्दू हिन्दी में जो अतर है वह लिपि की भिन्नता के ही कारण हुआ है, और लिपि के एक हो जाने से वह अतर बिलकुल मिट जा सकता है। लिपि की भिन्नता के होते हुए भी, कुछ विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों और समास पदों को छोड दें, तो हिन्दी और उर्दू में कोई अतर नहीं पाया जाता। दोनों की वाक्य-रचना, व्याकरण या क़ायदा, मुहावरे आदि एक ही हैं।

अरबी, फ़ारसी के कुछ क्लिष्ट शब्द ज्यादा मिलाने से ही उर्दू भाषा हिन्दी से जुदा होकर एक नयी भाषा नहीं बन सकती।

अरबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्दों को आवश्यकता के अनुसार अपना लेना हिन्दी भाषा के विकास और व्यापकता की दृष्टि से लाभदायक है ही। आजकल की हिन्दी में ऐसे सैकड़ों विदेशी शब्द घुल-मिल गये हैं जिनके लिये पर्यायवाची शब्द मिलना मुश्किल है; अगर मिल भी जायँ तो कोई उन्हें पहचान न सकेगा। जैसे—कुर्ता, जेब, बाक़ी, बीमा, अचार, गुलाब, तारीख, जीन, जलेबी, हलवा आदि। लेकिन कोई कोई उर्दू लेखक अरबी-फारसी लफ्ज़ों के इस्तेमाल में सीमा से बाहर चले जाते हैं और इस वजह से उनकी रचनाओं में अरबी-फ़ारसी के बड़े-बड़े शब्द, समास-पद और यौगिक शब्द भरे हुए होते हैं जिन्हें समझना हिन्दुस्तानियों के लिये मुश्किल हो जाता है। जब बाहर के शब्द हिन्दी या उर्दू में लिये जाते हैं तब उनको पहले-पहल हिन्दुस्तान की गरमी में पकने देना चाहिये. हिन्दुस्तानी साँचे में ढालना चाहिये और हिन्दुस्तानी जबान के क़ायदे से कसना चाहिये। इस स्वाभाविक नियम के उल्लंघन से भारी गड़बड़ी हो जाती है। उदाहरण के लिये, 'क़िस्म' का बहुवचन रूप अरबी में 'अक़साम' है और उर्दू में भी यही शब्द इस्तेमाल होता है। इसी तरह 'हाकिम' का बहुवचन 'हुक्काम', 'हर्फ' का 'हुरूफ़' आदि इस्तेमाल होते हैं। इससे अरबी शब्दों के साथ-साथ अरबी व्याकरण के गोरखधंधे को भी उर्दू भाषा में लेना पड़ता है। बाहर के कौन-कौन शब्द हिन्दी या उर्दू में लिये जायँ और उनका रूपांतर कैसे हो, इस पर विवेचना करना और

फैसला सुनाना कोष का काम नहीं है। लेकिन इस तरह की बेकायदगी से जो दिक्कत पेश आती है उसका जिक्र इस जगह करना पड़ा है।

इस कोष में ऐसे सभी विदेशी शब्द और उनके अर्थ दिये गये हैं जो आजकल के उर्दू या हिन्दी के ग्रथों में पाये जायँ, चाहे वे उर्दू लिपि में लिखे हुए हों या नागरी लिपि में, चाहे उनका इस्तेमाल समालोचक की दृष्टि से मुनासिब समझा जाय या नामुनासिब। साथ-साथ यह भी बताया गया है कि हर एक शब्द किस भाषा से लिया गया है। ये लफ्ज अरबी, फारसी, इबरानी, यूनानी, तुर्की, पुर्त्तगाली (पोर्चुगीज) आदि भाषाओं में से उर्दू में आये हैं। कुछ अंग्रेजी शब्द और पंजाबी, तमिल आदि भारत की भाषाओं के एक आध शब्द भी उर्दू में आ गये हैं और वे शब्द इस कोष में शामिल हैं। कभी-कभी इन परायी भाषाओं के शब्दों मे हिन्दी प्रत्ययों के लगने से, अथवा हिन्दी शब्दों में इन भाषाओं के प्रत्यय लगने से कुछ नये शब्द बन गये हैं। जैसे—अजायबघर, घड़ीसाज, दफनाना, आजमाना, चहबच्चा, नवरदार। ऐसे वर्णसकर शब्द किसी अन्य भाषा के शब्द नहीं माने जा सकते, वे सब उर्दू ही के शब्द हैं। इस कोष मे उन्हें स्थान अवश्य दिया गया है।

जहाँ तक हो सका है हर एक शब्द का अर्थ इस ढग पर लिखा गया है कि उसकी व्युत्पत्ति की भी झलक मिले। अर्थों के साफ साफ बताने में कुछ ऐसे अंग्रेजी शब्द तथा कुछ दक्खिनी शब्द इस्तेमाल किये गये हैं जिनको हिन्दी साहित्य-ससार में दाखिल होना है। जैसे—कोर्ट (अदालत), पेपर (कागज), नजारी

(उशवा), पंच (वाज़ी), कक्कस (संडास), भेदि (जुलाब), वांति (क़ै), आस्ति (जायदाद), पन्नीर (इत्र) आदि। इस श्रेणी के सभी शब्द अवतरण-चिन्हों के बीच में दिये गये हैं।

इस बात की आशा नहीं की जा सकती कि इस कोष में अरबी, फ़ारसी के समस्त-पद और यौगिक शब्द सारे के सारे दिये हुए मिलें; जो साधारणतया इस्तेमाल होते हैं वे सब अवश्य मिलेंगे। अरबी, फ़ारसी उपसर्गों और प्रत्ययों की जो सूची नीचे दी जाती है उसके सहारे अन्य शब्दों के अर्थ भी लगा लिये जा सकते हैं। अरबी में धातु से अन्य शब्द कैसे बनाये जाते हैं इसका भी संक्षेप में ज़िक्र किया गया है, जिससे पाठक फ़ायदा उठा सकते हैं।

उर्दू के कुछ शब्द हिन्दी लिपि में कई तरह लिखे जाते हैं, जैसे—

फ़व्वारा	फ़ज़ूल	माफ़िक़	इमतहान
फ़व्वारा	फ़िज़ूल	मुआफ़िक़	इम्तहान
फौवारा	फ़ुज़ूल	मुवाफ़िक़	इम्तिहान
इक़्वाल	जहाँ	ज़मीदार	वरकत
एक़्वाल	जहान	ज़मींनदार	वर्कत

हर एक शब्द का वह रूप दिया गया है जो सबसे प्रामाणिक या ठीक माना जाय। कोष मे अगर कोई शब्द न मिले तो उसके दूसरे रूप के लिये अवश्य देखें।

अरबी व्याकरण के कुछ नियम

अरबी व्याकरण के अनुसार शब्दों के रूपांतर और अर्थ बहुधा इनके 'वजन' या मात्रा पर निर्भर होते हैं।

1 अरबी की कुछ संज्ञायें 'सालिम' याने 'पूर्ण' कहलाती हैं। 'आत' प्रत्यय लगाने से इनके बहुवचन बनते हैं, जैसे—
ख्यालात, इफ्राजात, कमालात, तहकीकात।

2 जो 'सालिम' नहीं हैं, उनमें से कुछ संज्ञाओं के बहुवचन 'अफ्आल' के वजन पर बनते हैं (एकवचन के वजन चाहे जो हों), जैसे—
अशआर (शेर से), अलफाज (लफ्ज से), अकसाम (किस्म से), अखबार (खबर से)।

3 कुछ संज्ञाओं के बहुवचन 'फुऊल' के वजन पर बनते हैं, जैसे—
हुरूफ (हर्फ से), फुरूक (फर्क से), उसूल (असल से), उमूर (अमर से)।

4 कुछ बहुवचन 'फुअला' के वजन पर होते हैं, जैसे—
तुलबा (तालिब से), उमरा (अमीर से), वुजरा (वजीर से)।

5 व्यंजनांत पुल्लिंग संज्ञाओं के अंत में 'आ' लगाने पर स्त्रीलिंग रूप बनते हैं, जैसे—
मलिक, मलिका, वालिद, वालिदा; जौज, जौजा,
साहब, साहबा, शायर, शायरा; आकिल, आकिला।

6 व्यापारवाचक शब्द याने पेशावरों के नाम 'फअआल' के वजन पर होते हैं, जैसे—

हज्जाम, जल्लाद, दल्लाल, बज्जाज, बक्काल, सर्राफ।

7 अरबी क्रियायें बहुधा 'फेल' के वजन पर होती हैं। अरबी धातुओं से क्रियात्मक संज्ञायें 'तफईल' या 'तफऊल' के वजन पर बनती हैं। जैसे—

फ़ेल	तफ़ईल	फ़ेल	तफ़ऊल
बदल	तबदील	इश्क़	तअशुक़
रद्द	तरदीद	हुक्म	तहक्कुम
हिर्स	तहरीस	लफ़्ज़	तलफ़्फ़ुज़
शरह	तशरीह	लुत्फ़	तलत्तुफ़
शरीफ़	तशरीफ़	जमाल	तजम्मुल

8. अरबी क्रियाओं से 'फ़ाइल' के वज़न पर कर्तृवाचक शब्द (इस्मे-फ़ाइल) और 'मफ़ऊल' के वज़न पर कर्मवाचक शब्द (इस्मे-मफ़ूल) बनते है। जैसे—

फ़ेल	फ़ाइल	मफ़ऊल
तलब	तालिब	मतलूब
क़ब्ज़	क़ाबिज़	मक़बूज़
दख़ल	दाख़िल	मदख़ूल
इश्क़	आशिक़	मअशूक़
जबर	ज़ाबिर	मज़बूर

9. मसदर या क्रियात्मक संज्ञाओं से कर्तृवाचक शब्द या इस्मे-फ़ाइल निम्नलिखित प्रकार बनते हैं।

मसदर का वजन	इस्मे-फ़ाइल का वजन	मसदर का वजन	इस्मे-फ़ाइल का वजन
इफ़्आल	मुफ़्इल	इफ़्तआल	मुफ़्तइल
इहसान	मुहसिन	इम्तहान	मुम्तहिन
इक़बाल	मुक़बिल	इख़्तलाफ़	मुख़्तलिफ़
इरशाद	मुरशिद	इंतजाम	मुंतज़िम
इफ़लास	मुफलिस	इत्तफ़ाक़	मुत्तफ़िक़
इतबार	मुतबिर	इंतजार	मुंतज़िर

तफ़ईल	मुफ़इल	तफ़उल	मुतफ़इल
तसनीफ़	मुसन्निफ़	तहक्कुम	मुतहक्किम
तहरीर	मुहर्रिर	तनज़्ज़ुल	मुतनज़्ज़िल
तक़रीर	मुक़र्रिर	तअल्लुम	मुतअल्लिम
तहज़ीब	मुहज़्ज़िब	तहम्मुल	मुतहम्मिल

10 मसदरों से बने विशेषण बहुधा 'फ़ईल' के वजन पर होते हैं, जैसे—अलील (अलालत से), क़रीब (क़राबत से), जलील (जिल्लत से) ज़रीफ़ (ज़राफ़त से), अज़ीम (अज़मत से), वज़ीर (वज़ारत से), शरीफ़ (शराफ़त से)।

उपसर्ग (सारिका)

अरबी उपसर्ग

अल–, निश्चित, उदा.—अलगरज़, अलबत्ता।

ग़ैर–, भिन्न, विरुद्ध, उदा.—ग़ैरहाज़िर, ग़ैरमुल्क ग़ैरज़िम्मेदार।

बिल– साथ, उदा.—बिलकुल, बिलजब्र।

बिला–, बिना, उदा.—बिलाशक, बिलाउज्र।

ला–, बिना, अभाव, उदा.—लावल्द, लाचार लापरवाह।

फ़ारसी उपसर्ग

कम–, थोड़ा, हीन उदा.—कमज़ोर, कमबख़्त, कमसिन।

ख़ुश–, अच्छा, शुभ, उदा.—ख़ुशबू ख़ुशदिल, ख़ुशहाल।

दर–, में, उदा.—दरपेश, दरमियान दरकूच।

ना–, अभाव, उदा.—नालायक़ नामंज़ूर, नाराज़।

ब–, अनुसार, में, उदा.—बख़ूबी, बदस्तूर, बग़ैर, बमानी।

बद–, बुरा, उदा.—बदबू बदनाम, बदमाश।

बर–, में, पर, उदा.—बरख़िलाफ़ बरदाश्त बरतरफ़।

बा–, साथ; उदा.–बाक़ायदा; बाक़ाम्ना।

बे–, बिना; उदा.–बेअदब, बेईमान, बेचैन, बेसबब।

सर–, प्रधान, उदा.–सरकार, सरहद, सरदार।

हम–, सम, साथ; उदा.–हमवार, हमराह, हमसबक़, हमदर्द।

प्रत्यय (लाहिक़ा)

अरबी प्रत्यय

–अन्, के तौर पर, से, उदा.–इत्तफ़ाक़न्, क़रीबन्, मसलन्।

–आत, बहुवचन; उदा.–कमालात, ख़यालात, काग़ज़ात।

तुर्की प्रत्यय

–ची, बनाने या चलानेवाला; उदा.–तोपची, नक़्क़ारची, बंदूक़ची।

फ़ारसी प्रत्यय

(१) गुणवाचक प्रत्ययः—

–आना, उदा.–दोस्ताना, मर्दाना, हाकिमाना।

–ईन, उदा.–रंगीन, शौक़ीन, संगीन।

–ईना, उदा.–क़मीना, पशमीना।

–नाक, उदा.–दर्दनाक, ख़तरनाक, ख़ौफ़नाक।

(२) 'वाला' या 'रखनेवाला' का अर्थ देनेवाले प्रत्ययः—

–आवर, उदा.–दिलावर, क़दावर।

–गीर, उदा.–माहीगीर, दावागीर।

–दार, उदा.–जिम्मादार, दूकानदार, क़िलादार।

–बान, उदा.–दरबान, मेहरबान, मेज़बान।

–मंद, उदा.–अक़्लमंद, एहसानमंद, दानिशमंद।

–वर, उदा.–क़सूरवर, नामवर, हिम्मतवर।

–वान, उदा –गाड़ीवान, कोचवान।

–वार, उदा –जिम्मावार, उम्मीदवार।

(३) कर्तृवाचक प्रत्यय —

–इंदा, उदा –बाशिंदा, परिंदा, चरिंदा।

–कार, उदा –दस्तकार, पेशकार, काश्तकार।

–गार, उदा –सौदागर, बाजीगर तवक्कगर।

–गार, उदा –खिदमतगार, तलबगार मददगार।

(४) फारसी क्रियायें (यौगिक में) प्रत्ययों के समान लगकर कर्तृवाचक का अर्थ देती हैं। जैसे—

–खोर,–ख्वार, खानेवाला, उदा –मुफ्तखोर, जुलाखोर, हवाखोर।

–गो, कहनेवाला, उदा –क़ानूनगो, रास्तगो, पेशीनगो।

–जन, मारनेवाला, उदा –राहजन, बाकाजन, नकबज़न।

–दान, जाननेवाला, उदा –उर्दूदान, हिमावर्ग कदरदान।

–नवीस, लिखनेवाला, उदा –नक्शानवीस खुशनवीस।

–नशीन, बैठनेवाला, उदा –गद्दीनशीन, पर्दानशीन।

–परस्त, पूजनेवाला, उदा –आगपरस्त, बुतपरस्त।

–पोश, पहननेवाला, ढकनेवाला, उदा –सफेदपोश, जीनपोश, सरपोश।

–फरोश, बेचनेवाला, उदा –कुतुबफरोश, मेवाफ़रोश।

–बन्द, बाँधनेवाला, उदा –नालबन्द हथियारबन्द, निल्दबंद।

–बर, ढोने या ले जानेवाला, उदा –पैगंबर, दिलबर, नामावर।

–बरदार, उठानेवाला, उदा –असावरदार, दस्तवरदार हुक्कावरदार।

–बाज, खेलनेवाला या पेशा, आदत या शौक़ रखनेवाला, उदा –दगाबाज, तीरंदाज, शतरंजबाज, रंडीबाज, कबूतरबाज।

–बीन, देखनेवाला, उदा –तमाशबीन, बारीकबीन।

–साज, बनानेवाला, उदा –घड़ीसाज, जालसाज, जीनसाज।

(५) अन्य प्रत्ययः—

–आना, रुपये के अर्थ में, उदा.—हरजाना, जुर्माना, नजराना।

–इश, भाववाचक प्रत्यय; उदा.—परवरिश, फरमाइश, परस्तिश।

–ख़ाना, स्थान, घर; उदा.—तोपख़ाना, गुस्लख़ाना, जनानख़ाना।

–गाह, जगह, स्थान; उदा.—ईदगाह, बंदरगाह, चरागाह।

–गी, भाव, दशा; उदा.—पसंदगी, आजादगी, ताजगी।

–चा, अल्पार्थक; उदा.—संदूकचा, बागीचा, देगचा।

–दान, रखने का स्थान, आधार; उदा.—तोशदान, इत्रदान, कलमदान।

–ज़ादा, उत्पन्न; उदा.—शहजादा, हरामज़ादा, नवाबज़ादा।

–नामा, चिट्ठी, पत्र; उदा.—राज़ीनामा, इक़रारनामा, वरक़नामा।

संकेताक्षरों की सूची

अ. = अरबी	पु. = पुल्लिंग
अं. = अंग्रेज़ी	पुर्त्त. = पुर्त्तगाली
अक्रि. = अकर्मक क्रिया	प्रत्य. = प्रत्यय
अल्प. = अल्पार्थक	प्रे. = प्रेरणार्थक
अव्य. = अव्यय	फा. = फ़ारसी
उ. = उर्दू	ब. = बहुवचन
उप. = उपसर्ग	यू. = यूनानी
क्रिवि. = क्रियाविशेषण	वि. = विशेषण
तु. = तुर्की	सक्रि. = सकर्मक क्रिया
दे. = देखो	स्त्री. = स्त्रीलिंग

= अपभ्रंश रूप

उर्दू हिन्दी कोश

अगुश्त–(फा पु) उंगली।

अगुश्तनुमा–(फा वि) कलंक लगाने वाला।

अगुश्तनुमाई–(फा स्त्री) कलंक लगाना, दोषारोपण, अंगुल्यानिर्देश।

अगुश्तरी–(फा स्त्री) अंगूठी, मुद्रिका।

अगुश्ताना–(फा पु) टोपी के आकार की लोहे की अंगूठी जिसे दरजी सीने समय उंगली में पहनते हैं। एक प्रकार की अंगूठी जिसे स्त्रियाँ अंगूठे में पहनती हैं।

अंगूर–(फा पु) द्राक्षा फल और लता।

अंगूरशेफा–(फा पु) हिमालय की एक मूलिका।

अंगूरी–(फा वि) अंगूर का। अंगूर के रंग का।

अंजबार–(फा पु) एक पौधा जिसकी जड़ से सरदी की दवा बनाते हैं।

अंजाम–(फा पु) समाप्ति, अंत। परिणाम, फल।

अंजीर–(फा पु) गूलर की तरह का एक फल।

अंजुमन–(फा पु) सभा, समिति।

अंदर–(फा क्रिवि) भीतर।

अंदरसा–(उ पु) एक प्रकार की मिठाई।

अंदरी–(उ वि) भीतरी।

अंदरूनी–(फा वि) अंदर का, भीतरी।

अंदाज–(फा पु) अटकल, अनुमान। ढंग तौर। भाव, चेष्टा।

अंदाजन्–(उ क्रिवि) अंदाज से। लगभग करीब।

अंदाजपट्टी–(उ स्त्री) फ़सल के मूल्य का अंदाज लगाना।

अंदाजा–(फा पु) अटकल, अनुमान।

अंदेशा–(फा पु) चिंता, सोच। संदेह। दुविधा, असमंजस। आशंका डर। हानि, हरज।

अंदोह–(फा पु) शोक, दुख। खटका, चिंता।

अंबार–(फा पु) ढेर, समूह।

अंबारी–(उ स्त्री) हाथी के पीठ पर कसा जानेवाला आसन जिसके ऊपर एक छज्जेदार मंडप होता है। छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है, छज्जा।

अंबोह–(फा. पु.) भीड़; झुंड; जमघट।

अकड़बाज़–(उ. वि.) अभिमानी, घमंडी।

अकड़बाज़ी–(उ. स्त्री.) ऐंठ। अभिमान; घमंड।

अक़्दस–(अ. वि.) पवित्र। श्रेष्ठ।

अकबर–(अ. वि.) महान; बहुत बड़ा।

अकबरी–(उ. स्त्री.) एक प्रकार की मिठाई। लकड़ी पर की एक प्रकार की नक़्क़ाशी।

अक़्रबा–(अ. वि.) निकट का; जुड़ा हुआ। रिश्तेदार; संबंधी, स्वजन।

अक़ल–(अ. स्त्री.) दे० "अक़्ल"।

अक़्वाम–(अ. स्त्री.) "क़ौम" का ब० रूप।

अकसर–(अ. क्रिवि.) प्रायः; बहुधा; बहुत करके।

अक़्साम–(अ. स्त्री.) "क़िस्म" का ब० रूप।

अकसीर–(अ. स्त्री.) वह भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे; रसायन। सब रोगों को दूर करनेवाली दवा। –(वि.) अत्यंत गुणकारी।

अक़्लदाढ़–(उ. पु.) पूरी अवस्था प्राप्त होने पर निकलनेवाला अतिरिक्त दाँत।

अक़ीक़–(अ. पु.) एक प्रकार का बहुमूल्य लाल पत्थर; माणिक्य।

अक़ीदत–(अ. स्त्री.) दे० "अक़ीदा"।

अक़ीदा–(अ. पु.) आस्तिकता; आस्था। किसी मत का मुख्य तत्त्व।

अक़्ल–(अ. स्त्री.) बुद्धि; ज्ञान।

अक़्लमंद–(फा. वि.) बुद्धिमान; समझदार।

अक़्लमंदी–(फा. स्त्री.) बुद्धिमत्ता, बुद्धिमानी; चतुराई।

अक्स–(अ. पु.) प्रतिबिंब, छाया। चित्र।

अक्सी–(अ. वि.) छाया संबंधी। अक्सी तसवीर = "फोटो"।

अख़बार–(अ. पु.) समाचारपत्र।

अख़ीर–(अ. पु.) अंत; छोर। समाप्ति।

अख़ूर–(फा. वि.) निरर्थक। बुरा। –(पु.) कूड़ा करकट। ख़राब घास। अस्तबल, तबेला, घुड़साल।

अख़्ज़–(अ. पु.) लेना; प्रतिग्रह।

अख़्लाक़–(अ. स्त्री.) शिष्टाचार; सभ्यता। सद्गुण।

अगर–(फा. अव्य.) यदि।

अगरचे–(फा. अव्य.) यद्यपि।

अग़राज़–(अ. पु.) "ग़रज़" का ब० रूप, उद्देश्य।

अगल-बगल–(फा. क्रिवि.) इधर-उधर; आस-पास।

अचार–(फा. पु.) कचूमर; उपदंश।

अचारी–(उ. स्त्री.) धूप में सुखाये हुए कच्चे आम के टुकड़े।

अजगैब–(फा पु) परोक्ष।

अजनबी–(अ वि) अपरिचित। अनजान। आगतुक, अभ्यागत, परदेशी।

अजब–(अ वि) विचित्र, अद्भुत।

अज़मत–(अ स्त्री) महत्व। उत्कृष्टता, श्रेष्ठता

अजमाना–(उ सक्रि) परखना, परीक्षा करना।

अजहद–(फा क्रिवि) हद से ज्यादा, अत्यधिक।

अजायब–(अ पु) "अजब" का ब० रूप, विचित्र वस्तुएँ।

अजायबखाना–(फा पु) अद्भुत वस्तु सग्रहालय, विचित्र वस्तु प्रदर्शनालय, म्यूज़ियम'।

अजायबघर–(उ पु) दे० "अजायबखाना"।

अजारा–(अ पु) दे० "इजारा"।

अजीज–(अ वि) प्रिय, प्यारा।

–(पु) प्रियजन, संबंधी।

अजीब–(अ वि) विचित्र, अद्भुत।

अजीम–(अ वि) महान, श्रेष्ठ।

अजूबा–(अ वि) दे० "अजीब"।

अटबर–(उ पु) ढेर, राशि।

अड़दार–(उ वि) चलते चलते रुक जाने वाला, अड़ियल। गर्वीला, घमंडी। मतवाला, मस्त।

अत्तर–(अ पु) दे० "इत्र"।

अता–(अ स्त्री) भेंट, देन, प्रदान।

अताई–(अ वि) दक्ष, निपुण। चालाक, चतुर। परमपक्ष, प्रवीण।

अतालीक़–(अ पु) गुरु, अध्यापक।

अतीक़–(अ वि) पुराना, प्राचीन।

अदद–(अ स्त्री) संख्या, अंक।

अदन–(अ पु) स्वर्ग का बाग जहाँ ईश्वर ने आदि मनुष्य आदम को बना कर रखा था।

अदना–(अ वि) तुच्छ, नीच। साधारण, मामूली।

अदब–(अ पु) शिष्टाचार, सभ्यता।

अदबियात–(अ स्त्री) साहित्य, वाङ्मय।

अदम–(अ पु) नास्तित्व, अभाव।

अदम पैरवी–(फा स्त्री) मुकदमे में जरूरी कारवाई न करना।

अदम सबूत–(फा स्त्री) प्रमाण का अभाव।

अदरक–(फा पु) एक पौधा जिसकी जड़ सूख जाने पर सोंठ बनती है, आदक।

अदरकी–(उ स्त्री) गुड़ के साथ मिलाई हुई सोंठ।

अदल–(अ पु) न्याय।

अदल बदल–(अ पु) परिवर्तन, उलट फेर।

अदली–(उ. वि.) न्यायी।

अदा–(अ. वि.) चुकात; निश्शेष।
–(स्त्री.) कर्ज आदि चुकता करना। कर्तव्य या आज्ञा का पालन करना। ढंग; तौर। हाव भाव; नाज़।

अदाई–(उ. वि.) चालबाज; चालाक।

अदायगी–(फा. स्त्री.) अदा करना।

अदालत–(उ स्त्री) न्यायालय, "कोर्ट"। अदालत खफ़ीफा = वह अदालत जिसमें धन संबधी छोटे मुकदमे लिये जाते हैं। अदालत दीवानी = वह अदालत जिसमें धन और संपत्ति संबंधी मुकदमों का फैसला होता है।

अदालती–(उ. वि.) न्यायालय संबंधी। नालिश करनेवाला।

अदावत–(अ. स्त्री.) शत्रुता; वैर।

अदावती–(अ. वि.) वैरी। विरोधात्मक, विरोधमूलक।

अनार–(फा. पु.) दाडिम का फल।

अनारदाना–(फा. पु) अनार का दाना। एक प्रकार का पेड; रामदाना।

अफ़ग़ान–(अ. पु) अफ़गानिस्तान का रहने वाला, काबुल देश का आदमी।

अफ़ज़ल–(अ. वि.) सब से श्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट।

अफ़ज़ूं–(फा पु.) अधिकता।

अफ़यून–(अ. स्त्री.) अफ़ीम।

अफ़वाह–(अ. स्त्री.) किंवदंति; जनश्रुति।

अफ़सर–(अं. पु) अधिकारी, कर्मचारी।

अफ़सरी–(उ. स्त्री.) अधिकार। शासन।

अफ़साना–(फा. पु.) कथा, कहानी।

अफ़सुरदा–(फा. वि.) मुरझाया हुआ। दुखित।

अफ़सूं–(तु. पु.) मंत्र-तंत्र; जादू-टोना।

अफ़सोस–(फा. स्त्री.) शोक। खेद; पश्चात्ताप।

अफ़ीम–(उ. पु.) पोस्त नामक एक पौधे का गोंद जो एक मादक पदार्थ है।

अफ़ीमची, अफ़ीमी–(उ. पु.) अफ़ीम पीने वाला।

अबख़रा–(अ. पु.) वाष्प, भाप।

अबतर–(फा. वि.) बुरा; खराब। पतित।

अबतरी–(फा. स्त्री.) बुराई; खराबी। पतन, घटाव।

अबरक–(अ. पु.) अभ्रक, भोंडर।

अबरस–(उ. पु) घोडे का एक रंग जिसमें सफेदी के साथ कुछ कालापन होता है। इस रंग का घोड़ा।

अबरा–(फा. पु.) दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला या भाग। न खुलने वाली गाँठ; उलझन।

अबरी–(फा. स्त्री.) एक प्रकार का चिकना कागज। एक प्रकार का पीला

पत्थर की धातु निर्मित पदार्थों के जोड़ने के काम में आता है। एक प्रकार की लाह की रँगाई।
अबरू-(फा स्त्री) भाह, भ्रू।
अबलक-(फा पु) सफेद और काले रंग का घोड़ा।
अबवाब-(अ पु) "बाब" का ब० रूप, अध्याय।
-(उ पु) वह कर या टैक्स जो भूमिकर के अतिरिक्त, पर उसके साथ साथ वसूल किया जाता है, 'सेस"।
अबा-(अ पु) लंबा और ढीला अँगरखा।
अबादान-(फा वि) दे० "आबादान"
अबाबील-(फा स्त्री) श्याम वर्ण का एक पक्षी।
अबीर-(अ पु) एक रंगीन बुकनी जिसे लोग होली में अपने इष्ट मित्रों पर डालते हैं।
अबीरी-(अ वि) अबीर के रंग का, लाल मिश्रित काले रंग का।
-(पु) उपयुक्त रंग।
अब्बा-(फा पु) बाप, पिता।
अब्बास-(अ पु) एक तरह का पौधा जो फूल के लिये लगाया जाता है और जो शाम के वक्त फूलता है।
अब्बासी-(अ स्त्री) अब्बास के फूल का रंग, लाल सा रंग। मिस्र देश की एक प्रकार की कपास।
अब्र-(फा पु) मेघ, बादल।
अमजद-(अ पु) बुजुर्ग, बड़े बूढ़े।
अमन-(अ पु) चैन शांति।
अमरू-(अ पु) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
अमरूद-(फा पु) एक तरह का फल।
अमल-(अ पु) काम, कर्म। व्यवहार, आचरण। अधिकार, शासन। आदत, लत। प्रभाव असर। नशा, मस्ती। भोगकाल, समय।
अमलदार-(फा पु) सरकारी आज्ञाओं का पालन करने वाला अधिकारी।
अमलदारी-(अ स्त्री) अधिकार, दखल। वह काश्तकारी जिसमें पैदावर का एक निर्दिष्ट अंश जमींदार को लगान के रूप में दिया जाता है "बार"।
अमलपट्टा-(उ पु) प्रतिनिधि या कारिंदे को दिया जाने वाला अधिकार पत्र मुख्तारनामा, "पावर आफ़ अटर्नी"।
अमला-(अ पु) कार्यकर्त्ता कर्मचारी। महकमा विभाग।
अमला फैला-(अ पु) कचहरी के कर्मचारी।
अमली-(फा वि) अमल में आने वाला,

अरमान-(तु पु) अभिलाषा, इच्छा, उत्कंठा।

अरस-(अ पु) छत, पाटन, मीनार। महल।

अराज़ी-(अ स्त्री) पृथ्वी, भूमि। क्षेत्र, खेत।

अराबा-(अ पु) रथ, गाड़ी। वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ी रहती है।

अर्क़-(अ पु) रस, कषाय। पसीना।

अर्क नाना-(अ पु) इस के रस और पुदीने से बनाया हुआ अर्क़।

अर्ज़-(अ स्त्री) विनती, निवेदन।

-(पु) चौड़ाई।

-(स्त्री) पृथ्वी, भूमि। खेत, ज़मीन, क्षेत्र।

अर्ज़दाश्त-(फा स्त्री) निवेदनपत्र, प्रार्थनापत्र।

अर्ज़ी-(अ स्त्री) प्रार्थनापत्र, आवेदन पत्र।

-(पु) निवेदक, प्रार्थी।

अर्ज़ीदावा-(फा पु) वह प्रार्थना पत्र जो दीवानी अदालत में दिया जाय।

अर्सा-(अ पु) समय, काल, अवधि। विलंब, देर।

अल्कतरा-(अ पु) पत्थर के कोयले से निकाला हुआ एक गाढ़ा काला पदार्थ, "टार"।

अलक़िस्सा, अलग़रज़-(अ पु) अंतिम कथन। भावार्थ, तात्पर्य।

अलगरजी-(अ वि) अलहदा, अलग धार।

-(स्त्री) बेपरवाही, असावधानी।

अलगोज़ा-(अ पु) एक प्रकार की बाँसुरी।

अलताफ़-(अ पु) "लुत्फ़" का ब० रूप, दया, कृपा।

अलफ़-(अ पु) घोड़े का आगे के दोनों पाँव उठा कर पिछली टाँगों के बल खड़ा होना।

अलफा-(अ पु) बिना बाँह का लंबा कुरता।

अलफी-(अ स्त्री) छोटा अलफा।

अलबत्ता-(अ अव्य) निस्संदेह। बहुत ठीक। लेकिन, परंतु।

अलबी तलबी-(उ स्त्री) अरबी, फारसी या कठिन उर्दू जो समझी नहीं जाती।

अलम-(अ पु) शोक, दुख। झंडा, ध्वजा, पताका।

अलमस्त-(फा वि) मदमत्त। बेहोश, प्रज्ञाहीन। निश्चिंत।

अलवान-(अ पु) ऊनी चादर।

अलहदा-(अ वि) अलग, पृथक्।

अलहदी–(उ. पु) एक प्रकार के सिपाही जो सब दिन बैठे खाया करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर जिनसे काम लिया जाता है; "रिजर्व"।

अलानिया–(अ. क्रिवि) खुल्लमखुल्ला; सब के सामने, बहिरंग।

अलाम–(अ.* वि.) झूठ बात कहने वाला; मिथ्यावादी।

अलामत–(अ. पु) निशानी; चिन्ह।

अलावा–(अ. क्रिवि.) सिवाय, अतिरिक्त।

अलील–(अ. वि.) बीमार; रोग ग्रस्त।

अलहज़ल, अलहज़ा–(अ. पु.) इधर उधर की बात, गप्प।

अवारजा–(फा.पु.) दे० "आवारजा"।

अवेज़–(अ. पु) एवज; स्थानापन्न आदमी।

अव्वल–(अ. वि.) प्रथम, पहला। प्रधान; श्रेष्ठ।

–(पु.) आदि; प्रारंभ।

अशआर–(अ. स्त्री.) "शेर" का ब० रूप; कविताएँ।

अशख़ास–(अ. पु.) "शख्स" का ब० रूप, लोग।

अशरीफ़–(अ पु.) "शरीफ़" का ब० रूप; भद्रपुरुष; सज्जन।

अशर्फ़ी–(फा. पु.) सुवर्ण का एक सिक्का· मोहर। एक तरह का फूल।

अशिया–(अ. पु) चीज; वस्तु।

अश्क–(फा. पु.) अश्रु; आँसू।

असवर्ग–(फा. पु.) एक तरह की घास जिसके फूल रेशम रंगने के काम में आते हैं; पृक्का।

असवाब–(अ. पु.) वस्तु; सामान; पदार्थ।

असर–(अ. पु.) प्रभाव; महिमा।

असल–(अ. वि.) सच्चा; वास्तविक। शुद्ध। जो बनावटी न हो। श्रेष्ठ; उत्तम।

–(पु.) जड; मूल। मूलधन; पूँजी।

असलियत–(अ. स्त्री.) तथ्य; वास्तविकता। मूल। मूल तत्व; सार।

असली–(अ. वि.) सच्चा। प्रधान। शुद्ध; पवित्र। मौलिक।

असा–(अ. पु.) डंडा, दंड। चाँदी या सोने का मढा हुआ सोंटा या दंड जिसे द्वारपाल अपने हाथ में रखते हैं।

असातीर–(अ. पु.) कहानियाँ; किस्से।

असामी–(अ. पु.) व्यक्ति। रैयत; कृषक। वह जिससे किसी प्रकार का काम पडा हो। अपराधी।

असालत–(अ. स्त्री.) मूल; जन्म। कुलीनता। तत्व।

असालतन–(अ. क्रिवि.) स्वभावतः; स्वयं; खुद।

असास-(अ पु) नींव, मूल। नींव, बुनियाद। मूलधन, पूँजी।

असासा-(अ पु) मूलधन, पूँजी।

असीर-(फा वि) बंदी, कैदी।

अस्तबल-(यू पु) घुड़साल, तबेला।

अस्तर-(फा पु) नीचे की तह या पल्ला। दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। चंदन का तेल जिसे आधार बना कर इत्र बनाते जाते हैं। वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ बारीक साड़ी के नीचे लगाकर पहनती हैं, अतरपट।

अस्तरकारी-(फा स्त्री) चूने की लिपाई। गचकारी, "पलस्तर"।

अस्तुरा-(फा पु) दे० "उस्तुरा"।

अस्प-(फा पु) अश्व, घोड़ा।

अस्पताल-(अं पु) वैद्यशाला, चिकित्सालय।

अस्ल-(अ पु) मूल। बीज।

अस्ला-(अ अव्य) कदापि।

अहकर-(अ वि) अति तुच्छ, नीचतर।

अहकाम-(अ पु) "हुक्म" का ब० रूप, आज्ञायें। नियमावली।

अहतमाल-(अ पु) खतरा, आशंका, भय। शक, संदेह।

अहद-(अ पु) प्रतिज्ञा, वादा। जमाना, काल।

अहदनामा-(फा पु) प्रतिज्ञा पत्र, करारनामा, शर्तनामा।

अहदी-(अ वि) आलसी। अकर्मण्य। -(पु) दे० "अलहदी"।

अहबाब-(अ पु) "हबीब" का ब० रूप, मित्रगण।

अहमक-(अ वि) मूढ़, बेवकूफ।

अहल-(अ पु) घर के लोग। मालिक, स्वामी।

अहलकार-(फा पु) कर्मचारी। कारिंदा, गुमाश्ता।

अहलमद-(फा पु) अदालत के हुक्मनामे जारी करने वाला कर्मचारी।

अहवाल-(अ पु) "हाल" का ब० रूप, परिस्थिति, समाचार।

अहसन-(अ वि) बहुत नेक, भला।

अहसान-(अ पु) दे० "एहसान"।

आ

आइंदा-(फा वि) आनेवाला, आगामी। भविष्य।

-(पु) भविष्य काल, भविष्य।

-(क्रिवि) भविष्य में, आगे।

आइना-(फा पु) दे० "आईना"।

आइन-(फा पु) नियम, विधि, कानून।

आईना–(फा. पु.)शीशा; दर्पण। किवाड़ के पल्ले में लकड़ी का वह चौखट जो शोभा के लिये बना दिया जाता है।

आईनाबंदी–(फा. स्त्री.) झाड़ फानूस आदि की सजावट। फर्श में पत्थर या ईंट की जुड़ाई।

आईनासाज़–(फा. पु.) आईना बनाने वाला।

आईनासाज़ी–(फा. स्त्री.) आईना बनाने का काम। काँच पर कलई करने का काम।

आईनी–(फा.वि) कानूनी; राजनियम का।

आक़बत–(अ. स्त्री.) परलोक।

आकरकरहा––(अ. पु.) एक पौधा।

आक़ा–(अ. पु.) मालिक, स्वामि। धनी; अमीर।

आक़िल–(अ. पु) बुद्धिमान।

आक़िलखानी–(फा. पु.) लाल मिश्रित काला रंग।

आक़िला–(अ. स्त्री) बुद्धिमती स्त्री।

आख़ता–(फा. वि.) बधिया; पंढ।

आख़िर–(फा. वि.) अंतिम, अंत का। –(पु) अंत; समाप्ति। परिणाम। –(क्रिवि.) अंत में, अंत को।

आख़िरकार–(फा. क्रिवि.) अंत में।

आख़िरत–(अ. स्त्री.) परिणाम, फल। युगांत; कयामत।

आख़िरी–(फा. वि.) सब से पीछे का; अंतिम।

आखोर–(फा. पु.) घास फूस; कूड़ा करकट। निरर्थक चीज़। सड़ी गली चीज़। –(वि.) निरर्थक। रद्दी।

आग़ा–(तु. पु.) श्रेष्ठ। मालिक; स्वामि। ईरानी। अफ़गान।

आगाज़–(फा. पु.) प्रारंभ, शुरू।

आगाह–(फा. वि.) जानकार; परिचित।

आगाही–(फा. स्त्री) जानकारी; बोध।

आज़मंदी–(फा. वि.) लालची; लोभी।

आज़मा–(फा. पु) परीक्षा करने वाला; परीक्षक।

आज़माइश–(फा. स्त्री.) परीक्षा; जाँच।

आज़माना–(ड. सक्रि.) परीक्षा करना; परखना।

आज़मूदा–(फा. वि.) आजमाया हुआ; परीक्षित।

आज़ाद–(फा.वि.) मुक्त; वरी। स्वतंत्र; निर्भय।

आज़ादगी–(फा. स्त्री.) स्वतंत्रता; स्वातंत्र्य।

आज़ादा–(फा. वि.) सर्व स्वतंत्र।

आज़ादी–(फा. स्त्री.) छुटकारा; विमुक्ति। मोक्ष; मुक्ति। स्वतन्त्रता।

आज़ार–(फा. पु.) रोग; बीमारी। दुख।

आजिज–(अ वि) विनीत, दीन। तंग, परेशान, विकल।

आजिजी–(अ स्त्री) दीनता। व्याकुलता।

आजुर्दगी–(फा स्त्री) शोक, दुख।

आजुर्दा–(फा वि) दुखी, शोकाकुल।

आतश–(फा स्त्री) आग।

आतशक–(फा पु) एक रोग जो प्राय दुष्ट मैथुन से उत्पन्न होता है, फिरंग रोग, गर्मी।

आतशकी–(फा वि) फिरंग रोग संबंधी।

आतशखाना–(फा पु) वह स्थान जहाँ कमरा गरम करने के लिये आग रखते हैं। पारसियों के अग्निहोत्र की अग्नि स्थापित करने का स्थान, अग्निशाला।

आतशदान–(फा पु) आग रखने का बरतन, अँगीठी।

आतशपरस्त–(फा पु) अग्निपूजक। पारसी मतावलंबी।

आतशबाज–(फा पु) आतशबाजी बनाने वाला।

आतशबाजी–(फा स्त्री) बारूद के बने हुए खिलौने जो जलाने से रंग बिरंग की चिनगारियाँ छोड़ते हैं। आतशबाजी के जलने का दृश्य, अग्निक्रीड़ा।

आतशी–(फा वि) अग्नि संबंधी, आग का। जो आग में तपाने से न फूटे, न तड़के।

आतिश–(फा स्त्री) दे० "आतश"।

आदत–(अ स्त्री) स्वभाव, प्रकृति। अभ्यास।

आदम–(अ पु) आदि मनुष्य।

आदमजाद–(फा पु) आदम की संतान, आदमी।

आदमियत–(अ स्त्री) मनुष्यत्व। सभ्यता।

आदमी–(अ पु) आदम की संतान, मनुष्य। नौकर, सेवक।

आदाब–(अ पु) नियम। गौरव, आन। नमस्कार।

आदिल–(फा पु) न्यायी।

आदी–(अ वि) अभ्यस्त, दक्ष।

आनन फानन–(अ क्रिवि) अति शीघ्र, तुरंत, झटपट।

आफ़त–(अ स्त्री) आपत्ति। कष्ट। बुरा दिन, दुख का दिन।

आफ़ताब–(फा पु) सूर्य, सूरज।

आफ़ताबा–(फा पु) हाथ मुँह धुलाने का एक तरह का लोटा।

आफ़तावी–(फा वि) सूर्य का, सौर। गोल।

–(पु) पान के आकार का पत्ता जिस पर सूर्य का चिह्न बना रहता है और जो राजाओं के साथ या बारात आदि

में झंडे के साथ चलता है। एक प्रकार की आतशबाजी। दरवाजे या खिडकी के आगे की वह छाजन या छप्पर जो छाया के लिये बनाई जाती है।

आफ़रीं–(फा. स्त्री.) शाबाश; धन्य।

आफ़ाक़–(अ. पु.) "उफ़क़" का ब० रूप; क्षितिज।

–(क्रिवि.) संसार के चारों ओर।

आफ़ियत–(अ. स्त्री.) कुशल क्षेम।

आफ़िस–(अ. पु.) कार्यालय; दफ्तर।

आब–(फा. स्त्री.) चमक; कांति। शोभा। मोती आदि की चमक या पानी।

आबकारी–(फा. स्त्री.) मादक द्रव्य चुआने या बेचने का स्थान। वह सरकारी विभाग या महकमा जो मादक वस्तुओं से संबंध रखता हो।

आबख़ोरा–(फा. पु.) पानी पीने का बरतन; गिलास। प्याला।

आबजोश–(फा. पु) गरम पानी के साथ उबाला हुआ किशमिश।

आबताब–(फा. स्त्री.) चमक-दमक; कांति; शोभा।

आबदस्त–(फा. पु.) शुद-प्रक्षालन; शौचक्रिया।

आबदाना–(फा. पु.) अन्न और जल; दाना पानी। जीविका।

आबदार–(फा. वि.) चमकीला; कांतिमान्।

आबदारी–(फा. स्त्री.) चमक; कांति।

आबनूस–(फा. पु.) एक जंगली पेड़।

आबनूसी–(फा. वि.) आबनूस का। आबनूस के रंग का; बहुत काला।

आबपाशी–(फा. स्त्री.) सिंचाई।

आबरू–(फा. स्त्री.) प्रतिष्ठा; गौरव; इज्जत।

आबला–(फा. पु.) किसी अंग पर जलने, रगड़ खाने आदि से चमड़े पर का पोला उभार जिसके भीतर एक प्रकार का चेप या पानी भरा रहता है; छाला; फफोला।

आबशार–(फा. पु) जलप्रपात।

आबहवा–(फा. स्त्री.) किसी प्रदेश की प्राकृतिक शीतोष्ण स्थिति; जलवायु।

आबाद–(फा. वि.) बसा हुआ। सकुशल, मंगलमय। उपजाऊ, उर्वर।

आबादकार–(फा. पु.) वे किसान जो जंगल काट कर उस स्थान पर बसे हुए हों।

आबादान–(फा. वि.) बसा हुआ। पूर्ण; भरित।

आबादानी–(फा. स्त्री.) पूर्णता। बस्ती। शुभचिंतकता। चहल पहल; धूमधाम।

आबादी–(फा स्त्री) बस्ती। जनसख्या। वह भूमि जिस पर खेती होती हो।

आबी–(फा वि) पानी सबधी। पानी में रहनेवाला। पानी का। जो गहरे रग का नहीं।
–(पु) समुद्र का नमक।
–(स्त्री) वह भूमि जिसमें किसी प्रकार की आबपाशी या सिंचाई होती हो।

आबेहयात–(फा पु) सुधा, जीवामृत।

आम–(अ वि) साधारण, सामान्य। जन सामान्य, जनता। प्रसिद्ध, विख्यात।

आमद–(फा स्त्री) आगमन, आना। आय, आमदनी।

आमदनी–(फा स्त्री) आय। विलायत से आनेवाली व्यापार की चीजें।

आमादगी–(फा स्त्री) तैयारी, सन्निद्धता।

आमादा–(फा वि) तैयार, सन्नद्ध।

आमाल–(अ पु) कर्म, करनी।

आमालनामा–(फा पु) वह वही या "रजिस्टर" जिसमें नौकरों के चालचलन आदि का विवरण लिखा रहता है।

आमास–(फा पु) सूजन, शोथ।

आमिल–(अ पु) काम करनेवाला। कर्मचारी, अधिकारी। सयाना। सिद्ध, कर्मयोगी। कर्तव्यपरायण।

आमीन–(अ अव्य) भगवान ऐसा ही करे, तथास्तु।

आमूदगी–(फा स्त्री) सजावट, अलकार।

आमूदा–(फा वि) सजा हुआ, अलकृत।

आमेज़–(फा वि) मिला हुआ, मिश्रित।

आमेजना–(उ सक्रि) मिलाना।

आमेजिश–(फा स्त्री) मिलावट, मिश्रण।

आमोख्ता–(फा पु) पढ़े हुए पिछले पाठ क। अभ्यास के लिये बार बार पढ़ना, उद्धरणी।

आयत–(अ स्त्री) कुरान का वाक्य, वेदवाक्य।

आयद–(अ वि) आरोपित। जो हुआ हो या उपस्थित हो, घटित।

आया–(पुर्त स्त्री) धाय, दाई।

आर–(अ स्त्री) तिरस्कार, घृणा। वैर, शत्रुता। लज्जा।

आरज़ा–(अ पु) रोग, बीमारी।

आरज़ू–(फा स्त्री) इच्छा, अभिलाषा। विनती।

आराइश–(फा स्त्री) सजावट, अलकार। फुलवाड़ी सजाना।

आराम–(फा पु) सुख। विश्राम। स्वस्थता।
–(वि) चगा, स्वस्थ।

आरामतलब–(फा वि) सुखाभिलाषी। आलसी।

आरास्ता–(फा वि) अलंकृत, सजा हुआ।

आरिफ़–(अ. वि.) तृप्त; संतुष्ट । ईश्वर-भक्त, धर्मनिष्ठ । ज्ञानी; तत्त्वदर्शी ।

आल–(अ. स्त्री.) वंश की संतति । वंश । –(फ़ा. पु.) लाल रंग । ढेर, शिविर । मदिरा ।

आलम–(अ. पु.) संसार; जगत । अवस्था । बड़ी जमात; समूह । समाज ।

आलमनक़–(अं. पु.) पंचांग ।

आला–(अ. वि.) श्रेष्ठ, उत्कृष्ट । –(पु.) हथियार ।

आलाइश–(फ़ा. स्त्री.) गंदा पदार्थ; मैल । घाव का गंदा खून, पीब आदि । पेट के भीतर की अँतड़ी, मल आदि ।

आलात–(अ. पु.) "आला" का ब॰ रूप, हथियार, आयुध ।

आलिम–(अ. वि.) विद्वान । गुणी ।

आलीजाह–(अ. वि.) ऊँचे दरजे का । उच्च ।

आलीशान–(अ. वि.) भव्य; दिव्य । विशाल ।

आलूचा–(फ़ा. पु.) बादाम की एक क़िस्म ।

आलूदा–(फ़ा. वि.) लिपटा हुआ; परिवेष्टित ।

आलूशाफतालू–(उ. पु.) लड़कों का एक खेल ।

आवर्दा–(फ़ा. वि.) लाया हुआ । विशेष कृपा से नौकरी में रखा गया पुरुष; कृपापात्र ।

आवाज़–(फ़ा. स्त्री.) शब्द; ध्वनि; नाद । पशुओं या पक्षियों की पुकार; बोली ।

आवाज़ा–(फ़ा. पु.) ताना, व्यंग्य ।

आवारगी–(फ़ा. स्त्री.) व्यर्थ इधर उधर भटकना । कुमार्ग, बदचलन ।

आवारजा–(फ़ा. पु.) वह बही जिसमें प्रत्येक कृषक की जमा आदि लिखी जाती है । जमा खर्च की बही ।

आवारा–(फ़ा. वि.) व्यर्थ इधर उधर फिरनेवाला । लुच्चा बदमाश ।

आवारागर्द–(फ़ा. वि.) निकम्मा; व्यर्थ फिरनेवाला ।

आवारागर्दी–(फ़ा. स्त्री.) व्यर्थ इधर उधर फिरने का काम । बदमाशी; दुश्चरित्रता ।

आवारापन–(उ. पु.) दे॰ "आवारगी"

आशना–(फ़ा. पु.) परिचित आदमी । मित्र । प्रेमी । प्रिय, प्रेम पात्र । यार; उपपति ।

आशनाई–(फ़ा. स्त्री.) जान-पहचान । स्नेह; प्रीति । प्रेम, प्यार । अनुचित प्रेम या संबंध ।

आशिक़–(अ. वि.) प्रेम करनेवाला; प्रेमी; आसक्त ।

आशिकाना–(फा वि) आशिकों या प्रेमियों की तरह का।
आशियां, आशियाना–(फा पु) पक्षियों का नीड या घोंसला। पर्ण शाला, कुटी।
आशुफ्तगी–(फा स्त्री) परेशान, व्यग्रता घबराहट।
आशुफ्ता–(फा वि) परेशान, व्यग्र, उद्विग्न।
आस–(फा स्त्री) आटा पीसने की चक्की।
आसमान–(फा पु) आकाश, अंतरिक्ष। स्वर्ग, देवलोक।
आसमानी–(फा वि) आकाश का। आकाशवर्ण का। स्वर्गीय।
–(व स्त्री) ताड़ के पेड़ से निकाला हुआ मद्य, ताड़ी।
आसाइश–(फा स्त्री) आराम, सुख। समृद्धि।
आसान–(फा वि) सरल, सुलभ।
आसानी–(फा स्त्री) सरलता, सुगमता।
आसार–(अ पु) चिह्न, लक्षण। निशान, स्मृति चिह्न, सुराग।
आसी–(अ वि) शोकित, दुखित। वैद्य।
आसूदगी–(फा स्त्री) तृप्ति, संतोष। समृद्धि। निश्चिंतता।
आसूदा–(फा वि) तृप्त। संपन्न, भरा पूरा। निश्चित।
आसेब–(फा पु) भूत प्रेतों की बाधा। धक्का, दुःख।
आसेबी–(फा वि) आसेब संबंधी।
आस्तीन–(फा स्त्री) कुरता, कोट आदि का वह भाग जो बाँह को ढकता है, बाँही।
आहन–(फा पु) लोहा।
आहिस्ता–(फा क्रिवि) धीरे धीरे, क्रमशः।
आहू–(फा पु) मृग।

इ

इंकिलाब–(अ पु) क्रांति, चक्कर। परिवर्तन।
इंकिसार–(अ पु) नम्रता, विनय।
इंगलिस्तान–(फा पु) अंग्रेजों का देश, इंग्लैंड।
इंजील–(यू स्त्री) ईसाइयों का धर्मग्रंथ, "बाइबिल"।
इंतकाल–(अ पु) एक जगह से दूसरी जगह जाना, स्थान परिवर्तन। परलोक गमन, मृत्यु। किसी संपत्ति का एक के अधिकार में से दूसरे के अधिकार में जाना।

इंतख़ाब–(अ. पु.) निर्वाचन; चुनाव।
इंतज़ाम–(अ. पु.) प्रबंध; व्यवस्था।
इंतज़ामकार–(फा. पु.) प्रबंधक; व्यवस्थापक।
इंतज़ार–(अ. पु.) रास्ता देखना; प्रतीक्षा।
इंतशार–(अ. पु.) फैलना; प्रसार।
इंतहा–(अ. पु.) अंत समाप्ति। परिणाम।
इंदराज–(अ. वि.) दर्ज होना; दाखिल होना; प्रविष्ट होना।
इक़तिदा–(अ. वि.) पैरवी करना।
इक़तिसाम–(अ. पु.) आपस में बाँट लेना. बँटवारा।
इक़दाम–(अ. पु.) किसी अपराध के करने की तैयारी। इरादा संकल्प।
इक़राम–(अ. पु.) पुरस्कार; इनाम। आदर; सम्मान।
इक़रार–(अ. पु.) प्रतिज्ञा; वादा। स्वीकृति।
इक़रारनामा–(फा. पु.) प्रतिज्ञापत्र; शर्तनामा।
इख़राज–(अ. पु.) निकाल देना; बहिष्कार। व्यय; खर्च।
इख़राजात–(अ. पु.) "इख़राज" का ब० रूप; खर्चा।
इख़लास–(अ. पु.) मित्रता, दोस्ती। प्रीति; प्रेम। संबंध।
इख़्तितताम–(अ. पु.) पूरा करना।
इख़्तियार–(अ. पु.) अधिकार; बल। सामर्थ्य। प्रभुत्व, आधिपत्य।
इजमाल–(अ. पु.) कुल समष्टि। किसी वस्तु पर कुल लोगों का संयुक्त स्वत्व।
इजमाली–(अ. वि.) संक्षिप्त। संयुक्त; सामूहिक।
इजराय–(अ. पु.) जारी करना; प्रचार करना। व्यवहार।
इजलास–(अ. पु.) बैठक। अदालत; न्यायालय।
इजहार–(अ. पु.) प्रकट करना। गवाही, साक्षी।
इजाज़त–(अ. स्त्री.) आज्ञा; अनुमति।
इज़ाफ़ा–(अ. पु.) बढ़ती; वृद्धि। बचत।
इज़ार–(अ. पु.) पायजामा।
इज़ारबंद–(फा. पु.) नाड़ा; पायजामे आदि का नाड़ा।
इज़ारदार–(फा. वि.) किसी चीज को किराये पर लेने वाला; ठेकेदार।
इज़ारा–(अ. पु.) किसी पदार्थ को किराये पर देना. इजरत। ठेका। अधिकार।
इज़्ज़त–(अ. स्त्री.) मान; मर्यादा, प्रतिष्ठा।
इज़्ज़तदार–(फा. वि.) प्रतिष्ठित; मर्यादा वाला।
इतमाम–(अ. पु.) पूरा करना।

इतमीनान–(अ पु) तृप्ति। विश्राम, भरोसा।

इताअत–(अ स्त्री) आज्ञापालन।

इत्तफाक–(अ पु) मेल, सम्मति। सयोग, अवसर।

इत्तफाकन्–(अ क्रिवि) सयोगवश।

इत्तला–(अ स्त्री) सूचना।

इत्तलानामा–(फा पु) सूचनापत्र।

इत्र–(अ पु) फूलों की सुगधित का सार।

इनकार–(अ पु) अस्वीकार, नाहनूह।

इन्सान–(अ पु) मनुष्य, आदमी।

इनसानियत–(अ स्त्री) मनुष्यत्व। सज्जनता। सभ्यता। विवेक।

इनाम–(अ पु) संभावना, पुरस्कार, उपहार।

इनायत–(अ स्त्री) कृपा, अनुग्रह, उपकार, भलाई।

इन्साफ–(अ पु) न्याय, धर्म। फैसला, निर्णय।

इफरात–(अ स्त्री) अधिकता।

इफलास–(अ पु) दरिद्रता, गरीबी।

इबरत–(अ स्त्री) शिक्षा, सीख, उपदेश।

इबरानी–(अ वि) यहूदी।

इबरायनामा–(फा पु) त्यागपत्र।

इबलीस–(अ पु) शैतान।

इबादत–(अ स्त्री) पूजा, अर्चना। प्रार्थना।

इबारत–(अ स्त्री) लेख। लेखन-शैली।

इबारती–(अ वि) लेख सबधी। लिखित।

इब्तिदा–(अ स्त्री) आरभ, शुरू। जन्म। निकास, उद्भव।

इब्न–(अ पु) पुत्र, बेटा।

इमकान–(अ पु) शक्ति, वश।

इमदाद–(अ स्त्री) मदद, सहायता।

इमदादी–(अ वि) मदद पानेवाला।

इमरोज–(फा क्रिवि) आज का दिन, आज।

इमला–(अ पु) लिखने का अभ्यास।

इमसाल–(फा क्रिवि) अब की साल, इस साल।

इमाम–(अ पु) अगुआ। जप-माला का सबसे बड़ा मनका या गुरिया। मुसलमान पुरोहित।

इमामदस्ता–(उ पु) दे० "हावन दस्ता"।

इमामबाडा–(उ पु) मुहरम में इमाम हुसेन की कब्र की आराधना आदि करने की जगह।

इमारत–(अ स्त्री) बड़ा मकान, भवन।

इम्तियाज–(अ पु) विवेचना, विवेक।

इम्तिहान–(अ पु) परीक्षा।

इरशाद–(अ. पु.) आदेश करना; आज्ञा या अनुमति देना। मार्ग बताना।

इरसाल–(अ. पु.) भेजना। पत्र भेजना।

इराक़ी–(अ. वि.) इराक प्रदेश का।

इरादा–(अ. पु.) विचार; संकल्प।

इर्तकाब–(अ. पु.) कोई अपराध करना।

इर्दगिर्द–(उ. क्रिवि.) आस पास; चारों ओर।

इलज़ाम–(अ. पु.) दोष; अपराध। अभियोग; आपादना।

इलहाक़–(अ. पु.) संबंध। मिश्रण; मिलान।

इलहाक़दार–(फा. पु.) वह मनुष्य जिसके साथ जमीन के बंदोबस्त के समय मालगुज़ारी अदा करने का इकरारनामा हो; तअल्लुक़दार।

इलहाम–(अ. पु.) दैवी शब्द; देववाणी।

इलाक़ा–(अ. पु.) संबंध; लगाव। कई गाँवों की ज़मींदारी; जहगीर; राज्य।

इलाज़–(अ. पु.) औषध। चिकित्सा। उपाय; युक्ति।

इलायची–(उ. स्त्री.) एला।

इलायचीदाना–(उ. पु.) इलायची का बीज। शक्कर में पगा हुआ इलायची या पोस्ते का दाना।

इलाही–(अ. पु.) ईश्वर।

–(वि.) ईश्वरीय।

इल्तिजा–(अ. पु.) निवेदन।

इल्तिमास–(अ. पु.) निवेदन।

इल्म–(अ. पु.) ज्ञान; विद्या।

इल्मी–(अ. वि.) ज्ञान या विद्या संबंधी।

इल्लत–(अ. स्त्री.) रोग; बीमारी। झंझट। दोष। कारण।

इल्ला–(अ. अव्य.) नहीं तो; अन्यथा।

इशरत–(अ. स्त्री.) सुखः भोग; विलास।

इशारा–(अ. पु.) संकेत। संक्षिप्त विवरण। सूक्ष्म आधार। गुप्त प्रेरणा।

इश्क़–(अ. पु.) प्रेम।

इश्तहार–(अ. पु.) विज्ञापन।

इश्तियालक–(अ. स्त्री.) उत्तेजना; बढ़ावा।

इश्फ़ाक़–(अ. पु.) दया करना। तरस।

इसबगोल–(फा. पु.) एक बीज जो विरेचक होता है।

इसरार–(अ. पु.) हठ; ज़ोर के साथ अनुरोध; आग्रह।

इसलाम–(अ. पु.) मुसलमानों का मत; मुसलमानी धर्म।

इसलामिया–(अ. वि.) इसलाम संबंधी।

इसलाह–(अ. स्त्री.) संशोधन; सुधार।

इस्तमरारी–(अ. वि.) नित्य; अविच्छिन्न; शाश्वत।

इस्तमरारी बंदोबस्त = जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें मालगुजारी सदा के लिये नियत कर दी जाती है।

इस्तहकाम–(अ पु) मजबूती, दृढता।

इस्तिंजा–(अ पु) पेशाब करने के बाद मिट्टी के ढेले से इंद्रिय की शुद्धि।

इस्तिकबाल–(अ पु) स्वागत करना।

इस्तिक़लाल–(अ पु) दृढता, स्थैर्य।

इस्तिखारा–(अ पु) भविष्य की कोई सूचना देने के लिये या आगम बताने के लिये ईश्वर से प्रार्थना, शकुन विचारना या देखना।

इस्तीफा–(अ पु) नौकरी का त्याग देना। त्यागपत्र।

इस्तेदाद–(अ स्त्री) लियाक़त, योग्यता।

इस्तेमाल–(अ पु) प्रयोग, उपयोग।

इस्म–(अ पु) नाम। नामपद, संज्ञा।

इहकाम–(अ पु) दृढ करना, स्थापन।

इहतियात–(अ स्त्री) सावधानी। बचाव, रक्षा।

इहतिमाम–(अ पु) प्रबंध, व्यवस्था। प्रयत्न, कोशिश।

इहाता–(अ पु) चहार दीवारी के बीच की भूमि, आवरण, प्रांगण।

ई

ईजा–(अ स्त्री) दुख, पीडा।

ईजाद–(अ पु) किसी नयी चीज या नयी तरकीब को प्रस्तुत करना, आविष्कार।

ईद–(अ स्त्री) मुसलमानों का त्यौहार।

ईदगाह–(फा स्त्री) ईद के दिन मुसलमानों के इकट्ठा होकर नमाज पढ़ने की जगह।

ईमान–(अ पु) धर्म निष्ठता। सत्य निष्ठता, सत्यता, प्रामाणिकता। विश्वास, साख। मन की अच्छी प्रवृत्ति।

ईमानदार–(फा वि) आस्तिक धर्म-निष्ठ। विश्वसनीय। सच्चा। लेन-देन या व्यवहार में सच्चा या खरा।

ईमानदारी–(फा स्त्री) आस्तिकत्व। विश्वास पात्रत्व, सत्यता।

ईरान–(फा पु) फारस देश।

ईरानी–(फा वि) फारस देश का। फारस का रहनेवाला, फारसी।

ईसवी–(अ वि) ईसा मसीह (क्राइस्ट) से संबंध रखनेवाला।

ईसा–(अ पु) ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक, "क्राइस्ट"।

ईसाई–(अ. वि.) ईसा का अनुगामी; "क्रिश्चियन"।

ईहाम–(अ. पु.) संदिग्धता; संदेह। संशय।

उ

उक़दा–(अ. पु.) गिरह; गाँठ।

उक़ाब–(अ. पु.) बड़ा गिद्ध; गरुड़।

उजरत–(अ. स्त्री.) मजदूरी; पारिश्रमिक। किराया; भाड़ा।

उजलत–(अ. स्त्री.) शीघ्रता; जल्दी; उतावली।

उज्र–(अ. पु.) बाधा; आपत्ति; आक्षेप।

उज्रदारी–(फा. स्त्री.) अदालत में किसी मामले के संबंध में कुछ उज्र या आक्षेप पेश करना।

उदू–(अ. पु.) दुश्मन; शत्रु।

उदूल–(अ. पु.) अवज्ञा करना; उल्लंघन करना।

उनसुर–(अ. पु.) तत्व; पंचभूतों में एक।

उन्नाब–(अ. पु.) एक तरह का बेर।

उन्नाबी–(अ. वि.) उन्नाब के रंग का; लाल मिश्रित काला।

उन्स–(अ. पु.) प्रेम; प्यार। स्नेह; लगन।

उफ़–(अ. अव्य.) आह! अफ़सोस!

उफ़क़–(अ. पु.) क्षितिज।

उफ़्तादगी–(फा. स्त्री.) नम्रता, विनय।

उफ़्तादा–(फा. वि.) (ज़मीन) जो बिना जोती हुई छोड़ दी गयी हो; परती।

उमरा–(अ. पु) "अमीर" का ब. रूप; प्रतिष्ठित लोग। सरदार।

उमूम–(अ. वि.) साधारण; सामान्य।

उम्दगी–(फा. स्त्री.) अच्छापन; उत्तमता; उत्कृष्टता।

उम्दा–(फा. वि.) अच्छा; भला; उत्तम।

उम्मत–(अ. स्त्री.) समाज; समिति। संतान; परिवार। शिष्यवर्ग; अनुगामी।

उम्मीद, उम्मेद–(फा. स्त्री.) आशा; भरोसा।

उम्मेदवार–(फा. पु.) आशा रखनेवाला। काम सीखने की आशा से किसी दफ्तर में बिना वेतन काम करने वाला आदमी, "अप्रेंटिस"। किसी पद पर चुने जाने के लिये प्रयत्न करनेवाला आदमी; अपेक्षक।

उम्मेदवारी–(फा. स्त्री) काम सीखने की आशा से किसी के यहाँ बिना वेतन

काम करना। उम्मेदवार होने की स्थिति या दशा। अपेक्षकत्व।

उम्र-(अ स्त्री) अवस्था, वयस। आयु, जीवनकाल।

उरूज-(अ पु) वृद्धि, बढ़ती।

उर्दू-(तु स्त्री) लश्कर। फारसी लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दी भाषा जिसमें फारसी और अरबी शब्द अधिक हों। उर्दू बाजार=लश्कर का बाजार। सब चीजें मिलनेवाला बाजार।

उर्फ़-(अ पु) उपनाम।

उर्स-(अ पु) मुसलमान साधुओं की निर्वाण तिथि।

उल्फत-(अ स्त्री) प्रेम, प्रीति।

उशवा-(अ पु) एक जड़ जो रक्तशोधक होती है, "नशारी"।

उश्शाक-(अ पु) "आशिक" का बहुव, प्रेमीगण।

उस्तात-(अ वि) प्रवीण।

उस्ताद-(फा पु) गुरु, अध्यापक। -(वि) निपुण, दक्ष। चालाक।

उस्तादी-(फा स्त्री) अध्यापक की वृत्ति या पदवी। निपुणता। चालाकी।

उस्तानी-(फा स्त्री) गुरुपत्नी। अध्यापिका। चालाक स्त्री।

उस्तरा, उस्तुरा-(फा पु) बाल मूँडने का तेज चाकू।

ऊ

ऊद-(अ पु) एक तरह का चंदन का पेड़, अगर का पेड़।

ऊदबत्ती-(अ स्त्री) अगर की बत्ती जिसे सुगंध के लिये जलाते हैं।

ऊदी-(अ वि) ऊद का रंग।

ए

एंच पेंच-(उ स्त्री) उलझन, झमेला। घुमाव, बखना। टेढ़ी चाल।

एकतारी-(फा वि) एक ही धन के आदमी, संदेह का एकोम।

एकतरफा-(फा वि) एक पक्ष का, एक तरफ का। पक्षपात का।

एकता-(फा वि) अद्वितीय, अनुपम।

एकबारगी-(फा क्रि वि) एक ही समय

में। अचानक; अकस्मात। बिलकुल।

एक़बाल–(अ. पु) प्रताप। सौभाग्य। अभ्युदय। स्वीकार।

एक़बालमंद–(फा. वि.) प्रतापी। भाग्यवान।

एकसर–(फा. वि.) बिलकुल; सारा।

एकसां–(फा. वि.) समान; बराबर।

एख़नी–(फा. स्त्री.) मांस का जूस; शोरवा।

एगाना–(फा. वि.) दे० "यगाना"।

एतक़ाद–(अ. वि.) विश्वास।

एतदाल–(अ. पु.) बराबरी; समानता।

एतबार–(अ. पु.) विश्वास; प्रतीति; साख।

एतमाद–(अ. पु.) किसी पर भरोसा करना; विश्वास करना।

एतराज़–(अ. पु.) विरोध, आक्षेप। समालोचना।

एलची–(तु. पु.) राजदूत।

एलचीगरी–(फा. स्त्री.) एलची का काम या पद; दूतत्व।

एलान–(अ. पु.) विज्ञापन; घोषणा।

एवज़–(अ. पु.) प्रतिफल। परिवर्तन। दूसरे के स्थान पर कुछ समय के लिये काम करनेवाला; स्थानापन्न।

एवज़ी–(अ. पु.) स्थानापन्न आदमी।

एहतियात–(अ. स्त्री.) सावधानी; होशियारी। परहेज; संयम।

एहसान–(अ. पु.) उपकार। कृतज्ञता।

एहसानमंद–(फा. वि.) कृतज्ञ; उपकार माननेवाला।

ऐ

ऐजन–(अ. अव्य) तथा; तथैव।

ऐन–(अ. वि.) ठीक, उपयुक्त। बिलकुल; संपूर्ण।

–(पु.) आँख।

ऐनक–(अ. स्त्री.) आँख में लगाने का चश्मा; उपनेत्र; "सुलोचन"।

ऐब–(अ. पु.) दोष; अवगुण।

ऐबजोई–(फा. स्त्री.) पराया ऐब ढूंढ निकालना, छिद्रान्वेषण।

ऐबी–(अ. वि.) बुरा; दुष्ट। त्रुटिपूर्ण। अंगहीन; विकलांक। जिसकी एक आँख फूट गयी हो; काना।

ऐयाम-(अ पु) दिन। काल। ऋतु, मौसिम।
ऐयार-(अ वि) चालाक, धोखेबाज।
ऐयारी-(अ स्त्री) चालाकी।
ऐयाश-(अ वि) बहुत आराम करने-वाला, विलासी। विषयी, लपट।
ऐयाशी-(अ स्त्री) विलास। विषया-सक्ति।
ऐरागैरा-(अ वि) बेगाना, अपरिचित आदमी। तुच्छ।
ऐश-(अ. पु) आराम, सुख। भोग-विलास।

ओ

ओ-(फा अव्य) और।
ओहदा-(अ पु) पद, पदवी।
ओहदेदार-(फा पु) पदाधिकारी, पदवी धर। अधिकारी।

औ

औकात-(अ पु) "वक्त" का ब० रूप, समय।
-(स्त्री) आर्थिक दशा।
औज-(अ पु) ऊँचाई।
औजार-(अ पु) हथियार, आयुध।
औरत-(अ स्त्री) स्त्री। पत्नी।
औलाद-(अ स्त्री) सन्तान, सन्तति। वंश परम्परा।
औलिया-(अ पु) "वली" का ब० रूप, मुसलमान योगी या सिद्ध।
औवल-(अ वि) दे० "अव्वल"।
औसत-(अ पु) समष्टि का सम विभाग, 'सरासरी"।
-(वि) माध्यमिक, साधारण।

क

कंगूरा–(फा. पु.) शिखर; चोटी। किले की दीवार में थोड़ी थोड़ी दूर पर बने हुए ऊँचे स्थान जहाँ से सिपाही खड़े होकर लड़ते हैं। कंगूरे के आकार का छोटा रवा (गहनों में)।

क़ंद–(फा. पु.) मिस्री।

क़ंदील–(अ. स्त्री.) मिट्टी, अभरक या काग़ज की बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है।

क़ंदीलिया–(अ. स्त्री.) वह ऊँचा धीरा-हर या स्तूप जिसके ऊपर रोशनी की जाती है।

कचकोल–(फा. पु.) नारियल का भिक्षापात्र; कपाल।

कज–(फा. पु.) टेढ़ापन; वक्रता। दोष।

क़ज़ा–(अ. स्त्री.) मौत; मृत्यु।

कज़ाक(तु. पु.) लुटेरा।

कज़ाकी–(फा.स्त्री.) लूट-मार। धोखे-बाज़ी।

कजावा–(फा. पु.) ऊँट की ज़ीन वा काठी।

क़ज़िया–(अ. पु) झगड़ा।

कजी–(फा. वि.) टेढ़ाई; वक्रता। दोष।

क़ज़्ज़ाक–(फा. पु.) लुटेरा; डाकू।

क़ज़्ज़ाकी–(फा. स्त्री.) डाकूपन।

क़त–(अ. पु.) देशी कलम की नोक की आड़ी काट। समाप्ति।

क़तई–(अ अव्य.) बिलकुल; नितांत।

क़तरा–(अ. पु.) बूंद।

कतली–(फा. स्त्री.) मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा।

क़ता–(अ. पु.) बनावट; आकार। ढंग। कपड़े की काट छांट।

कतान–(अ. पु.) एक प्रकार का पतला सूती कपड़ा।

कतार–(अ. स्त्री.) पंक्ति। श्रेणी। समूह।

क़त्ल–(अ. पु.) वध; हत्या।

क़त्लवाज़–(फा. पु.) वधिक।

क़द–(अ पु.) ऊँचाई। (आदमी की) लंबाई।

क़दम–(अ पु) पैर; पाँव। पैर का चिन्ह। चलने में एक पैर से दूसरे तक का अन्तर; पग। घोड़े की एक चाल।

क़दमचा–(फा. पु.) पाखाने में पैर रखने का स्थान; खुड्डी।

क़दमवाज़–(अ. वि) कदम की चाल चलनेवाला घोड़ा।

क़दमबोसी–(फ़ा. स्त्री.) क़दम चूमना; पाँव पड़ना; बहुत आदर करना।

कदर–(अ स्त्री) परिमाण, मात्रा। मान, प्रतिष्ठा। महत्व।

कदरदान–(फा पु) कदर करनेवाला, महत्व या मूल्य को जाननेवाला। गुणग्राही।

कदरदानी–(फा स्त्री) महत्व समझना। गुणग्राहकता।

कदा–(फा पु) घर, गाँव।

कदामत–(अ स्त्री) प्राचीनता, पुरानापन।

कदीम–(अ वि) पुराना, प्राचीन।

कदीमी–(अ वि) पुराना, पुरातन।

कदूरत–(अ स्त्री) मनमोटाव, वैमनस्य।

कद्दावर–(फा वि) बड़े डीलडौल का।

कद्दी–(अ वि) हठी।

कद्दू–(फा पु) एक तरह की तरकारी, लौकी।

कद्दूकश–(फा पु) पीतल की छेददार चौकी जिसपर कद्दू को रगड़ कर उसके छोटे छोटे टुकड़े करते हैं।

कद्दूदाना–(फा पु) पेठे के अन्दर के छोटे छोटे सफेद कीड़े जो मल के साथ गिरते हैं।

कनाअत–(अ स्त्री) संतोष, सब्र, संतुष्टता।

कनात–(तु स्त्री) मोटे कपड़े का परदा।

कनीज–(फा स्त्री) दासी, बाँदी, चेरी।

कफ–(फा पु) हथेली, करतल। फेन, झाग। श्लेष्म।

कफगीर–(फा पु) वह लम्बी छेददार कलछी जिससे दाल, घी आदि का झाग या फेन निकालते हैं।

कफन–(अ पु) वह कपड़ा जिसमें मुरदे को लपेट रखते हैं।

कफनखसोट–(उ पु) कंजूस, महा लोभी।

कफनखसोटी–(उ स्त्री) श्मशान में शव को आग देने के काम की मजदूरी जो कफन में बँधी रहती है और जिसे फाड़ कर डोम लोग अपनी मजदूरी ले लेते हैं। किसी तरह धन संग्रह करने की वृत्ति। कंजूसी, कृपणता।

कफनाना–(उ सक्रि) गाड़ने या जलाने के लिये मुर्दे को कफन में लपेटना।

कफनी–(उ स्त्री) वह कपड़ा जो मुरदे के गले में डालते हैं। फकीरों का बिना आस्तीन का लंबा अँगरखा।

कफस–(अ पु) पिंजरा। कबूतरों के रहने के लिये काठ का खानेदार संदूक, दरबा। बंदीगृह, कारागार। बहुत तंग जगह।

कबल–(अ अव्य) पहले, पूर्व।

कबा–(अ पु) लंबा अँगरखा।

कबाब–(अ पु) भूना हुआ मांस।

कबाबचीनी–(उ स्त्री) मिर्च की जाति

की एक लता जिसके गोल फल खाने में कड़ुए और ठंढे मालूम होते हैं।

कवावी–(अ. वि.) कबाब बेचनेवाला। कबाब खानेवाला; मांसाहारी।

क़वाला–(अ. पु.) ऋणपत्र; दानपत्र।

कवाहत–(अ. स्त्री.) बुराई; अमंगल। अड़चन; बाधा।

कवीर–(अ. वि) बड़ा; श्रेष्ठ।

–(उ. पु.) होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का अश्लील गीत।

क़बीला–(अ. पु.) कुटुंब; परिवार। पत्नी; स्त्री।

क़बुलवाना–(उ. सक्रि.) "क़बूलना" का प्रे० रूप।

कबूतर–(फा. पु) कपोत पक्षी।

कबूतरख़ाना–(फा. पु.) पालतू कबूतरों के रहने का काठ का खानेदार सन्दूक; दरबा।

कबूतरबाज़–(फा. वि.) कबूतर पालनेवाला।

कबूतरी–(फा. स्त्री) स्त्री जाति का कबूतर। नाचनेवाली; नर्त्तकी। सुंदर स्त्री।

कबूद–(फा. वि.) आसमानी, नीला।

क़बूल–(अ. पु.) स्वीकार; अंगीकार।

क़बूलना–(उ. सक्रि) स्वीकार करना; मंजूर करना।

क़बूलियत–(अ. स्त्री.) खेती करनेवाले की ओर से जमींदार को पट्टे की स्वीकृति में लिख कर दिया जानेवाला दस्तावेज।

क़बूली–(फा. स्त्री) चने की दाल की खिचड़ी।

क़ब्ज़–(अ. पु.) ग्रहण; पकड़; वश। मलबद्धता।

क़ब्ज़ा–(अ. पु.) किसी हथियार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है; मूठ। कुलावा; चूल। अधिकार; वश। भोग; मुक्ति।

क़ब्ज़ादार–(फा.पु.) वह अधिकारी जिसके हाथ में प्रबंध आदि हो। वह जिसके वश में कोई जमीन आदि हो; भोक्ता।

क़ब्ज़ादारी–(फा. स्त्री.) कब्जादार की स्थिति या हैसियत।

क़ब्ज़ियत–(अ स्त्री०) पाखाना साफ न होना; मलबद्धता।

क़ब्ज़ुलवसूल–(फा.पु.) वह कागज़ जिस पर वेतन पानेवालों की मरपाई लिखी हो।

क़ब्र–(अ. स्त्री.) वह गड्ढा जिसमें मुर्दे गाड़े जाते हैं; समाधि।

क़ब्रगाह–(फा. स्त्री.) समाधिभूमि।

क़ब्रिस्तान–(फा. पु.) वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं; समाधिभूमि।

कमगर-(उ पु) कमान बनानेवाला। मोच को ठीक करनेवाला। चित्रकार।
कमगरी-(उ स्त्री) कमान बनाने का धंधा। हड्डी बिठाने का काम। चित्र लिखने का काम या क्रिया, चित्रकला।
कमचा-(फा पु) बढ़ई का कमान की तरह का एक टेढ़ा औज़ार।
कमद-(फा स्त्री) फंदेदार रस्सी, पाश। फंदेदार रस्सी जिसे फेंक कर चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।
कम-(फा वि) थोड़ा, न्यून। बुरा। -(क्रिवि) प्रायः नहीं।
कमअसल-(फा वि) वर्णसंकर।
कमख़ाब-(फा पु) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
कमची-(तु स्त्री) पतली लचीली टहनी जिससे टोकरी बनाई जाती है। तीली। पतली छड़ी। कोड़ा, चाबुक।
कमज़ोर-(फा वि) दुर्बल।
कमज़ोरी-(फा स्त्री) दुर्बलता, अशक्तता।
कमतर-(फा वि) बहुत कम, अति न्यून।
कमतरीन-(फा वि) थोड़े से थोड़ा, बहुत थोड़ा।
कमती-(उ स्त्री) कमनी, घटती। -(वि) कम, थोड़ा।
कमनैत-(फा पु) धनुर्द्धर, धनुर्विद्या जाननेवाला।
कमनैती-(फा स्त्री) धनुर्विद्या।
कमबख़्त-(फा वि) भाग्यहीन, अभागा।
कमबख़्ती-(फा स्त्री) दुर्भाग्य, अभाग्य।
कमयाब-(फा वि) दुर्लभ, विरल।
कमर-(फा स्त्री) शरीर का मध्य भाग, कटि। किसी लंबी चीज़ के बीच का पतला भाग।
कमर-(फा पु) चाँद।
कमरकोट-(उ पु) वह छोटी दीवार जो चहारदीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें छेद होते हैं। रक्षार्थ बनी हुई दीवार।
कमरतोड़-(उ पु) कुश्ती का एक पेंच।
कमरपेच, कमरबंद-(फा पु) कमर बाँधने का लंबा कपड़ा, पटुका। नाड़ा, इज़ारबन्द। -(वि) मुस्तैद, सन्नद्ध।
कमरबल्ला-(उ पु) वह लकड़ी जो खपरे की छाजन में आड़ी लगाई जाती है। कमरकोट।
कमरबस्ता-(फा वि) कटिबद्ध, सन्निद्ध।
कमरिया-(फा पु) एक प्रकार का बौना हाथी।
कमसमझी-(उ स्त्री) मूर्खता।
कमसिन-(फा वि) कम उम्र का बालक।

कमसिनी–(फा. स्त्री.) बाल्यावस्था; लड़कपन।

कमान–(फा. स्त्री.) धनुष। इन्द्रधनुष। द्वार के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग; मेहराव।

–(अं.* स्त्री) आज्ञा; हुक्म। फौजी काम की आज्ञा।

कमानगर–(फा. पु.) दे० "कमंगर"।

कमानचा–(फा. पु.) छोटी कमान। सारंगी बजाने की कमानी। मेहराब।

कमानिया–(फा. पु.) धनुर्द्धर; तीरंदाज।

–(वि) कमान के आकार का; धन्वाकार।

कमानी–(फा. स्त्री.) लोहे के तार जैसे कोई लचीली वस्तु जो इस प्रकार बिठाई हो कि दाब पड़ने से दब जाय और हटने पर फिर अपनी जगह पर आ जाय। झुकाई हुई कोई लचीली तीली। एक प्रकार की चमड़े की पेटी जिसे आंत उतरनेवाले रोगी कमर में लगाते हैं।

कमाल–(अ. पु.) परिपूर्णता। दक्षता। कारीगरी। अद्भुत कार्य।

–(वि.) संपूर्ण। सर्वोत्तम। अत्यन्त।

कमालियत–(अ. स्त्री.) परिपूर्णता। निपुणता।

कमी–(फा. स्त्री.) लोप; न्यूनता। हानि।

क़मीज़–(अ. स्त्री.) एक प्रकार का कुरता।

कमीना–(फा. वि.) नीच।

कमीनापन–(उ. पु.) नीचता।

कमीनी–(फा. स्त्री.) नीचता।

क़य–(अ. स्त्री.) वमन; "वांति"।

क़याम–(अ. पु.) ठहराव; टिकने का भाव या स्थान। विश्राम का स्थान। ठौर-ठिकाना; स्थिरता।

क़यामगाह–(फा.स्त्री.) ठहरने का स्थान। बंदरगाह।

क़यामत–(अ. स्त्री.) कुछ मतों के अनुसार वह दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का फैसला होगा। प्रलय। हलचल; खलबली।

क़यास–(अ. पु.) अनुमान। अटकल। ध्यान।

क़यासी–(अ.वि.) अनुमानित, अंदाज का।

करगह–(पंजाबी. पु.) वह स्थान जिसमें जुलाहे कपड़ा बुनते समय पैर लटका कर बैठते हैं। कपड़ा बुनने का यंत्र। जुलाहों का कारखाना।

क़रनाय–(फा. स्त्री) तुरही।

करबला–(अ. पु.) अरब का वह उजाड़ मैदान जहाँ हुसैन मारे गये थे। वह

स्थान जहाँ मुहरम में हुसैन की क़ब्र होती है। वह स्थान जहाँ पानी न मिले।

करम–(अ पु) मेहरबानी, कृपा। उदारता।

करमकल्ला–(उ पु) एक प्रकार की गोभी, पातगोभी।

करश्मा–(फा पु) चमत्कार, अद्भुत काय।

करावत–(अ स्त्री) समीपता, निकटत्व। दोस्ती, मित्रता। सबध, नाता।

करावा–(अ पु) शीशे का बड़ा बरतन जिसमें रम, कषाय आदि रखते हैं।

करावीन–(तु स्त्री) छोटी बदूक।

करामात–(अ स्त्री) चमत्कार, अद्भुत, व्यापार।

करामाती–(उ वि) अद्भुत काम करने वाला, सिद्ध।

करार–(अ पु) स्थिरता। धैर्य। सतोष। आराम। वादा, वचन।

करारनामा–(फा पु) प्रतिज्ञापत्र।

करीना–(अ पु) ढंग, तौर। गति। क्रम। काम करने की योग्यता।

करीब–(अ क्रिवि) समीप, पास। लगभग।

करीम–(अ वि) कृपालु, दयानिधि।
–(पु) ईश्वर।

कर्ज, कर्ज़–(अ पु) ऋण।

कर्जदार–(फा पु) कर्ज लेनेवाला, ऋणी।

कलदर–(अ पु) मुसलमान जाति का वैरागी। रीछ और बदर नचानेवाला।

कलदरा–(अ पु) एक तरह का रेशमी कपड़ा।

कल–(अ स्त्री) चैन, शांति।

कलई–(अ स्त्री) विलायती लोहा, रांगा, "टिन"। रांगे का लेप जो पीतल के बरतन आदि में लगाया जाता है। मुलम्मा, "गिलट"। बाहरी चमक दमक। चूना। चूने का लेप।

कलईगर–(फा पु) कलई करनेवाला।

कलईदार–(फा वि) कलई किया हुआ, जिस पर रांगे का लेप चढ़ा हो।

कलक–(अ पु) अशांति, विषाद। तकलीफ, सकट।

कलगी–(तु पु) चिड़ियों के सिर पर की चोटी। शिखर। सिर का एक आभूषण।

कलदार–(उ वि) जिसमें कल या यत्र लगा हो, पेचदार।
–(पु) सरकारी रुपया।

कलभृत–(उ पु) दे० "कालबुद"।

कलम–(अ पु) लेखनी। किसी पेड़ की टहनी को दूसरी जगहपर बिठाने के लिये काटी जाय। बालों की कूची। नक्काशी

आदि करने का औजार। रफ्टिक। वे बाल जो हजामत बनवाने में कनपटियों के पास छोड दिये जाते हैं।

क़लमकारी–(फा. स्त्री.) कलम से किया हुआ काम।

क़लमतराश–(फा. पु.) कलम बनाने की छुरी।

क़लमदान–(फा. पु.) कलम, दवात आदि रखने की छोटी संदूकची।

क़लमबंद–(फा. वि.) लिपिबद्ध; लिखित।

क़लमशोरा–(फा. पु.) साफ किया हुआ शोरा।

क़लमा–(अ. पु.) वाक्य। वेदवाक्य। वह वाक्य जो मुसलमान धर्म का मूल मंत्र है। याने–"लाइलाह इल्लिल्लाह, मुहम्मद उर् रसूलिल्लाह", जिसका अर्थ है "खुदा के सिवाय कोई नहीं है; मुहम्मद उसका दूत है।"

कलमी–(फा. वि.) लिखित।

कलाँ–(फा. वि.) बड़ा। दीर्घाकार का।

कलाकंद–(फा. पु.) एक तरह की बरफी।

कलाबत्तू–(तु. पु.) सोने चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढाकर बटा जाय।

कलाबाज़–(उ.वि.) नट क्रिया करने वाला।

कलाबाज़ी–(उ. स्त्री.) सिर नीचे करके उलट जाना।

कलाम–(अ. पु.) वाक्य। कथन; उक्ति। भाषण; व्याख्यान। प्रतिज्ञा। आक्षेप।

कलिया–(अ. पु.) पकाया हुआ माँस।

कली–(उ. स्त्री.) पत्थर या सीप आदि का फुका हुआ टुकडा जिससे चूना बनाया जाता है।

क़लील–(अ. पु.) थोडा, कम।

कलीसा–(फा. पु.) ईसाई और यहूदियों का देव मदिर, गिरजाघर।

क़लींच–(तु. वि) लुच्चा। दरिद्र।

कल्ला–(फा. पु.) जबडा। जबडे के नीचे का स्थान।

कल्लादराज़–(फा. वि.) बढ बढ कर बातें करनेवाला; उद्दड।

क़वानीन–(अ. पु.) "क़ानून" का ब० रूप।

क़वाम–(अ. पु.) पकाकर शहद की तरह गाढा किया हुआ रस। चाशनी; शीरा।

क़वायद–(अ. स्त्री.) नियम। व्यवस्था। व्याकरण। युद्ध के नियम। सिपाहियों का शस्त्राभ्यास।

क़वायफ़–(अ. पु.) वृत्तांत, समाचार।

क़व्वाल–(अ. पु.) कौवाली गानेवाला

कश–(फा. पु.) खिचाव। हुक्के का दम; फूँक।

कश-मकश–(फा. स्त्री.) खींचातानी; धक्कमधक्का; भीड। पसोपेश, सोच-विचार।

कशिश–(फा स्त्री) आकर्षण, खिचाव।
कशीदा–(फा पु) कपड़े पर सूई और तागे से निकाले हुए बेलबूटे।
कश्ती–(फा स्त्री) नौका। पान आदि बाँटने का छिछला बरतन। शतरंज की एक गोटी, हाथी।
कसब–(अ पु) परिश्रम। व्यवसाय, धंधा। वेश्यावृत्ति।
कसबा–(अ पु) बड़ा गाँव, छोटा शहर।
कसबाती–(उ वि) कसबे का। कसबे का रहनेवाला।
कसबी–(उ स्त्री) वेश्या। व्यभिचारिणी स्त्री।
कसम–(अ स्त्री) शपथ।
कसर–(अ स्त्री) कमी। नष्ट, घाटा। दोष। मनमोटाव।
कसरत–(अ स्त्री) व्यायाम। अधिकता, बाहुल्य।
कसरती–(अ वि) व्यायाम करनेवाला, बलिष्ठ।
कसाइन–(अ स्त्री) "कसाइ" का स्त्री० रूप।
कसाई–(अ पु) पशुओं को मार कर उनका माँस बेचनेवाला। वध करनेवाला, घातक।
–(वि) निर्दयी।
कसाईबाड़ा–(उ पु) मांस के लिये पशुओं का वध करने का स्थान।
कसीदा–(अ स्त्री) स्तुति या निंदा की कविता।
कसीर–(अ पु) भूल या अपराध करनेवाला, अपराधी।
कसूर–(अ पु) अपराध, दोष।
कसूरमंद, कसूरवर–(फा वि) अपराधी, दोषी।
कस्द–(अ पु) इरादा, विचार।
कस्साब–(अ पु) दे० "कसाई"।
कहकहा–(अ पु) जोर की हँसी, अट्टहास।
कहगिल–(फा स्त्री) दीवारों में लगाने का मिट्टी का गारा।
कहत–(अ पु) क्षाम, दुर्भिक्ष।
कहर–(अ पु) विपत्ति।
–(वि) भयंकर।
कहरी–(अ वि) आफत ढानेवाला।
कहरुवा–(फा पु) तृणग्राही, अंबर। एक तरह का सुगंधित गोंद।
कहवा–(अ पु) एक पौधे का बीज जिसके चूर्ण को चाय की तरह पीते हैं, "काफी"।
काँजी हाउस–(अ * स्त्री) वह मकान जहाँ खेती आदि को हानि पहुँचानेवाले चौपाये बंद किये जाते हैं, "पौंड"।

कांसा–(फा. पु) भीख माँगने का ठीकरा।

कांसागर–(उ. पु) कांसा या कसकुट नामक धातु का काम करनेवाला।

काकरेजी–(फा. पु.) लाल मिश्रित काला रंग।

काका–(फा. पु.) पिता का भाई।

काकुल–(फा. पु.) कनपटी पर लटकते हुए लंबे बाल; लट।

काग़ज़–(फा. पु.) सन, रुई, पटुए आदि को सडा कर बनाया हुआ महीन पत्र जिस पर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं; "पेपर"। प्रमाणपत्र; दस्तावेज़। समाचारपत्र, अख़बार।

काग़ज़ात–(फा. पु) "काग़ज़" का ब० रूप; कागज-पत्र; चिट्ठी-पत्री।

काग़ज़ी–(फा. वि.) कागज का बना हुआ। जिसका छिलका कागज की तरह पतला हो। लिखित; लिखा हुआ। कागज बेचनेवाला।

क़ाज़ी–(अ. पु.) मुसलमानों के धर्म-संबंधी न्यायाधिपति।

कातिब–(अ. पु) लेखक।

कातिल–(अ. वि.) घातक।

क़ानून–(अ. पु) राजनियम; विधि। न्यायशास्त्र।

क़ानूनगो–(फा.पु.) मालगुजारी के हिसाब की जाँच करनेवाला अधिकारी।

क़ानूनदाँ–(फा. पु) कानून जाननेवाला; वकील। न्यायशास्त्रज्ञ।

क़ानूनन्–(अ. क्रिवि.) कानून के अनुसार

क़ानूनिया–(अ. वि.) कानून जाननेवाला; वकील। न्यायशास्त्रज्ञ। तर्क करनेवाला।

क़ानूनी–(अ. वि.) राजनीतिसंबंधी। नियमानुसार या विधि संबंधी। तकरार करनेवाला।

क़ाफ़िया–(अ. पु.) अंत्यानुप्रास; तुक।

काफ़िर–(अ वि.) मुसलमान धर्म को न माननेवाला। म्लेच्छ; नास्तिक। निर्दय।

क़ाफ़िला–(अ. पु.) यात्रियों का समूह।

काफ़ी–(अ. वि.) पर्याप्त; यथेष्ट।

काफ़ूर–(अ. पु) कर्पूर।

काफ़ूरी–(अ. वि.) कर्पूर का।

क़ाब–(तु. स्त्री.) बडी रिकाबी।

काबा–(अ. पु) मुसलमानों का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो मक्के में है।

क़ाबिज़–(अ. वि.) अधिकारी। मलबद्धक।

क़ाबिल–(अ. वि.) योग्य, अर्ह। विद्वान।

क़ाबिलीयत–(अ.स्त्री.) योग्यता। पांडित्य।

कावुक–(फा. स्त्री.) दे० "कबूतरख़ाना"

क़ाबू–(तु. पु) वश; अधिकार।

कामत–(अ. पु.) कद; ऊँचाई।

कामदार–(उ. पु.) कारिंदा; कार्यकार।

कामयाब–(फा वि) सफल। कृतकार्य।
कामयाबी–(फा स्त्री) सफलता।
कामिल–(अ वि) पूर्ण, सारा। शास्त्रज्ञ, व्युत्पन्न। ऋषि, ज्ञानी।
कायदा–(अ पु) नियम। रीति। विधि। क्रम।
कायम–(अ वि) स्थिर। स्थित। नियत। कायममुकाम = दूसरे के स्थान पर कुछ समय के लिये काम करनेवाला, स्थानापन्न।
कायल–(अ वि) माननेवाला, स्वीकार करनेवाला। जो दूसरे की बात की यथार्थता को स्वीकार कर ले।
कारकुन–(फा पु) प्रबंध करनेवाला, व्यवस्थापक। गुमाश्ता।
कारखाना–(फा पु) वह स्थान जहाँ व्यापार के लिये कोई चीज बनाई जाती है, शिल्पशाला। कारबार, व्यवसाय।
कारगर–(फा वि) प्रभावजनक, गुणकारी।
कारगुजार–(फा वि) कर्त्तव्यपरायण। कार्यदक्ष।
कारगुजारी–(फा स्त्री) कर्त्तव्यपरायणता। कार्यदक्षता।
कारचोब–(फा पु) लकड़ी का एक चौकटा जिस पर कपड़ा तानकर जरदोजी का काम बनाया जाता है। जरदोजी या कशीदे का काम करनेवाला।
कारचोबी–(फा वि) जरदोजी का। –(स्त्री) जरदोजी।
कारतूस–(पुर्त्त पु) गोली बारूद भरी एक नली जिसे टोंटेवाली बंदूकों में भरकर चलाते हैं।
कारपरदाज–(फा वि) व्यवस्थापक, कार्यकर्त्ता।
कारपरदाजी–(फा स्त्री) दूसरे की ओर से किसी बात की व्यवस्था करना। कार्यतत्परता।
कारबार–(फा पु) व्यवसाय, वृत्ति। कामकाज।
कारयारी–(फा वि) काम धंधा करनेवाला। कारकुन।
कारवाई–(फा स्त्री) कार्यवाही, कार्य। कार्यक्रम। कार्यतत्परता। गुप्त प्रयत्न।
कारवाँ–(फा पु) यात्रियों का समूह।
कारसाज–(फा वि) बिगड़े काम को सँभालनेवाला। चालाक।
कारसाजी–(फा स्त्री) काम पूरा उतारने की युक्ति। गुप्त कार्यवाही।
कारस्तानी–(फा स्त्री) करतूत। चालबाजी
कारामद–(फा वि) सार्थक, कृतकार्य।
कारिंदा–(फा पु) दूसरे की ओर से काम करनेवाला; प्रतिनिधि। गुमाश्ता।
कारी–(फा वि) करनेवाला।

कारीगर–(फा. पु.) शिल्पकार; शिल्पी। –(वि.) दक्षहस्त; निपुण।

कारीगरी–(फा. स्त्री.) अच्छे अच्छे काम बनाने की कला; निर्माणकला। मनोहर रचना। सुंदर काम।

क़ारूरा–(अ. पु.) वह शीशी जिसमें रोगी का मूत्र परीक्षा करने के लिये रखा जाता है। मूत्र।

कालबुद–(फा. पु.) पंजर; ढाँचा। लकड़ी का वह ढाँचा जिस पर रख कर जूता, टोपी या इस तरह की दूसरी चीजें बनाई जाती हैं।

कालिब–(अ पु) टीन या लकड़ी का गोल ढाँचा जिस पर चढ़ाकर टोपियां दुरुस्त की जाती हैं। शरीर; देह। दिल; मन।

क़ालीन–(अ. पु.) मोटा बिछावन; फर्श।

कावा–(फा. पु.) एक वृत्त में चक्कर मारना।

काश–(फा. अव्य.) ईश्वर करे; क्या ही अच्छा होता; वांछा यह है।

काशाना–(फा. पु) छोटा घर; झोंपड़ा।

काश्त–(फा. पु.) कृषि। किसी दूसरे की जमीन पर खेती करने का किसानों का अधिकार।

काश्तकार–(फा. पु.) कृषक। वह जिसने लगान देकर किसी की जमीन पर खेती करने का अधिकार प्राप्त किया हो।

काश्तकारी–(फा. स्त्री.) कृषि; कृषक का काम। काश्तकार का काम। काश्तकार का अधिकार।

कासा–(फा. पु.) प्याला। कटोरा। नारियल के खोपड़े का पात्र जिसे सन्यासी लोग उपयोग में लाते हैं।

क़ासिद–(अ पु.) संदेश या समाचार ले जानेवाला; हरकारा; दूत। इरादा करनेवाला। सीधी राह चलनेवाला।

काहकशां–(फा. पु.) आकाशगंगा।

काहिल–(अ. वि.) आलसी।

काहिली–(अ. स्त्री.) आलस्य।

काहिश–(फा. स्त्री.) घट जाना, क्षीण हो जाना।

क़िता–(अ. पु.) सिलाई के लिये कपड़े की काट छांट। ढंग। संख्या। प्रदेश।

किताब–(अ. स्त्री.) पुस्तक। बही; खाता।

किताबत–(अ. स्त्री.) लिखना।

किताबी–(अ. वि.) किताब का; पुस्तक संबंधी।

किनाया–(अ. पु.) मर्म, रहस्य।

किनारदार–(उ. वि.) किनारेवाला कपड़ा।

किनारा–(फा. पु.) तट; तीर। प्रांत। कपड़े आदि का छोर। हाशिया। पार्श्व।

किनारी–(फा. स्त्री.) कपड़ों के किनारे का सुनहला या रुपहला गोटा।

किफायत–(अ स्त्री) पर्याप्ति। मितव्यय। बचत।

किफायती–(अ वि) मितव्यय करने वाला।

किबला–(अ पु) पश्चिम दिशा जिस ओर मुँह करके मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं। मक्का शहर। पूज्य व्यक्ति। पिता।

किबलगाह–(फा स्त्री) किबला।

किबलानुमा–(फा पु) एक प्रकार का चुबक जो पश्चिम दिशा को दिखलाता है, दिग्दर्शक यंत्र।

किमार–(अ पु) जूआ, द्यूत।

किमारखाना–(फा पु) जूआ खेलने का स्थान।

किमारबाज–(फा वि) जूआ खेलने वाला, जुआरी।

किमारबाजी–(फा स्त्री) जुए का खेल। जुआरीपन।

किमाश–(अ पु) ढंग, रीति। गजीफे का एक रंग।

किरात–(अ स्त्री) जवाहिरात का एक तौल जो लगभग चार जौ के बराबर होता है।

किराया–(अ पु) भाड़ा।

किरायेदार–(फा वि) किसी चीज को भाड़े पर लेनेवाला।

किला–(अ पु) दुर्ग। व्यूह।

किलादार–(फा वि) किले की रक्षा करनेवाला, दुर्ग रक्षक।

किलाबंदी–(फा स्त्री) दुर्ग-निर्माण। व्यूह-रचना। शतरंज के खेल में बादशाह को सुरक्षित घर में रखना।

किलावा–(फा पु) हाथी के गले की वह रस्सी जिसमें पैर लगाकर महावत उसे चलाता है।

किल्लत–(अ स्त्री) न्यूनता, तंगी।

किशमिश–(फा स्त्री) सूखा अंगूर।

किशमिशी–(फा वि) जिसमें किशमिश हो। किशमिश के रंग का।

किश्त–(फा स्त्री) चतुरंग में बादशाह का किसी मोहरे की घात में पड़ना, शह।

किश्ती–(फा स्त्री) नाव। छिछली थाली। चतुरंग की एक गोटी। हाथी।

किसबत–(अ स्त्री) नाइ की थैली।

किस्त–(अ स्त्री) थोड़ा-थोड़ा करके ऋण चुकाना। ऋण का वह अंश जो किसी निश्चित समय पर दिया जाय।

किस्तबंदी–(फा स्त्री) थोड़ा थोड़ा कर के रुपया अदा करने का ढंग।

किस्तवार–(फा वि) किस्त के ढंग से। हर किस्त पर।

किस्म–(अ स्त्री) भेद, तरह। ढंग, रीति।

क़िस्मत–(अ. स्त्री.) प्रारब्ध, विधि, भाग्य।

क़िस्मतवर–(फा. वि) भाग्यवान।

क़िस्सा–(अ. पु.) कथा, कहानी। वृत्तांत। झगड़ा।

कीना–(फा. पु.) द्वेष, वैर।

क़ीफ़–(अ. स्त्री.) चोंगी, नली, "फनल"।

क़ीमत–(अ. स्त्री) मूल्य; दाम।

क़ीमती–(अ. वि) बहुमूल्य।

क़ीमा–(अ. पु) गोश्त के छोटे टुकड़े।

कीमिया–(अ. स्त्री.) रसायन।

कीमियागर–(फा. पु.) रसायन विद्या जाननेवाला।

कीमुख़्त–(फा. पु.) गधे या घोड़े का कमाया हुआ दानेदार चमड़ा।

कीसा–(फा. पु.) थैली।

कुंज–(फा. पु.) कोना। वे बेलबूटे जो दुशाले के कोनों पर बनाये जाते हैं।

कुंद–(फा. वि) कुंठित। मंद।

कुंदा–(फा पु.) लकड़ी का बड़ा टुकड़ा। लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ते हैं या किसान घास काटते हैं। बंदूक का पिछला भाग। वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं। दस्ता; मूठ।

कुजा–(फा. अव्य.) किस जगह, कहाँ।

कुज्जा–(फा. पु.) मिट्टी का प्याला। मिट्टी की बड़ी गोल डली, ढेला।

कुतबा–(अ. पु.) लिखी हुई चीज़।

कुतुर–(अ. पु.) व्यास रेखा। (गणित)

कुतुब–(अ. पु.) ध्रुव नक्षत्र।

कुतुब–(अ. स्त्री.) "किताब" का ब० रूप, पुस्तकें।

कुतुबख़ाना–(फा. पु.) पुस्तकालय, ग्रन्थालय।

कुतुबफरोश–(फा. पु.) पुस्तकविक्रेता।

कुतुबनुमा–(अ. पु.) उत्तर दिशा बतलानेवाला यंत्र; दिग्दर्शक यंत्र।

कुदरत–(अ. स्त्री.) शक्ति। सहज गुण; स्वभाव। प्रकृति। माया। रचना।

कुदरती–(अ. वि.) स्वाभाविक। प्राकृतिक। ईश्वरीय।

कुदूरत–(फा. पु.) मलिनता। मनोमालिन्य।

कुफ्र–(अ. पु.) मुसलमानी मत से भिन्न अन्य मत। मुसलमानी धर्म के विरुद्ध बात।

कुफ़्ल–(अ. पु) ताला।

कुमक–(तु. स्त्री.) सहायता। सहारा। पक्षपात।

कुमकी–(तु. वि.) कुमक का।

–(स्त्री.) हाथियों के पकड़ने में सहायता करने के लिये सिखाई हुई हथिनी।

कुमकुमा–(तु. पु.) लाख का बना हुआ

एक प्रकार का पोला गोला जिसमें अबीर और गुलाल भरकर होली में लोग एक दूसरे पर मारते हैं। छोटा लालटेन। काँच के वे रंगबिरंगे पोले गोले जो अलकर के लिये घर के अदर छत से लटकाये जाते हैं। तग मुँह का छोटा लोटा।

कुमरी–(अ स्त्री) कबूतर की जाति का एक छोटा पक्षी जिसके गले में हँसली या कठी होती है।

कुमाश–(अ पु) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

कुम्मैत–(तु पु) लाल के रग का घोड़ा।

कुरता–(तु पु) एक पहनावा जो सिर डाल कर पहना जाता है, "शर्ट"।

कुरती–(अ स्त्री) छोटा कुरता। स्त्रियों का एक पहनावा, चोली।

कुरबान–(अ पु) समर्पण, भेंट, चढ़ावा।

कुरबानी–(अ स्त्री) बलि, भेंट की चीज। बलिदान।

कुरसी–(अ स्त्री) एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमें पीठे की ओर सहारे के लिये पटरी लगी रहती है। वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनाई जाती है। पीढ़ी, वश परपरा।

कुरसीनामा–(फा पु) वशावली, वशवृक्ष।

कुरान–(अ पु) मुसलमानों का धर्मग्रथ।

कुर्क–(तु वि) जब्त। आक्रमण।

कुर्कनामा–(फा पु) जब्त करने के लिये अनुमतिपत्र, जब्ती का परवाना।

कुर्की–(तु स्त्री) जब्त किया जाना। अपहरण।

कुलग–(फा पु) बगुला।

कुलफत–(अ स्त्री) दुख, कष्ट।

कुलफा–(फा पु) एक प्रकार का साग।

कुलह–(फा स्त्री) टोपी। शिकारी चिड़ियों की आँख पर का ढक्कन, अँधियारी।

कुलाग–(फा पु) जगली कौआ।

कुलाबा–(अ पु) लोहे की खूँटी या मेख जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा जाता है, चूल।

कुलाह–(फा स्त्री) एक प्रकार की ऊची टोपी, कनटोप।

कुली–(तमिल पु) बोझ आदि ढोने वाला मजदूर।

कुल्लियात–(अ स्त्री) लेख, ग्रथ। समष्टि, सब के सब।

कुशादगी–(फा स्त्री) विस्तार।

कुशादा–(फा वि) खुला हुआ। विस्तृत।

कुश्ता–(फा पु) धातुओं का भस्म।

कुश्ती–(फा स्त्री) मुष्टियुद्ध, मल्लयुद्ध।

कुश्तीबाज़–(फा. वि.) मल्लयुद्ध करनेवाला। पहलवान।

कुहराम–(अ. पु) विलाप; रोना-पीटना। हाहाकार; खलबली।

कू, कूए–(फा. स्त्री.) गली; कूचा।

कूच–(तु. पु.) प्रस्थान।

कूचा–(फा. पु.) छोटा रास्ता; गली।

कूज़ा–(फा. पु.) मिट्टी का एक प्रकाका बरतन, गागर।

कून–(फा. स्त्री) गुद; मलद्वार। पृष्ठ; नितंब।

कूवत–(अ. स्त्री.) जोर; शक्ति। बल; पुष्टि।

क़ै–(अ. स्त्री.) वमन।

क़ैद–(अ. स्त्री.) बंधन। कारावास। प्रतिबंध।

क़ैदक–(अ. स्त्री.) कागज की पट्टी जिसमें कागज आदि रखे जाते हैं।

क़ैदख़ाना–(फा. पु.) कारागार।

क़ैदी–(अ. पु.) वह जिसे क़ैद की सजा दी गई हो। बंदी।

क़ैफ़–(अ. पु.) नशा।

क़ैफ़ियत–(अ. स्त्री) वर्णन। विवरण। आश्चर्यजनक दृश्य या घटना।

क़ैफ़ी–(अ. वि.) मतवाला; नशेबाज।

कोका–(तु. स्त्री.) धाय की संतान; दूध-भाई या दूध-बहन।

कोचक–(फा. वि.) छोटा; कनिष्ठ।

कोतल–(फा. पु) जलूस के लिये सजाया हुआ घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो। –(वि) खाली।

कोताह–(फा. वि.) अल्प। कम।

कोताही–(फा. स्त्री) त्रुटि। न्यूनता।

कोफ़्त–(फा. पु) पीसना। मुसीबत; कष्ट। रंज; विषाद।

कोफ़्ता–(फा. पु.) मांस का एक व्यंजन।

कोवा–(फा. पु.) गदा के आकार का डंडा जिससे कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाई जाती है; दुरमुस।

कोरकसर–(उ. स्त्री.) ऐब और कमी; दोष और त्रुटि। अधिकता या न्यूनता; न्यूनाधिक्य।

कोरनिश–(तु. स्त्री.) झुक झुक कर सलाम करना।

क़ोरमा–(तु. पु.) भुना हुआ मांस।

कोशिश–(फा. स्त्री.) प्रयत्न।

कोह–(फा. पु) पर्वत; पहाड़।

कोहकन–(फा. वि.) पहाड़ खोदनेवाला।

कोहनूर–(फा. पु.) नूर का पहाड़। एक बहुत बड़ा प्राचीन और प्रसिद्ध हीरा।

कोहान–(फा. पु.) ऊँट की पीठ पर का कूबड़।

कोहिस्तान–(फा. पु.) पहाड़ी देश।

कोही–(फा वि) पहाड़ी।
कौम–(अ स्त्री) जाति।
कौमियत–(अ स्त्री) जातीयता।
कौमी–(अ वि) जाति संबंधी, जातीय।
कौल–(अ पु) कथन। कहावत। प्रतिज्ञा, प्रण।
कौवाल–(अ पु) भगवत्प्रेम भरा हुआ कीर्तन गानेवाला, कीर्तनकार।
कौवाली–(अ स्त्री) एक तरह का भक्तिपूर्ण कीर्तन। कीर्तनकार की वृत्ति।
कौस–(अ स्त्री) कमान, धनुष। परिधि का एक अंश, वृत्तखंड।
कौसकुजह–(अ स्त्री) इंद्रधनुष।

ख

खंजर–(फा पु) कटार।
खंजरी–(फा स्त्री) धारीदार कपड़ा।
खंदक–(अ स्त्री) शहर के चारों ओर की खाई। बड़ा गड्ढा।
खंदा–(फा पु) हंसी।
खंजानची–(फा पु) कोशाधिकारी। कोषाध्यक्ष।
खजाना–(अ पु) कोश। भंडार।
खत–(अ पु) पत्र, चिट्ठी। लिखावट। रेखा। दाढ़ी के बाल। हजामत।
खत ओ किताबत = पत्र-व्यवहार।
खतना–(अ पु) मुसलमानों की एक रस्म जिसमें लड़के के पुरुषेंद्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है।
खतम–(अ वि) पूरा, समाप्त।
खतर, खतरा–(अ पु) भय। आशंका।
खतरनाक–(फा वि) भयानक।
खता–(अ स्त्री) अपराध। भूल। धोखा।
खतावर–(फा वि) अपराधी।
खदशा–(अ पु) डर, भय।
खफकान–(अ पु) पागलपन।
खफकानी–(अ वि) पागल।
खफगी–(फा स्त्री) अप्रसन्नता। क्रोध।
खफा–(अ वि) अप्रसन्न। क्रुद्ध।
खफीफ–(अ वि) थोड़ा। अल्प। तुच्छ। लघु।
खबर–(अ स्त्री) समाचार। वृत्तांत। सूचना। संदेश। सुधि। पता।
खबरदार–(फा वि) होशियार, सावधान।

ख़बरदारी–(फ़ा. स्त्री.) सावधानी। चेतावनी।

ख़बीस–(अ. पु.) दुष्ट; धूर्त्त।

ख़ब्त–(अ. पु.) पागलपन।

ख़ब्ती–(अ. वि.) पागल।

ख़म–(फ़ा. पु.) टेढ़ापन।

ख़मदम–(फ़ा. पु.) दे० "दमख़म"।

ख़मसा–(अ. पु.) एक प्रकार की ग़ज़ल। पचेंद्रिय।

ख़मीर–(अ. पु.) गूधे हुए आटे का सड़ाव। कटहल, अनन्नास आदि का सड़ाव जो तंबाकू में डाला जाता है। स्वभाव।

ख़मीरा–(अ. वि.) ख़मीर उठाकर बनाया हुआ।

ख़यानत–(अ. स्त्री) परिहरण। गबन; धनापहरण। बेईमानी।

ख़रख़शा–(फ़ा. पु.) झगड़ा। झंझट। भय।

ख़रगोश–(फ़ा. पु.) खरहा।

ख़रचना–(उ. सक्रि.) व्यय करना। व्यवहार में लाना।

ख़रबूजा–(फ़ा. पु.) ककड़ी की जाति का एक फल।

ख़रमस्ती–(फ़ा. स्त्री.) दुष्टता; नटखटी।

ख़राद–(फ़ा. पु) एक औज़ार जिस पर चढ़ा कर लकड़ी, धातु आदि को सतह चिकनी और सुडौल की जाती है।

–(स्त्री.) बनावट; गढ़न।

ख़रादना–(उ. सक्रि.) ख़राद पर चढ़ा कर किसी वस्तु को साफ़ और सुडौल करना।

ख़राब–(अ. वि.) बुरा। बिगड़ा हुआ। पतित।

ख़राबा–(फ़ा. पु.) उजड़ा हुआ मकान; खंडहर।

ख़राबात–(फ़ा. पु.) शराबख़ाना। जुआरियों का अड्डा।

ख़राबी–(फ़ा. स्त्री.) बुराई। अवगुण। दुर्दशा।

ख़राश–(फ़ा. स्त्री.) छीलन। खरोंच।

ख़रीता–(अ. पु.) थैली। लेब। बड़ा लिफ़ाफ़ा।

ख़रीती–(उ. स्त्री.) छोटा ख़रीता।

ख़रीद–(फ़ा. स्त्री.) मोल लेने की क्रिया। मोल ली हुई वस्तु।

ख़रीदना–(उ. सक्रि.) मोल लेना; क्रय करना।

ख़रीदार–(फ़ा. पु.) ख़रीदने वाला; ग्राहक। इच्छुक।

ख़रीफ़–(अ. स्त्री.) वह फ़सल जो आषाढ़ और श्रावण में काटी जाय।

खर्च, खर्चा–(फा पु) व्यय। खपत। किसी काम में लगाया हुआ धन।
खर्ची–(उ स्त्री) वह धन जो वेश्या को उसके साथ संभोग करनेवाला देता हो।
खर्चीला–(उ वि) बहुत व्यय करनेवाला।
खलस्त–(अ वि) सुष्ट।
खलत–(अ पु) मिल जाना, मिलना।
खलल–(अ पु) बाधा, विघ्न।
खलास–(अ वि) मुक्त।
खलासी–(उ स्त्री) मुक्ति, छुटकारा।
खलिश–(फा स्त्री) पीड़ा, वेदना।
खलीक़–(अ पु) सज्जन, शील सकोचवाला।
खलीज–(अ स्त्री) खाड़ी।
खलीफा–(अ पु) परपरागत स्थान या गद्दी पर रहनेवाला, अनुयायी। पाठशाला के किसी वर्ग का वह प्रौढ़ या बड़ा विद्यार्थी जो अध्यापक की अनुपस्थिति में और विद्यार्थियों की देख-रेख करने के लिये नियुक्त हो, "मानिटर"। प्रधान, मुखिया।
–(उ पु) बावर्ची, रसोइया। नाई।
खल्क़–(अ पु) सृष्टि। जगत, ससार। जीव, प्राणी।
खलील–(अ वि) सच्चा दोस्त।
खलेरा–(उ वि) मौसेरा।
खस–(फा स्त्री) गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगधित जड़।
खसखाना–(फा पु) खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर।
खसम–(अ पु) शत्रु।
–(उ पु) पति, मर्द।
खसरा–(उ पु) पटवारी की बही।
खसलत–(अ स्त्री) स्वभाव।
खसी–(अ पु) बधिया। नपुसक। बकरा।
खसीस–(अ वि) कृपण, कजूस।
खसूसियत–(अ स्त्री) विशेषता।
खस्ता–(फा वि) बहुत थोड़ी दाब मे टूट जानेवाला, भुरभुरा। घायल।
खस्सी–(अ पु) दे० "खसी"।
ख़ाँदगी–(फा स्त्री) पढ़ा लिखा होने की दशा, अक्षरज्ञता।
ख़ाँदा–(फा वि) पढ़ा लिखा, शिक्षित।
खाक–(फा स्त्री) धूल। मिट्टी।
खाकरुब–(फा पु) पाखाना आदि साफ़ करनेवाला, भंगी।
खाका–(फा पु) चित्र आदि का डौल। ढाँचा। वह कागज जिसमें किसी काम के व्यय का अदाज लिखा जाय। मसौदा।
खाकी–(फा वि) मिट्टी के रग का। बिना सींची हुई (भूमि)।

ख़ातिम–(फ़ा. वि.) ख़त्म करनेवाला।

ख़ातिमा–(फ़ा. पु) समाप्ति। अंत। उपसंहार। मृत्यु। पारायण।

ख़ातिर–(अ. स्त्री.) आदर; सन्मान। मन; दिल।

–(अव्य.) वास्ते; लिये।

ख़ातिरख़ाह–(फ़ा. क्रिवि.) इच्छानुसार।

ख़ातिरजमा–(अ. स्त्री) शांति; चैन।

ख़ातिरदारी–(फ़ा. स्त्री.) आदर सत्कार; आवभगत।

ख़ातिरनिशां–(फ़ा. वि.) दिल में गड़ा हुआ।

ख़ान–(तातार. पु.) सरदार। अमीर।

ख़ानगी–(फ़ा. वि) अपने निज का। घरेलू।

–(स्त्री.) वेश्या।

ख़ानदान–(फ़ा. पु.) वंश। कुल।

ख़ानदानी–(फ़ा. वि.) ऊँचे वंश का; कुलीन। वंशपरंपरागत; पैतृक।

ख़ानसामां–(फ़ा. पु.) रसोइया।

ख़ाना–(फ़ा. पु.) घर: निवास। किसी चीज के रखने की कोठरी। विभाग। सारिणी का विभाग। कोष्ठक।

ख़ानाजंगी–(फ़ा. स्त्री) आपस की लड़ाई।

ख़ानातलाशी–(फ़ा. स्त्री.) किसी चुराई हुई चीज के लिये मकान के अंदर छानबीन करना।

ख़ानादारी–(फ़ा. स्त्री.) गृहस्थी।

ख़ानाबदोश–(फ़ा. वि.) जिसका घर-बार न हो।

ख़ाम–(फ़ा. वि.) कच्चा; अपक्व। अनुभवहीन।

ख़ामी–(फ़ा. स्त्री.) कच्चापन। अनुभवहीनता।

ख़ामोश–(फ़ा. वि.) चुप; मौन।

ख़ामोशी–(फ़ा. स्त्री) मौन।

ख़ाया–(फ़ा. पु.) अंडकोश।

ख़ार–(फ़ा. पु.) कांटा। दाह; ईर्ष्या।

ख़ारिज़–(अ. वि.) विभिन्न; पृथक। बाहर किया हुआ। जिसकी सुनाई न हो।

ख़ारिश, ख़ारिश्त–(फ़ा. स्त्री.) खुजली।

ख़ालसा–(अ. वि.) जिस पर एक का अधिकार हो, एकाधिकार का। शुद्ध।

ख़ाला–(अ. स्त्री) मां की बहन; मौसी।

ख़ालिक़–(अ. पु.) सृष्टिकर्ता।

ख़ालिस–(अ. वि.) विशुद्ध।

ख़ाली–(अ. वि.) जिसके भीतर का स्थान शून्य हो; रिक्त। जिसपर कुछ न हो। जिसमें कोई विशेष वस्तु न हो। रहित, विहीन। जिसे कुछ काम न हो; बेकार। जो व्यवहार में न हो। व्यर्थ; निष्फल।

–(क्रिवि.) केवल; सिर्फ़।

ख़ालू–(उ. पु.) ख़ाला का पति; मौसा।

खाविंद–(फा पु) भर्ता, पति।
खास–(अ वि) विशेष। निजका, निजी।
खासमुंशी–(फा पु) निज का मुंशी, "प्राइवेट सेक्रेटरी"।
खासगी–(अ वि) निज का।
खासदान–(फा पु) पान रखने का बरतन, पानदान।
खासबरदार–(फा पु) वह सिपाही जो राजा की सवारी के ठीक आगे आगे चलता है।
खासा–(उ पु) राजा का भोजन, राजभोज। राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी। एक प्रकार का पतला कपड़ा।
खासियत–(अ स्त्री) गुण। स्वभाव, प्रकृति।
खिजां–(फा स्त्री) पतझड़ की ऋतु, शरद ऋतु।
खिजाब–(अ पु) सफेद बालों को काला करनेवाली औषधि, केश कल्प।
खिज्र–(अ पु) एक पैगंबर का नाम।
खिताब–(अ पु) उपाधि, पदवी।
खित्ता–(अ पु) प्रदेश।
खिदमत–(फा स्त्री) सेवा, शुश्रूषा।
खिदमतगार–(फा पु) सेवक।
खिदमतगारी–(फा स्त्री) सेवकाई।
खिदमती–(फा वि) सेवा करनेवाला। सेवा के बदले में जो प्राप्त हुआ हो। सेवा संबंधी।
खिरद–(फा स्त्री) बुद्धि।
खिरदमंद–(फा वि) बुद्धिमान।
खिरमन–(फा पु) कटी फसल का बड़ा ढेर, खलिहान।
खिराज–(अ पु) मालगुजारी, राजस्व। वह धन जो चक्रवर्ती को उसके अधीनस्थ छोटे छोटे राजा हर साल देते हैं, कर।
खिलअत–(अ स्त्री) वह वस्त्र आदि जो किसी को सम्मानार्थ किसी बड़े राजा की तरफ से दिया जाता है।
खिल्कत–(अ स्त्री) संसार, जगत। सृष्टि। भीड़।
खिलवत–(अ स्त्री) एकांत। शून्य या निर्जन स्थान।
खिलवतखाना–(फा पु) वह स्थान जहां कोई गुप्त सलाह हो, एकांत मंत्रणा स्थान।
खिलाफ–(अ वि) विरुद्ध, विपरीत।
खिलाफत–(अ स्त्री) मुसलमानों के धार्मिक नेता का पद।
खिसारा–(फा पु) घाटा, नष्ट।
खुगीर–(फा पु) दे० "खोगीर"।

खुतबा–(अ. पु.) भाषण । प्रशंसा ।

खुतूत–(अ. पु.) "ख़त" का व० रूप; पत्र ।

खुद–(फा. अव्य.) स्वयं ।

खुदकुशी–(फा. स्त्री.) आत्महत्या ।

खुदग़रज़–(फा. वि.) स्वार्थी ।

खुदग़रज़ी–(फा. स्त्री) स्वार्थता ।

खुदवखुद–(फा. क्रिवि.) आप ही आप; स्वयं। अनायास ।

खुदराय–(फा. वि.) स्वेच्छाचारी ।

खुदा–(फा. पु) ईश्वर ।

खुदाई–(फा. स्त्री) ईश्वरता । सृष्टि ।

खुदावंद–(फा. पु.) स्वामि ।

खुदी–(फा. स्त्री.) अहकार । अभिमान; घमंड ।

खुद्दाम–(अ. पु.) "ख़ादिम" का व० रूप; सेवकगण ।

खुनकी–(फा. स्त्री.) ठंढक ।

खुनुक–(फा. वि.) ठंढा । खुश ।

खुफ़िया–(अ. वि) गुप्त ।

खुम–(फा. पु.) शराब रखने का पीपा ।

खुमख़ाना–(फा. पु.) शराबख़ाना ।

खुमार–(अ. स्त्री) नशा; मद । नशा उतरने के समय की हल्की थकावट । वह शिथिलता जो रात भर जागने से होती है ।

खुरज़ी; खुरज़ीन–(फा. स्त्री.) घोड़े, बैल आदि पर सामान रखने का झोला; बडा थैला ।

खुरमा–(अ. पु.) एक प्रकार का पकवान।

खुरशीद–(फा. पु) सूर्य ।

खुराक–(फा. पु.) भोजन ।

खुराकी–(फा. स्त्री.) भोजन का दाम, खिलाई ।

खुराफ़ात–(अ. स्त्री.) रद्दी बात; अंड-बंड । गाली-गलौज । झगडा; बखेडा ।

खुर्द–(फा. वि.) छोटा ।

खुर्दनोश–(फा. पु.) खान-पान ।

खुर्दबीन–(फा. पु.) सूक्ष्म-दर्शक यंत्र ।

खुर्दबुर्द–(फा. क्रिवि) नष्ट-भ्रष्ट ।

खुर्दा–(फा. पु.) छोटी-मोटी चीज । रेजगारी; "चिल्लर" ।

खुर्रम–(फा. वि.) प्रसन्नचित्त ।

खुलासा–(अ. पु.) सारांश ।

खुलूस–(अ. पु.) निष्कपटता; खरापन ।

खुश–(फा. वि.) प्रसन्न । अच्छा ।

खुशक़िस्मत–(फा. वि.) भाग्यवान ।

खुशक़िस्मती–(फा. स्त्री.) सौभाग्य ।

खुशख़त–(फा. पु.) सुंदर अक्षर लिखनेवाला ।

खुशख़बरी–(फा. स्त्री.) शुभ समाचार ।

खुशदिल–(फा. वि) प्रसन्न चित्त । हँसोड, विनोदी ।

खुशनसीब-(फा वि) भाग्यवान।
खुशनसीबी-(फा स्त्री) सौभाग्य।
खुशनुमा-(फा वि) सुंदर।
खुशबू-(फा स्त्री) सुगंध, सौरभ।
खुशबूदार-(फा वि) सुगंधयुक्त।
खुशहाल-(फा वि) कुशल, सुखी।
खुशामद-(फा स्त्री) प्रसन्न करने के लिये झूठी प्रशंसा, स्तोत्र, चापलूसी।
खुशामदी-(फा वि) खुशामद या झूठी प्रशंसा करनेवाला, चापलूस।
खुशी-(फा स्त्री) प्रसन्नता।
खुश्क-(फा वि) सूखा।
खुश्की-(फा स्त्री) रूखापन, शुष्कता। स्थल या भूमि।
खुश्कसाली-(फा स्त्री) अकाल, दुर्भिक्ष।
खुसिया-(अ पु) कटकोश।
खूखार-(फा वि) खून पीनेवाला, हिंस्र। क्रूर। भयंकर।
खूरेज-(फा वि) खून गिरानेवाला, हिंसक।
खून-(फा पु) रक्त। वध, हत्या। खून खराबी = मारकाट।
खूनी-(फा पु) हत्यारा, घातक। अत्याचारी।
खूब-(फा वि) अच्छा।
—(क्रिवि) अच्छी तरह से।
खूबरू-(फा वि) सुंदर मुखवाला।
खूबसूरत-(फा वि) सुन्दर।
खूबसूरती-(फा स्त्री) सुंदरता।
खूबानी-(फा स्त्री) दे० "जरदालू"।
खूबी-(फा स्त्री) भलाई, अच्छाई। गुण, विशेषता।
खेमा-(अ पु) डेरा।
खैयाम-(अ पु) खेमा गाड़नेवाला।
खैर-(फा स्त्री) कुशल, क्षेम।
—(अव्य) कुछ परवा नहीं, जाने दो। अच्छा, अस्तु।
खैर आफियत-(फा स्त्री) कुशल मंगल, कुशल क्षेम।
खैरख्वाह-(फा पु) भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।
खैरख्वाही-(फा स्त्री) शुभचिंतन, मंगल कामना।
खैरात-(अ स्त्री) दान धर्म।
खैराती-(अ वि) दानी, दानशील। धर्मार्थ किया जानेवाला। याचक।
खैरियत-(फा स्त्री) कुशल क्षेम। कल्याण, भलाई।
खोगर-(फा वि) अभ्यस्त, आदी।
खोगीर-(फा पु) वह ऊनी कपड़ा जो घोड़ों के चारजामे के नीचे लगाया जाता है। जीन, चारजामा।

ख़ोजा–(फा. पु.) दे० "ख़्वाजा"।

ख़ोद–(फा. पु.) युद्ध में पहनने का लोहे का टोप, शिरस्त्राण।

ख़ोल–(फा. पु.) तकिये आदि के ऊपर चढ़ाने की थैली।

ख़ोली–(फा. स्त्री.) दे० "ख़ोल"।

ख़ौफ़–(अ. पु.) भय; डर।

ख़ौफ़नाक–(फ. वि.) भयकर।

ख़्याल–(अ. पु.) ध्यान। विचार। कल्पना। भाव। आदर। स्मरण; स्मृति।

ख़्यालात–(अ. पु.) "ख़्याल" का व० रूप।

ख़्वाजा–(फा. पु) मुसलमान बादशाहों के अंत पुर में काम करनेवाला नपुंसक। सरदार; अमीर। फकीर।

ख़्वाजासरा–(फा. पु) अत.पुर में काम करनेवाला नपुंसक भृत्य।

ख़्वान–(फा. पु.) थाल।

ख़्वान्चा–(फा. पु.) वह थाल जिसमें भोजन की सामग्रियाँ भरी रहती हैं।

ख़्वाब–(फा. पु.) निद्रा। स्वप्न।।

ख़्वार–(फा. वि.) खराब। निकृष्ट। पीनेवाला।

ख़्वारी–(फा. पु.) खराबी। निकृष्टता।

ख़्वास्त–(फा. पु.) इच्छा। प्रार्थना।

ख़्वास्तगार–(फा. पु.) इच्छुक।

ख़्वाह–(फा. अव्य.) या; अथवा।

ख़्वाहमख़्वाह–(फा. क्रिवि.) चाहे या न चाहे; बलात्; हठात्।

ख़्वाहाँ–(फा. वि.) इच्छुक।

ख़्वाहिश–(फा. स्त्री.) इच्छा; अभिलाषा।

ख़्वाहिशमंद–(फा. पु.) इच्छुक; अभिलाषी।

ग

गंजीफ़ा–(फा. पु.) एक खेल जो आठ रंग के छियानवे (९६) पत्तों से खेला जाता है।

गंदगी–(फा. स्त्री.) अशुद्धता। मैलापन; मलिनता। मल; गलीज।

गंदला–(उ. वि) मैला कुचैला।

गंदा–(फा. वि.) मैला। अशुद्ध। निकृष्ट; घृणित।

गंदुम–(फा. पु.) गेहूँ।

गंदुमी–(फा. वि.) गेहूँ के रंग का।

गज़–(फा. पु) छत्तीस (३६) इंच की एक माप। लोहे या लकड़ी का वह

छड़ जिससे पुराने ढग की बदूक भरी जाती है।

गजक–(फा पु) कबाब, पापड़ आदि चटपटी चीज जो शराब पीने के बाद मुँह का स्वाद बदलने के लिये खायी जाती है, चाट।

गज़ब–(अ पु) कोप। आपत्ति। अंधेर, अन्याय। विलक्षण बात।

गजल–(फा स्त्री) शृंगार-रस की छोटी कविता।

गजी–(फा पु) मोटा देशी कपड़ा।

गदर–(अ पु) हलचल, ऊधम। बगावत, विद्रोह।

गदा–(फा पु) भिक्षुक, फकीर।

गदाई–(फा स्त्री) भीख माँगना, याचना।

गद्दीनशीन–(उ वि) सिंहासनारूढ़। उत्तराधिकारी।

गनी–(अ वि) धनी।

गनीम(अ पु) डाकू। शत्रु, वैरी।

गनीमत–(अ स्त्री) लूट का माल। मुफ्त का माल। संतोष की बात। सौभाग्य।

गफलत–(अ स्त्री) असावधानी। भूल, अज्ञान।

गबन–(अ पु) किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को खा लेना, धनापहरण।

गबरू–(फा वि) उभड़ती यौवन का, तरुण। भोला भाला, सीधा।

गबरून–(फा पु) एक तरह का मोटा कपड़ा।

गब्र–(फा पु) पारसी धर्म का मनुष्य। वह जो मुसलमान न हो, काफिर।

गम–(अ पु) दुख, शोक। चिंता।

गमख्वार गमखोर–(फा वि) सहने वाला, सहनशील। मित्र।

गमखोरी–(उ स्त्री) सहनशीलता, सहिष्णुता।

गमगीन–(फा वि) उदास, व्यथित।

गमजा–(फा पु) तिरछी चितवन, कटाक्ष। प्रेम दृष्टि।

गमनाक–(फा वि) दुखभरी।

गमी–(अ स्त्री) उदासी, खिन्नता। किसी की मृत्यु पर शोक प्रकट करना। मृत्यु।

गमगुसार–(फा वि) दुख में सहानुभूति रखनेवाला, दुःख का साथी।

गर–(फा अव्य) अगर।

–(प्रत्य) कोई काम करनेवाला। जैसे–बाजीगर, कलईगर।

गरक–(अ वि) दे० "गर्क"।

गरज–(अ पु) आशय, तात्पर्य। आवश्यकता। चाह, इच्छा।

–(क्रिवि) अंत को। सारांश यह कि, अथवा।

गरज़मंद-(फ़ा. वि.) जिसे आवश्यकता हो; जरूरतवाला। चाहनेवाला; इच्छुक; अभिलाषी।

गरज़ी-(फ़ा. वि.) दे० "गरज़मंद"।

गरदन-(फ़ा. स्त्री.) धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग, ग्रीवा; कंठ। बरतन आदि का ऊपरी भाग।

गरदनियाँ-(उ. स्त्री.) किसीको निकाल कर बाहर करने के लिये उसके गलेपर हाथ लगाना; अर्द्धचंद्र प्रयोग।

गरदा-(फ़ा. पु.) दे० "गर्द"।

गरदान-(फ़ा. वि.) घूम फिरकर एक ही स्थान पर आनेवाला।

-(पु.) शब्दों का रूप चलाना या रूप-साधन। (व्याकरण)

गरदानना-(उ. सक्रि.) शब्दों का रूप चलाना या साधना। बारबार कहना, [illegible] गिनना; मानना।

गरम-(फ़ा. वि.) [illegible]; [illegible]; [illegible]। [illegible]; [illegible]। [illegible], तीव्र। [illegible]। [illegible] हो। जोश [illegible]; उत्साहपूर्ण।

गरम मसाला-(फ़ा. पु.) [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]।

गरमाई-(फ़ा. [illegible]) गरमी।

गरमा गरम-(फ़ा. वि.) बहुत गरम; अत्युष्ण।

गरमा गरमी-(उ. स्त्री.) जोश।

गरमाना-(उ. अक्रि.) गरम पड़ना; उष्ण होना। उमंग पर आना। आवेश में आना; क्रोध करना। कुछ देर लगातार दौड़ने या परिश्रम करने पर घोड़े आदि पशुओं का तेज़ी पर आना।

-(सक्रि.) गरम करना।

गरमाहट-(उ. स्त्री.) गरमी।

गरमी-(फ़ा. स्त्री.) ताप; जलन। तेज़ी; तीक्ष्णता। आवेश; क्रोध। जोश। कड़ी धूप के दिन; ग्रीष्म ऋतु। एक रोग जो प्रायः दुष्ट मैथुन से उत्पन्न होता है; फ़िरंग रोग।

ग़रारा-(अ. पु.) कंठ में पानी या दवा डालकर गरगर शब्द करके कुल्ली करना।

ग़रीब-(अ. वि.) परदेशी। अनाथ; दीन। दरिद्र; निर्धन। नम्र।

ग़रीबनवाज़-(फ़ा. वि.) दीन दुखियों पर दया करनेवाला, दयालु।

ग़रीबपरवर-(फ़ा. वि.) दीन दुखियों को पालनेवाला; दीनबंधु।

ग़रीबी-(उ. स्त्री.) दीनता। दरिद्रता।

गरेबान-(फ़ा. पु.) अंगरखे, कुरते आदि का वह भाग जो गले पर पड़ता है।

गर्क–(अ वि) डूबा हुआ। विलुप्त, नष्ट।
गर्काब–(फा वि) पानी में डूबा हुआ।
गर्का–(फा स्त्री) डूबने की क्रिया या भाव, डूबना। बाढ़, जल प्रवाह। पानी के नीचे होनेवाली भूमि। नीची भूमि।
गर्द–(फा स्त्री) धूल।
गर्दखोर, गर्दखोरा–(फा वि) जो धूल, मिट्टी आदि पड़ने से जल्दी मैला या खराब न हो।
–(पु) पाँव पोंछने का टाट या बिछावन, पायदाज।
गर्दिश–(फा पु) घुमाव, चक्कर। विपत्ति।
गर्रा–(फा पु) घमंड।
गलत–(अ वि.) अशुद्ध। प्रमाणरहित, मिथ्या। असत्य।
गलत फहमी = भूल से किसी बात को और का और समझना, अन्यथा समझना, भ्रम।
गलता–(अ पु) एक प्रकार का कपड़ा जिसका ताना रेशम का और बाना सूत का होता है। मकान का कंगूरा या *कारनिस।
गलतान–(फा वि) लुढ़कता हुआ, लोटता हुआ।
गलती–(अ स्त्री) अशुद्धि, भूल-चूक।
गलीचा–(फा पु) मोटे तागों का बुना हुआ मोटा और भारी बिछावन जिसपर रंग बिरंग के बेल बूटे बने रहते हैं, रंग कंबल।
गलीज–(अ वि) मैला, गंदला। अशुद्ध, अपवित्र।
–(पु) कूड़ा करकट। गंदी वस्तु। मल, अमेध्य।
गलेबाज–(उ वि) जिसका कंठ या स्वर मधुर हो, सुरीला।
गल्ला–(फा पु) झुंड, चौपायों का झुंड।
गल्ला–(अ पु) फसल, उपज। अनाज। वह धन जो दूकान पर नित्य की बिक्री से मिलता हो।
गवारा–(फा वि) मनभाता, अनुकूल। अंगीकार करने योग्य।
गवाह–(फा पु) वह मनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो। साक्षी।
गवाही–(फा स्त्री) साक्षी का कथन या प्रमाण, साक्ष्य।
गश–(फा पु) मूर्छा।
गश्त–(फा पु) टहलना, घूमना, भ्रमण। पहरे के लिये किसी स्थान के चारों ओर या शहर की गली कूचों में पहरेदार का घूमना। दौरा।
गश्ती–(फा पु) घूमनेवाला।

–(स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री।

गांज–(फा. पु.) राशि; ढेर।

गांजना–(उ. सक्रि.) ढेर लगाना।

गाज़ा–(फा. पु.) वह लेप या उबटन जो सौंदर्य आदि को बढाने के लिये बदन पर मलने के काम में आती है।

ग़ाज़ी–(अ. पु.) मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्म के लिये काफिर या विधर्मियों से युद्ध करे। वीर।

ग़ाफ़िल–(अ. वि) बेसुध। असावधान; अजाग्रत। अकर्मण्य।

गाम–(फा. पु.) कदम; पाँव। पग।

ग़ायब–(अ. वि.) लुप्त; अंतर्धान। छिपा हुआ; गुप्त।

ग़ायबाना–(फा. क्रिवि) गुप्त रीति से।

ग़ार–(अ. पु.) गहरा गड्ढा। गुफा।

ग़ारत–(अ. वि.) नष्ट।

ग़ालिब–(अ. वि) जीतनेवाला; विजेता। श्रेष्ठ; उत्कृष्ट।

गावकुशी–(फा. स्त्री.) गोवध।

गावज़बान–(फा. स्त्री.) एक बूटी; भूतांकुश।

गावतकिया–(फा. पु) बडा तकिया जिससे कमर लगाकर लोग फर्श पर बैठते हैं; मसनद।

गावदुम–(फा. वि.) गाय की पूंछ की तरह जो ऊपर से पतला होता आया हो। चढाव-उतारवाला।

ग़ाशिया–(अ. पु.) जीन के ऊपर ढकने का कपडा।

ग़िज़ा–(अ. स्त्री.) खाद्य पदार्थ; भोजन।

गिरजा–(पुर्त्त. पु.) ईसाइयों का प्रार्थना मंदिर; "चर्च"।

गिरजाघर–(उ. पु.) दे० "गिरजा"।

गिरफ़्त–(फा. स्त्री.) पकडने का भाव; ग्रास। पकड़; वश। दोष का पता लगाने का तरीका।

गिरफ़्तार–(फा. वि.) जो पकडा, कैद किया या बाँधा गया हो।

गिरफ़्तारी–(फा. स्त्री.) बंधन; कैद। गिरफ्तार होने का भाव या क्रिया।

गिरवी–(फा. वि.) बंधक में रखा हुआ; रेहन।

गिरवीदार–(फा. पु.) वह व्यक्ति जिसके यहां कोई वस्तु गिरवी रखी हो।

गिरह–(फा. स्त्री) ग्रंथि; गांठ। जेब। दो ग्रंथियों के जुडने का स्थान। एक गज का सोलहवां भाग। नट या खिलाडी का सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाना।

गिरहकट–(उ. वि.) चोरी करने के लिये जेब या गांठ में बँधा हुआ माल काटनेवाला।

गिरहबान–(फा पु) एक तरह का कबूतर जो उड़ते उड़ते सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलटता रहता है।

गिरां–(फा वि) महँगा। भारी। अप्रिय।

गिरानी–(फा स्त्री) महँगापन, महँगी। अकाल, दुर्भिक्ष। अभाव, अप्राप्यता। पेट का भारी हो जाना। बच्चों का अजीर्ण के कारण होनेवाला पाखाना।

गिरामी–(फा वि) वृद्ध, बूढ़ा।

गिरिया–(फा पु) रोना पीटना, शोक।

गिरो–(फा वि) दे० "गिरवी"।

गिर्द–(फा पु) चक्कर, गोल।
–(अव्य) चारों ओर।
गर्द गिर्द = आसपास।

गिर्दाब–(फा पु) भँवर।

गिर्दावर–(फा पु) घूमनेवाला, भ्रमण करनेवाला। घूम घूम कर काम की जाँच करनेवाला कर्मचारी।

गिल–(फा स्त्री) मिट्टी। गारा।

गिलकार–(फा पु) गारा लगानेवाला या "पलस्तर" करनेवाला आदमी।

गिलकारी–(फा स्त्री) गिलकार का काम।

गिलम–(फा स्त्री) ऊन का बना हुआ नरम और चिकना गद्दा या बिछावन। नर्म मुलायम बिछौना।
–(वि) कोमल, नरम।

गिला–(फा पु) शिकायत, उलहना। निंदा।

गिलाफ–(अ पु) कपड़े की बड़ी थैली जो तकिये, रजाई आदि के ऊपर चढ़ा दी जाती है। कपड़े का कोश या आवरण। बड़ी रजाई। म्यान।

गिलोय–(फा स्त्री) एक मूलिका, गुडूची।

गिलोला–(फा पु) मिट्टी का छोटा गोला जो गुलेल से फेंका जाता है।

गीती–(फा स्त्री) संसार, जगत्।

गीदी–(फा स्त्री) डरपोक, कायर। मूर्ख।

गीर–(फा प्रत्य)-वाला।

गुचा–(फा पु) कली। नाच रंग, भोग विलास।

गुंजाइश–(फा स्त्री) अँटने की जगह। अवकाश, अवसर। सुभीता, सुगमता।

गुंजान–(फा वि) घना, अविरल।

गुंबज–(फा पु) दे० "गुंबद"।

गुंबद–(फा पु) देवालयों या मसजिदों की गोल और ऊँची छत।

गुजर–(फा पु) गति, पहुँच। पहुँच, प्रवेश।
–(स्त्री.) जीवन निर्वाह, कालक्षेप।

गुजरगाह–(फा पु) मार्ग।

गुज़रना–(ड. अक्रि.) समय का व्यतीत होना। बीतना। किसी स्थान से होकर आना या जाना। मर जाना। निर्वाह होना। निभना।

गुज़र बसर–(फा. स्त्री) जीवन निर्वाह; कालक्षेप।

गुज़रान–(फा. स्त्री.) कालक्षेप।

गुज़श्ता–(फा. वि.) बीता हुआ; गत। व्यतीत।

गुज़ार–(फा. पु.) अदा करना, चुकाना। चलना।

गुज़ारना–(ड. सक्रि.) बिताना। दिन काटना। पहुँचाना। पेश करना।

गुज़ारा–(फा. पु.) निर्वाह; कालक्षेप। जीविका, वृत्ति। महसूल या चुंगी वसूल करने का स्थान।

गुदाज़–(फा. वि.) पिघला हुआ, द्रवीभूत।

गुदाम–(अं. पु.) कोठी; उद्याण।

गुनहगार–(फा. वि.) पापी। दोषी। अपराधी।

गुनहगारी–(फा. स्त्री) अपराध।

गुनाह–(फा. पु.) पाप। दोष। अपराध।

गुनाही–(फा. वि.) दे० "गुनहगार"।

गुफ़्तगू–(फा. स्त्री.) बातचीत; सलाप।

गुबार–(अ. पु.) धूल। मन में दबाया हुआ क्रोध, दुख, द्वेष आदि।

गुम–(फा. वि.) छिपा हुआ; गुप्त। अप्रसिद्ध। खोया हुआ; लुप्त।

गुमनाम–(फा वि.) अप्रसिद्ध। अज्ञात। नामरहित।

गुमटी–(फा. स्त्री) मकान के ऊपरी भाग की वह छत जो सब से ऊपर उठी हुई होती है; छोटा गुंबद।

गुमराह–(फा. वि.) बुरे मार्ग में चलने वाला; दुर्मार्गी। भूला भटका हुआ।

गुमान–(फा. पु.) अनुमान; अटकल। घमंड; अहंकार। लोगों की बुरी धारणा। अपयश।

गुमानी–(फा. वि.) घमंडी।

गुमाश्ता–(फा. पु.) बड़े व्यापारी की ओर से खरीदने और बेचने के लिये नियुक्त मनुष्य; "एजंट"। साहूकारों का हिसाब-किताब लिखनेवाला; मुनीम।

गुमाश्तागीरी–(फा. स्त्री.) गुमाश्ते का पद या काम।

गुम्मट–(फा. पु.) दे० "गुमटी"।

गुम्मा–(ड. वि.) बात को बखूबी समझ कर अनजान हो जानेवाला; घुन्ना।

गुरगाबी–(फा. पु.) एक प्रकार का जूता।

गुरदा–(फा. पु.) मूत्राशय; मूत्रपिंड। साहस।

गुरुब–(अ पु.) अस्तमन।

गुरूर–(अ पु) अभिमान। गर्व, घमंड।
गुरोह–(फा पु) समूह, झुंड।
गुर्ज–(फा पु) गदा।
गुल–(फा पु) गुलाब का फूल। पुष्प, फूल। पशुओं के शरीर में फूल के आकार का भिन्न रंग का गोल दाग। किसी चीज पर बना हुआ भिन्न रंग का कोई गोल निशान। शरीर पर गरम धातु से दागने से पड़ा हुआ चिह्न, छाप। दीपक में बत्ती का वह अंश जो बिलकुल जल जाता है। हुक्के आदि में तमाकू का जला हुआ अंश। जलता हुआ कोयला। आँख की सफेदी।
गुल–(फा पु) शोर, कोलाहल।
गुलकन्द–(फा पु) शक्कर में मिली हुई गुलाब के फूलों की पंखड़ियाँ जो धूप की गरमी से पकायी जाती हैं।
गुलकारी–(फा स्त्री) किसी प्रकार के बेल-बूटे या फूल-पत्ती इत्यादि बनाने, कढ़ाने या काढ़ने का काम।
गुलखैरू–(फा पु) एक पेड़ जिसमें पीले रंग के फूल लगते हैं।
गुलगपाड़ा–(उ पु) बहुत अधिक चिल्लाहट, शोरगुल।
गुलगू–(फा पु) लाल रंग।
गुलजार–(फा पु) वाटिका, उपवन, बाग।
–(वि) हरा भरा। आनंद और शोभ युक्त। रम्य।
गुलतराश–(फा पु) वह कैंची जिससे दीपक का गुल काटा जाता है। वह कैंची जिससे माली लोग बाग के पौधों को कतरते या छाँटते हैं। बाग के पौधों को काटने या छाँटनेवाला माली। वह औजार जिससे पत्थरों पर फूल पत्तियाँ खुदाई जाती हैं।
गुलदस्ता–(फा पु) सुन्दर फूलों और पत्तियों का एक में बँधा समूह, गुच्छा।
गुलदाऊदी–(फा स्त्री) एक तरह का सुंदर गुच्छेदार फूल।
गुलदान–(फा पु) गुलदस्ता रखने का पात्र।
गुलनार–(फा वि) फूलदार।
–(पु) एक तरह का सफेद कबूतर। एक तरह का कसीदा।
गुलनार–(फा पु) अनार का फूल।
गुलबकावली–(उ स्त्री) एक तरह का सुन्दर सफेद सुगंधित फूल।
गुलफाम–(फा वि) गुलाबी रंग का।
गुलबदन–(फा पु) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
–(वि) कोमल, सुकुमार।
गुलमेंहदी–(उ स्त्री) मेंहदी का फूल।

गुलमेख–(फा. स्त्री.) वह कील जिसका सिरा फूल की तरह गोल होता है।

गुललाला–(फा. पु.) एक प्रकार का फूल।

गुलशकरी–(उ. स्त्री.) चीनी और गुलाब के फूल से बनी हुई एक मिठाई।

गुलशन–(फा. पु.) वाटिका, बाग।

गुलशब्बो–(फा. स्त्री.) रजनी-गंधा नाम का एक पौधा।

गुलसम–(फा. पु.) सोनारों का नकाशी करने का एक औज़ार जिससे फूल आदि काढ़ते हैं।

गुलहज़ारा–(फा. पु.) एक तरह का फूल।

गुलाब–(फा. पु.) एक झाड़ या कंटीला पौधा जिसमें बहुत सुन्दर और सुगंधित फूल लगते हैं, "रोजा"। गुलाब का इत्र; गुलाबजल; "पन्नीर"।

गुलाबजामुन–(उ. पु.) एक तरह का फल। एक तरह की मिठाई।

गुलाबपाश–(फा. पु.) वह लंबोतरा पात्र या कुप्पी जिनमें गुलाबजल या "पन्नीर" भरकर छिड़कते हैं।

गुलाबी–(फा. वि.) गुलाब के रंग का। गुलाब का या गुलाब संबंधी। हल्के रंग का।

–(पु.) हलका लाल रंग। अमरूद की एक क़िस्म। शराब रखने की शीशी।

गुलाम–(अ. पु.) मोल लिया हुआ नौकर; दास। सेवक, नौकर। किसी दूसरे पर अवलंबित रहनेवाला; पराधीन। ताश का एक पत्ता।

गुलामगर्दिश–(फा. पु.) जनानखाने के दरवाजे के ठीक सामने आड़ के लिये उठाई हुई दीवार। महल आदि के चारों ओर बना हुआ वह दरामदा जहाँ चपरासी और नौकर-चाकर रहते हों।

गुलामी–(उ. स्त्री.) दासत्व। सेवा, नौकरी। पराधीनता।

गुलाल–(फा. पु.) एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे हिन्दू होली के दिनों में एक दूसरे के चेहरों पर मलते हैं।

गुलिस्तां–(फा. पु.) गुलाब का बाग। पुष्पवाटिका; फुलवारी।

गुलू–(फा. पु.) गला।

गुलूबन्द–(फा. पु.) वह कपड़ा जो सरदी से बचने के लिये गले पर लपेट लिया जाता है।

गुलेल–(फा. स्त्री.) वह कमान या धनुष जिससे चिड़ियों और बन्दरों आदि को मारने के लिये मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुलेलची–(फा. पु.) गुलेल बनाने या चलानेवाला।

गुसेल–(उ वि) दे० "गुस्सावर"।
गुस्ताख–(फा वि) बड़ों का संकोच या डर न करनेवाला, ढीठ। 'अधिक प्रसंगी'।
गुस्ताखी–(फा स्त्री) ढिठाई, अशिष्टता।
गुस्ल–(अ पु) स्नान, नहाना।
गुस्लखाना–(फा पु) स्नानगृह।
गुस्सा–(अ पु) क्रोध।
गुस्सावर–(फा वि) जल्दी क्रुद्ध हो जानेवाला, कोपी।
गेसू–(फा पु) अलक, लट। काकुल, जुल्फ़।
गैब–(अ पु) वह जो सामने न हो, परोक्ष।
गैबी–(अ वि) परोक्ष, अप्रत्यक्ष। गुप्त।
गैर–(अ वि) अन्य, दूसरा। अपरिचित। जो आत्मीय न हो, पराया। (यौगिक में) विरुद्धार्थक शब्द, जैसे–गैरहाजिर, गैरमुमकिन।
गैरत–(अ स्त्री) लज्जा।
गैरमनकूला–(अ वि) अचर। स्थावर।
गैरमुनासिब–(अ वि) अनुचित।
गैरमुमकिन–(अ वि) असंभव।
गैरवाजिब–(अ वि) अनुचित, अयुक्त।
गैरसमझी–(उ स्त्री) अन्यथा समझना। वैमनस्य।
गैरहाजिर–(अ वि) अनुपस्थित।
गैरहाजिरी–(अ स्त्री) अनुपस्थिति।
गो–(फा अव्य) यद्यपि।
–(प्रत्य) कहनेवाला।
गोकि–(फा अव्य) यद्यपि।
गोइंदा–(फा पु) कहनेवाला।
गोज–(फा पु) अपान वायु।
गोता–(अ पु) पानी में डूबना, डुबकी।
गोताखोर–(फा पु) डुबकी लगानेवाला, डूबनेवाला।
गोय–(फा पु) गेंद।
गोया–(फा क्रिवि) मानो।
गोर–(फा स्त्री) वह गड्ढा जिसमें मृत शरीर गाड़ा जाय।
गोरखर–(फा पु) गधे की जाति का एक जंगली पशु।
गोलंदाज–(फा पु) तोप में गोला रखकर चलानेवाला, तोपची।
गोल–(फा पु) भूत, हौआ। सेना का एक भाग, दल। भीड़, जमघट।
गोश–(फा पु) कान।
गोशमाली–(फा स्त्री) कान उमेठना। कड़ी चेतावनी।
गोशवारा–(फा पु) कान का बाला कुंडल। बड़ा मोती जो सीप में अकेला हो। कलाबत्तू से बुना हुआ

पगड़ी का [illegible] । तुर्रा, [illegible] । जोड़; योग । जोड़न, [illegible]; [illegible] ।

गोशा-(फा. पु.) कोना । एकांत स्थान । दिशा, ओर । धनुष की दोनों नोकें ।

गोश्त-(फा. पु.) मांस ।

गोश्तख़ोर-(फा. पु.) मांस-भक्षक ।

गोसफ़ंद-(फा. पु.) [illegible] ।

ग़ौग़ा-(अ. पु.) शोर; [illegible] ।

ग़ौर-(अ. पु.) सोच विचार, चिन्तन । ध्यान; ख़याल ।

गौहर-(फा. पु.) मोती ।

च

चंग-(फा. स्त्री.) [illegible] का एक तरह का बाजा । पंजा; चंगुल ।

चंडूख़ाना-(अ. पु.) वह घर जहाँ लोग चंडू पीते हैं ।

चंडूबाज़-(अ. पु.) चंडू पीनेवाला ।

चंद-(फा. वि.) थोड़े से कुछ ।

चंदा-(फा. पु.) वह थोड़ा थोड़ा धन जो कई आदमियों से किसी कार्य के लिये लिया जाय । किसी अख़बार या सामयिक पत्र आदि का वार्षिक मूल्य ।

चक़मक़-(तु. पु.) अग्निशिला ।

चख़-(फा. पु.) झगड़ा; लड़ाई ।

चख़ाचख़-(फा. पु.) झगड़ा । तलवारों की झनकार ।

चख़ाचख़ी-(फा. स्त्री.) शत्रुता; वैर ।

चद्दर-(फा. पु.) हलका ओढ़ना या बिछौना । किसी धातु का लंबा चौड़ा चौकोर पत्तर । जहाँ नदी आदि के बहाव में पड़ कर गिरती [illegible] चद्दर के [illegible] हो जाती है ।

चन्दाँ-(फा. क्रि.) इस क़दर; इतना ।

चपक़लिश-(तु. स्त्री.) तलवार की लड़ाई; कठिनाई । [illegible] ।

चमचा-(फा. पु.) छोटी कलछी ।

चमची-(अ. स्त्री.) छोटा चमचा ।

चमन-(फा. पु.) हरी क्यारी । छोटा बगीचा; वाटिका ।

चम्मच-(फा. पु.) दे० "चमचा" ।

चरख़-(फा. पु.) दे० "चर्ख़" ।

चरब-(फा. वि.) चिकना ।

चरबा-(फा. पु) नक़ल; प्रतिलिपि ।

चरबी-(फा. स्त्री.) मज्जा; मेद ।

चरागाह-(फा. पु.) वह मैदान जहाँ गाय आदि पशु चरते हों ।

चरिंदा–(फा पु) चरनेवाला जीव।

चर्ख–(फा पु) घूमनेवाला गोल चक्कर। खराद। सूत कातने का चर्खा। कुम्हार का चाक, कुलाल चक्र। वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है। एक प्रकार का चीता, लकड़ बग्घा। आकाश। कालचक्र।

चर्खा–(फा पु) घूमनेवाला चक्कर। लकड़ी का यंत्र जिसकी सहायता से ऊन कपास आदि को कातकर सूत बनाते हैं। काठ या लोहे का गोल चक्कर जिससे गड्ढे में रस्सी डाल कर कुएँ से घड़ा आदि खींचते हैं, गराड़ी। सूत लपेटने की फिरकी। बड़ा पहिया। गाड़ी या वह ढाँचा जिसमें जान कर नये घोड़े को सधाते हैं। झगड़े का काम।

चर्खी–(फा स्त्री) चक्कर, चर्ख। छोटा चर्खा। कपास ओटने का चर्खा। सूत लपेटने की फिरकी। कुएँ से पानी खींचने की गराड़ी, घिर्नी।

चश्म–(फा स्त्री) आँख।

चश्मदीद–(फा वि) जो अपनी आँखों से देखा हुआ हो।

चश्मनुमाई–(फा स्त्री) घुड़की।

चश्मपोशी–(फा स्त्री) देख कर भी अनदेखा कर जाना। तरह देना, क्षमा करना।

चश्मा–(फा पु) वह ऐनक जो आँखों पर दृष्टि बढ़ाने या ठण्डक रखने के लिये पहना जाता है, सुलोचन। पानी का स्रोत। फ़व्वारा।

चस्पा–(फा वि) चिपकाया हुआ।

चह–(फा स्त्री) गड्ढा।

चहबचा–(उ पु) पानी भर रखने का छोटा गड्ढा या हौज। धन गाड़ने या छिपा रखने की ज़मीन के नीचे बनी हुई कोठरी।

चहलकदमी–(उ स्त्री) धीरे टहलना।

चहार–(फा वि) चार।

चहारदीवारी–(फा स्त्री) चारों ओर की दीवार, प्राचीर।

चहारशाखा–(फा पु) दुखशर।

चहारम–(फा वि) चौथा।

चाक–(फा पु) वह खाली जगह जो किसी चीज़ के फटने पर पड़ जाती है, चीर।

चाक–(तु वि) हृष्ट पुष्ट। बलिष्ठ।

चाकर–(फा पु) भृत्य, नौकर।

चाकरानी–(फा स्त्री) दासी, सेविका, चेरी।

चाकरी–(फा स्त्री) नौकरी, सेवा।

चाकू–(तु पु) छुरी।

चादर–(फा स्त्री) कपड़े का टुकड़ा।

ओढ़ना या बिछौना; दुपट्टा। किसी धातु का चौखूंटा पत्तर। पानी की चौडी धार जो कुछ ऊपर से गिरती हो। फूलों की राशि जो किसी पूज्य स्थान पर चढाई जाती है।

चापलूस–(फा.वि.) खुशामदी; चाटुकार।

चापलूसी–(फा. स्त्री.) खुशामद; मुखस्तुति; चाटु।

चाबुक–(फा. पु.) डडे में बँधा हुआ बटा सूत या चमड़े की डोर जिससे जानवरों को चलाने के लिये मारते हैं, कोडा।

चाबुकसवार–(फा. पु.) घोडे को दौडना आदि सिखानेवाला; अश्वशिक्षक। घोड़े की सवारी में चतुर या कुशल।

चाबुकसवारी–(फा. स्त्री.) चाबुकसवार का काम या पद।

चार-आइना–(फा. पु.) एक प्रकार का कवच।

चारखाना–(फा. पु) एक प्रकार का कपडा जिसमें चौखूँटे घर बने रहते हैं।

चारजामा–(फा. पु.) वह गद्दी जो जानवरों की पीठ पर लादने या चढने के लिये कसी जाती है; जीन।

चारदीवारी–(फा. स्त्री.) दे० "चहारदीवारी"।

चारबाग़–(फा. पु.) चौखूँटा बाग या उपवन। चार बराबर खानों में बँटा हुआ रूमाल।

चारबालिश–(फा. पु) एक प्रकार की गोल तकिया।

चारयारी–(उ. स्त्री.) चार मित्रों की मंडली। मुसलमानों में सुन्नी संप्रदाय की एक मंडली जो चारों खलीफाओं को मानते हैं। चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिस पर कलमा या खलीफाओं के नाम लिखे रहते हैं।

चारसू–(फा. क्रिवि.) चारों तरफ; आसपास।

चारा–(फा. पु) उपाय; साधन।

चारागर–(फा. वि.) उपाय करनेवाला; युक्ति रचनेवाला।

चाराजोई–(फा. स्त्री.) उपाय ढूँढना; नालिश; फ़र्याद।

चालबाज़–(उ. वि.) छली; कपटी।

चालबाज़ी–(उ. स्त्री.) छल, कपट।

चालाक–(फा. वि.) चतुर; व्यवहारकुशल। छली; कपटी।

चालाकी–(फा. स्त्री.) चतुराई; व्यवहारकुशलता। चालबाजी। युक्ति।

चाशनी–(फा. स्त्री.) चीनी या गुड को पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस; शर्करा

पाक। चसका, रुचि, मजा। नमूने का सोना जो सोनार को गहने बनाने के लिये सोना देनेवाला ग्राहक अपने पास रखता है।

चाह–(फा पु) कुआँ।

चिक–(तु स्त्री) बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा, चिलमन।

–(पु) कसाद।

चिकन–(फा पु) कशीदा बना हुआ सूती कपड़ा।

चिरकीन–(फा वि) मैला, गंदा।

चिराग–(फा पु) दीपक, दीया।

चिरौंजी–(फा पु) एक प्रकार का मेवा।

चिलता–(फा पु) कवच।

चिलम–(फा स्त्री) कटोरी के आकार का मिट्टी का एक छोटा बरतन जिस पर तंबाकू जलाकर हुक्का पीते हैं।

चिलमची–(फा स्त्री) देग के आकार का एक बरतन जिसमें हाथ धोते और कुल्ली आदि करते हैं।

चिलमन–(फा स्त्री) बाँस की फट्टियों का पर्दा या टट्टी।

चिलमपोश–(फा पु) चिलम का ढक्कन।

चिल्ला–(फा पु) चालीस दिन का व्रत। चालीस दिन का समय।

चीख–(फा स्त्री) चिल्लाहट।

चीज–(फा स्त्री) वस्तु, पदार्थ।

चीन्हा–(फा वि) चुना हुआ।

चीनेजबीं–(फा स्त्री) क्रोध से उत्पन्न माथे पर की सिकुड़न या शिकन।

चुकंदर–(फा पु) एक तरह की तरकारी।

चुगद–(फा पु) उल्लू की एक किस्म। बेवकूफ, मूर्ख।

चुगल–(फा पु) इधर की उधर लगाने वाला।

चुगलखोर–(फा पु) चुगली खानेवाला, पीठ पीछे शिकायत या निंदा करनेवाला, पिशुन।

चुगलखोरी–(फा स्त्री) चुगलखोर का काम, पिशुनता।

चुगली–(फा स्त्री) दूसरे की निंदा जो उसके पीठ पीछे या उसकी अनुपस्थिति में की जाय।

चुनाचे–(फा अव्य) जैसा कि, इस लिये, अतः।

चुनाचुनी–(फा अव्य) ऐसा वैसा।

चुस्त–(फा वि) कसा हुआ। जो ढीला न हो, तंग। फुरतीला। दृढ़, मजबूत।

चुस्ती–(फा स्त्री) कसावट, तंगी। फुरती, चालाकी। दृढ़ता।

चूँकि–(फा अव्य) क्योंकि, इसलिये कि।

चूंचरा–(फा. पु.) आक्षेप, विरोध।

चूज़ा–(फा. पु.) मुर्गी का बच्चा।

चेचक–(फा. स्त्री.) शीतला रोग।

चेचकरू–(फा. वि.) जिसके मुँह पर चेचक या शीतला के दाग हों।

चेमीगोई–(फा.स्त्री.)किंवदंति, जनश्रुति।

चेहरा-(फा. पु.) सिर का अगला भाग जिसमे मुँह, आँख आदि रहते हैं; मुखड़ा। किसी चीज का अगला भाग।

चेहलुम–(फा. पु.) मृत्यु के बाद या मुहर्रम के चालीसवे दिन की रस्म।

चोग़ा–(तु. पु.) पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा।

चोब–(फा. स्त्री.) खंभा। लाठी। सोंटा; दंड। छड़ी। सोने या चांदी से मढ़ा हुआ टंडा।

चोबदार–(फा. पु.) वह नौकर जिसके पास चोब रहता है; प्रतिहारी।

चौगान–(फा. पु.) एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं। चौगान खेलने का मैदान। नगाड़ा बजाने की लकड़ी।

चौगिर्द–(उ. क्रिवि.) चारों ओर।

चौगोशिया–(फा. वि.) चार कोनेवाला।
–(स्त्री.) एक तरह की टोपी।
–(पु.) तुरकी घोड़ा।

चौतरा–(फा. पु.) चबूतरा।

छ

छतगीर, छतगीरी–(उ. स्त्री.) छत के ऊपर तानने की सफेद चादर; चाँदनी।

छापाख़ाना–(उ. पु.) वह स्थान जहाँ पुस्तकें आदि छापी जाती हैं, मुद्रालय; "प्रेस"।

छोटी हाज़िरी–(उ. स्त्री) यूरोपियन का प्रातः काल का भोजन।

ज

जग-(फा स्त्री) युद्ध।
जग-(फा पु) लोहे की सतह पर चढ़ने वाली वह लाल या पीले रंग की बुकनी की सी तह जो वायु और नमी के योग से रासायनिक विकार होने से उत्पन्न होती है।
जगला-(पुर्त्त पु) दरवाजे, बरामदे आदि में लगी हुई लोहे के छड़ों की पंक्ति, कटहरा। चौखट या खिड़की जिसमें छड़ लगी हों।
जगार-(फा पु) ताँबे का कसाव।
जगी-(फा वि) युद्ध का, युद्ध संबंधी। सेना संबंधी। बड़ा। योद्धा।
जजीर-(फा स्त्री) शृंखला। बेड़ी।
जजीरा-(फा पु) एक तरह की सिलाई। द्वीप।
जद-(फा पु) पारसी लोगों का प्राचीन धर्म ग्रंथ। वह भाषा जिसमें यह ग्रंथ लिखा गया है।
जबूर-(अ पु) भँवरकली। पुरानी छोटी तोप। तोप लादने की गाड़ी।
जबूरक-(फा पु) दे० "जबूर"।
जबूरची-(फा पु) तोप चलानेवाला, तोपची। सिपाही।
जबूरा-(फा पु) तोप लादने की गाड़ी। लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि वह जिधर चाहे उधर सहज में घूम सकती है, भँवरकली। सोनारों का बारीक काम करने का एक औजार।
जईफ-(अ वि) वृद्ध, बूढ़ा।
जइफी-(अ स्त्री) बुढ़ापा।
जक-(फा स्त्री) अपजय, हार। हानि, घाटा। लज्जा।
जकात-(अ स्त्री) २॥) सैकड़ा दान।
जखीरा-(अ पु) वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों का संग्रह हो। ढेर, समूह।
जख्म-(फा पु) घाव। आघात, चोट।
जख्मी-(फा वि) घायल, व्यथित।
जच्चा-(फा स्त्री) प्रसूता स्त्री, प्रसूतिका।
जच्चाखाना-(फा पु) सूतिकागृह।
जजा-(अ पु) प्रतिफल।
जजीरा-(फा पु) द्वीप, टापू।
जज्ब-(अ पु) आकर्षण। प्रलोभन। जाद।
जज्बी-(अ वि) आकर्षक, मनमोहक।
जद-(फा पु) प्रहार, आघात।

ज़दगी-(फा. स्त्री.) उत्पात; उपद्रव ।

जदल-(अ. पु.) युद्ध, लड़ाई ।

ज़दा-(फा. वि.) जिसपर चोट या प्रहार पड़ा हो, प्रहारित ।

ज़दीद-(अ. वि.) नया । आधुनिक ।

ज़न-(फा. स्त्री.) औरत; स्त्री ।

ज़नमुर्दा-(फा. स्त्री.) निपुता; ठुटी ।

ज़नख़ा-(फा. वि.) हिजड़ा; नपुंसक ।

जनाज़ा-(अ. पु.) वह संदूक़ जिसमें शव को रखकर गाड़ने या जलाने ले जाते हैं; अर्थी ।

ज़नानख़ाना-(फा. पु.) स्त्रियों के रहने का स्थान; अंतःपुर ।

ज़नाना-(फा. वि.) स्त्रियों का । नपुंसक । निर्बल । डरपोक ।

-(पु.) स्त्रियों का हाव भाववाला आदमी । नपुंसक । स्त्रियों के रहने का स्थान; अंतःपुर । पत्नी; भार्या ।

ज़नानापन-(उ. पु.) स्त्रीत्व ।

जनाब-(अ. पु.) महाशय ।

जनाब आली = मान्य महोदय ।

जनूब-(अ. पु.) दक्षिण दिशा ।

जन्नत-(अ. पु.) स्वर्ग ।

ज़फ़र-(अ. पु.) जीत; विजय ।

जफ़ा-(फा. स्त्री.) कठोरता; कड़ाई । जुल्म, अत्याचार । कष्ट; संकट ।

जफ़ाकश-(फा. पु.) परिश्रमी । मेहन-कश ।

ज़फ़ील-(अ. स्त्री.) सीटी । सीटी का शब्द ।

जफ़ीलना-(उ. अक्रि.) सीटी बजाना ।

जब्र-(अ. पु.) दबाव डालना; अत्याचार ।

ज़बर-(फा. वि.) बलिष्ठ; बलवान । दृढ़; मज़बूत ।

ज़बरई-(उ. स्त्री.) बलात्कार ।

ज़बरदस्त-(फा. वि.) बलवान; शक्तिवाला । दृढ़; मज़बूत ।

ज़बरदस्ती-(फा. स्त्री.) अत्याचार; अन्याय ।

-(क्रिवि.) बलात्कार से; बलपूर्वक ।

जबरन-(अ. क्रिवि.) बलात्; बलपूर्वक ।

जबरील-(अ. पु.) एक फ़रिश्ते का नाम ।

ज़बह-(अ. पु.) गला काटना ।

ज़बान-(फा. स्त्री.) जीभ । वाणी; बात । वचन; प्रतिज्ञा । भाषा । आग की लपट; अग्निज्वाला ।

ज़बानदराज-(फा. वि.) धृष्टता-पूर्वक अनुचित बातें करनेवाला, ढीठ ।

ज़बानदराज़ी-(फा. स्त्री.) ढिठाई ।

ज़बानबंद-(फा. वि.) मौन ।

ज़बानबंदी-(फा. स्त्री.) मौन ।

ज़बानी-(उ. वि.) जो केवल ज़बान से कहा जाय; मौखिक ।

जबूल–(तु वि) बुरा, खराब।

जब्त–(अ पु) किसी अपराध में सरकार के द्वारा हरण किया जाना, कोई वस्तु किसी के अधिकार से छीन लेना। अपना कर लेना। रोक, प्रतिबंध।

जब्ती–(अ स्त्री) जब्त होने की क्रिया।

जब्बार–(अ पु) अत्याचारी।

जमईयत–(अ स्त्री) दे० "जमाअत"।

जमा–(अ वि) संग्रह किया हुआ, संग्रहीत। संकलित। जो अमानत के तौर पर या किसी खाने में रखा गया हो। –(स्त्री) धन, "आस्ति"। मूलधन, पूँजी। भूमि कर, मालगुजारी। बहुवचन। जोड़, सकलन। (गणित)

जमाअत–(अ स्त्री) दल, मंडली। मनुष्यों का समूह। वर्ग, दरजा।

जमाखर्च–(फा पु) आयव्यय।

जमा जथा–(उ पु) धन संपत्ति।

जमादात–(अ स्त्री) अचेतन वस्तु, जड़ पदार्थ।

जमादार–(फा पु) सिपाहियों या पहरेदारों के एक दल का प्रधान।

जमादारी–(फा स्त्री) जमादार का पद या काम।

जमानत–(अ स्त्री) वह जिम्मादारी जो मौखिक तौर पर या कोई कागज पत्र लिखकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है।

जमानतनामा–(फा पु) वह कागज जो जमानत करनेवाला जमानत के प्रमाण स्वरूप लिखकर देता है।

जमाना–(फा पु) समय, काल। बहुत अधिक समय, युग। सुसमय, सुअवसर। संसार, जगत।

जमानासाज–(फा वि) जो लोगों का रंग ढंग देखकर समयानुसार व्यवहार करता हो। व्यवहार कुशल।

जमानतसाजी–(फा स्त्री) जमानासाज होने का भाव। व्यवहार कुशलता।

जमाबंदी–(फा स्त्री) पटवारी का एक कागज जिसमें किसानों के नाम और उनसे मिलनेवाले लगान की रकमें लिखी रहती हैं।

जमाल–(अ पु) सौंदर्य।

जमींदार–(फा पु) जमीन का मालिक, भूस्वामि।

जमींदारी–(फा स्त्री) जमींदार की वह भूमि जिसका वह स्वामि हो। जमींदार का पद या हक।

जमीन–(फा स्त्री) पृथ्वी। भूमि, धरती। कपड़े आदि की वह सतह जिस पर बेल बूटे बने हों। मूल द्रव्य या वस्तु। डौल, आयोजन। हद।

ज़मीमा–(अ. पु.) क्रोडपत्र; परिशिष्ट।

ज़मीर–(अ. पु.) अंतःकरण।
–(स्त्री.) सर्वनाम।

ज़मुर्रुद–(फा. पु.) मरकत।

जम्हूर–(अ. पु.) जनसमुदाय; जनता। प्रजातंत्र शासन।

जम्हूरी–(अ. वि.) जनता का। प्रजातंत्र का।

जर–(अ. पु.) उपसर्ग।

ज़र–(फा. पु.) स्वर्ण; सोना। धन; संपत्ति।

ज़रकश, जरकशी–(फा. वि.) जिसपर सोने के तार आदि लगे हों।

ज़रख़ेज़–(फा. वि.) सोना उगनेवाला, याने बहुत उपजाऊ।

जरगा–(तु. पु.) आदमियों का झुंड; दल।

ज़रगर–(फा. पु.) सोनार।

ज़रतार–(उ. पु.) सोने या चादी आदि का तार।

ज़रतुश्त, ज़रदुश्त–(फा. पु.) पारसियों के धर्म प्रवर्त्तक।

ज़रदोज़–(फा. पु.) जरदोजी का काम करनेवाला।

ज़रदोज़ी–(फा. स्त्री.) वह दस्तकारी जो कपड़ों पर सलमे सितारे आदि से की जाती है।

ज़रब–(अ. स्त्री.) आघात; चोट। गुणन। (गणित)

ज़रबफ़्त–(फा. पु.) वह रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तू के बेल बूटे हों।

ज़रबाफ़–(फा. पु.) जरदोजी का काम।

ज़रबाफ़ी–(फा. वि.) जिसपर जरबाफ़ी का काम बना हो।
–(स्त्री.) जरदोजी का काम।

ज़रर–(अ. पु.) हानि; नुकसान। आघात; चोट।

जरह–(अ. स्त्री.) किसी की बातों को सत्यता के लिये फिर उससे पूछताछ।

ज़रा–(अ. वि.) थोड़ा; कम; कुछ।

ज़राफ़त–(अ. स्त्री.) सरसता, चातुर्य। हास्य रस।

ज़रिया–(अ. पु.) संबंध; लगाव। साधन। हेतु; कारण। सहारा।
जरिये से = साधन से; द्वारा।

ज़री–(फा. स्त्री.) सोने या चाँदी के तारों से बुनाया हुआ कपड़ा। सोने के तारों आदि से बना हुआ काम।

ज़रीफ़–(अ. पु.) सरस; विनोदी। हास्यकार।

ज़रीब–(फा. स्त्री.) वह जंजीर जिससे भूमि नापी जाती है।

ज़रूर–(अ. क्रिवि.) अवश्य। निस्संदेह।

जरूरत–(अ स्त्री) आवश्यकता।
जरूरियात–(अ स्त्री) आवश्यक चीजें।
जरूरी–(फा वि) आवश्यक।
जर्कबर्क–(फा वि) भड़कीला, चमकदार।
जर्द–(फा वि) पीला।
जर्दा–(फा पु) चावलों का एक व्यंजन, केसरीभात। पान में खाने का सुगंधित तंबाकू। पीले रंग का घोड़ा।
जर्दालू–(फा पु) एक मेवा।
जर्दी–(फा स्त्री) पीलापन।
जर्रा–(अ पु) अणु। कण, बहुत छोटा टुकड़ा।
जर्राफ–(अ पु) दे० "जरीफ"।
जर्राह–(अ पु) शस्त्र चिकित्सक।
जर्राही–(अ स्त्री) शस्त्र चिकित्सा।
जलजला–(अ पु) भूकंप।
जलवा–(अ पु) वैभव। दर्शन।
जलसा–(अ पु) आनंदोत्सव। सभा रोह। सभा आदि का अधिवेशन।
जलादत–(अ स्त्री) चुस्ती। चालाकी। वीरता।
जलाल–(अ पु) प्रकाश, ज्योति। प्रभाव, आतंक।
जलालत–(अ स्त्री) महत्व, बड़प्पन।
जलील–(अ वि) तुच्छ, क्षुद्र। अपमानित।
जलूस–(अ पु) बहुत से लोगों का सज धजकर किसी सवारी के साथ प्रस्थान, उत्सवयात्रा।
जल्द–(अ क्रिवि) शीघ्र।
जल्दबाज–(फा वि) किसी काम में जल्दी मचानेवाला।
जल्दबाजी–(फा स्त्री) जल्दी मचाना, उतावली।
जल्दी–(अ स्त्री) शीघ्रता, फुरती।
जल्लाद–(अ पु) प्राणदंड पाये हुए अपराधियों का वध करनेवाला। हत्यारा। क्रूर व्यक्ति।
जवांमर्द–(फा पु) शूरवीर।
जवांमर्दी–(फा स्त्री) वीरता।
जवान–(फा वि) युवा, तरुण। वीर।
–(पु) युवक। पुरुष। सिपाही।
जवानी–(फा स्त्री) यौवन, युवावस्था।
जवाब–(अ पु) उत्तर, प्रत्युत्तर। बराबरी की वस्तु, जोड़। नौकरी छूटने की आज्ञा।
जवाबदावा–(अ पु) वह उत्तर जो वादी के निवेदनपत्र के उत्तर में प्रतिवादी लिख कर अदालत में देता है, प्रतिवादी का समाधान।
जवाबदेह–(फा वि) जवाब या उत्तर देनेवाला, उत्तरदाता।

जवाबदेही–(फा. स्त्री.) उत्तरदायित्व।
जवाब सवाल–(अ. पु.) प्रश्नोत्तर।
ज़वाबित–(अ. पु.) "ज़ाब्ता" का ब. रूप; नियम।
जवाबी–(फा. वि.) जवाब संबंधी। जिसका उत्तर देना हो।
ज़वाल–(अ. पु) अवनति; पतन। घटाव। जंजाल; आफ़त।
जवाहिर–(अ. पु.) मणि; रत्न।
जवाहिरात–(अ. पु.) रत्न समूह।
जशन–(फा. पु.) उत्सव; जलसा। समारोह। आनंदोत्सव। हर्ष।
जसामत–(अ. स्त्री.) स्थूलता; मोटापन।
जसारत–(अ. स्त्री.) पौरुष; वीरता।
जहन्नुम–(अ. पु) नरक।
ज़हमत–(अ. स्त्री) आपत्ति; संकट। दुख। झंझट; टंटा।
जहद–(अ. पु.) प्रयत्न। प्रयास।
ज़हर–(फा. स्त्री.) विष।
ज़हरबाद–(फा. पु.) एक प्रकार का विषैला फोड़ा।
ज़हरमुहरा–(फा. पु.) सांप का विष दूर करनेवाला एक पत्थर; विषघ्न पत्थर।
ज़हरीला–(उ. वि.) जिसमें विष हो; विषैला।
जहां–(फा. पु.) जगत; संसार।
जहांगीर–(फा. वि.) संसार को जीतनेवाला; जगद्विजयी।
जहांगीरी–(फा. स्त्री.) हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना।
जहांदीद, जहांदीदा–(फा. वि.) अनुभवी।
जहांपनाह–(फा. पु.) लोकशरण्य; जगद्रक्षक।
जहाज़–(अ. पु.) समुद्र में चलनेवाली बड़ी नाव या नौका; समुद्रयान।
जहाज़ी–(अ. वि.) जहाज का; जहाज संबंधी।
जहाद–(अ. पु.) धर्मयुद्ध।
जहान–(फा. पु.) दे. "जहां"।
जहालत–(अ. स्त्री) अज्ञान; मूर्खता।
ज़हीन–(अ. वि.) बुद्धिमान।
ज़हूर–(अ. पु.) प्रकट होना; व्यक्त होना।
जहेज़–(अ. पु.) वह धन, बरतन, सामान आदि जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जाता है।
जांनवाज़–(फा. वि.) प्राणदान करनेवाला।
जांफ़िशानी–(फा. स्त्री.) परिश्रम; उद्योग।
जांबाज़–(फा. वि.) जान पर खेलनेवाला।
जा–(फा. पु.) जगह; स्थान।
जा बजा = जगह जगह पर; हर जगह।

जागीर–(फा स्त्री) सेवा आदि के पुरस्कार में राजा की ओर से मिली भूमि या प्रदेश, सरकार से मिली जमींदारी।

जागीरदार–(फा पु) वह जिसे जागीर मिली हो, जागीर का स्वामि।

जाजरूर–(फा पु) पाखाना, टट्टी।

जाजिम–(तु स्त्री) छपी हुई चादर या दुपट्टी। गालीचा, रजावल।

जात–(अ स्त्री) शरीर। स्वभाव, प्रकृति।

जाती–(अ स्त्री) व्यक्तिगत, निज का।

जादू–(फा पु) इन्द्रजाल। मन्त्र-तन्त्र। माया, दृष्टिबन्ध। दूसरे को मोहित करने की शक्ति, मोहिनी।

जादूगर–(फा पु) वह जो जादू करता हो, मन्त्रवादी। मायावी।

जादूगरनी–(फा स्त्री) "जादूगर" का स्त्री रूप।

जादूगरी–(फा स्त्री) जादू करने की क्रिया। मन्त्रवादित्व।

जान–(फा स्त्री) प्राण, जीव। प्राण वायु। बल, शक्ति। सार, सत्व।

जानदार–(फा वि) जीवधारी, सजीव।

जानवर–(फा पु) प्राणी, जीव। पशु, जन्तु।

जानशीन–(फा पु) उत्तराधिकारी, वारिस।

जानिब–(अ स्त्री) दिशा। पार्श्व।

जानी–(फा वि) जान का। –(स्त्री) प्राणप्यारी।

जानी–(अ पु) व्यभिचारी।

जानू–(फा पु) जानु, घुटना।

जाफरान–(अ स्त्री) कुंकुम, केसर।

जाफरानी–(अ वि) केसर के रंग का, केसरिया।

जाबिता–(अ पु) दे "जाब्ता"।

जाबिर–(फा वि) अत्याचारी।

जाब्ता–(अ पु) नियम, विधि। राजनियम, क़ानून। व्यवस्था। जाब्ता दीवानी = धन, सम्पत्ति आदि के व्यवहार से संबंध रखनेवाला क़ानून। जाब्ता फ़ौजदारी = दण्डनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला कानून।

जाम–(फा पु) शराब पीने का प्याला।

जामदानी–(फा स्त्री) एक तरह का बेल बूटेदार कपड़ा।

जामा–(फा पु) कपड़ा, वस्त्र। पहनावा। चुननदार कपड़े का पहनावा।

जामिन–(अ पु) जमानत देनेवाला, प्रतिभू।

जामिनदार–(फा पु) दे "ज़ामिन"।

जामेवार–(उ. पु.) एक प्रकार का दुशाला जिसको सारी ज़मीन पर बूटे रहते हैं। वह कपड़ा जिस पर रंग बिरंगे बेल बूटे छपे हों।

जाय–(फा. स्त्री.) दे. "जा"।

ज़ायक़ा–(अ. पु) खाने पीने की चीज़ों का मज़ा, स्वाद; रुचि।

ज़ायक़ादार–(फा. वि.) मज़ेदार; स्वादिष्ट।

ज़ायचा–(फा. पु.) जन्मकुंडली।

जायज़–(अ. वि.) उचित; युक्त।

जायज़ूर–(फा. पु.) दे. "जाज़ूर"।

जायज़ा–(अ. पु.) जाँच; पड़ताल। (सिपाहियों की) गिनती; हाज़िरी।

ज़ायद–(फा. वि.) अधिक।

जायदाद–(फा. स्त्री.) धन-दौलत; संपत्ति। स्वत्व का धन; "आस्ति"।

जायनमाज़–(फा. स्त्री.) वह छोटी दरी, बिछौना या चटाई जिस पर मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं।

ज़ायल–(फा. वि.) विनष्ट; बरबाद।

ज़ाया–(फा. वि.) खोया हुआ। अप्राप्य।

ज़ार–(फा. वि.) आर्त्त; दुखित।

जारी–(अ. वि.) बहता हुआ; प्रवाहित। चलता हुआ; चालू; प्रचलित।

जाल–(अ. पु.) धोखा; कपट कार्रवाई।

जालसाज़–(फा. वि.) धोखेबाज़।

जालसाज़ी–(फा. स्त्री.) छल कपट; धोखेबाज़ी।

ज़ालिम–(अ. वि.) ज़ुल्म या अत्याचार करनेवाला।

जालिया–(उ. वि.) दे. "जालसाज़"।

जाली–(उ. वि.) कृत्रिम; बनावटी।

जावेद–(फा. वि.) शाश्वत; नित्य।

जासूस–(अ. पु.) किसी बात का गुप्त रीति से भेद लेनेवाला; भेदिया; गुप्तचर।

जासूसी–(अ. स्त्री.) गुप्त रीति से किसी बात का पता लगाना; गुप्तचर का काम। –(वि.) जासूस संबंधी।

जाह–(अ. स्त्री.) मान; प्रतिष्ठा। वैभव।

ज़ाहिद–(अ. वि.) संसार-त्यागी; निस्पृह। विरक्त।

ज़ाहिर–(अ. वि.) जो छिपा न हो; प्रकट; विदित।

ज़ाहिरदारी–(फा. स्त्री.) केवल दिखाने के लिये कोई काम करना; दिखावा।

ज़ाहिरा–(अ. क्रिवि.) देखने में; प्रकट में।

जाहिल–(अ. वि.) मूर्ख।

ज़िंदगानी, ज़िंदगी–(फा. स्त्री.) जीवन। जीवनकाल; आयु।

ज़िंदा–(फा. वि.) जीवित। सजीव। ज़िंदा दिल = विनोद प्रिय। फुरतीला; चुस्त।

जिंस–(फा स्त्री) दे "जिन्स"।

जिक्र–(अ पु) चर्चा, प्रसंग। उल्लेख।

जिगर–(फा पु) कलेजा, यकृत्। हृदय, मन। साहस। गूदा, सत्त, सार।

जिगरा–(उ पु) मन की दृढ़ता, साहस।

जिगरी–(फा वि) मन के अंदर का, मानसिक। हार्दिक। अत्यंत घनिष्ठ।

जिच–(फा स्त्री) विवशता, मजबूरी। बंधन, लाचारी। शतरंज में खेल की वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न हो।

जिजिया–(अ पु) दंड, कर। एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्यकाल में अन्य धर्मवालों पर लगाया जाता था।

जिद–(अ स्त्री) वैर, शत्रुता। दुराग्रह, हठ। विपरीत, उलटा।

जिद्दी–(फा वि) दुराग्रही, हठी।

जिन–(अ पु) भूत, प्रेत।

जिना–(अ पु) व्यभिचार।

–जिना बिल जब्र = किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा व सम्मति के विरुद्ध बलात् संभोग करना, हठसंभोग।

जिनाकार–(फा वि) व्यभिचारी।

जिनाकारी–(फा स्त्री) व्यभिचार।

जिन्स–(फा स्त्री) प्रकार, तरह। वस्तु, सामग्री। अनाज।

जिन्सवार–(फा पु) पटवारियों का वह खाता जिसमें वे खेत में बोये हुए अनाज का नाम आदि लिखते हैं।

जिमा–(अ पु) मैथुन, संभोग।

जिम्मा–(अ पु) किसी काम के करने का भार, उत्तरदायित्व। रक्षा, देख-रेख।

जिम्मादार, जिम्मावार–(फा पु) उत्तरदायी।

जिम्मादारी, जिम्मावारी–(फा स्त्री) उत्तरदायित्व।

जियान–(अ पु) घाटा, नष्ट।

जियादा–(फा वि) दे "ज्यादा"।

जियाफत–(अ स्त्री) आतिथ्य, अतिथि सत्कार। भोज, दावत।

जियारत–(अ स्त्री) दर्शन। तीर्थ-यात्रा।

जियारती–(अ वि) दर्शन करनेवाला। तीर्थ यात्री।

जिरगा–(फा पु) दे "जरगा"।

जिरह–(फा स्त्री) लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच, बख्तर।

जिरहपोश, जिरही–(फा वि) कवच-धारी।

जिराअत–(अ स्त्री) खेती बारी, कृषि।

जिराअती–(फा पु) कृषक, किसान।

जिरियान–(उ. पु.) मेहस्राव; प्रमेह।

जिला–(अ. स्त्री.) चमक दमक; कांति। माजकर मुलम्मा करके चमकीला बनाने का कार्य; "पालिश" लगाना; सान चढाना।

ज़िला–(अ. पु.) प्रांत; प्रदेश। किसी इलाके का छोटा विभाग; ग्राम-समूह। (भारत में) किसी प्रांत का वह भाग जो कलक्टर के प्रबंध में हो; "डिस्ट्रिक्ट"।

जिलाकार–(फा. पु.) तलवार आदि की धार तेज़ करनेवाला; सान धरनेवाला।

ज़िलादार–(फा. पु.) मालगुजारी वसूल करनेवाला एक अफ़सर या कर्मचारी जो किसी हलके में काम करने के लिये नियत हो।

जिलासाज़–(फा .पु.) दे. "जिलाकार"।

जिल्द–(अ. स्त्री.) खाल। ऊपर का चमडा; त्वचा। वह पट्ठा वा दफ्ती जो किसी पुस्तक के ऊपर उसकी रक्षा के लिये लगाई जाती है; "बाइंड"। पुस्तक की एक प्रति। पुस्तक का वह भाग जो पृथक् सिला हो; भाग; खंड।

जिल्दगर, जिल्दबंद, जिल्दसाज़–(फा. पु.) वह जो किताबों की जिल्द बांधता हो; जिल्द बांधनेवाला; "बाइंडर"।

जिल्दबंदी, जिल्दसाज़ी–(फा. स्त्री.) जिल्द बंधाई। जिल्द बांधने का काम। जिल्दबंद का काम या पेशा।

जिल्लत–(अ. स्त्री.) अनादर; अपमान। दुर्गति; दुरवस्था।

जिस्म–(फा. पु.) शरीर; देह।

जिस्मानी–(फा. वि.) शारीरिक।

ज़िहन–(अ. पु.) बुद्धि; समझ।

जिहाद–(अ. पु) मजहबी लडाई; धर्मयुद्ध।

ज़ीन–(फा. पु.) घोड़े या ऊँट की पीठ पर रखने की गद्दी। एक प्रकार का सूती कपडा।

ज़ीनत–(फा. स्त्री.) शोभा; अलंकार।

ज़ीनपोश–(फा. पु.) जीन के ऊपर ढकने का कपडा।

ज़ीनसवारी–(फा. स्त्री.) घोड़े या ऊंट पर जीन रखकर चढने का काम।

ज़ीनहार–(फा. क्रिवि.) कदापि, हरगिज।

ज़ीना–(फा. पु) सीढी, सोपान।

ज़ीस्त–(फा. स्त्री.) जिंदगी; जीवन।

ज़ुंबिश–(फा. स्त्री) गति; चलन; हिलना डोलना।

ज़ुकाम–(अ. पु) सरदी से होनेवाले

एक बीमारी जिसमें नाक और मुँह से कफ निकलता है।

जुज–(फा पु) कागज का एक तरना या ताव जिसे तह करने पर आठ या सोलह पृष्ठ बनते हैं, छपाई का एक फ़ारम। हिस्सा।

जुजबंदी–(फा स्त्री) किताब के जुज़ों या फ़ारमों को सीने का एक ढंग, जैसे इस पुस्तक के फारम सिले हों, "सेक्शन बाइंड"।

जुजवी–(फा वि) बहुत कम, अत्यल्प।

जुदा–(फा वि) पृथक्, अलग। विभिन्न।

जुदाई–(फा स्त्री) जुदा होने का भाव, वियोग। भिन्नता।

जुनून–(फा पु) पागलपन।

जुन्नार–(अ पु) जनेऊ, यज्ञोपवीत।

जुफ्त–(फा वि) युग्म, युगल।

जुफ्त ताक़ = एक खेल जिसमें कौड़ियाँ हाथ में लेकर पूछा जाता है कि ये जुफ्त हैं या ताक़ याने युग्म हैं या विषम।

जुबान–(फा स्त्री) दे "जबान"।

जुमरा–(अ पु) मंडली, दल। भीड़।

जुमला–(फा वि) सब, कुल।

–(पु) पूरा वाक्य।

जुमर्रुद–(फा पु) मरकत।

जुमा–(अ पु) शुक्रवार।

जुमेरात–(उ स्त्री) गुरुवार।

जुरअत–(फा स्त्री) साहस, हिम्मत।

जुरमाना–(फा पु) अर्थ-दंड।

जुराफा–(अ पु) अफ्रीका का एक बहुत ऊंचा जंगली पशु जिसकी टांगें और गर्दन ऊंट की सी लंबी होती हैं।

जुर्म–(अ पु) न्याय विरुद्ध काम, अपराध।

जुर्रा–(फा पु) पुरुष जाति का बाज या गिद्ध।

जुर्राब–(तु स्त्री) पैर में पहनने की एक प्रकार की बुनी हुई थैली, मोज़ा।

जुलाब–(फा पु) विरेचन, कोष्ठशुद्धि, भेदि। रेचक औषध।

जुलाहा–(फा * पु) कपड़ा बुननेवाला। पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा।

जुल्फ–(फा स्त्री) सिर के लंबे बाल जो कनपटियों के पास लटकते रहते हैं, अलक।

जुल्म–(अ पु) अत्याचार, अन्याय।

जुलूस–(अ पु) सिंहासनारोहण, पट्टाभिषेक। किसी उत्सव का समारोह। धूम धाम की यात्रा या सवारी।

जुस्तजू–(फा स्त्री) तलाश, खोज।

जू–(फा स्त्री) पानी की नहर, नाला।

जूताख़ोर–(उ. वि.) जो मार या गाली को कुछ परवा न करे; निर्लज्ज ।

जूतीपैजार–(उ. स्त्री.) जूतों की मार-पीट । लड़ाई-झगड़ा ।

जूस–(उ. पु.) दे. "जुफ़्त" ।

ज़ेब–(फा. स्त्री.) सौंदर्य ।

जेब–(फा. पु.) कुरते, कोट आदि में लगी हुई वह छोटी थैली जिसमें चीजें रखते हैं; "पाकेट" ।

जेबकट, जेबकतरा–(उ. पु.) दूसरों के जेब से रुपया पैसा चुराने के लिये जेब काटनेवाला ।

जेबख़र्च–(फा. पु.) भोजन, वस्त्र आदि के खर्च के अलावा निज के छोटे मोटे खर्च का धन ।

जेबघड़ी–(उ. स्त्री.) छोटी घड़ी जो जेब में रखी जाती है ।

जेबी–(फा. वि.) जेब में रखने योग्य; बहुत छोटा ।

ज़ेर–(फा. वि) पराजित । पीड़ित । पतित । नीचे का ।

ज़ेरदस्त–(फा. वि.) दुर्दशा-ग्रस्त । दुर्बल ।

ज़ेरपाई–(फा. स्त्री.) स्त्रियों की जूती ।

ज़ेरबंद–(फा. पु.) वह तसमा जो जीन आदि बाँधने में नीचे आता है ।

ज़ेरबार–(फा. वि.) दुर्दशा-ग्रस्त । दुखित; दीन ।

ज़ेरबारी–(फा. स्त्री.) दुख; कष्ट ।

जेलख़ाना–(उ. पु) कारागृह ।

ज़ेवर–(फा. पु.) गहना; आभूषण ।

ज़ेहन–(अ. पु) दे. "ज़िहन" ।

जैयद–(अ. वि.) बढ़िया; उत्कृष्ट । दृढ़ ।

ज़ैल–(अ. पु.) दामन । नीचे का भाग ।

ज़ैलदार–(फा. पु) वह सरकारी कर्मचारी जिसके अधिकार में कई गांवों का प्रबंध हो ।

ज़ोफ़–(अ. पु.) बुढ़ापा । निर्बलता ।

ज़ोम–(अ. पु.) उमंग, उत्साह । जोश; आवेश । घमंड ।

जोया–(फा. वि.) ढूंढनेवाला ।

ज़ोर–(फा. पु) बल; शक्ति । प्रबलता; तीव्रता । उन्नति । वश; अधिकार । वेग; आवेश । भरोसा; आश्रय । परिश्रम । कसरत; व्यायाम ।

जोर–जुलुम = अन्याचार ।

ज़ोरदार–(फा. वि.) जिसमें बहुत ज़ोर या शक्ति हो; बलवान ।

ज़ोरमंद–(फा. वि.) शक्तिमान; बलवान ।

ज़ोरशोर–(फा. पु.) बहुत अधिक ज़ोर ।

ज़ोरा ज़ोरी–(उ. स्त्री.) जबरदस्ती; बलात्कार ।

—(क्रि वि) बलपूर्वक।

जोरावर—(फा वि) ताकतवर, बलवान, बलिष्ठ।

जोरावरी—(फा स्त्री) बलात्कार।

जोश—(फा पु) आँच या गर्मी के कारण उबलना, उबाल। मनोवेग, आवेग।

जोशन—(फा पु) भुजाओं पर पहनने का एक गहना। कवच।

जोशांदा—(फा पु) पानी में उबाली हुई जड़ या पत्तियाँ आदि, काढ़ा, क्वाथ।

जोशीला—(उ वि) जिसमें बहुत जोश हो, आवेगपूर्ण।

जौक—(अ पु) शौक, अभिरुचि।

जौग—(तु* पु) झुंड, जत्था, दल। सेना। पक्षियों की कतार या श्रेणी।

जौज—(अ पु) पति, भर्ता।

जौजा—(अ स्त्री) पत्नी।

जौर—(अ पु) अत्याचार।

जौहर—(अ पु) रत्न। सारांश, तत्त्व। हथियार की चमक, कांति। विशेषता, उत्कृष्टता।

जौहरी—(फा पु) रत्न परखने या बेचनेवाला, रत्नपारखी, रत्न विक्रेता। वस्तु के गुण दोष की पहचान रखने वाला, परखैया।

ज्यादती—(फा स्त्री) अधिकता, अत्याचार।

ज्यादा—(फा वि) अधिक।

ड

डफला—(उ पु) दे "डफ"।

डफली—(उ स्त्री) "डफला" का अल्प रूप।

डफाली—(उ पु) डफला, ढोल आदि बजानेवाला।

डाकाजनी—(उ स्त्री) डाका मारने का काम, डकैती।

त

तंग–(फा. पु.) घोड़ों की पीठ कसने का तसमा; कसन।
–(वि.) कसा हुआ; दृढ़। विकल; पीड़ित। छोटा, चुस्त।

तंगदस्त–(फा. वि.) निर्धन; दरिद्र। कृपण।

तंगदस्ती–(फा. स्त्री.) दरिद्रता। कृपणता।

तंगदिल–(फा. वि.) कृपण, कंजूस।

तंगहाल–(फा. वि.) दरिद्र; ग़रीब। पीड़ित; दुखिन।

तंगी–(फा. स्त्री.) संकीर्णता; संकोच। दुख, कष्ट। निर्धनता, ग़रीबी। कमी; न्यूनता।

तंज़ेब–(फा. स्त्री.) एक तरह का महीन और बढ़िया कपड़ा।

तंदुरुस्त–(फा. वि.) स्वस्थ; आरोग्य।

तंदुरुस्ती–(फा. स्त्री.) नीरोग या स्वस्थ होने की स्थिति या भाव, आरोग्यता।

तंदूर–(फा. पु.) रोटी पकाने की मिट्टी की बड़ी और गोल अंगीठी।

तंदूरी–(फा. वि.) तंदूर में पकाया हुआ।

तंदेही–(फा. स्त्री.) परिश्रम, प्रयत्न। सावधान करना; चेतावनी।

तंबा–(फ़ा. पु.) चीनी मोहरी का एक तरह का पायजामा।

तंबीह–(अ. स्त्री.) चेतावनी, ताकीद। डाँट-डपट, धमकी।

तंबूर–(अ. पु.) छोटा ढोल। रोटी पकाने का बरतन।

तंबूरची–(फा. पु.) तंबूर बजानेवाला।

तअक़्क़ुब–(अ. पु.) पीछा करना।

तअज्जुब–(अ. पु.) आश्चर्य, विस्मय।

तअम्मुल–(अ. पु.) विचार।

तअल्लुक़–(अ. पु.) संबंध।

तअल्लुक़ा–(अ. पु.) बहुत से गाँवों की पैमाइश।

तअल्लुक़ादार–(अ. पु.) तअल्लुक़े का मालिक।

तअल्लुक़ादारी–(अ. स्त्री.) तअल्लुक़ादार का पद या भाव।

तअस्सुब–(अ. पु.) धर्म या जाति संबंधी पक्षपात।

तक़्दमा–(अ. पु.) तलबीना। मुक़दमा पेश करना। पेशगी दिया गया रुपया।

तक़्दीर–(अ. स्त्री.) भाग्य; विधि।

तक़्दीरवर–(फा. वि.) भाग्यवान।

तहब्बुर–(अ. पु.) अहंकार; गर्व।

तक्मील-(अ स्त्री) संपूर्णता।

तकरार-(अ स्त्री) किसी बात को बार बार कहना, पुनरुक्ति। वाद विवाद, झगड़ा।

तक्रीब-(अ स्त्री) उत्सव। परिचय।

तक्रीबन्-(अ क्रिवि) लगभग।

तक्रीर-(अ स्त्री) बातचीत, भाषण, वक्तव्य।

तक़र्रुब-(अ पु) समीपता।

तकर्ररी-(अ स्त्री) नियुक्ति।

तक्लीद-(अ पु) आँख मूंद कर अनुसरण, भेड़ियाधसान।

तकलीफ-(अ स्त्री) कष्ट, दुख। विपत्ति, संकट।

तक्लील-(अ पु) कम करना।

तकल्लुफ-(अ पु) दिखावटी सभ्य व्यवहार या उपचार, शिष्टाचार।

तक़्वियत-(अ स्त्री) बल या जोर देना।

तकव्वुद-(अ पु) कथन।

तक्सीम-(अ स्त्री) बाँटने का काम। भागहार (गणित)।

तक्सीर-(अ स्त्री) कमी, चूक। भूल, गलती।

तक्सीरवार-(फा वि) अपराधी, दोषी।

तक़ाज़ा-(अ पु) ऐसी चीज माँगना जिसके पाने का अधिकार हो, माँग। बार बार कोई काम करने को कहना, प्रेरणा।

तक़ावी-(अ स्त्री) वह धन जो ज़मींदार या सरकार की ओर से गरीब किसानों को बीज खरीदने या कुआँ आदि बनवाने के लिये दिया जाय।

तकिया-(फा पु) कपड़े का वह थैला जिसमें रूई आदि मृदु पदार्थ भर कर लेटने के समय सिर के नीचे रखते हैं। पत्थर आदि का वह चौकोर टुकड़ा जो सहारे के लिये लगाया जाता है। विश्राम करने का स्थान। आश्रय। मुसलमान फ़क़ीर का आश्रम।

तकियाकलाम = दे "सखुन-तकिया"।

तकियादार-(फा पु) समाधि पर रहनेवाला मुसलमान फ़क़ीर।

तख्फीफ-(अ स्त्री) कमी। संक्षिप्त करने का काम, न्यूनता।

तख्मीनन्-(अ क्रिवि) अंदाज से, अटकल से।

तख्मीना-(अ पु) अंदाज, अनुमान, ऊह।

तख्लिया-(अ पु) एकांत स्थान।

तखल्लुस-(अ पु) उपनाम।

तखसीस-(अ स्त्री) विशेषता।

तख़्त–(फा. पु.) सिंहासन। लकड़ी का बना हुआ पीठ, आसन।
तख़्त-ताऊस = मयूरासन। मोर के आकार का एक प्रसिद्ध राज-सिंहासन जिसे शाहजहाँ ने छः करोड़ रुपये लगाकर बनवाया था और जो अब ईरान में है।
तख़्तनशीन–(फा. वि.) सिंहासनारूढ़।
तख़्तपोश–(फा. पु.) तख़्त पर बिछाने की दुपट्टी या चादर। चार पायेदार पीठ।
तख़्तबंदी–(फा. स्त्री.) लकड़ी के पटरों से बनी हुई दीवार।
तख़्ता–(फा. पु) लकड़ी का लंबा-चौड़ा और चौकोर टुकड़ा; बड़ा पटरा। लकड़ी का चौकोर आसन जिसके चार पायें हों। शव की अर्थी। बाग की क्यारी। बहुत मोटे कागज का टुकड़ा जो पुस्तक आदि के जिल्द बाँधने के लिये उपयोग किया जाता है।
तख़्ती–(फा. स्त्री.) छोटा तख़्ता। काठ की पटरी जिस पर लड़के लिखने का अभ्यास करते हैं।
तग़ादा–(अ. पु) दे. "तक़ाज़ा"।
तग़ीर–(अ पु) परिवर्तन।
तग़ीरी–(अ. स्त्री.) परिवर्तन।
तज़किरा–(अ. पु.) चर्चा; ज़िक्र। उल्लेख।
तज़रबा–(अ. पु) अनुभव। ज्ञान प्राप्त करने के लिये की जानेवाली परीक्षा; प्रयोग।
तज़रबाकार–(फा. पु.) अनुभवी। प्रयोग करके परीक्षा करनेवाला।
तजवीज़–(अ स्त्री.) सम्मति; मत; राय। निर्णय। बंदोबस्त; प्रबंध। योजना।
तज़ल्ली–(अ. स्त्री.) प्रकाश, ज्योति।
तज़म्मुल–(अ. पु.) वैभव; शोभा। सुंदरता।
तदबीर–(अ. स्त्री.) उपाय; युक्ति।
तदारुक–(अ.पु.) प्रबंध, व्यवस्था। दंड।
तनज़–(अ. पु) ताना; व्यंग्य।
तनक़ीद–(अ. स्त्री.) समालोचना; समीक्षा।
तनक़ीह–(अ. स्त्री.) जाँच, परीक्षा। अन्वेषण।
तनख़ाह–(फा. स्त्री.) माहवार मजदूरी; वेतन।
तनख़ाहदार–(फा. पु.) वेतन पानेवाले; वेतन पर काम करनेवाला।
तनज़्ज़ुल–(अ. वि.) अवनत; पतित।
तनज़्ज़ुली–(अ. स्त्री.) अवनति; पतन।
तनसीख़–(अ स्त्री) रद्द; काट छाँट।
तनहा–(अ. वि.) अकेला; एकांत।
–(क्रिवि) अकेले, एकांत में।

तनहाई-(फा स्त्री) एकांत, एकांतता।
तना-(फा पु) पेड़ का धड़।
तनाज़ा-(अ पु) झगड़ा, टंटा। बैर, शत्रुता।
तनाब-(अ स्त्री) डेरे की रस्सी।
तनावर-(फा वि) स्थूल शरीरवाला, मोटा।
तनासुल-(अ पु) संतति।
तनूर-(फा पु) दे "तंदूर"।
तपाक-(फा पु) उन्माद, जोश। सहृदयता, सौजन्य।
तपिश-(फा स्त्री) ताप, गर्मी।
तपेदिक़-(फा पु) क्षयरोग।
तफ़ज़ील-(अ स्त्री) बड़प्पन। मान, प्रतिष्ठा।
तफ़ज़्ज़ुल-(अ पु) महत्व, बड़ाई।
तफ़तीश-(अ स्त्री) अन्वेषण, खोज।
तफ़रिक़ा-(अ पु) अनबन, फूट।
तफ़रीक़-(अ स्त्री) भिन्नता।
तफ़रीह-(अ स्त्री) प्रसन्नता, खुशी। हास्य विनोद, दिल्लगी। हवा खाने की सैर, हवाख़ोरी। ताज़गी।
तफ़सील-(अ स्त्री) विस्तार के साथ वर्णन, विवरण, ब्यौरा। टीका। सूची।
तफ़ावत-(अ पु) फ़ासला, अन्तर।
तब-(फा स्त्री) ज्वर।
तबक़-(अ पु) लोक। परत, तह। पीटकर कागज की तरह बनाया हुआ सोने, चाँदी आदि का पतला पत्तर। चौड़ी और छिछली थाली।
तबक़गर-(फा पु) सोने चाँदी के तबक़ बनानेवाला।
तबक़ा-(फा पु) खंड, विभाग। तह, परत। लोक। मनुष्य-समूह, समाज।
तबक़िया-(फा पु) दे "तबक़गर"।
तबदील-(अ स्त्री) परिवर्तन।
तबदीली-(अ स्त्री) बदली। एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति।
तबद्दुल-(अ पु) परिवर्तन।
तबर-(फा पु) कुल्हाड़ी।
तबर्रा-(अ पु) घृणा करना।
तबर्रुक-(अ पु) प्रसाद।
तबल-(अ पु) बड़ा ढोल, डंका।
तबलची-(फा पु) तबला बजानेवाला।
तबला-(अ पु) मृदंग के ढंग पर एक ही ओर बजाया जानेवाला एक प्रसिद्ध बाजा।
तबलिया-(अ पु) दे "तबलची"।
तबस्सुम-(अ पु) मुस्कराहट, मंदहास।
तबाक़-(अ पु) परात।
तबादला-(अ पु) परिवर्तन, विनिमय। स्थान परिवर्तन।

तबाबत–(अ. स्त्री.) चिकित्सा।
तबाह–(फा. वि.) बिगड़ा हुआ; नष्ट-भ्रष्ट; बरबाद।
तबाही–(फा. स्त्री.) नाश, ध्वंस।
तबीअत–(अ. स्त्री.) मन; चित्त। स्वास्थ्य। प्रकृति; स्वभाव।
तबीअतदार–(फा. वि.) भावुक, रसिक।
तबीअतदारी–(फा. स्त्री.) भावुकता; रसिकता।
तबीब–(अ. पु.) वैद्य।
तबेला–(अ. पु.) अश्वशाला; घुड़साल।
तब्बअ–(अ. वि.) बुद्धिमान।
तब्बाई–(अ. स्त्री.) बुद्धिमानी।
तपिंचा, तमंचा–(फा. पु.) छोटी बंदूक। वह लंबा पत्थर जो दरवाज़ों की बगल में लगाया जाता है।
तमकनत–(अ. पु.) गांभीर्य।
तमकीन–(अ. वि.) गंभीर।
तमग़ा–(तु. पु.) सोने चाँदी का पदक।
तमन्ना–(अ. स्त्री.) इच्छा; चाह।
तमसील–(अ. पु.) दृष्टांत।
तमस्सुक–(अ. पु.) वह पत्र जो ऋण लेनेवाला महाजन को लिख कर देता है; ऋण पत्र।
तमहीद–(अ. स्त्री.) भूमिका।
तमा–(अ. स्त्री.) लोभ।
तमाकू, तमाखू–(पुर्त. पु.) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके सूखे पत्तों को लोग यों ही पान के साथ खाते हैं या कागज आदि से लपेट कर चुरुट या बीड़ी बनाकर पीते हैं या चूर्ण करके नास बना कर सूँघते हैं; "ब्रह्मपत्र"। इन पत्तों से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी या गोली जिसे चिलम पर जलाकर मुँह से धुँआँ खींचते हैं।
तमाचा–(फा. पु) हथेली और उंगलियों से गाल पर किया हुआ प्रहार, थप्पड़।
तमादी–(अ. स्त्री.) समय या अवधि का पूरा हो जाना।
तमाम–(अ. वि.) समस्त; सब। समाप्त; पूर्ण।
तमाशबीन–(फा. वि.) विषयी, लंपट।
तमाशबीनी–(फा. स्त्री.) लंपटता।
तमाशा–(अ पु.) अभिनय, स्वांग, विनोद, खेल आदि मनोरंजन के काम; मनोरंजन। अद्भुत व्यापार।
तमाशाई–(फा. वि.) तमाशा देखनेवाला।
तमीज़–(अ. स्त्री.) विवेक; विवेचना शक्ति। ज्ञान; पहचान। शिष्टाचार।
तय–(अ. वि.) पूरा किया हुआ। नियुक्त। निर्णीत। पार किया हुआ।
तर–(फा. वि.) भीगा हुआ, गीला।

ठंडा। हरा, ताजा। मालदार।
तर बतर = बहुत भीगा हुआ।

तरकश–(फ़ा पु) बाणों का कोष, तूणीर।

तरका–(अ पु) वह संपत्ति जो किसी मरे हुए आदमी के वारिस को मिले।

तरकीब–(अ स्त्री) मिलान, तुलना। बनावट, रचना। युक्ति, उपाय।

तरक्की–(अ स्त्री) उन्नति, बढ़ती।

तरगीब–(अ पु) प्रोत्साहन।

तरतीब–(अ स्त्री) सिलसिला, क्रम। व्यवस्था।

तरतीबवार–(फ़ा वि) क्रमानुसार, क्रमशः।

तरदीद–(अ स्त्री) खंडन।

तरद्दुद–(अ पु) सोच, चिंता।

तरफ़–(अ स्त्री) दिशा, ओर। पक्ष, पार्श्व। किनारा।

तरफ़दार–(फ़ा वि) पक्ष में रहनेवाला, सहायक। पक्षपाती।

तरफ़दारी–(फ़ा स्त्री) पक्षपात।

तरफ़ैन–(अ वि) दोनों ओर का, पक्षद्वय।

तरबियत–(अ स्त्री) संरक्षण, पालन पोषण। शिक्षा, उपदेश।

तरबूज़–(फ़ा पु) एक फल जो खाया जाता है, कर्बूज।

तरमीम–(अ स्त्री) संशोधन, सुधार। मरम्मत।

तरह–(अ स्त्री) प्रकार, विध। रीति, प्रथा। ढंग, ढाँचा। बनावट, रूप रंग। युक्ति, उपाय। दशा, परिस्थिति। समस्या।

तरहदार–(फ़ा वि) सुघटित, सुडौल। शौकीन।

तरहदारी–(फ़ा स्त्री) सजधज का ढंग, सजावट।

तराज़ू–(फ़ा स्त्री) तौलने का उपकरण, तुला, तकड़ी।

तराना–(फ़ा पु) एक प्रकार का गीत।

तरावोर–(उ वि) भीगा हुआ।

तरावट–(उ स्त्री) गीलापन। ठंडक, शीतलता। साधारण भोजन।

तरावत–(अ स्त्री) ताजगी। हरियाली।

तराश–(फ़ा स्त्री) काटने का ढंग या भाव, काट छाँट। बनावट, गढ़न।
तराश खराश = काट छाँट।

तराशना–(उ क्रि) काटना, कतरना,

तराशा–(फ़ा पु) कतरने से निकला हुआ लकड़ी आदि का टुकड़ा, कतरन।

तरी–(फ़ा स्त्री) गीलापन। आर्द्रता। ठंडापन, शीतलता। गीली और गीली भूमि।

तरीक़ा–(अ. पु.) ढंग; प्रकार। चाल; प्रणाली। उपाय। मार्ग।

तर्क–(अ. पु.) त्याग।

तर्कना–(उ. सक्रि.) त्यागना।

तर्ज़–(अ. पु.) प्रकार; रीति। शैली; ढंग। बनावट; गढ़न।

तर्जुमा–(अ. पु.) भाषांतर; अनुवाद।

तलख़–(फा. वि.) कड़ुआ। असह्य।

तलत्तुफ़–(अ. पु.) अनुग्रह।

तलफ़–(अ. वि.) नष्ट; बरबाद।

तलफ्फुज़–(अ. पु.) उच्चारण।

तलब–(अ. स्त्री.) खोज, अन्वेषण। चाह; अभिलाषा। आवश्यकता; मांग। याचना; मांगना। बुलावा; निमंत्रण। वेतन। (यौगिक में) अर्थी; जैसे—आराम-तलब = सुखार्थी।

तलबगार–(फा. वि.) चाहनेवाला; इच्छुक।

तलबाना–(फा. पु.) वह खर्चा जो साक्षियों को बुलाने के लिये अदालत में दाख़िल किया जाता है।

तलबी–(अ. स्त्री.) बुलावा; निमंत्रण। मांग।

तलाक़–(अ. पु.) पति का अपनी पत्नी को त्याग देना; विवाह विच्छेद।

तलातुम–(अ. पु.) लहरों का टकराना। झगड़ा; लड़ाई।

तलाफ़ी–(अ. स्त्री.) प्रायश्चित्त।

तलाश–(तु. स्त्री.) खोज; अनुसंधान। चाह; वांछा।

तलाशना–(उ. सक्रि.) खोजना; ढूंढना।

तलाशी–(फा. स्त्री.) छिपाई हुई वस्तु को या चोरी की चीज़ को पाने के लिये जिस मनुष्य पर संदेह है उसका घर-बार, माल-सामान आदि की जांच पड़ताल।

तवंगर–(फा. वि.) बलिष्ट। धनिक।

तवंगरी–(फा. स्त्री.) बलिष्ठता। धनिकत्व।

तवज्जुह–(अ. स्त्री.) ध्यान। कृपादृष्टि।

तवाज़ा–(अ. स्त्री.) आदर-सत्कार। आतिथ्य। न्योता; दावत।

तवाफ़–(अ. पु.) प्रदक्षिण।

तवायफ़–(अ. स्त्री.) वेश्या।

तवारीख़–(अ. स्त्री.) इतिहास।

तवालत–(अ. स्त्री.) दीर्घत्व; लंबाई। झंझट; टंटा।

तवील–(अ. वि.) लंबा। बड़ा।

तशख़ीस–(अ. स्त्री.) निश्चय; निर्धार। रोग की पहचान; निदान।

तशदीद–(अ. स्त्री.) अत्याचार। द्वित्व। (व्याकरण)

तशद्दुद–(अ. पु.) अत्याचार।

तशबीह–(अ स्त्री) उपमा।

तशरीफ–(अ स्त्री) महत्व, बड़प्पन। इज्जत, प्रतिष्ठा।
तशरीफ रखना = विराजना।
तशरीफ लाना = पधारना।

तशरीह–(अ स्त्री) व्याख्या, भाष्य।

तश्तरी–(फा स्त्री) छोटी थाली, "प्लेट"।

तसकीन–(अ स्त्री) आराम, सौख्य, चैन।

तसदीअ–(अ स्त्री) सिर का दर्द। कष्ट।

तसदीक–(अ स्त्री) सत्यता। सत्यता की परीक्षा। प्रमाणों द्वारा पुष्टि, समर्थन। साक्ष्य।

तसनीफ–(अ स्त्री) ग्रंथ रचना, लेख।

तसबीह–(अ स्त्री) जपमाला।

तसमा–(फा पु) चमड़े की लंबी और पतली पट्टी जो बिस्तर आदि को बाँधने के काम में आती है।

तसरीह–(अ स्त्री) प्रकट करना।

तसर्रुफ–(अ पु) अपने अनुकूल बदल लेना।

तसलीम–(अ स्त्री) सलाम, नमस्कार। स्वीकार, अंगीकार।

तसल्ली–(अ स्त्री) आश्वासन, सांत्वना। धीरज, धैर्य।

तसवीर–(अ स्त्री) चित्र।
–(वि) सुंदर, रम्य।

तसव्वुफ–(अ पु) योगविद्या।

तसव्वुर–(अ पु) ध्यान, बोध।

तसहीह–(अ स्त्री) सही या शुद्ध करना।

तस्फिया–(अ पु) निबटेरा, फैसला।

तह–(फा स्त्री) किसी वस्तु की मोटाई का फैलाव जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर हो, परत। तल। पानी के नीचे की जमीन, थाह।

तहकीक–(अ स्त्री) किसी विषय की यथार्थता की खोज, छान बीन।

तहकीकात–(अ स्त्री) "तहकीक" का ब रूप।

तहकीर–(अ स्त्री) निकृष्ट या तुच्छ समझना।

तहखाना–(फा पु) जमीन के नीचे का घर या कमरा, तलगृह।

तहजीब–(अ स्त्री) सभ्यता, शिष्टता।

तहजी–(अ स्त्री) वर्णमाला।

तहपेच–(फा पु) वह कपड़ा जो पगड़ी बाँधने के पहले सिर पर बाँधा जाता है।

तहबंद–(फा पु) साड़ी के नीचे पहनने का लहंगा। जुंगी।

तहबाजारी–(फा स्त्री) वह महसूल जो

हाट या बाजार में सौदा बेचनेवालों से लिया जाय।

तहत-(अ. क्रि.वि.) अधीन। नीचे।

तहमत-(फा. पु.) लुंगी।

तहम्मुल-(अ. पु.) सहिष्णुता; सहन। धैर्य।

तहय्युर-(अ. पु.) आश्चर्य; विस्मय।

तहरीक-(अ. स्त्री.) आंदोलन; उत्तेजना।

तहरीर-(अ. स्त्री.) लिखावट; लेख। लेखनशैली। लिखा हुआ विषय। लिखने की मजदूरी, लिखाई।

तहरीरी-(फा. वि.) लिखा हुआ; लिखित।

तहलका-(अ. पु.) मौत; मृत्यु। सर्वनाश। खलबली। भारी हलचल; उपद्रव।

तहवील-(अ. स्त्री.) सुपुर्दगी। अमानत; धरोहर। खजाना; कोष। संक्रमण, सक्रांति।

तहवीलदार-(फा. पु) कोषाध्यक्ष; खजानची।

तहव्वुर-(अ. पु.) वीरता; पौरुष।

तहसील-(अ. स्त्री.) लोगों से रुपया वसूल करने की क्रिया; वसूली; धनसंग्रह। वह धन जो लगान वसूल करने से इकट्ठा होता है। तहसीलदार की कचहरी।

तहसीलदार-(फा. पु.) कर वसूल करनेवाला अफसर या कर्मचारी।

तहसीलदारी-(फा. स्त्री.) तहसीलदार का पद। तहसीलदार की कचहरी।

तहसीलना-(अ. सक्रि.) कर, लगान आदि वसूल करना; उगाहना।

तहेदस्त-(फा. वि.) खाली हाथ; निर्धन।

तहोबाला-(फा. क्रि.वि.) नीचे ऊपर; उलट पलट।

ता-(फा. अव्य.) तक; पर्यंत।

ताकि = जिससे कि; इसलिये कि जिससे।

ताअन-(अ. स्त्री.) ताना, उपालम्भ। मेहना; गुस्सा।

ताईद-(अ. स्त्री.) पक्षपात। अनुमोदन; समर्थन।

ताऊन-(अ. पु.) एक रोग; "प्लेग"।

ताऊस-(अ. पु.) मयूर; मोर। सारंगी की तरह का एक बाजा।

ताक़-(अ. पु.) वस्तु आदि रखने के लिये दीवार में बना हुआ गड्ढा या खाली स्थान; आला।

—(वि.) अद्वितीय। विषम (संख्या)।

ताक़जुफ्त = दे. "जुफ्तताक़"।

ताक़त-(अ. स्त्री.) शक्ति; बल। सामर्थ्य।

ताक़तवर-(फा. वि.) बलिष्ठ।

ताकीद-(अ स्त्री) सावधान करना। सावधान करके कही हुई बात, चेतावनी।

ताक़ीद-(अ वि) उलझा हुआ, जटिल।

ताज-(अ पु) राजमुकुट। मोर, मुर्गे आदि चिड़ियों के सिर पर की चोटी, शिखा। चिड़ियों के सुंदर पंख जिन्हें पगड़ी या मुकुट पर लगाते हैं। छत या छाजन के नीचे दीवार में उभड़ी हुई लकीर जो खूबसूरती के लिये बनाई जाती है, कगूरा, "कानिस"। मकान का शिखर, कलश। आगरे का ताज महल। गंजीफ़े के एक रंग का नाम।

ताजक-(फ़ा पु) एक ईरानी जाति।

ताज़गी-(फ़ा स्त्री) हरापन। प्रफुल्लता। स्वस्थता। नयापन, नवीनता।

ताजदार-(फ़ा पु) मुकुटधारी, राजा।

ताज़ा-(फ़ा * पु) कोड़ा, चाबुक।

ताजपोशी-(फ़ा स्त्री) पट्टाभिषेक, राजतिलक।

ताजमहल-(अ पु) आगरे का एक प्रसिद्ध मकबरा जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था।

ताज़ा-(फ़ा वि) हरा भरा। फल फूल आदि जिन्हें पेड़ से अलग हुए बहुत देर न हुई हो। जो व्यवहार के लिये अभी निकाला गया हो। नवीन, नया। जो अभी पकाया गया हो, बासी न हो। जो थका मांदा न हो, प्रफुल्लचित्त।

मोटा ताज़ा = हृष्ट पुष्ट।

ताज़िया-(अ पु) बांस आदि का बना हुआ मक़बरे के आकार का मंडप जिसमें इमाम हुसेन की क़ब्र होती है। मुहर्रम में मुसलमान इसकी आराधना करते और तब इसे नदी या तालाब में डालते हैं।

ताजिर-(अ पु) व्यापारी।

ताज़ी-(फ़ा वि) अरब का।

—(पु) अरब का घोड़ा। शिकारी कुत्ता।

ताज़ीम-(अ स्त्री) बड़ों की प्रतिष्ठा करना, शिष्टाचार।

ताज़ीर-(अ स्त्री) दंड, सज़ा।

ताज़ीरात-(अ स्त्री) अपराध और दंड संबंधी कानूनों का संग्रह, दंड विधान।

तातील-(अ स्त्री) छुट्टी।

तादाद-(अ स्त्री) संख्या। गिनती।

ताना-(अ पु) तानेबाज़ी। व्यंग्य।

तानाशाह-(फ़ा पु) बहुत कोमल प्रकृति का आदमी।

ताफ़्ता-(फ़ा पु) एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा जिसमें एक ही

स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है और कभी दूसरा रंग; धूपछाँह।

ताब–(फ़ा. स्त्री) ताप; गरमी। चमक; दीप्ति। शक्ति; सामर्थ्य। धैर्य। चैन; शांति।

तावां–(फ़ा. वि.) चमकदार।

तावा–(अ वि.) दे. "ताबे"।

तावीर–(अ स्त्री.) स्वप्नफल।

ताबूत–(अ. पु.) लाश रखने का संदूक।

ताबे–(अ. वि.) वशीभूत; अधीन। आज्ञाबद्ध।

ताबेदार–(फ़ा. वि.) आज्ञानुवर्ती।

ताबेदारी–(फ़ा. स्त्री.) आज्ञापालन। सेवा, नौकरी।

तामीर–(अ. स्त्री.) इमारत, भवन आदि बनाने का काम; पूर्त। आबाद करना; बसाना।

तामील–(अ. स्त्री.) आज्ञा का पालन।

ताम्मुल–(अ. पु.) व्यवहार में लाना; प्रचार करना।

तायफ़ा–(फ़ा. स्त्री.) वेश्या। वेश्याओं की मंडली। एक ही काम या पेशा करने वालों की मंडली।

तायर–(अ. पु.) चिड़िया।

ताराज–(फ़ा. पु.) लोगों को मारना पीटना और उनका धन छीनना; लूटमार। ध्वंस; नाश।

तारीक–(फ़ा. वि) अँधेरा। धुंधला; अस्पष्ट। काला।

तारीकी–(फ़ा. स्त्री.) अंधकार। कालापन।

तारीख़–(अ. स्त्री.) मिती। नियमित दिन। श्राद्ध आदि का दिन या तिथि।

तारीफ़–(अ. स्त्री.) परिभाषा; लक्षण। वर्णन; विवरण। परिचय। प्रशंसा; श्लाघा। विशेषता; गुण।

तालिब–(अ. पु.) पूछनेवाला; प्रार्थी। चाहनेवाला; आकांक्षी। अर्थी, जैसे–तालिबे–इल्म = विद्यार्थी।

तालीफ़–(अ. स्त्री.) संग्रह; संगठन।

तालीम–(अ. स्त्री) शिक्षा। कसरत।

तालेवर–(फ़ा वि.) भाग्यवान। धनी।

ताल्लुक़–(अ. पु.) दे. "तअल्लुक़"।

ताव–(फ़ा. पु) काग़ज़ का एक तख़्ता।

तावान–(फ़ा. पु.) नुकसान भरने की वस्तु; परिहार-द्रव्य; दंड।

तावीज़–(अ. पु.) यंत्र, कवच या संपुट जिसे लोग मंत्र पढ़ कर रोग और भूत-प्रेतों की बाधा दूर करने के लिये गले में या बाहु पर पहनते हैं, रक्षा; गंडा। क़ब्र के ऊपर का पत्थर।

ताश–(अ. पु.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे हों।

खेलने के लिये मोटे कागज़ के चौखूटे टुकड़े जिन पर रंगों की बूटियाँ या तस्वीर बनी रहती हैं। इन टुकड़ों का खेल। छोटी दफ्ती जिस पर सोने का तागा लपेटा रहता है।
ताशा–(अ पु) चमड़े का एक बाजा।
तासीर–(अ पु) असर करना, प्रभाव।
तास्सुफ–(अ पु) अफ़सोस, खेद।
ताहम–(फा अव्य) तो भी, यद्यपि।
तिक्का–(फा पु) मांस का टुकड़ा।
तिजारत–(अ स्त्री) व्यापार, वाणिज्य।
तितिम्मा–(अ पु) पुस्तक का परिशिष्ट।
तिफ्ल–(अ पु) शिशु, बालक।
तिब–(अ स्त्री) वैद्यशास्त्र।
तिब्बी–(अ वि) चिकित्सा संबंधी।
तिमंजिला–(फा वि) तीन मंजिलों या खंडों का।
तिरलीक, तिरक–(तु पु) स्त्रियों का एक तरह का कुरता।
तिलिस्म–(अ पु) जादू, इंद्रजाल।
तिलिस्माती, तिलिस्मी–(अ वि) जादू का।
तिश्नगी–(फा स्त्री) तृष्णा, प्यास।
–(उ पु) तना, कांड।
तिहो–(फा वि) खाली, शून्य।
तीमारदार–(फा वि) रोगियों की सेवा शुश्रूषा करनेवाला।
तीमारदारी–(फा स्त्री) रोगियों की सेवा शुश्रूषा का काम।
तीरदाज़–(फा पु) तीर या बाण चलानेवाला, धनुर्वेत्ता।
तीरदाज़ी–(फा स्त्री) तीर चलाने की विद्या या क्रिया, धनुर्विद्या।
तीर–(फा पु) बाण, शर।
तीरगर–(फा पु) तीर बनानेवाला कारीगर।
तीरगी–(फा स्त्री) अंधेरा। कालापन।
तुंद–(फा वि) प्रचंड, घोर।
तुकबंदी–(उ स्त्री) केवल तुक जोड़ने या भद्दी कविता करने की क्रिया। भद्दी कविता।
तुकमा–(फा पु) घुंडी।
–(उ पु) वह फंदा जिसमें घुंडी या "बटन" फंसाया जाता है, काज।
तुक्का–(फा पु) अभ्यास के लिये चलाया जानेवाला तीर।
तुख्म–(अ पु) बीज।
तुनुक–(फा वि) अशक्त, अयोग्य। दुरबा पतला, नाजुक।
तुपक–(तु स्त्री) छोटी तोप।
तुफग–(तु स्त्री) वह नली जिसमें

गोलियाँ आदि डालकर फूँकके ज़ोर से चलाते हैं। बंदूक।

तुमतुराक़-(फा. स्त्री.) ठाटबाट, आडंबर। शान-शौकत; तड़क-भड़क।

तुरंज-(फा. पु.) एक तरह का बड़ा नीबू।

तुरंजबीन-(फा. पु.) एक प्रकार की शक्कर। तुरंज या नीबू के रस का शरबत।

तुर्कटा-(अ. पु.) तुर्क का बेटा; मुसलमान। (घृणा सूचक)

तुर्कमान-(फा. पु.) तुर्किस्तान का मनुष्य या घोड़ा।

तुर्काना-(फा. वि.) तुर्कों का सा।
—(पु.) तुर्कों का देश या बस्ती।

तुर्किन-(फा. स्त्री.) तुर्क जाति की स्त्री। मुसलमान स्त्री।

तुर्की-(फा. वि.) तुर्क देश का।
—(स्त्री.) तुर्किस्तान की भाषा।

तुर्रा-(अ. पु.) घुँघराले बालों की लट जो माथे पर हो; अलक। टोपी, पगड़ी आदि में अलंकार के लिये लगा हुआ मोर पंख आदि। मोर, मुर्गे आदि पक्षियों के सिर पर की चोटी; शिखा। फूलों की लड़ियों का गुच्छा। कोड़ा; चाबुक।
—(वि.) विचित्र; अनूठा।

तुर्श-(फा. वि.) खट्टा। [illegible]।

तुर्शी-(फा. स्त्री.) खटाई। अम्लता।

तुल्बा-(अ. पु.) "तालिब" का बहु. रूप। विद्यार्थीगण।

तुलूअ-(अ. पु.) उदय होना।

तूत-(फा. पु.) एक वृक्ष का फल।

तूती-(फा. पु.) तोते की जाति की एक चिड़िया। एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुंदर बोलती है। मुँह से बजाने का एक बाजा।

किसी की तूती बोलना — किसी का प्रभाव जमना या मान मर्यादा का बना रहना।

तूदा-(फा. पु.) ढेर; राशि। सीमा का चिह्न, हदबंदी। मिट्टी का वह ढेर जिस पर निशाना लगाना सीखा जाता है।

तूफ़ान-(अ. पु.) डुबानेवाली बाढ़; प्रलय। आँधी; उत्पात। विपदा; आफ़त। ऊधम, शोरगुल। झगड़ा; बखेड़ा। मिथ्या कलंक।

तूफ़ानी-(फा. वि.) फसाद करनेवाला; उपद्रवी। ऊधमी। मिथ्या कलंक लगानेवाला। उग्र; प्रचंड।

तूमार-(अ. पु.) बात का व्यर्थ विस्तार; बात का बतंगड़।

तूल–(अ वि) लंबा।
तूलकलामी = बात का व्यर्थ विस्तार।
तूस–(उ पु) एक प्रकार का उत्कृष्ट ऊन जिससे दुशाले बनाते हैं। कारतूस।
तेग–(फा स्त्री) तलवार।
तेज–(फा वि) जिसकी धार तीक्ष्ण हो, पैना। शीघ्रगामी, फुरतीला। तीक्ष्ण स्वाद का, चरपरा। उग्र, प्रचंड। प्रभावोत्पादक। तीक्ष्ण बुद्धिवाला। महँगा।
तेजाब–(फा पु) किसी क्षार पदार्थ का अम्ल सार, द्रावक।
तेज़ी–(फा स्त्री) तीक्ष्णता। फुरती। शीघ्रता। उग्रता, प्रचंडता। भाव का चढ़ना, महँगी।
तै–(अ वि) दे "तय"।
तैनात–(अ* वि) किसी काम पर नियत किया हुआ, नियुक्त।
तैनाती–(उ स्त्री) नियुक्ति।
तैयार–(अ वि) काम के लिये बिल्कुल उपयुक्त। उद्यत; मुस्तैद। प्रस्तुत, मौजूद। हृष्ट पुष्ट।
तैयारी–(उ स्त्री) तैयार होनेकी क्रिया या भाव। उपस्थिति। तत्परता। शरीर की पुष्टता। प्रबंधकी पूर्णता। सजावट।
तैश–(अ पु) आवेश। गुस्सा।

तोड़ेदार–(उ वि) तोड़ा या पलीता संबंधी।
तोड़ेदार बंदूक = पुरानी चाल की वह बंदूक जो तोड़े या नारियल की जटा की रस्सी के द्वारा दागी जाय।
तोताचश्म–(उ वि) तोते की तरह आँखें फेर लेनेवाला, शील संकोच रहित।
तोप–(तु स्त्री) नली के आकार का एक बहुत बड़ा और प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें गोले रख कर बारूद की सहायता से युद्ध के समय शत्रुओं पर चलाये जाते हैं।
तोप की सलामी उतारना = किसी प्रसिद्ध पुरुष के आगमन पर या किसी महत्त्वपूर्ण घटना के समय बिना गोले के बारूद भर कर शब्द करना, जो फौजी सलाम माना जाता है।
तोपखाना–(फा पु) तोप आदि रखने का स्थान। युद्ध के लिये सुसज्जित तोपों का समूह।
तोपची–(फा पु) तोप चलानेवाला।
तोबा–(अ स्त्री) किसी अनुचित कार्य को भविष्य में न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।
तोमार–(तु स्त्री) रुई भर कर बनाया हुआ गुलगुल बिछौना।
तोशदान–(फा पु.) वह थैली या पेटी जिसमें रस्ते के लिये खानपान आदि, या

दूसरी आवश्यक चीजें रखते हैं। चमड़े की वह थैली जिसमें सिपाहियों का कारतूस रहता है।

तोशा–(फा. पु.) मार्ग का वह भोजन जो यात्री अपने साथ ले जाता है; पाथेय। साधारण खाने-पीने की चीजें।

तोशाख़ाना–(फा. पु.) वह स्थान जहाँ राजा रईसों के पहनने के बढ़िया कपड़े और गहने आदि रहते हों।

तोहफ़गी–(फा. स्त्री.) उत्तमता; उत्कृष्टता।

तोहफ़ा–(अ. पु.) भेंट; उपहार।
–(वि.) अच्छा; उत्कृष्ट।

तोहमत–(अ. स्त्री.) मिथ्या दोष; झूठा कलंक।

तोहमती–(उ. वि.) मिथ्या दोषारोपण करनेवाला।

तौक़–(अ. पु.) गले में पहनने का एक मंडलाकार गहना। बहुत भारी वृत्ताकार पट्टी जिसे अपराधी या पागल के गले में पहना देते हैं। इसी आकार का वह प्राकृतिक चिन्ह जो पक्षियों के गले में होता है; कंठी। पट्टा; चपरास। कोई गोल घेरा या पदार्थ।

तौक़ीर–(अ. स्त्री.) दूसरे की प्रतिष्ठा का ध्यान रखना।

तौफ़ीक़–(अ. स्त्री) ईश्वरानुग्रह।

तौर–(अ. पु) प्रकार; भाँति। ढंग; तरीका। दशा; स्थिति। चाल चलन; रंग-ढंग।

तौसिअ–(अ. स्त्री) विस्तृत करना।

तौसीफ़–(अ स्त्री.) गुण कथन; प्रशंसा।

तौहीन–(अ. स्त्री) अपमान; बेइज्जती।

थ

थुक्का फ़ज़ीहत–(उ. स्त्री.) निंदा और तिरस्कार; गाली-गलौज।

थोकदार, थोकफ़रोश–(उ. पु.) थोक या इकट्ठा माल बेचनेवाला व्यापारी।

द

दग–(फा वि) चकित, विस्मित। घबराया हुआ। अजाग्रत, असावधान।

दगल–(फा पु) पहलवानों की कुश्ती। मल्लयुद्ध का स्थान, अखाड़ा। दल, समूह। बहुत मोटा गद्दा या तोशक।

दगा–(फा पु) झगड़ा, उपद्रव। शोरगुल, कोलाहल।

ददासाज–(फा वि) दांत बनानेवाला।

ददाना–(फा पु) चर्खी, आरे आदि का दांत।

ददानेदार–(फा वि) जिसमें दांत की तरह निकले हुए कंगूरों की पंक्ति हो।

दकियानूस–(अ वि) बहुत पुराना। पुरातन पंथी, कट्टर।

दकीक–(अ वि) कठिन, दुरूह।

दकीका–(अ पु) कोई सूक्ष्म विषय। उपाय, युक्ति।

दक्षाक–(अ वि) चतुर, चालाक।

दखमा–(फा पु) वह स्थान जहां पारसी अपने मुर्दे रखते हैं।

दखल–(अ पु) अधिकार, स्वाधीन, वश। हाथ डालना, हस्तक्षेप। पहुंच, प्रवेश।

दखलनामा–(फा पु) वह सरकारी आज्ञा पत्र जिसमें किसी व्यक्ति के लिये किसी मकान आदि पर अधिकार कर लेने की आज्ञा हो।

दखील–(अ वि) जिसका दखल या अधिकार हो, अधिकार रखनेवाला। भूमि, मकान आदि का भोक्ता, 'अनुभोगस्थ"।

दखीलकार–(फा पु) वह रैयत जिसने किसी खेत या जमीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना अधिकार रखा हो।

दगदगा–(अ पु) आशंका। झगड़ा, बखेड़ा।

दगलफसल, दगा–(अ पु) धोखा, छल कपट।

दगादार, दगाबाज–(फा वि) धोखा देनेवाला, छली, कपटी।

दगाबाजी–(फा स्त्री) कपट, छल।

दगैल–(उ वि) जिस पर दाग या धब्बा लगा हो, कलंकित। जिसमें कुछ दोष हो, ऐबी।

–(पु) छली, कपटी।

दज्जाल–(अ पु) झूठा, बेईमान।

दफ–(अ पु) लावनीबाजों का बाजा, बड़ी खंजरी।

दफ़न–(अ. पु.) गाड़ना। शव या मृत शरीर को ज़मीन में गाड़ने की क्रिया।

दफ़नाना–(उ. सकि.) मुर्दे को ज़मीन में गाड़ना। किसी चीज़ को गाड़ना।

दफ़ा–(अ. स्त्री) बार; समय। दल; समूह। किसी कानूनी किताब का वह एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के संबंध में व्यवस्था हो; धारा; "सेक्शन"

–(वि.) दूर किया हुआ; उच्चाटित।

दफ़ादार–(फा. पु.) सिपाहियों के छोटे दल का सरदार; नायक।

दफ़ीना–(अ. पु.) गड़ा हुआ धन; निधि।

दफ़्तन–(अ. क्रिवि.) अचानक; एकदम।

दफ़्तर–(फा. पु.) कार्यालय, आफिस। लंबी चौड़ी चिट्ठी। विस्तृत वृत्तांत; ब्योरेवार विवरण।

दफ़्तरी–(फा. पु.) दफ़्तर के कागज़ आदि दुरुस्त करनेवाला कर्मचारी। पुस्तकों की जिल्द बाँधनेवाला; जिल्दसाज।

दफ़्ती–(अ. स्त्री.) कागज़ के कई तख़्तों को एक में साट कर बनाया हुआ मोटा गत्ता जो पुस्तक की जिल्द बाधने में काम आता है।

दबदबा–(अ. पु.) आतंक; रोब।

दबिस्तां–(फा. पु.) पाठशाला।

दबीज़–(फा. वि.) मोटा; गाढ़ा।

दबीर–(फा. पु.) लिखनेवाला; मुंशी।

दम–(फा. पु.) श्वास; सांस। हुक्के आदि का धुआँ खींचने की क्रिया। प्राण; जान। उतना समय जितना एक बार सांस लेने में लगता है; क्षण। खाद्य पदार्थ को पकाने की क्रिया। छल; कपट। तलवार आदि की धार। किसी का अस्तित्व बनाये रखने की शक्ति; जीवन शक्ति। व्यक्तित्व। दम-दिलासा = धीरज; ढारस। धोखा; छल-कपट।

दमकल–(उ. स्त्री.) वह यंत्र जिसकी सहायता से कुएँ से पानी निकालते हैं; "पंप"।

दमकला–(उ. पु.) वह बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी के द्वारा सभासदों पर गुलाब जल अथवा रंग आदि छिड़का जाता है।

दमख़म–(फा. पु.) दृढ़ता; स्थैर्य। जीवनी शक्ति; प्राण। तलवार की धार और उसका झुकाव।

दमचूल्हा–(उ. पु.) एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

दमदमा–(फा. पु.) लड़ाई के समय मैलों में बालू भर कर दीवार आदि बनाने का काम। छल; कपट।

दमदार–(फा वि) जिसमें जीवनी शक्ति यथेष्ठ हो। दृढ़, मजबूत। जिसमें दम या सास अधिक समय तक रह सके। जिसकी धार तेज हो, पैना।

दमबाज–(फा वि) बहकानेवाला, छली, कपटी।

दमा–(फा पु) खांसी, काश रोग।

दमामा–(फा पु) टका, नगाड़ा।

दयानत–(अ स्त्री) सत्यनिष्ठा, ईमान।

दयानतदार–(फा वि) सत्यनिष्ठ, ईमानदार।

दयानतदारी–(फा स्त्री) सत्यनिष्ठता, ईमानदारी।

दयार–(अ पु) प्रांत, प्रदेश।

दर–(फा पु) द्वार, दरवाजा।

–(उप) में, बीच। जैसे–दर असल = असल में।

दरकार–(फा वि) आवश्यक, जरूरी।

दरकूच–(फा क्रिवि) कूच या दौरे में, बराबर भ्रमण करता हुआ।

दरख्त–(फा पु) पेड़, वृक्ष।

दरख्वास्त–(फा स्त्री) किसी बात के लिये प्रार्थना, आवेदन। प्रार्थनापत्र, आवेदनपत्र।

दरगाह–(फा स्त्री) चौखट, देहली। राजसभा, दरबार। समाधि स्थान।

दरगुजर–(फा वि) विना, रहित। जो क्षमा कर दिया गया हो, क्षमित।

दरपेश–(फा क्रिवि) आगे, सामने।

दरबा–(उ पु) कबूतर आदि पालतू पक्षियों के रहने के लिये काठ का बना हुआ खानेदार संदूक। इसी तरह का संदूक जिसके एक एक खाने में एक एक विषय के कागज पत्र रखे जाते हैं।

दरबान–(फा पु) द्वारपाल।

दरबानी–(उ स्त्री) दरबान का काम या पद।

दरबार–(फा पु) वह स्थान जहां राजा अपने मंत्रियों और सामंतों के साथ बैठते हैं, आस्थान, राजसभा। महाराज, राजा।

दरबारदारी–(फा स्त्री) दरबार में उपस्थिति। किसी के यहां बार बार जाकर बैठना और मुखस्तुति करना।

दरबारी–(फा पु) दरबार में बैठनेवाला आदमी, सभासद।

–(वि) दरबार का, दरबार के योग्य।

दरमन–(फा पु) औषध, दवा।

दरमाहा–(फा पु) मासिक वेतन।

दरमियान–(फा पु) मध्य, बीच।

–(क्रिवि) बीच में, मध्ये।

दरमियानी–(फा वि) मध्य का, बीच का।

—(पु.) दो आदमियों के बीच का झगड़ा आदि मिटानेवाला; मध्यस्थ।

दरवाज़ा—(फा. पु.) द्वार। किवाड़; कपाट।

दरवेश—(फा. पु.) फकीर, साधु।

दरहम—(फा वि.) भौचक्का; हक्काबक्का। अप्रसन्न; नाराज़।

दराज़—(फा. वि.) बड़ा भारी; दीर्घ।

—(क्रिवि.) बहुत अधिक।

दरिंदा—(फा. पु.) जीवों को मारनेवाला पशु; हिंसक।

दरिया—(फा. पु) नदी। समुद्र।

दरियाई—(फा.) स्त्री.) एक प्रकार का पतला और बढ़िया रेशमी कपड़ा।

—(फा. वि.) नदी का; नदी संबंधी। समुद्र का; समुद्र संबंधी।

दरियाई घोड़ा = गैंडे की तरह का एक जानवर जो आफ्रिका में नदियों के किनारे रहता है।

दरियाई नारियल = एक तरह का बड़ा नारियल।

दरियादिल—(फा. वि.) विशाल हृदय का; उदार।

दरियादिली—(फा. स्त्री) उदारता।

दरियाफ्त—(फा. वि.) विदित; मालूम।

दरीख़ाना—(फ. पु.) वह घर जिसमें बहुत से द्वार या दरवाजे हों।

दरीचा—(फा. पु.) खिड़की; झरोखा। छोटा दरवाजा। खिड़की के पास बैठने की जगह।

दरीबा—(फा. पु) पान का बाजार।

दरून—(फा. क्रिवि.) अंदर; बीच।

दरेग़—(फा. पु.) कमी; न्यूनता। अफ़सोस; खेद।

दरोग़—(फा. पु.) झूठ; असत्य।

दरोग हल्फ़ी = झूठी कसम खानेवाला।

दर्ज—(अ. पु) किसी चीज को किसी चीज में शामिल करना। "रजिस्टर" या बही में लिखना।

—(फा. वि.) कागज पर लिखा हुआ।

दर्जन—(अं. पु.) बारह का समूह।

दर्जा—(अ. पु.) श्रेणी; कोटि; वर्ग। पद; ओहदा। खंड; विभाग।

दर्जिन—(ह. स्त्री) "दर्जी" का स्त्री-रूप।

दर्ज़ी—(फा. पु.) कपड़ा सीनेवाला; सिलाई का काम करनेवाला।

दर्द—(फा. पु.) पीड़ा; वेदना। दुख। करुणा; दया।

दर्दमंद, दर्दी—(फा. वि.) पीड़ित। दुखी। दयालु।

दर्रा—(फा. पु.) पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता; घाटी।

दर्हम—(फा. वि.) मिला-जुला। दुखित; व्यथित।

दलक–(अ स्त्री) फटे पुराने टुकड़ों को जोड़ जाड़ कर बनाया हुआ कपड़ा, गुदड़ी।

दलदार–(उ वि) जिसका दल, तह या परत मोटी हो।

दल्लाल–(अ पु) दे "दल्लाल"।

दलील–(अ स्त्री) तर्क, बात। वाद विवाद, चर्चा।

दल्लाल–(अ पु) वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता दे, अढ़तिया, मध्यस्थ। स्त्रियों को बहका कर उन्हें पर पुरुष से मिलानेवाला, कुटना।

दल्लाली–(फा स्त्री) दल्लाल का काम तथा मजदूरी या कमीशन।

दवा–(फा स्त्री) औषध। चिकित्सा। निवारण का उपाय, सुधारने का मार्ग।

दवाखाना–(फा पु) औषधालय, वैद्यशाला।

दवात–(अ स्त्री) लिखने की स्याही रखने का बरतन, मसिपात्र।

दवाम–(अ पु) नित्यता, सदैवत्व।

दवामी–(अ वि) जो चिरकाल के लिये हो, नित्य।

दश्त–(अ पु) जंगल, वन। निर्जन प्रदेश, शून्य स्थान।

दस्तदान–(फा वि) दखल या हस्तक्षेप करनेवाला।

दस्तदाजी–(फा स्त्री) दखल, हस्तक्षेप।

दस्त–(फा पु) हस्त, हाथ। पतला पायखाना, विरेचन, भेदि।

दस्तक–(फा स्त्री) हाथ से खटखट शब्द उत्पन्न करने या दरवाजा आदि खटखटाने की क्रिया। मालगुजारी वसूल करने के लिये गिरफ्तारी या जब्ती का परवाना। माल आदि ले जाने का परवाना। चुंगी, महसूल।

दस्तकार–(फा पु) हाथ से काम करने वाला, कारीगर।

दस्तकारी–(फा स्त्री) हाथ की कारीगरी, शिल्प।

दस्तखत–(फा स्त्री) हस्ताक्षर।

दस्तगीर–(फा वि) सहारा देनेवाला, सहायक।

दस्तपनाह–(फा स्त्री) वह औजार जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़ कर उठाते हैं जहाँ हाथ नहीं ले जा सकते, चिमटा।

दस्तबरदार–(फा वि) जो किसी काम या वस्तु परसे अपना हाथ या अधिकार हटा ले, त्यागी।

दस्तबरदारी–(फा स्त्री) त्याग देना।

दस्तबस्ता–(फा. वि.) हाथ जोड़े हुए। प्रस्तुत; तैयार।

दस्तबाला–(फा. वि.) जीतनेवाला; विजयी।

दस्तयाब–(फा. वि.) हस्तगत; प्राप्त।

दस्तरखान–(फा. पु.) वह चादर जिस पर खाना रखा जाता है।

दस्तरस–(फा. स्त्री.) शक्ति; पहुँच।

दस्ता–(फा. पु) वह जो हाथ में आवे या रहे। किसी आयुध आदि का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है; मूठ। फूलों का गुच्छा। सिपाहियों का छोटा दल। कागज के चौबीस तावों की गड्डी; "क्वैयर"।

दस्ताना–(फा पु) पंजे और हथेली में पहनने का बुना हुआ कपड़ा; हाथ का मोजा।

दस्तार–(फा. पु.) पगड़ी।

दस्तारखान–(फा. पु.) दे. "दस्तरखान"।

दस्तावर–(फा. वि.) जिससे दस्त आवे; विरेचक; मलभेदक।

दस्तावेज़–(फा. स्त्री.) वह कागज जिसमें दो या इससे अधिक आदमियों के बीच के व्यवहार की बातें लिखी हों और जिस पर व्यवहार करनेवालों के हस्ताक्षर हों; व्यवहार-संबंधी कागज पत्र।

दस्ती–(फा. वि.) हाथ का।

–(स्त्री.) छोटी मूठ। हाथ में ले जानेवाली दीपिका या बत्ती; मशाल। छोटा कलमदान।

दस्तूर–(फा. पु) रीति; रूढ़ि; पद्धति। नियम; विधि। पारसियों का पुरोहित।

दस्तूरी–(उ. स्त्री.) वह द्रव्य जो नौकर अपने मालिक का सौदा लेने में दूकानदारों से हक के तौर पर पाते हैं; कमीशन।

–(फा. स्त्री.) आज्ञा, अनुमति।

दह–(फा. वि.) दश; दस।

दहन–(फा. पु.) मुंह।

दहपट–(उ. वि.) ध्वस्त; चौपट। रौंदा हुआ, पद-दलित।

दहपटना–(उ. सकि.) ध्वस्त करना; चौपट करना। रौंदना; कुचलना।

दहर–(अ. पु.) जगत्।

दहला–(उ. पु.) ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें दस बूटियाँ हों।

दहलीज़–(फा. स्त्री.) दरवाजे के चौखट की लकड़ी जो नीचे होती है; देहली।

दहशत–(फा. स्त्री.) भय; डर।

दहा–(फा. पु.) मुहर्रम महीने की एक से दस तारीख तक का समय। ताज़िया।

दहाई–(उ स्त्री) दस का मान या भाव। दशम स्थान। (गणित)।

दहाना–(फा पु) चौड़ा मुँह या द्वार। वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी में या समुद्र में गिरती है, संगम स्थान। वह नाली जिसमें गंदा पानी बहता हो, मोरी।

दहेज–(उ पु) दे "जहेज"।

दा–(फा प्रत्य) जाननेवाला, ज्ञ।

दाग–(फा स्त्री) छ रत्ती की तौल। दिशा, ओर।

दाइम–(अ क्रिवि) हमेशा, सदैव। दाइम उल हब्स = हमेशा के लिये क़ैद। कालेपानी की सज़ा।

दाऊदी–(उ पु) एक प्रकार का बढ़िया गेहूँ।

दाखिल–(फा वि) घुसा हुआ, प्रविष्ट। मिला हुआ, शामिल। पहुँचा हुआ।

दाखिला–(फा पु) प्रविष्ट होने की क्रिया, प्रवेश। संस्था आदि में सदस्य के तौर पर सम्मिलित किये जाने का काम, भरती। प्रवेश के लिये दिया जानेवाला धन, प्रवेश शुल्क।

दाग–(फा पु) धब्बा, चित्ती। चिह्न, निशान। फल आदि पर पड़ा हुआ सड़ने का चिह्न। कलंक, लांछन। जलने का चिह्न।

दागदार–(फा वि) जिस पर दाग या धब्बा लगा हो।

दागना–(उ सक्रि) रंग आदि से चिह्न या धब्बा लगाना, अंकित करना।

दागबेल–(उ स्त्री) भूमि पर फावड़े या कुदाल से बनाये हुए चिह्न।

दागी–(फा वि) जिस पर दाग या धब्बा हो। जिस पर सड़ने का चिह्न हो। कलंकित, लांछित। जिसको सज़ा मिल चुकी हो, दंडित।

दाद–(फा स्त्री) न्याय, इंसाफ़।

दादगर–(फा वि) न्याय करनेवाला।

दादनी–(फा स्त्री) वह रक़म जिसे चुकाना हो, ऋण। वह धन जो कोई काम करने के लिये पहले ही दे दिया जाय, पेशगी।

दाना–(फा पु) अनाज का एक बीज या कण। अनाज, धान्य। सूखा या भुना हुआ अन्न, चबेना। कोई छोटा बीज जो बाल, पत्ती या गुच्छे में लगे। फल या उसका बीज। कोई छोटी गोल वस्तु (जैसे–मोती का दाना)। बहुत छोटी गोल वस्तु, रवा, कण।

–(फा वि) बुद्धिमान।

दानाई–(फा स्त्री) बुद्धिमत्ता।

दानाचारा, दानापानी–(उ पु) खान-

पान; आहार। जीविका; कालक्षेप। जीवित रहने का संयोग।

दानिश–(फा. स्त्री.) समझ; बुद्धि। राय; सम्मति।

दानिशमंद–(फा. वि.) समझदार; बुद्धिमान।

दानिस्त–(फा. स्त्री.) समझ।

दानिस्ता–(फा. वि.) समझा हुआ।

दानी–(फा. स्त्री.) जानकारी। ज्ञान होने का भाव।

दानेदार–(फा. वि.) जिसमें दाने या रवे हों; रवादार।

दाम–(फा. पु.) जाल; फंदा, पाश। क्रय; मूल्य।

दामन–(फा. पु.) कुरते, अंगरखे आदि का निचला पल्ला; आंचल।

दामनगीर–(फा. वि.) पल्ले पकड़नेवाला; पीछे पड़नेवाला।

दामाद–(फा. पु.) पुत्री का पति; जामाता।

दायर–(फा. वि.) फिरता या चलता हुआ। चलती; जारी।

दायर करना = मुकदमे आदि को चलाने के लिये पेश करना।

दायरा–(अ. पु.) गोल घेरा; कुंडल। वृत्त। कक्षा; परिधि।

दाया–(फा. स्त्री.) दाई।

दार–(अ. पु.) फांसी का तख्ता; सूली। घर; धानी।

दार-उल मुल्क, दार-उस-सल्तनत = राजधानी।

दार-मदार–(फा. पु.) आश्रय, विश्वास। किसी कार्य का किसी पर निर्भर रहना; अवलंबन।

दारोग़ा–(फा. पु.) देख भाल रखनेवाला; निगरानी रखनेवाला, निरीक्षक।

दालान–(फा. पु.) मकान की वह छाई हुई जगह जो एक, दो या तीन ओर खुली हो; बरामदा; ओसारा।

दावत–(अ. स्त्री.) भोज; न्योता। खाने का बुलावा; निमंत्रण। आह्वान। प्रचार।

दावा–(अ. पु.) किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने का कार्य; हक जाहिर करना। स्वत्व; हक। किसी जायदाद या रुपये-पैसे के लिये चलाया हुआ मुकद्दमा। अभियोग; आपादन। अधिकार; जोर। दृढतापूर्वक कथन।

दावागीर–(फा. पु.) दावा करनेवाला; अपना हक प्रकट करनेवाला।

दावादार–(फा पु) दे "दावागीर"
दाश्त–(फा स्त्री) पालन पोषण, भरण। निर्वाह।
दास्तां–(फा स्त्री) वृत्तांत, हाल। कथा। बयान।
दिक–(अ वि) तंग, पीड़ित।
–(पु) तपेदिक़, क्षयरोग।
दिक्कत–(अ स्त्री) तक्लीफ़ कष्ट। तंगी, कठिनाई।
दिक्कत तलब = कष्ट साध्य।
दिगर–(फा वि) दे "दीगर"।
दिमाग–(अ पु) मस्तिष्क, भेजा, मेधस्। मानसिक शक्ति, बुद्धि। अभिमान, घमंड।
दिमागदार–(फा वि) मेधावी, बहुत बड़ा समझदार। घमंडी।
दिमागी–(फा वि) दिमाग संबंधी। घमंडी।
दियार–(फा पु) प्रदेश, प्रांत।
दिल–(फा पु) हृदय। मन, चित्त। साहस। प्रवृत्ति, इच्छा।
दिल-आरा–(फा वि) प्रेम पात्र, माशूक़।
दिलगीर–(फा वि) उदास। दुखी। दिल लुभानेवाला, मनमोहक।
दिलगीरी–(फा स्त्री) उदासी। दुख, खेद। मनोहरता।
दिलचला–(उ वि) साहसी, दिलेर। वीर। दानी।
दिलचस्प–(फा वि) चित्ताकर्षक, मनोहर।
दिलचस्पी–(फा स्त्री) दिल का लगना, अभिरुचि। मनोरंजन।
दिलजमई–(फा स्त्री) तुष्टि।
दिलजला–(उ वि) अत्यंत दुखी।
दिलदार–(फा वि) उदार। रसिक, भावुक। प्रेम-पात्र, माशूक़।
दिलदारी–(फा स्त्री) उदारता। रसिकता, भावुकता। प्रेम।
दिलपसंद–(फा वि) जो अच्छा या भला मालूम हो, मनोहर।
दिलबर–(फा वि) प्यारा, प्रिय।
दिलबस्तगी–(फा स्त्री) दिल का लगना; मोह।
दिलबस्ता–(फा वि) दिल लगा हुआ, मोहित।
दिलबाज–(फा वि) चालाक, निडर।
दिलरुबा–(फा वि) प्रेम पात्र, माशूक़।
दिलावर–(फा वि) साहसी। वीर।
दिलावरी–(फा स्त्री) उत्साह। साहस। वीरता।
दिलासा–(उ पु) ढारस, आश्वासन।
दिली–(फा वि) हृदय या दिल संबंधी।

हार्दिक। अत्यंत घनिष्ठ; अभिन्न-हृदय।

दिलेर–(फा. वि.) वीर। साहसी।

दिलेराना–(फा. क्रिवि.) वीरतापूर्वक।

दिलेरी–(फा. स्त्री.) साहस। वीरता।

दिल्लगी–(उ. स्त्री.) दिल लगाने की क्रिया या भाव। मन बहलाव; विनोद। हँसी ठट्ठा।

दिल्लगीबाज़–(उ. पु.) हँसी या दिल्लगी करनेवाला; विनोदी; हँसोड।

दिल्लगीबाज़ी–(उ. स्त्री.) दिल्लगी करने का काम।

दिहंदा–(फा. वि.) देनेवाला; दाता।

दिहात–(फा. स्त्री.) दे० "देहात"।

दीगर–(फा. वि.) अन्य; दूसरा।

दीठबंदी–(उ. स्त्री.) नजरबंदी; जादू।

दीदा–(फा. पु.) देखा हुआ; दृष्ट। आँख; नेत्र। अनुचित साहस; ढिठाई।

दीदा दानिस्ता = जान बूझ कर; देख भाल कर।

दीदार–(फा. पु) दर्शन; भेंट।

दीन–(अ. पु.) मत; पंथ मजहब।

दीन दुनिया = परलोक और इहलोक; इह-पर।

दीनदार–(फा. वि.) अपने धर्म पर श्रद्धा रखनेवाला; धार्मिक।

दीनदारी–(फा. वि.) धार्मिकता; आस्तिकत्व।

दीबाचा–(फा. पु.) भूमिका; प्रस्तावना।

दीमक–(फा. स्त्री.) चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदि में लगकर उसे खा जाता है या खोखला और नष्ट कर देता है; वल्मीक।

दीवान–(अ. पु.) राजा या बादशाह के बैठने का स्थान; राजसभा; दरबार। राजमंत्री; अमात्य। राजलों का संग्रह।

दीवान-आम = ऐसा दरबार जिसमें राजा से सब लोग मिल सकते हों।

दीवान-ख़ास = ऐसा दरबार जिसमें केवल अमात्य और चुने हुए प्रधान उपस्थित हों।

दीवानख़ाना–(फा. पु.) घर का वह बाहरी हिस्सा जहाँ बड़े आदमी बैठने और लोगों से मिलते हैं; बैठक।

दीवानख़ालिसा–(अ. पु.) वह अधिकारी जिसके पास राजा की मुहर रहती हो।

दीवानगी–(फा. स्त्री.) पागलपन।

दीवाना–(फा. वि.) पागल; उन्मत्त।

दीवानापन–(उ. पु.) पागलपन।

दीवानी–(फा. स्त्री.) दीवान का पद; मंत्रित्व। वह न्यायालय जो रुपये पैसे आदि के मामलों का फैसला करे;

"सिविल कोर्ट"। उन्मादिनी, पगली।

दीवार-(फा स्त्री) ईंट पत्थर आदि का वह आवरण जिससे किसी स्थान को घेर कर कमरा, मकान आदि बनाते हैं, भित्ती, भीत। कुछ ऊपर उठा हुआ आवरण, कुछ उभरा हुआ घेरा।

दीवारगीर-(फा पु) दिया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

दुंबा-(फा * पु) चौड़ी और भारी पूँछ वाला भेड़ या अज।

दुआ-(अ स्त्री) प्रार्थना, विनती। आशीर्वाद।

दुआ माँगना = प्रार्थना करना।

दुआल-(फा स्त्री) चमड़ा। चमड़े का तसमा। रिकाब का तसमा।

दुआली-(फा स्त्री) चमड़े का वह तसमा जिससे खरेरे और बढ़ई खराद घुमाते हैं। कंधे पर पहनने की चमड़े की चौड़ी पट्टी जिसमें बंदूक, तलवार आदि लटकायी जाती है, परतला।

दुकान-(फा स्त्री) वह घर या कमरा जहाँ माल विक्रय का काम होता हो। बिक्री का स्थान।

दुकानदार-(फा पु) दुकान पर बैठ कर सौदा बेचनेवाला। दुकान का मालिक। वह जिसने अपनी आमदनी के लिये कोई ढोंग रच रखा हो।

दुकानदारी-(फा स्त्री) दुकान पर माल बेचने का काम। दुकानदार का पेशा या व्यवसाय। ढोंग रच कर रुपया कमाने का काम।

दुख्तर-(फा स्त्री) दुहिता, पुत्री।

दुचंद-(फा वि) दे "दोचंद"।

दुज्द-(फा पु) चोर, तस्कर।

दुज्दी-(फा स्त्री) चोरी।

दुनिया-(अ स्त्री) जगत। लोक, संसार के लोग। सांसारिक कष्ट या उलझन। माया।

दुनियादार-(फा वि) सांसारिक उलझन में फँसा हुआ, संसारी। ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला, मायावी। लोक व्यवहार में कुशल।

दुनियादारी-(फा स्त्री) सांसारिक व्यवहार, गृहस्थी का जंजाल या उलझन। व्यवहार कुशलता। बनावटी व्यवहार, मायाजाल।

दुनियावी-(अ वि) सांसारिक, लौकिक। -(स्त्री) संसार, जगत।

दुनियासाज-(फा वि) चालाकी से अपना मतलब साधनेवाला, स्वार्थ साधक। चापलूस।

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

दुनियासाज़ी–(फा. स्त्री.) चालाकी से अपना मतलब साधने का काम; स्वार्थ-साधन। चापलूसी।

दुबारा–(फा. क्रिवि.) दे. "दोबारा"।

दुम–(फा. स्त्री.) पुच्छ; पूँछ। पूँछ की तरह पीछे लगी या बँधी हुई वस्तु। किसी काम का सब से अंतिम थोड़ा सा अंश।

दुर–(अ. पु.) मुक्ता; मोती। मोती का वह लटकन जो नाक या कान में पहना जाता है, लोलक; बाली।

दुरुस्त–(फा. वि.) जो अच्छी दशा में हो, टूटा फूटा या ख़राब न हो। त्रुटि-रहित; शुद्ध। उचित; ठीक। यथार्थ।

दुरुस्ती–(फा. स्त्री) सुधार; संशोधन। मरम्मत, जीर्णोद्धार।

दुर्रा–(फा. पु.) कोड़ा; चाबुक।

दुर्रानी–(फा. पु.) अफगानों की एक जाति।

दुलदुल–(अ. पु.) वह ख़च्चर जिसे मिश्र के राजा ने मुहम्मद साहब को नज़र में दिया था।

दुशाला–(फा. पु.) बढ़िया मुलायम ऊन से बुनी हुई चादरों का जोड़ा; "शाल-जोड़ी"।

दुश्नाम–(फा. पु.) बुरा नाम; अपयश। गाली, निंदा।

दुश्मन–(फा. पु.) दुष्ट मनवाला; शत्रु; वैरी।

दुश्मनी–(फा. स्त्री.) शत्रुता; वैर।

दुश्वार–(फा. वि.) कठिन; मुश्किल।

दुश्वारी–(फा. स्त्री.) कठिनाई।

दूकान–(फा. स्त्री.) दे. "दुकान"।

दूद–(फा. पु.) धुआँ; धूम।

दूबदू–(उ. क्रिवि.) आमने सामने; सन्मुख।

दूरंदेश–(फा. वि.) दूर तक की बात विचारनेवाला; दूरदर्शी।

दूरंदेशी–(फा. स्त्री.) दूर की बात को पहले ही से समझ या सोच लेना; दूरदर्शिता।

दूरबीन–(फा. स्त्री.) एक यंत्र जिससे दूर की चीजें बहुत पास, स्पष्ट या बड़ी दिखायी देती हैं; दूरदर्शक यंत्र।

देग–(फा. पु.) खाना पकाने का चौड़े मुँह और चौड़े पेट का बड़ा बरतन।

देगचा–(फा. पु.) छोटा देग।

देगची–(फा. स्त्री.) छोटा देगचा।

देनदार–(उ. वि) कर्जदार; ऋणी।

देर–(फा. स्त्री.) विलंब; अतिकाल। समय; काल।

देरी–(उ. स्त्री.) देर।

देव–(फा. पु.) दैत्य; राक्षस। भूत; पिशाच।

देह–(फा पु) ग्राम, गाँव।
देहकान–(फा पु) गवार आदमी, ग्रामीण।
देहकानी–(फा वि) ग्राम्य, गवारू।
देहात–(फा पु) ग्राम समूह, ग्राम। जो नगर, शहर न हो, देश।
देहाती–(फा वि) ग्राम संबंधी, ग्राम्य। गाँव का रहनेवाला, ग्रामीण। गवार, अनागरिक।
दैर–(फा पु) मंदिर, देवालय। गुंबद।
दो आतशा–(फा वि) जो दो बार भभके में खींचा या चुआया गया हो।
दोआब–(फा पु) दो नदियों के बीच का प्रदेश।
दोगला–(फा वि) व्यभिचार से उत्पन्न मनुष्य, जारज। वह जिसके माता-पिता भिन्न भिन्न वर्ण या जाति के हों, वर्ण संकर।
दोचंद–(फा वि) दुगुना।
दोचार–(फा पु) साक्षात्कार, भेंट।
दोजख–(फा पु) नरक।
दोजखी–(फा वि) नरक संबंधी, नरक का। महापापी, नारकी।
दोजखी–(फा स्त्री) दासी की बंदूक।
दोजानू–(फा क्रिवि) दोनों घुटनों के बल (बैठना)।
दोतरफा–(फा वि) दोनों तरफ का, उभयपक्ष का।
–(क्रिवि) दोनों तरफ, उभयत्र।
दोदिला–(फा वि) दुविधा में पड़ा हुआ, अस्थिरचित्त। घबराया हुआ।
दोफसली–(फा वि) दोनों फसलों के संबंध का। जो रबी और खरीफ दोनों में काम आय। जो दोनों ओर लग सके, दुविधा की (बात)।
दोबारा–(फा क्रिवि) दूसरी बार, पुनः, पुनश्च।
दोबाला–(फा वि) दुगुना।
दोयुम–(फा वि) दूसरा।
दोरुखा–(फा वि) जिसके दोनों ओर मुँह हो। जिसके दोनों ओर कोई समान चिह्न हो। जिसके दोनों तरफ दो रंग हों।
दोशंबा–(फा पु) सोमवार।
दोशाखा–(फा पु) दीवारगीर जिसमें दो बत्तियाँ हों।
दोस्त–(फा वि) मित्र।
दोस्तदार–(फा पु) मित्र।
दोस्तदारी–(फा स्त्री) मित्रता, मैत्री।
दोस्ताना–(फा पु) मित्रता। मित्र का व्यवहार।
–(वि) मित्रता का।

दोस्ती–(फा. स्त्री.) मित्रता; मैत्री।

दौर–(अ. पु.) चक्कर; भ्रमण। दिनों का फेर; काल-चक्र। अभ्युदय का काल; उन्नति का समय। प्रभाव। बारी। बार; दफ़ा।

दौरदौरा–(उ. पु) प्रधानता; प्रबलता। बोल-बाला।

दौरा–(उ. पु.) चक्कर; भ्रमण। इधर उधर जाने या घूमने की क्रिया; फेरा; गश्त। अफ़सर का इलाके में जाँच-पड़ताल या निरीक्षण के लिये घूमना; पर्यटन। अदालत की बैठक या "सेशन"। बार-बार या बारी-बारी से आना जाना। रोग आदि का आवर्तन

दौरान–(फा. पु.) दौरा; चक्कर; भ्रमण। दिनों का फेर; कालचक्र। आवर्तन; बारी।

दौलत–(अ. स्त्री.) धन; संपत्ति।

दौलतख़ाना–(फा. पु.) निवास स्थान; भवन; घर।

दौलतमंद–(फा. वि.) धनी; ऐश्वर्यवान।

ध

धोखेबाज़–(उ. वि.) धोखा देनेवाला; छली, कपटी।

धोखेबाज़ी–(उ. स्त्री.) छल; कपट।

न

नंबर–(अं. पु.) संख्या; अंक। कपड़ा नापने का गज।

नंबरदार–(उ. पु.) गाँव का वह जमींदार जो सरकार की तरफ से मालगुज़ारी वसूल करने के लिये नियुक्त हो; गाँव का मुखिया; पटेल।

नंबरवार–(उ क्रिवि) एक एक करके; क्रमशः।

नंबरी–(उ. वि.) नंबरवाला। जिस पर नंबर या संख्या लगी हो। प्रसिद्ध।

नंबरी गज = छत्तीस इंच का गज।

नंबरी सेर = अस्सी तोले की एक तौल; "रेलवे सेर"।

नक़द–(अ पु) तैयार रुपया, रोकड़। –(वि) (धन) जो तुरंत काम में लाया जा सके, जो नक़द के रूप में हो। –(क्रिवि) तुरंत दिये हुए रुपये के बदले में, "उधार" का उलटा।

नक़दी–(फा स्त्री) दे "नक़द"।

नक़ब–(अ स्त्री) चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद, सेंध।

नक़बज़न–(फा पु) सेंध लगानेवाला, चोर।

नक़बज़नी–(फा स्त्री) सेंध लगाने का काम, चोरी।

नक़ल–(अ स्त्री) किसी दूसरी वस्तु के ढंग पर तैयार की हुई वस्तु अनुकृति, प्रतिरूप। एक को देख कर उसी की तरह करने या बनाने का काम, अनुकरण। लेख आदि की प्रतिलिपि। किसी के वेष, हाव भाव या बात-चीत आदि का पूरा पूरा अनुकरण, स्वांग। अद्भुत और हास्य जनक आकृति। हास्य रस की कोई छोटी मज़ी कहानी, चुटकुला। स्थान परिवर्तन।

नक़लनवीस–(फा पु) दूसरे के लेखों की नक़ल करनेवाला, प्रतिलिपिकार।

नक़लनवीसी–(फा स्त्री) नक़ल नवीस का पद या काम। प्रतिलेखन।

नक़ली–(अ वि) जो नक़ल करके बनाया गया हो, बनावटी, कृत्रिम। जो असली या शुद्ध न हो, जाली, झूठा।

नक़ाब–(अ स्त्री) वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिये सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है, मुँह छिपाने का परदा। साड़ी या चादर का वह भाग जिससे स्त्रियों का मुह छिपा रहता है, घूंघट।

नक़ाबपोश–(फा वि) चेहरे पर नक़ाब डाला हुआ।

नक़ाबफरोश–(फा वि) नक़ाब बेचनेवाला।

नकारा–(फा वि) जो किसी काम का न हो, निकम्मा।

नक़्क़ाशना–(उ सक्रि) धातु, पत्थर आदि पर खोद कर चित्र, फूल, पत्ती आदि बनाना।

नक़ाहत–(अ स्त्री) रोग के बाद की दुर्बलता।

नक़ीब–(अ पु) राजाओं का यश या विरदावली बखान करनेवाला, चारण, मागध।

नक्कारख़ाना–(फा. पु.) वह स्थान जहाँ नक्कारा बजता हो।

नक्कारची–(फा. पु.) नक्कारा बजानेवाला।

नक्कारा–(फा. पु.) नगाड़ा; टंका; दुंदुभी।

नक्काल–(अ. पु.) नकल या अनुकरण करनेवाला। भांड; "विकटकवि"। स्थान परिवर्तन करनेवाला।

नक्काली–(फा. स्त्री.) नकल करने का काम।

नक्काश–(अ. पु.) वह जो खोद कर बेल-बूटे आदि बनाता हो; नक्काशी करनेवाला।

नक्काशी–(अ. स्त्री.) धातु, पत्थर आदि पर खोद कर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। इस प्रकार बनाए हुए बेल-बूटे।

नक्काशीदार–(फ़ा. वि.) जिस पर खोद कर बेल-बूटे बनाये गये हों।

नक़्श–(अ. वि.) बनाया या लिखा हुआ। अंकित; चित्रित। खचित।
–(पु.) तसवीर; चित्र। खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटा। मोहर; छाप; मुद्रा। यंत्रित रक्षा; जंतर; तावीज। जादू; टोना। ताश के पत्तों से खेला जानेवाला एक जूआ।

नक़्शनिगार–(फा. पु.) दे. "नक्काश"।

नक़्शा–(अ. पु.) रेखाओं द्वारा आकार आदि का निदर्श; चित्र। ढांचा; गठन। किसी पदार्थ का स्वरूप; आकृति। चाल-ढाल; आकार प्रकार; ढंग। अवस्था; दशा। कपड़े पर बेल बूटे छापने का ठप्पा; सांचा। किसी धरातल पर बना हुआ पृथ्वी या पृथ्वी के किसी एक भाग का चित्र; "मैप"।

नक़्शानवीस–(फा. पु.) नक्शा लिखने या बनानेवाला।

नक़्शानवीसी–(फा. स्त्री.) नक्शा लिखने या बनाने का काम।

नक़्शी–(अ. वि.) जिस पर बेल-बूटे बने हों; बेल-बूटेदार।

नख़–(फा. स्त्री.) तागा; डोरी।

नख़रा–(फा. पु.) वह चुलबुलापन या चेष्टा जो यौवन की उमंग में अथवा अपने प्रिय को रिझाने के लिये हो; प्रेम-चेष्टा; हाव-भाव। चंचलता; चपलता।
नख़रा-तिल्ला = प्रेम-चेष्टा; हाव-भाव।

नख़रावाज़–(फा. वि.) नख़रा या प्रेम चेष्टा करनेवाला।

नख़रावाज़ी–(फा. स्त्री.) नख़रा करने की क्रिया; चोचलापन।

नजरीला–(अ वि) नजरा करनेवाला।
नजास–(अ पु) वह बाजार जहाँ पशु, विशेष कर घोड़े बिकते हैं।
नग–(फा पु) रत्न, मणि। अंक, संख्या।
नगमा–(अ पु) गान, गीत।
नगारा–(फा पु) बड़ा ढोल, भेरी, दुंदुभी।
नगीना–(फा पु) रत्न, मणि।
नगीनासाज–(फा वि) रत्न बनाने या जड़नेवाला।
नगीनासाजी–(फा स्त्री) रत्न बनाने या जड़ने की क्रिया, जड़ाऊ काम।
नजदीक–(फा वि) पास, निकट, समीप।
नजदीकी–(फा स्त्री) समीपता, निकटता।
नजम–(अ पु) तारा, नक्षत्र।
नजर–(अ स्त्री) दृष्टि, निगाह। कृपा दृष्टि। निगरानी, देख-रेख, निरीक्षण। ख्याल, ध्यान। परख, पहचान। दृष्टि का वह कल्पित प्रभाव जो किसी सुंदर मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदि पर पड़ कर उन्हें खराब कर देनेवाला माना जाता है, दृष्टिदोष। भेंट, उपहार। अधीनता सूचित करने की एक रस्म जिसमें राजाओं आदि के सामने अधीनस्थ लोग नकद रुपया आदि हथेली में रख कर सामने लाते हैं।
नजरत–(अ स्त्री) तालगी, हरापन।
नजरबंद–(फा वि) जिसे नजरबंदी की सजा दी जाय।
–(पु) जादू या इंद्रजाल आदि के जोर से कुछ का कुछ कर दिखाने का काम, दृष्टिबंधन।
नजरबंदी–(फा स्त्री) वह दंड जिसमें दंडित पुरुष किसी नियत स्थान पर रखा जाता है और उस पर कड़ी निगरानी रहती है। नजरबंद होने की दशा। जादूगरी, इंद्रजाल।
नजरबाग–(अ पु) महलों या बड़े बड़े मकानों के सामने या चारों ओर का बाग।
नजरसानी–(अ स्त्री) दूसरी बार देखना, पुनरवलोकन।
नजरानना–(उ सक्रि) उपहार या भेंट में देना। नजर लगाना।
नजराना–(अ पु) उपहार, भेंट।
–(उ अक्रि) नजर लग जाना दृष्टि का बुरा असर पड़ जाना।
–(उ सक्रि) नजर लगाना।
नज़ला–(अ पु) जुकाम, सर्दी। श्लेष्मा।

नज़लाबंद–(फा. पु.) नज़ले को दूर करने की एक दवा।

नज़ा–(अ. पु.) मरणावस्था। झगड़ा।

नज़ाकत–(फा. स्त्री.) नाज़ुक होने का भाव; कोमलता।

नजात–(अ. स्त्री.) मुक्ति; मोक्ष। छुटकारा; विमोचन।

नज़ामत–(अ. स्त्री.) नाज़िम का पद या विभाग।

नज़ारत–(अ. स्त्री.) नाज़िर का पद या काम। नाज़िर का महकमा या विभाग।

नज़ारा–(अ. पु.) दृश्य। दृष्टि; नज़र। लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना; चितवन।

नज़ाराबाज़–(फा. वि.) चाह या काम की दृष्टि से देखनेवाला; कामुक।

नज़ाराबाज़ी–(फा. स्त्री.) चितवन से देखना। कामुकता।

नजिस–(अ. वि.) अपवित्र।

नज़ीर–(अ. स्त्री.) उदाहरण। जोड़; सादृश्य।

नजूम–(अ. पु) ज्योतिष विद्या।

नजूमी–(अ. पु.) ज्योतिषी।

नज़्म–(अ. स्त्री.) पद्य; कविता।

नताइज–(अ. पु.) "नतीजा" का ब. रूप।

नतीजा–(अ. पु.) परिणाम; फल।

नदामत–(अ. स्त्री.) लज्जा; शर्म।

नदारद–(फा. वि.) गायब; गुम।

नद्दाफ़–(अ. पु) रूई धुननेवाला; धुनिया।

नफ़र–(फा. पु.) दास; सेवक।

–(अ. पु.) एक मनुष्य; व्यक्ति।

नफ़रत–(अ. स्त्री.) घृणा।

नफ़री–(फा. स्त्री.) एक मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी या एक दिन का काम।

नफ़स–(अ. पु) दम; श्वास।

नफ़ा–(अ. पु.) लाभ; फ़ायदा।

नफ़ासत–(अ. स्त्री.) उत्कृष्टता।

नफ़ीरी–(फा. स्त्री.) फूंककर बजाने का एक बाजा; तुरही।

नफ़ीस–(अ. वि.) उत्कृष्ट। स्वच्छ। सुंदर।

नफ़्स–(अ. पु.) अस्तित्व; व्यक्तित्व। अभिमान। इंद्रिय; विषय-वासना। वीर्य, शुक्र।

नफ़्सकश = इंद्रियनिग्रही।

नफ़्सकुश = इंद्रियजित।

नफ़्सानी–(अ. वि) इंद्रिय संबंधी। विषयी।

नबात–(अ. स्त्री.) हरी घास, हरियाली। तरकारी।

नबी–(अ. पु.) ईश्वर का दूत; पैगंबर।

नब्ज–(अ स्त्री) शरीर की धमनी, नाड़ी।

नम–(फा वि) भीगा हुआ, आर्द्र, गीला।

नमक–(फा पु) लवण, नोन। कुछ विशेष प्रकार मनमोहक सौंदर्य, लावण्य।

नमकख्वार–(फा वि) नमक खाने वाला। पाला पोसा हुआ।

नमकदान–(उ पु) नमक रखने का पात्र।

नमकसार–(फा पु) वह स्थान जहाँ नमक निकलता या बनता हो।

नमकहराम–(फा पु) अपने अन्नदाता या स्वामि का द्रोह करनेवाला, स्वामि द्रोही। कृतघ्न।

नमकहरामी–(फा स्त्री) स्वामिद्रोह। कृतघ्नता।

नमकहलाल–(फा पु) स्वामिनिष्ठ, स्वामिभक्त।

नमकहलाली–(फा स्त्री) स्वामि निष्ठता, स्वामिभक्ति।

नमकीन–(फा वि) जिसमें नमक का स्वाद हो। जिसमें नमक पड़ा हो। लावण्ययुक्त, सुलोना।

–(पु) वह पकवान आदि जिसमें नमक पड़ा हो।

नमदा–(फा पु) बनाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा।

नमा–(अ पु) वृद्धि, बढ़ती।

नमाज–(फा स्त्री) मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना।

नमाज पढ़ना = ईश्वर प्रार्थना करना।

नमाजगाह–(फा स्त्री) दे "ईदगाह"।

नमाजजद–(फा पु) कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ने की एक युक्ति या पेंच।

नमाजी–(फा पु) नमाज पढ़नेवाला। वह कपड़ा जिस पर खड़े होकर नमाज पढ़ी जाती है।

नमिश–(फा * स्त्री) विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन।

नमी–(फा स्त्री) गीलापन, आर्द्रता।

नमूदार–(फा वि) प्रकट, जाहिर।

नमूना–(फा पु) किसी पदार्थ के गुण और स्वरूप आदि को मालूम कराने के लिये उसमें से निकाल कर दिखाया जानेवाला वह थोड़ा अंश, बानगी। ढाँचा, ठाट। आदर्श।

नय–(फा स्त्री) दे० "नै"।

नयाम–(फा पु) तलवार की म्यान, खड्गकोष।

नरगिस–(फा पु) एक फूल।

नरम–(फा वि) मुलायम; मृदु, कोमल।

नरमा–(उ. स्त्री.) एक प्रकार की बहुत नरम कपास, राम कपास। सेमल या शाल्मली की रूई। कान के नीचे का भाग। एक तरह का रंगीन कपड़ा।

नरमाई–(उ. स्त्री.) दे. "नरमी"।

नरमाना–(उ. सक्रि.) नरम या मृदु करना; कोमल बनाना। शांत करना; धीमा करना।

–(अक्रि.) नरम होना; मृदु बनना। शांत होना; ठंडा होना।

नरमी–(उ. स्त्री.) नरम होने का भाव; मृदुता। कोमलता। नम्रता।

नरी–(फा. स्त्री.) पुरुषेंद्रिय।

नर्द–(फा. स्त्री.) चौसर की गोटी।

नर्दबाज़ी–(फा. स्त्री.) एक खेल जो बिसात पर चार रंगों की चार चार गोटियों से खेला जाता है; चौसर।

नर्म–(फा. वि.) दे. "नरम"।

नवाज़–(फा. वि.) कृपा करनेवाला। (यौगिक में)

नवाज़िश–(फा. स्त्री.) कृपा।

नवाब–(अ.˜ पु.) मुग़ल सम्राटों के समय बादशाह का प्रतिनिधि जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिये नियुक्त होता था। एक उपाधि जो आजकल छोटे मोटे मुसलमानी राज्यों या जागीरों के मालिक अपने नाम के साथ लगाते हैं।

–(वि.) बहुत ठाट-बाट या आडंबर से रहनेवाला; खूब खर्च करनेवाला।

नवाबज़ादा = नवाब का पुत्र।

नवाबज़ादी = नवाब की पुत्री।

नवाबी–(उ. स्त्री.) नवाब का पद। नवाब का काम। नवाबों का राज्य-काल। नवाबों की सी हुकूमत। अत्यंत धनाढ्यता।

नवासा–(फा. पु.) बेटी का बेटा; दौहित्र।

नवासी–(फा. स्त्री.) बेटी की बेटी; दौहित्री।

नवाह–(अ. क्रिवि.) दिशा में; ओर। चारों ओर; आस-पास।

नविश्ता–(फा. वि.) लिखा हुआ।

नवीस–(फा. पु.) लिखनेवाला; लेखक।

नवीसी–(फा. स्त्री.) लिखने की क्रिया या भाव; लिखाई।

नशा–(फा. पु.) मद; मतवालापन; मस्ती। मादक द्रव्य।

नशाख़ोर–(फा. वि.) दे. "नशेबाज़"।

नशीन–(फा. वि.) आसीन; आरूढ़। (यौगिक में)

नशीला–(फा. वि.) नशा या मद उत्पन्न करनेवाला; मादक। जिसमें मत्तता छाई हुई हो; मदमत्त; मतवाला।

नशेबाज–(फा वि) किसी प्रकार के मादक द्रव्य का बराबर सेवन करने वाला।

नश्तर–(फा पु) फोड़ा आदि चीरने का छोटा तेज चाकू।

नश्व–(अ पु) उद्भव। वृद्धि।

नश्व-नमा = उद्भव। अभिवृद्धि।

नसतालीक़–(अ पु) फारसी या अरबी लिपि लिखने का वह ढंग जिसमें अक्षर बहुत स्पष्ट होते हैं, "शिकस्ता" का उलटा। वह जिसका रंग ढंग बहुत अच्छा और सुंदर हो।

नसब–(अ पु) वंश, कुल।

नसबनामा–(फा पु) वंशावली, कुल गाथ।

नसर–(अ स्त्री) गद्य।

नसल–(अ स्त्री) वंश। संतति।

नसीब–(अ पु) भाग्य, अदृष्ट।

नसीबवर–(अ वि) भाग्यवान।

नसीम–(अ स्त्री) मंद मारुत।

नसीहत–(अ स्त्री) उपदेश, शिक्षा, सीख। अच्छी सम्मति।

नहर–(फा स्त्री) वह कृत्रिम जल मार्ग जो खेतों की सिंचाई आदि के लिये तैयार किया जाता है, खोदकर बनाया हुआ नाला।

नहस–(अ वि) अशुभ, अमंगल।

नहूसत–(अ स्त्री) उदासीनता, खिन्नता। अशुभ लक्षण, दुश्शकुन। अशुभता; दुर्भाग्य, दुर्दैव।

ना–(फा) अभाव सूचित करनेवाला एक उपसर्ग।

नाइत्तिफ़ाक़ी–(फा स्त्री) मेल का अभाव, मतभेद, विरोध।

नाउम्मेद–(फा वि) निराश।

नाउम्मेदी–(फा स्त्री) निराशा।

नाकद–(फा वि) बिना निकाला हुआ (घोड़ा)। अशिक्षित।

नाक़द्र–(फा वि) जिसकी कोई क़दर न हो, अप्रतिष्ठित।

नाक़द्री–(फा स्त्री) अप्रतिष्ठा, अपमान।

नाकाबंदी–(अ स्त्री) किसी रास्ते से कहीं आने या घुमने की रुकावट।

नाक़ाबिल–(फा वि) अयोग्य, अनर्ह।

नाकाम, नाकारा–(फा वि) निरर्थक; बेकार।

नाक़िस–(अ वि) नुकसान करने वाला, हानिकारक। बुरा।

नाकेदार–(अ पु) नाके या फाटक पर रहनेवाला सिपाही। आने जाने के प्रधान स्थानों पर किसी प्रकार का कर या चुंगी आदि वसूल करने के लिये नियत किया हुआ कर्मचारी।

—(वि.) जिसमें नाका या द्वार हो।

नाख़ुदा—(फा. पु.) नाविक; मल्लाह।

नाख़ुना—(फा. पु.) आँख का एक रोग जिसमें आँख की सफेदी में एक लाल झिल्ली सी उत्पन्न होती है।

नाख़ुश—(फा. वि.) नाराज; अप्रसन्न।

नाख़ुशी—(फा. स्त्री.) अप्रसन्नता; रुष्टता।

नाख़ून—(फा. पु.) नख।

नाख़्वांदा—(फा. वि.) अपढ; मूर्ख।

नागवार—(फा. वि.) असह्य। अप्रिय; नापसंद।

नागहां—(फा. क्रिवि.) अचानक; अकस्मात। तुरंत।

नागहानी—(फा. वि.) अप्रामयिक।

नागाह—(फा. क्रिवि.) दे. "नागहां"।

नाचमहल—(उ. पु.) वह स्थान जहाँ नाच हो; नृत्यशाला।

नाचाक़ी—(फा. स्त्री.) बिगाड़; वैमनस्य।

नाचार—(फा. वि.) असमर्थ। अनिवार्य।

नाचीज़—(फा. वि.) तुच्छ; निकृष्ट। अप्रतिष्ठित, नीच।

नाज़—(फा. पु.) स्त्रियों की वह मनोहर चेष्टा जिससे पुरुषों का चित्त आकर्षित होता है; कामचेष्टा; हाव भाव। घमंड; गर्व।

नाज़नीं—(फा. वि.) मनमोहिनी। कोमलांगी।

नाजायज़—(अ. वि.) अनुचित।

नाज़िम—(अ. पु.) इंतजाम या प्रबंध करनेवाला, प्रबंधक। संचालक; प्रवर्तक।

नाज़िर—(अ. पु.) इंतजार या निरीक्षण करनेवाला; निरीक्षक। अंतःपुर का नपुंसक भृत्य। वह दलाल जो वेश्याओं को गाने बजाने के लिये ठीक करता और लाता हो।

नाज़िरात—(अ. स्त्री.) वह दलाली या कमीशन जो नाज़िर को नाचने गानेवाली वेश्या आदि से मिलती है।

नाज़िल—(अ. वि.) उतरनेवाला। आविर्भूत।

नाज़ुक—(फा. वि.) कोमल; सुकुमार। पतला; बारीक। सूक्ष्म; गूढ़। ज़रा से झटके या धक्के से टूट-फूट जानेवाला। जिसमें हानि या अनिष्ट की आशंका हो, शंकास्पद।

नाज़ुकी—(फा. स्त्री.) नाजुक होने का भाव।

नातराश—(फा. वि.) अशिष्ट; असभ्य। नीच।

नातवां—(फा. वि.) दुर्बल।

नातवानी—(फा. स्त्री.) दुर्बलता।

नाताक़त—(फा. वि.) निर्बल।

नाताक़ती—(उ. स्त्री.) निर्बलता।

नातेदार–(उ वि) रिश्तेदार, संबंधी।
नातेदारी–(उ स्त्री) संबंध।
नादान–(फा वि) नासमझ, मूर्ख।
नादानी–(फा स्त्री) मूर्खता।
नादार–(फा वि) निर्धन।
नादारी–(फा स्त्री) निर्धनता।
नादिम–(अ वि) लज्जित।
नादिर–(फा वि) अनोखा, विचित्र। भेंट, उपहार।
नादिरशाही–(उ स्त्री) भारी अंधेर या अत्याचार।
–(वि) बहुत कठोर और उग्र।
नादिहंद–(फा वि) न देनेवाला। जिससे रकम वसूल न हो।
नादिहंदी–(फा स्त्री) कृपणता।
नादुरुस्त–(फा वि) अशुद्ध, गलत।
नान–(फा स्त्री) रोटी, चपाती।
नानख़ताई–(फा स्त्री) टिकिया के आकार की एक मुरमुरी मिठाई, बिस्कुट।
नानबा, नानबाई–(फा पु) रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला।
नाना–(अ पु) पुदीना।
नापसंद–(फा वि) जो पसंद न हो, अरुचिकर। जो न भावे, अप्रिय। अस्वीकृत।
नापसंदगी–(फा स्त्री) अरुचि, अप्रिय। अस्वीकार।
नापाक–(फा वि) अशुद्ध, अपवित्र। मैला कुचैला, गंदा।
नापाकी–(फा स्त्री) अशुद्धता, अपवित्रता। मैलापन, गंदगी।
नापायदार–(फा वि) जो टिकाऊ न हो, निराधार।
नापायदारी–(फा स्त्री) निराधारता।
नाफरमा–(फा वि) आज्ञा न मानने वाला, अवज्ञाकारी।
नाफहम–(फा वि) नासमझ, अज्ञानी।
नाफहमी–(फा स्त्री) अज्ञानता।
नाफा–(फा पु) कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृगों की नाभि में होती है।
नाफी–(फा वि) नष्ट करनेवाला, विनाशक।
नाब–(फा पु) नाली।
–(वि) खालिस, विशुद्ध।
नाबदान–(फा पु) वह नाली जिसमें गंदा और मैला पानी बहता हो, पनाला, मोरी।
नाबरदाश्त–(फा वि) असह्य, असह नीय।
नाबालिग–(फा वि) जिसकी वास्या वयस्क अभी दूर न हुई हो, अप्राप्तवयस्क।

नाबालिग़ी–(फा. स्त्री.) नाबालिग रहने की अवस्था; युवावस्था के पूर्व की अवस्था।

नाबीना–(फा. वि.) नेत्रहीन; अंधा।

नाबूद–(फा. वि.) बरबाद; नष्ट।

नामंजूर–(फा. वि.) अस्वीकृत।

नामंजूरी–(फा. स्त्री.) अस्वीकार; इनकार।

नामज़द–(फा. वि.) जिसका नाम किसी बात के लिये निश्चित कर लिया गया हो। प्रसिद्ध; विख्यात।

नामर्द–(फा. वि.) नपुंसक। डरपोक; भीरु।

नामर्दी–(फा. स्त्री.) नपुंसकत्व। कायरता।

नामवर–(फा. वि.) यशस्वी; विख्यात।

नामवरी–(फा. स्त्री) विख्याति; प्रसिद्धि।

नामहदूद–(फा. वि.) असीम; अपरिमित।

नामा–(फा. पु.) पत्र; चिट्ठी। वृत्तांत।

नामाकूल–(अ. वि.) अयोग्य; नालायक। अयुक्त; अनुचित।

नामावर–(फा. पु.) पत्र ले जानेवाला; पत्रवाहक।

नामालूम–(फा. वि.) अज्ञात।

नामुनासिब–(फा. वि.) अनुचित; अनुपयुक्त।

नामुनासिबत–(फा. स्त्री.) अनौचित्य; अनुपयुक्तता।

नामुमकिन–(फा. वि.) असंभव।

नामुबारक–(फा. वि.) अशुभ; अमगल।

नामुराद–(फा. वि.) असफल।

नामुवाफ़िक़–(फा. वि.) विरुद्ध; विपरीत।

नामूसी–(अ. स्त्री.) अप्रतिष्ठा; बदनामी।

नामोनिशान–(फा. पु.) पता; चिन्ह।

नायब–(अ. पु.) किसी की ओर से काम करनेवाला; प्रतिनिधि। सहायक; सहकारी।

नायाब–(फा. वि.) अप्राप्य; अलभ्य।

नारसाई–(फा. स्त्री.) पहुँच या प्राप्ति न होना।

नाराज़–(फा. वि.) अप्रसन्न; रुष्ट।

नाराज़गी–(फा. स्त्री.) अप्रसन्नता; रुष्टता।

नाराज़ी–(फा. स्त्री.) अप्रसन्नता। कोप; क्रोध।

नाल–(अ. पु.) लोहे का वह अर्द्ध-चंद्राकार खंड जिसे घोड़ों की टाप के नीचे या जूतों की एड़ी के नीचे उन्हें रगड से बचाने के लिये जड़ते हैं। तलवार आदि के म्यान की नोक पर उसकी रक्षा के लिये लगाया हुआ धातु का छल्ला या वलय। कुंडलाकार गढा

हुआ पत्थर का भारी टुकड़ा जिसमें बीचोंबीच पकड़ कर उठाने के लिये एक दस्ता या मूठ रहती है, (इसे अभ्यास के लिये कसरत करनेवाले उठाते हैं)। लकड़ी का वह चक्कर या चौखट जिसे नीचे डाल कर कुएं की जोताई की जाती है। जुए का अड्डा रखनेवाले को उस जगह पर जुआ खेलनेवालों से मिलनेवाला रुपया।

नालबद–(फा पु) जूते की एड़ी या घोड़े आदि की टाप में नाल जड़ने वाला आदमी।

नालबदी–(फा स्त्री) नाल जड़ने का काम। नालबद का काम या पद।

नाला–(फा वि) रोता हुआ।

नाला–(फा पु) अपने बचाव या रक्षा के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना, दुहाई देना, आर्तनाद करना। रोना पीटना, विलाप। क्रंदन।

नालायक़–(फा वि) निष्प्रयोजन, निकम्मा। मूर्ख।

नालायकी–(फा स्त्री) अयोग्यता, अनुपयुक्तता। मूर्खता।

नालिश–(फा स्त्री) किसी के किये हुए दोष या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन करना, अभियोग।

नायक–(फा पु) एक प्रकार का छोटा और तीक्ष्ण बाण। मधुमक्खी का डंक।

नावाकिफ–(फा वि) अनभिज्ञ, अपरिचित।

नावाजिब–(फा वि) जो ठीक न हो, अनुचित।

नाशपाती–(तु स्त्री) एक फल।

नाशाइस्तगी–(फा स्त्री) असभ्यता। अशिष्टता।

नाशाइस्ता–(फा वि) असभ्य। अनुचित, अनुपयुक्त।

नाशाद–(फा वि) अप्रसन्न।

नाशादी–(फा स्त्री) अप्रसन्नता।

नाशुक्रा–(फा वि) कृतघ्न।

नाशुक्रिया–(फा स्त्री) कृतघ्नता।

नाशुदनी–(फा वि) असभ्य।

नाश्ता–(फा पु) थोड़ा और हलका भोजन, अल्पाहार, जलपान।

नासाज–(फा वि) अस्वस्थ। विपरीत, विरुद्ध।

नासूर–(अ पु) घाव, फोड़े आदि के भीतर दूर तक गया हुआ छेद जिससे बराबर पीव निकला करती है और जिसके कारण घाव शीघ्र अच्छा नहीं होता, नाड़ीव्रण।

नासेह–(अ वि) नसीहत या उपदेश देनेवाला।

नाहक़–(फा. वि.) अनधिकृत। अन्याय।

निकाह–(अ. पु.) विवाह।

निगराँ–(फा. पु.) रक्षक। निरीक्षक।

निगरानी–(फा. स्त्री.) देख-रेख; निरीक्षण।

निगह–(फा. स्त्री) दृष्टि। देखने की क्रिया या ढंग; चीदग। कृपादृष्टि; दया। ध्यान; विचार। परख; पहचान।

निगहबान–(फा. पु.) रक्षक; संरक्षक।

निगहबानी-(फा. स्त्री.) रखवाली; रक्षा।

निगार–(फा. पु.) चित्र; बेल-बूटा। नक्काशी। मेंहदी। माशूक़।

निगाह–(फा. स्त्री.) दे "निगह"।

निज़ाम–(अ. पु.) इंतजाम; प्रबंध; व्यवस्था। हैदराबाद के नवाबों की उपाधि।

निज़ामत–(अ. स्त्री.) नाज़िम या प्रबंधकर्त्ता का पद या काम; व्यवस्थापकत्व। नाज़िम का कार्यालय।

निफ़ाक–(अ. पु) विरोध; वैर। मतभेद; वैमनस्य।

नियाज़–(अ. पु.) विनती। विनम्रता।

नियाज़मंद–(फा. वि.) विनीत। विनम्र।

निर्ख़–(फा. पु.) दर; दाम।

निर्ख़नामा–(फा. पु.) बाजार का भाव; दाम-सूची।

निर्ख़बंदी–(फा. स्त्री.) किसी चीज का भाव या दर निश्चित करना।

निवाला–(फा. पु.) कौर; ग्रास।

निशान–(फा. पु.) लक्षण। चिन्ह। शरीर या और-किसी पदार्थ पर बना हुआ दाग या धब्बा; लांछन। वह चिन्ह जो अपढ़ आदमी अपने हस्ताक्षर के बदले में किसी कागज़ आदि पर बनाता है। वह लक्षण या चिन्ह जिससे पूर्वकाल की किसी घटना या वस्तु का परिचय मिले; प्रमाण। पता; ठिकाना। लक्ष्य। झंडा; ध्वजा। नगारा; भेरी। बर्छी।

निशानची, निशानबरदार–(फा. पु.) झंडा लेकर चलनेवाला आदमी।

निशाना–(फा. पु.) वह आदमी या पदार्थ जिस पर ताक कर किसी अस्त्र या शस्त्र आदि का वार किया जाय; लक्ष्य। वह जिस पर लक्ष्य करके कोई बात कही जाय; उद्दिष्ट।

निशानी–(फा. स्त्री.) किसी की स्मृति बनाये रखने के लिये दिया हुआ या बनाया हुआ पदार्थ; स्मृति चिन्ह; स्मारक। किसी पदार्थ के पहचानने का चिन्ह; लक्षण।

निशास्ता–(फा. पु.) गेहूं का गूदा या सत। पकाये हुए चावलों से निकला हुआ लसदार पानी जिसे कपड़ों पर

उनरी तह कड़ी और बराबर करने के लिये लगाते है, मांडी ।

निसबत-(अ स्त्री) संबध, लगाव । विवाह के पहले की वह रस्म जिसमें वर और कन्या का संबध निश्चित होता है, मगनी ।

निसवाँ-(अ स्त्री) स्त्रियाँ, औरतें ।
-(वि) स्त्री संबधी, स्त्रियों का ।

निसार-(फा पु) निछावर, बलिदान ।

निस्फ-(अ वि) आधा ।

निहाँ-(फा वि) अप्रकट, गुप्त ।

निहायत-(अ वि) नितान्त, अत्यत ।

निहार-(फा पु) दिवस, दिन ।

निहाल-(फा पु) पौधा ।
-(वि) सम्पन्न । सपन्न ।

निहाली-(फा स्त्री) गुदगुदा बिछौना, गद्दी ।

नीज-(फा अव्य) भी ।

नीम-(फा वि) आधा ।

नीमजान-(फा वि) प्रेमासक्त, प्रेमी । अधमरा ।

नीमबिस्मिल-(फा वि) आधा घायल, अधमरा ।

नीमरजा-(फा वि) थोड़ी रजामंदी, कुछ कुछ सहमत । आधा सतुष्ट, कुछ कुछ तृप्त ।

नीमा-(फा पु) एक पहनावा जो कुरते के नीचे पहना जाता है ।

नीमास्तीन-(फा स्त्री) आधी आस्तीन या बाँह की एक प्रकार की कुरती ।

नीयत-(अ स्त्री) मनोभाव, उद्देश्य । आशय । सकल्प ।

नीलम-(फा पु) नीले रंग का रत्न, इद्रनील ।

नीलाम-(पुर्त * पु) बिक्री का एक ढग जिसमें माल उस आदमी को दिया जाता है जो सब से अधिक दाम लगाता हो, बोली बोल कर बेचना ।

नीलोफर-(फा पु) नीलोत्पल ।

नुक्ता-(अ पु) भेद रहस्य । चम त्कारपूर्ण उक्ति, चुटकुला ।

नुक़्ता-(अ पु) बिंदु, बिंदी । शून्य, सुन्न । धब्बा, कलक ।

नुक्ताचीन-(फा वि) दोष या त्रुटि ढूढ निकालनेवाला, छिद्रान्वेषी ।

नुक्ताचीनी-(फा स्त्री) दोष निका लने का काम, छिद्रान्वेषण ।

नुक़सान-(अ पु) कमी, घटी, हास । हानि, घाटा, क्षति । दोष, अवगुण ।

नुकीला-(उ वि) जिसमें नोक निकली हो नोकदार । बांका तिरछा, सुदर और बना-ठना, छबीला ।

नुक़्स–(अ. पु.) दोष; अवगुण। त्रुटि; न्यूनता।

नुत्फ़ा–(अ. पु.) धातु; वीर्य। बीज। संतान (ग्राम्य)।

नुत्फ़ाहराम–(फ़ा. वि.) व्यभिचार से उत्पन्न; जारज।

नुमा–(फ़ा. वि.) दीखनेवाला। (यौगिक में)

नुमाइंदा–(फ़ा. पु) प्रतिनिधि।

नुमाइश–(फ़ा. स्त्री.) दिखावट; प्रदर्शन। तड़क भड़क; आडंबर। नाना प्रकार की नयी या अद्भुत वस्तुओं का एक स्थान पर दिखाया जाना; प्रदर्शिनी।

नुमाइशगाह–(फ़ा. स्त्री.) नुमाइश या प्रदर्शिनी का स्थान।

नुमाइशी–(उ. वि.) जो केवल ऊपरी दिखावट के लिये हो; दिखाऊ।

नुमायां–(फ़ा वि) प्रत्यक्ष; प्रकट।

नुसख़ा–(अ. पु) लिखा हुआ काग़ज़। पुस्तक की एक प्रति। वह छोटा पुरजा या चिट्ठी जिस पर डाक्टर या वैद्य रोगी के लिये औषध और सेवन-विधि लिख कर देते हैं। औषध आदि की सेवन-विधि।

नूर–(अ. पु.) ज्योति; प्रकाश। कांति; शोभा।

नूरचश्म = बाल बच्चे; संतान।

नूरबख़्श–(फ़ा. वि) प्रकाश देनेवाला।

नूरा, नूरानी–(अ. वि.) प्रकाशवान; तेजस्वी।

नेक–(फ़ा. वि) अच्छा; भला। सीधा; योग्य। शिष्ट; सज्जन। सुशील।

नेकचलन–(उ. वि.) सदाचारी; सच्चरित्र।

नेकचलनी–(उ. स्त्री.) सदाचार; सच्चरित्रता।

नेकनाम–(फ़ा. वि.) अच्छा नामवाला; यशस्वी।

नेकनामी–(फ़ा. स्त्री) सुयश; कीर्ति।

नेकनीयत–(फ़ा. वि.) अच्छे संकल्प का। सद्भावना का; सद्विचार का। विश्वासी; ईमानदार।

नेकनीयती–(फ़ा. स्त्री.) विश्वासपात्रता; ईमानदारी।

नेकी–(फ़ा. स्त्री) भलाई; सद् व्यवहार। सज्जनता; सुशीलता; भलमनसाहत। उपकार; हित।

नेकी बदी = पाप पुण्य।

नेज़ा–(फ़ा. पु.) भाला; बर्छा। साग नामक अस्त्र, शक्ति। झंडा; ध्वजा।

नेज़ाबरदार–(फ़ा पु.) भाला या झंडा लेकर चलनेवाला।

नेफ़ा–(फ़ा. पु.) पायजामे या लहँगे के घेर में इज़ारबंद या नाड़ा पिरोने का स्थान।

नेमत-(अ स्त्री) अच्छा और बहुमूल्य पदार्थ। स्वादिष्ट भोजन। धन दौलत।

नेस्त-(फा वि) जो न हो, नास्ति। नष्ट, ध्वस्त।

नेस्त नाबूद = नष्ट भ्रष्ट, छिन्न भिन्न।

नेस्ती-(फा स्त्री) नास्तित्व, अनस्तित्व। नाश, ध्वंस।

नै-(फा स्त्री) बाँस की नली। बाँसुरी, वंशी, मुरली। हुक्के की नली जिसे मुंह में रखकर धुआँ खींचते हैं।

नैचा-(फा पु) हुक्के की दोहरी नली जिसके एक सिरे पर तमाखू जलाने का बरतन या चिलम रखी जाती है और दूसरे का छोर मुंह में रखकर धुआँ खींचते हैं।

नोक-(फा स्त्री) किसी वस्तु का अग्र भाग जो सूक्ष्म या बराबर पतला पड़ता गया हो। किसी वस्तु के निकले हुए भाग का पतला सिरा या कोना।

नोकझोंक-(उ स्त्री) बनाव-सिंगार, सजावट। आतंक, प्रताप, रोब। चुभनेवाली बात, कटूक्ति, व्यंग्य। हंसी ठट्ठे की बातें कहना, छेड़छाड़। चढ़ा ऊपरी, प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा।

नोकदार-(फा वि) जिसमें नोक हो। टेढ़, पैना, तीक्ष्ण। चित्त में चुभने वाला, कड़ु। भड़कीला, छबीला।

नोट-(अं* पु) लिखने का काम, ध्यान रखने के लिये लिख लेने का काम। लिखा हुआ कागज, पत्र, चिट्ठी। भाव प्रकट करनेवाला लेख, टिप्पणी, व्याख्या। कागजी रुपया, सरकारी हुंडी।

नौ-(फा वि) नव, नया।

नौकर-(फा पु) भृत्य, सेवक। काम करने के लिये वेतन पर नियुक्त मनुष्य, वैतनिक कर्मचारी।

नौकरशाही-(उ स्त्री) वह शासन प्रणाली जिसमें सारी राजसत्ता या शासन सूत्र केवल बड़े बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहता है।

नौकरानी-(उ स्त्री) "नौकर" का स्त्री रूप।

नौकरी-(उ स्त्री) नौकर का काम, सेवकाई। कोई काम जिसके लिये वेतन मिलता हो।

नौकरीपेशा-(फा पु) नौकरी से जीविका चलानेवाला आदमी, नौकर।

नौजवान-(फा वि) नवयुवक।

नौबत-(फा स्त्री) बारी। दशा, परिस्थिति। विशिष्ट काल या अवसर, योग, संयोग। वैभव का सूचक बाजा जो देवमंदिरों या बड़े आदमियों के द्वार पर बजता है। [illegible]।

नौबतख़ाना–(फ़ा. पु.) वह स्थान जहाँ नौबत बजाई जाती है।

नौबती–(अ. पु.) नौबत बजानेवाला आदमी। फाटक पर पहरा देनेवाला; पहरेदार। बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा। बड़ा तंबू या डेरा; शिविर।

नौरोज़–(फ़ा. पु.) पारसियों में नये वर्ष का पहला दिन; संवत्सरारंभ। त्योहार का दिन।

नौशह–(फ़ा. पु.) दूल्हा; वर। नव-युवक।

नौसादर–(फ़ा. पु.) एक तीक्ष्ण क्षार या नमक।

नौहा–(अ. पु.) विलाप करना, रोदन।

प

पंज–(फ़ा. वि.) पंच; पाँच।

पंजहज़ारी–(फ़ा. पु.) एक उपाधि जो मुसलमान राजाओं के समय में सरदारों और दरबारियों को दी जाती थी।

पंजा–(फ़ा. पु.) पाँच का समूह; पंचक; गाही। हाथ या पैर की पाँचों उंगलियों का समूह। पंजा लड़ाने की कसरत। उंगलियों के सहित हथेली का संपुट; चंगुल। जूते का अगला भाग जिसमें उंगलियाँ रहती हैं। मनुष्य के पंजे के आकार का कटा हुआ किसी धातु का टुकड़ा जिसे लंबे बाँस आदि में बाँधकर झंडे की तरह मुसलमान लोग मुहर्रम के जुलूस में लेकर चलते हैं। ताश का वह पत्ता जिसमें पाँच बूटियाँ हों।

छक्का पंजा = दाँव पेंच, चालबाज़ी।

पंजाब–(फ़ा. पु.) पंचनद प्रदेश। भारत के उत्तर-पश्चिम का प्रदेश जहाँ पाँच नदियाँ बहती हैं।

पंजाबी–(फ़ा. वि.) पंजाब देश का। पंजाब का रहनेवाला।

पंजुम–(फ़ा. वि.) पंचम; पाँचवाँ।

पंडाल–(तमिल. पु.) किसी उत्सव या समारोह के लिये बाँस, फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान, मंडप; मड़वा।

पंद–(फ़ा. स्त्री.) शिक्षा; उपदेश।

पगाह–(फा पु) प्रात काल।

पच्चीकारी–(फा स्त्री) किन्हीं दो धातु निर्मित पदार्थों को टाँका देकर जोड़ने का काम।

पजावा–(फा पु) ईंट पकाने का भट्ठा, आवाँ।

पटेबाज–(उ वि) तलवार के बदले लोहे की पट्टी लेकर तलवार चलाना आदि सीखनेवाला। व्यभिचारी, शोहदा।

पतलून–(अं पु) अंग्रेजी पायजामा।

पनाह–(फा स्त्री) बचाव, रक्षा, त्राण। रक्षा पाने का स्थान, शरण, आश्रय।

पनीर–(फा पु) फटे दूध का खोआ छेना। वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

पयाम–(फा पु) संदेश, संदेसा।

पर–(फा पु) चिड़ियों का डैना, पंख।

परकटा–(उ वि) जिसके पर या पंख कटे हों।

परकार–(फा पु) वृत्त या गोलाई खींचने का एक उपकरण, "कंपास"।

परकाला–(फा पु) टुकड़ा, खंड। शीशे का टुकड़ा। अग्निकण, चिनगारी। अजब का परकाला = प्रचंड या भयंकर मनुष्य।

परगना–(फा पु) वह भू भाग जिसके अन्तर्गत बहुत से ग्राम हों, प्रदेश।

परचा–(फा पु) कागज का टुकड़ा, पत्र, चिट। खत, चिट्ठी। परीक्षा का प्रश्नपत्र।

परवरदिगार–(फा वि) पालन पोषण करनेवाला। ईश्वर।

परवरिश–(फा स्त्री) पालन पोषण, रक्षण।

परवा–(फा स्त्री) चिंता, खटका। ध्यान, ख्याल। आसरा, प्रतीक्षा।

परवानगी–(फा स्त्री) आज्ञा, अनुमति।

परवाना–(फा पु) आज्ञापत्र, अनुमति-पत्र। एक उड़नेवाला कीड़ा, शलभ, पतिंग।

परवाह–(फा स्त्री) दे "परवा"।

परसाल–(फा क्रि वि) गत वर्ष।

परस्तिश–(फा स्त्री) पूजा, उपासना।

परहेज–(फा पु) स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाली बातों से बचना, पथ्य से रहना, संयम। दोषों और बुराइयों से दूर रहना।

परहेजगार–(फा पु) परहेज करनेवाला, पथ्य से रहनेवाला, संयमी। दोषों से दूर रहनेवाला।

परागंदा–(फा वि) परेशान, व्यग्र। बिखरा हुआ।

परिंद, परिंदा–(फा. पु.) पक्षी।

परिस्तान–(फा. पु.) वह कल्पित लोक या स्थान जहाँ परियाँ रहती हों। वह स्थान जहाँ सुंदरी स्त्रियों का जमघट या भीड़ भाड़ हो।

परी–(फा. स्त्री.) फारस की प्राचीन कथाओं की कल्पित और परवाली स्त्रियाँ; देवांगना; अप्सरा।

परीज़ाद–(फा. वि.) अत्यंत सुंदर।

परीपैकर–(फा. वि.) सुंदर; खूबसूरत। माशूक़; प्रेम पात्र।

परेशान–(फा. वि.) व्याकुल; घबराया हुआ; व्यग्र।

परेशानी–(फा. स्त्री.) व्याकुलता; घबराहट।

पर्दा–(फा. पु.) आड़ करनेवाली कोई वस्तु; व्यवधान। पट; यवनिका। ओट; छिपाव। स्त्रियों को बाहर निकल कर लोगों के सामने न होने देने का नियम। शर्म; लाज। विभाग करने या ओट करने के लिये उठाई हुई दीवार। तह; परत।

पर्दानशीन–(फा. वि.) पर्दे में रहनेवाली; गोशा (स्त्री)।

पलटन–(अं. स्त्री.) अंग्रेजी पैदल सेना का एक विभाग। दल; समुदाय; जत्था।

पलटनिया–(उ. वि.) पलटन में काम करनेवाला; सैनिक।

पलस्तर–(अं. पु.) मिट्टी, चूने आदि के गारे का लेप।

पलीता–(फा. पु.) बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह कागज जिस पर कोई यंत्र लिखा रहता हो। वह बत्ती जिससे बंदूक या तोप के रंजक में आग लगा कर दागी जाती है। पनशाखे आदि दीप की कपड़े की बत्ती।

पलीती–(उ. स्त्री.) "पलीता" का अल्प रूप।

पलीद–(फा. वि.) अपवित्र; गंदा। वृगास्पद। नीच; दुष्ट।

पल्लेदार–(उ. पु.) अनाज ढोने या तौलनेवाला आदमी।

पल्लेदारी–(उ. स्त्री.) पल्लेदार का काम।

पशम–(फा. स्त्री.) बढ़िया मुलायम ऊन जिससे शाल दुशाले आदि बुनते हैं। उरस्थ पर के बाल; शष्प। अत्यंत तुच्छ या निकृष्ट वस्तु।

पशमीना–(फा. पु.) बढ़िया मुलायम ऊन; पशम। इस ऊन का बना हुआ कपड़ा।

पसंघा–(उ. पु.) दे "पासंग"।

पसंद–(फा. वि.) जो अच्छा लगे; रुचिकर। मनोनीत।

–(स्त्री.) अभिरुचि।

पसन्दगी–(फा स्त्री) अभिरुचि, आसक्ति।

पसन्दीदा–(फा वि) पसंद का, वांछित। मनोनीत।

पस–(फा अव्य) इस कारण, अत। तब, बाद को।

पसोपेश = आगा पीछा, सोच विचार, पूर्वापर।

पस्त–(फा वि) हारा हुआ, पराजित। थका हुआ, थकित। दबा हुआ, दलित।

पस्तकद–(फा वि) छोटे कद या डील का, नाटा, वामन।

पस्ती–(फा स्त्री) निचाई, छोटापन। कमी, अभाव।

पहलवान–(फा पु) कुश्ती लड़नेवाला, मल्ल। डील-डौलवाला और बलवान आदमी।

पहलवानी–(फा स्त्री) पहलवान होने का भाव। पहलवान का काम या पेशा।

पहलवी–(फा स्त्री) फारस देश की एक प्राचीन भाषा।

पहलू–(फा पु) बगल और कमर के बीच का भाग, पार्श्व। दाहिना या बायाँ भाग, पार्श्व भाग, बाजू। बगल, तरफ, दिशा। किसी वस्तु के ऊपर या पृष्ठ पर का उभरा कटाव तराश। गुण दोष आदि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंग, पक्ष। अर्थ।

पहलूदार–(फा वि) जिसमें पहल या पार्श्व हों। अनेकार्थी।

पाईंबाग–(फा पु) नीचे का बाग, अंतःपुर का उद्यान।

पायचा–(फा पु) (पाखाने आदि में) पाँव रखने का स्थान। पायजामे का वह भाग जिससे पैर ढका जाता है।

पाक–(फा वि) पवित्र, शुद्ध। पाप रहित, निर्मल, निर्दोष। समाप्त, शांत। साफ, स्वच्छ।

पाकदामन–(फा वि) पतिव्रता, सती।

पाकदामनी–(फा स्त्री) पातिव्रत्य, सतीत्व।

पाकीजगी–(फा स्त्री) शुद्धता, सफाई। निर्मलता।

पाकीजा–(फा वि) पवित्र, शुद्ध। निर्दोष, निर्मल, स्वच्छ।

पाखाना–(फा पु) वह स्थान जहाँ मल त्याग किया जाय, संडास, "पाखाना"। मल, अनेध्य।

पाखाना फिरना = मल त्याग करना।

पागलखाना–(फा पु) पागलों की चिकित्सा आदि करने का स्थान।

पाजामा–(फा पु) पैर में पहनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र

जिसके दो लंबे खोल (पैर डालने के लिये) होते हैं।

पाजी–(फा. वि.) दुष्ट। नीच।

पाजीपन–(उ. पु.) दुष्टता। नीचता।

पाज़ेब–(फा. स्त्री.) स्त्रियों का पैर में पहनने का एक गहना; नूपुर।

पाताबा–(फा. पु.) पैर में पहनने का एक प्रकार का बुना हुआ कपडा जिससे उंगलियों से लेकर पूरी या आधी टांगें ढकी रहती हैं; मोज़ा।

पादरी–(पुर्त्त. पु.) ईसाई धर्म का पुरोहित।

पादशाह–(फा. पु.) दे. "बादशाह"।

पानदान–(उ. पु.) पान, सुपारी आदि रखने का डिब्बा; पनडब्बा।

पापोश–(फा. स्त्री.) पादरक्षा; जूता।

पाबंद–(फा. वि.) बंधा हुआ; बद्ध। किसी बात का नियमित रूप से अनुकरण करनेवाला। विवश।

पाबंदी–(फा. वि.) बद्धता। विवशता।

पाबोसी–(फा. स्त्री.) चरण चुंबन।

पामाल–(फा. वि.) दे. "पायमाल"।

पायंदाज़–(फा. पु.) पैर पोंछने का विछावन जो दरवाजे के बीच में पडा रहता है।

पाय–(फा. पु.) पार्व; पाद।

पायख़ाना–(फा. पु.) दे. "पाख़ाना"।

पायजामा–(फा. पु.) दे. "पाजामा"।

पायज़ेब–(फा. पु.) दे. "पाज़ेब"।

पायतख़्त–(फा. पु.) राजधानी।

पायताबा–(फा. पु.) दे. "पाताबा"।

पायदार–(फा. वि.) बहुत दिनों तक टिकनेवाला; टिकाऊ, शाश्वत। दृढ; मजबूत।

पायदारी–(फा. स्त्री.) शाश्वतत्व। दृढता।

पायमाल–(फा. वि.) पैर से रौंदा हुआ; पद-दलित। बरबाद; विनष्ट।

पायमाली–(फा. स्त्री.) पायमाल होने का भाव या दशा।

पारचा–(फा. पु.) कपड़े, कागज आदि का टुकडा; धज्जी। कपडा; वस्त्र। एक प्रकार का रेशमी कपडा। पहनावा।

पारसा–(फा. वि.) पवित्र जीवन बितानेवाला; सदाचारी। साधू।

पारसाई–(फा. स्त्री.) पवित्रता; सदाचार।

पारसी–(उ. वि.) पारसीक देश का।
–(पु.) पारसीक देश का रहनेवाला आदमी। हिन्दुस्तान में हजारों वर्ष से बसे हुए वे पारसीक देश के निवासी जिनके पूर्वज मुसलमान होने के डर से पारसीक छोड़ कर यहाँ आये थे।

पारा–(फा पु) टुकड़ा।

पावदान–(उ पु) पैर रखने के लिये बना हुआ स्थान या वस्तु। इक्के गाड़ी आदि में लोहे की पटरी जिस पर पैर रख कर चढ़ते हैं।

पाश–(फा पु) टुकड़े टुकड़े होना।

पाशा–(तु पु) तुर्की सरदारों की उपाधि।

पासग–(फा पु) तराजू की डंडी को बराबर करने के लिये हलके पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ।

पास–(फा पु) पहरा, रखवाली, निगरानी। एक पहर, याम।

पिदर–(फा पु) पितृ, पिता।

पिदरी–(फा वि) पितृ सबंधी पैतृक।

पिनहाँ–(फा वि) छिपा हुआ, गुप्त।

पिसर–(फा पु) पुत्र, बेटा।

पिस्ताँ–(फा पु) पयस्तान, स्तन, कुच। कुचाग्र, ढेपुनी।

पिस्ता–(फा पु) एक मेवा।

पिस्तौल–(अ स्त्री) छोटी बदूक।

पीकदान–(उ पु) पान खा कर थूकने का एक विशेष प्रकार का बरतन।

पीनस–(फा स्त्री) पालकी।

पीपा–(पुर्त पु) बड़े ढोल के आकार का काठ या लोहे का पात्र जिसमें मद्य, तेल आदि तरल पदार्थ रखे जाते हैं।

पीर–(फा पु) मुसलमानों के धर्म गुरु, आचार्य। महात्मा, सिद्ध। बूढ़ा आदमी, गुरुजन, वृद्ध। सोमवार।

पीरमुर्शिद–(फा पु) पूजनीय व्यक्ति, महात्मा।

पीरी–(फा स्त्री) शिष्य बनाने का काम। गुरु का धर्म या काम, गुरुआई। बुढ़ापा।

पीरोजा–(फा * पु) दे 'फीरोजा"।

पील–(फा * पु) दे "फील"।

पीलपाज–(फा * पु) वह आधार जिस पर दिया रखा जाता है।

पुख्ता–(फा वि) पक्का हुआ, परिपक्व। परिपुष्ट, दृढ़।

पुदीना–(फा पु) एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों से लोग चटनी आदि बनाते हैं जो विरेचक होती है।

पुर–(अ वि) पूर्ण, भरा हुआ।

पुरजा–(फा पु) टुकड़ा, खड। कागज टुकड़ा, धज्जी, कतरन। अवयव, अग, अंश।

चलता पुरजा = चालाक आदमी, दुर्नीतिज्ञ।

पुरसा–(फा वि) पूछनेवाला, प्रश्निक।

पुल–(फा पु) नदियों को पार करने

के लिये उनके ऊपर बनाया हुआ मार्ग, सेतु ।

पुश्त–(फा. स्त्री.) पृष्ठ; पीठ । सहायता । वंश परंपरा में स्थान क्रम; पारंपर्य । एक पीढ़ी से दूसरी तक का अंतर; पीढ़ी ।

पुश्तक–(फा.* स्त्री) घोड़े, गधे आदि का पीछे के दोनों पैरों से लात मारना; दोलत्ती ।

पुश्तनामा–(फा. स्त्री.) लिखी हुई वंश-परंपरा, वंशावली ।

पुश्तपनाह–(फा. वि.) पृष्ठपोषक; सहायक ।

पुश्ता–(फा. पु.) किसी दीवार से लगातार कुछ ऊंचाई तक जमाया हुआ मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का ढेर या टीला जिससे दीवार की दृढ़ता आती है। नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना ऊँचा टीला; बांध, मेड़ । किसी पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग; पुट्ठा ।

पुश्तावंदी–(फा. स्त्री.) मेड़ बांधना ।

पुश्तैनी–(उ. वि) जो कई पुश्तों या पीढ़ियों से चला आता हो, परंपरागत। आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला, स्थायी ।

पूंजीदार–(उ. पु.) वह जिसके पास पूंजी या धन हो; धनी; साहूकार । वह जो किसी व्यापार आदि में पूंजी या मूलधन लगावे; पूंजीपति ।

पेच–(फा पु) घुमाव; फिराव, चक्कर। वक्रता । उलझन; झंझट । चालाकी; धूर्तता । पगड़ी की लपेट या परत । कल; यंत्र । यंत्र का वह छोटा अंग या भाग जिसे घुमाने से वह यंत्र चले; यंत्र का पुरजा । वह कील या कांटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार रेखायें बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है; "स्क्रू" । पतंग उड़ने समय दो या अधिक पतंगों की डोरों का एक दूसरे में फँस जाना । कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की युक्ति। युक्ति; तरकीब; उपाय । टोपी या पगड़ी में खोंस लेने का एक तरह का आभूषण ।

पेचक–(फा. स्त्री.) बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी ।

पेचकश–(फा. पु.) पेचदार कील जड़ने या निकालने का एक उपकरण । लोहे का बना हुआ वह घुमावदार पेच जिसकी सहायता से बोतल का काग निकाला जाता है ।

पेचताब-(फा पु) मन ही मन रहने वाला क्रोध।

पेचदार-(फा वि) जिसमें कोई पेच या कल हो। जो टेढ़ा मेढ़ा और कठिन हो, दुस्तर।

पेचवान-(फा पु) तमाकू पीने के लिये हुक्के, गुड़गुड़ी आदि में लगाई जाने वाली लंबी लचीली नली। बड़ा हुक्का।

पेचिश-(फा स्त्री) आँव होने के कारण पेट में होनेवाली ऐंठन और पीड़ा, मरोड़। संग्रहणी रोग।

पेचीदगी-(फा स्त्री) पेचीदा होने का भाव। उलझाव, झंझट। मुश्किल, कठिनाई।

पेचीदा-(फा वि) जिसमें पेच हो, पेचदार। कठिन, मुश्किल।

पेश-(फा क्रिवि) सामने, आगे, सम्मुख।

पेशक़ब्ज़-(फा स्त्री) कटारी, छुरी।

पेशकश-(फा पु) नजराना, उपहार, भेंट।

पेशकार-(फा पु) हाकिम या बड़े अधिकारी के सामने कागज पत्र पेश करनेवाला कर्मचारी।

पेशकारी-(फा स्त्री) पेशकार का काम या पद।

पेशक़ैमा-(फा पु) सेना का वह सामान जो पहले से ही आगे भेज दिया जाय। सेना का अग्र भाग। किसी बात या घटना का पूर्व लक्षण।

पेशगी-(फा स्त्री) वह धन जो किसी को कोई निर्दिष्ट काम करने के लिये पहले ही दे दिया जाय, अगाऊ।

पेशतर-(फा क्रिवि) पहले, पूर्व।

पेशदस्त-(फा वि) परिश्रमी, उद्यमी।

पेशदस्ती-(फा स्त्री) जबरदस्ती, बलात्कार।

पेशबंद-(फा पु) चारजामे या जीन में लगा हुआ वह बंधन जो घोड़े की गदन पर से लाकर दूसरी ओर बाँध दिया जाता है।

पेशबंदी-(फा स्त्री) पहले से किया हुआ प्रबंध या बचाव की युक्ति, पूर्व व्यवस्था। भूमिका, पीठिका।

पेशराज-(उ पु) पत्थर ढोनेवाला मजदूर।

पेशवा-(फा पु) अग्रज, नेता। नायक, सरदार। महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की उपाधि।

पेशवाई-(फा स्त्री) आगे बढ़कर स्वागत करना, अगवानी। नेतृत्व। पेशवा का पद या काम। पेशवाओं की शासन कला।

पेशवाज़–(फा. स्त्री) नाचते समय पहनने का वेश्याओं का घांघरा या लहँगा।

पेशा–(फा. पु.) जीविका के लिये किया जानेवाला कार्य या उद्योग; व्यवसाय, वृत्ति ।

पेशानी–(फा. स्त्री.) ललाट; माथा । ललाट-रेखा; भाग्यलेख ।

पेशाब–(फा. पु.) मूत्र ।

पेशाबख़ाना–(फा. पु.) पेशाब करने का स्थान; "मूत्री" ।

पेशावर–(फा. पु.) किसी प्रकार का पेशा करनेवाला; व्यवसायी ।

पेशी–(फा. स्त्री.) न्यायाधीश के सामने किसी मुकदमे के पेश होने की क्रिया । मुकदमे की सुनवाई । सामने होने की क्रिया या भाव; सान्निध्य ।

पेशीन–(फा. वि.) पूर्वज ।

पेशीनगो–(फा. पु.) भविष्य की बात कहनेवाला; भविष्यवक्ता ।

पेशीनगोई–(फा. स्त्री.) भविष्यद्वाणी ।

पैकर–(फा. पु.) आकृति; आकार ।

पैकार–(फा. पु.) फुटकर सौदा बेचनेवाला; छोटा व्यापारी ।

पैख़ाना–(फा.पु.) दे. "पायख़ाना" ।

पैग़ंबर–(फा. पु.) मनुष्यों के पास ईश्वर का संदेश ले आनेवाला; ईश्वरीय दूत ।

पैग़ंबरी–(फा. वि.) पैगंबर संबंधी ।

पैग़ाम–(फा. पु.) संदेश ।

पैज़ार–(फा. पु.) जूता ।

पैदा–(फा. वि.) उत्पन्न । प्रकट; आविर्भूत ।

पैदाइश–(फा. स्त्री.) उत्पत्ति; जन्म ।

पैदाइशी–(फा. वि.) जन्म का । स्वाभाविक; सहज ।

पैदावर, पैदावार–(फा. स्त्री.) धान्य फल आदि जो खेत में बोने से प्राप्त हो; फसल; उपज ।

पैमाइश–(फा. स्त्री.) मापने की क्रिया या भाव; माप ।

पैमान–(फा. पु.) प्रतिज्ञा; वचन । शर्त; होड ।

पैमाना–(फा. पु.) मापने का उपकरण; मान ।

पैरवी–(फा. स्त्री.) पीछे चलना; अनुगमन; अनुसरण । आज्ञापालन । किसी पक्ष का मंडन या समर्थन । किसी कार्य के अनुकूल प्रयत्न; दौड़-धूप ।

पैरवीकार–(फा. वि.) पैरवी करनेवाला; अनुगामी; अनुयायी । प्रयत्नशील; उद्यमी ।

पैरो–(फा. पु.) अनुयायी; शिष्य ।

पैरोकार–(फा. वि.) दे. "पैरवीकार" ।

पैवंद–(फा. पु.) कपड़े आदि का छेद

बद करने का टुकड़ा, जोड़, थिगली। किसी पेड़ की टहनी काटकर उसी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में जोड़ कर बाँधना जिससे फल बढ़ जायँ या उनमें नया स्वाद आ जाय।

पैवदी–(फा वि) पैवद लगाकर पैदा किया हुआ (फल)।

पैवस्त–(फा वि) मिला हुआ, मिलित। समा हुआ, लगा हुआ।

पोच–(फा वि) तुच्छ, निकृष्ट। क्षीण, निर्बल।

पोची–(उ स्त्री) निकृष्टता, क्षुद्रता।

पोत–(फा * पु) जमीन का लगान, भूमि कर। खजाना।

पोतदार, पोद्दार–(उ पु) खजानची। खजाने में रुपया परखनेवाला।

पोशाक–(फा स्त्री) पहनने के कपड़े, पहनावा।

पोशीदगी–(फा स्त्री) छिपाव, गोपन।

पोशीदा–(फा वि) छिपा हुआ, गुप्त।

पोस्त–(फा पु) छिलका; वल्कल, बकला। खाल, चमड़ा। अफीम का पौधा या फल।

पोस्ता–(फा पु) एक पौधा जिसमें अफीम निकलती है।

पोस्ती–(फा पु) वह जो नशे के लिये पोस्ते का फल पीसकर पीता हो। आलसी आदमी, सुस्त।

पोस्तीन–(फा पु) गरम और मुलायम रोयेंवाला समूर, हिरन आदि जानवरों की खाल का बना हुआ पहनावा। खाल का बना हुआ कोट आदि जिसके किनारे पर बाल होते हैं। पुस्तक की जिल्द के भीतर दफ्ती से चिपका हुआ कागज।

प्याज–(फा पु) गोल गाँठ के आकार का गुलाबी रंग का एक प्रसिद्ध कद।

प्याजी–(फा वि) प्याज के रंग का, हलके गुलाबी रंग का।

प्यादा–(फा पु) पैदल सिपाही, पदाति। चिट्ठी पत्री ले जानेवाला, दूत। शतरंज की एक गोटी।

प्याला–(फा पु) एक तरह का छोटा कटोरा, बेला। तोप या बंदूक आदि में वह गड्ढा जिसमें रंजक या जलाने के लिये बारूद रखते हैं।

प्याली–(उ स्त्री) "प्याला" का अल्प रूप।

फ

फ़क़त–(अ. वि.) बस, पर्याप्त। केवल; मात्र।

फ़क़ीर–(अ. पु.) भीख माँगनेवाला; भिक्षुक। निर्धन मनुष्य। साधु; सन्यासी।

फ़क़ीरन, फ़क़ीरनी–(उ. स्त्री) "फ़क़ीर" का स्त्री. रूप।

फ़क़ीरी–(उ. स्त्री.) भिक्षुकता। निर्धनता। सन्यासत्व।

फ़ख़्र–(फा. पु.) गौरव। गर्व; अभिमान।

फ़ज़र–(अ. स्त्री.) सवेरा; प्रातःकाल।

फ़ज़्ल–(अ. पु.) अनुग्रह; कृपा।

फ़ज़ा–(अ. स्त्री.) विस्तार; फैलाव।

फ़ज़ीलत–(अ. स्त्री.) श्रेष्ठता।

फ़ज़ीहत–(अ. स्त्री.) दुर्दशा; दुरवस्था।

फ़ज़ूल–(अ. वि) व्यर्थ; निरर्थक।

फ़ज़ूलख़र्च–(फा. वि.) बहुत खर्च करनेवाला; अपव्ययी।

फ़ज़ूलख़र्ची–(फा. स्त्री.) व्यर्थ खर्च करना, अपव्यय।

फ़तवा–(अ पु.) मुसलमानों में मौलवी आदि का किसी विषय में कुरान या धर्म का विधान बतलाना।

फ़तह–(अ. स्त्री.) विजय; जीत। कार्यसिद्धि; सफलता।

फ़तहमंद–(फा. वि.) विजयी।

फ़तीलसोज़–(फा. पु.) दिया रखने का पीतल, लकड़ी आदि का आधार; दीवट।

फ़तीला–(फा. पु.) दे. "पलीता"।

फ़न–(फा. पु.) खूबी; गुण। विद्या। दस्तकारी; हाथ की कारीगरी; शिल्प। धंधा, पेशा। छलने का ढंग; कपट।

फ़ना–(अ. पु.) नाश; बरबादी।

फ़य्याज़–(अ. वि.) दानी; उदार।

फ़य्याज़ी–(अ. स्त्री) उदारता; औदार्य।

फ़रज़ंद–(फा. पु.) पुत्र; बेटा।

फ़रज़ी–(फा. पु) शतरंज का एक मोहरा जिसे रानी या मंत्री कहते हैं।

फ़रमा–(अं. पु.) लकड़ी आदि का ढाचा या सांचा जिस पर रखकर चमार जूता बनाते हैं। वह सांचा जिसमें कोई चीज ढाली जाय। कागज का पूरा तख्ता जो एक बार प्रेस में छापा जाय, "फारम"।

फ़रमाइश–(फा. स्त्री.) आज्ञा। कोई चीज बनाने या भेजने आदि के लिये दी जानेवाली आज्ञा; "आर्डर"।

फ़रमाइशी–(फा. वि.) विशेष रूप से आज्ञा या "आर्डर" देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ।

फरमान-(फा पु) राजकीय आज्ञापत्र, अनुशासनपत्र।

फरमाना-(उ सक्रि) आज्ञा देना, कहना।

फरवरी-(अं पु) अंग्रेजी वर्ष का दूसरा महीना।

फराख-(फा वि) विस्तृत, विशाल।

फराखी-(फा स्त्री) चौड़ाई, विस्तार। फैलाव, विशालता। सम्पन्नता, धनाढ्यता।

फराग-(अ पु) फुरसत, आराम।

फरागत-(अ स्त्री) छुटकारा, विमोचन। आराम, चैन।

फराज-(फा वि) उच्च, ऊँचा।

फरामोश-(फा वि) भूला हुआ, विस्मृत।

फरार-(अ वि) भागा हुआ, पलायित।

फरासीस-(फा पु) फ्रांस देश। फ्रांस देश का निवासी। लाल रंग का वह कपड़ा जिस पर रंग बरंग के बेलबूटे छपे हों, लाल छींट।

फरासीसी-(उ वि) फ्रांस का रहने वाला। फ्रांस का।

फराहम-(फा वि) एकत्रित, इकट्ठा।

फरीक-(अ पु) विरोध करनेवाला, विरोधी, प्रतिद्वंद्वी। दो पक्षों में से किसी एक पक्ष का मनुष्य, प्रतिपक्षी। फरीकसानी = प्रतिवादी। फरीकैन = उभयपक्ष।

फरेफ्तगी-(फा स्त्री) मुग्धता।

फरेफ्ता-(फा वि) लुभाया हुआ, मुग्ध, मोहित।

फरेब-(फा पु) छल, कपट, धोखा।

फरेबी-(फा वि) छली, कपटी।

फरोख्त-(फा स्त्री) विक्रय, बिक्री।

फरोशा-(फा वि) विक्रेता।

फर्क-(अ पु) पृथक या अलग होने का भाव, पार्थक्य। बीच का अंतर, दूरी। भेद, अंतर, व्यवधान। अन्यथा, विरुद्ध। कमी, न्यूनता।

फर्ज-(अ पु) कर्तव्य, धर्म। कल्पना करना, मान लेना, समझना।

फर्जी-(फा वि) बनावटी, नकली, कल्पित। नाम मात्र का, सत्ताहीन।

फर्द-(फा स्त्री) स्मरण के लिये लिख रखा हुआ लेख या वस्तुओं की सूची। एक ही तरह अथवा एक साथ काम में आनेवाले कपड़ों के जोड़े में से एक कपड़ा। दोहरे कपड़े या रजाई का ऊपरी पल्ला। दो पदों की कविता। -(वि) अनुपम, अद्वितीय।

फर्याद-(फा स्त्री) दुःख से बचाने के लिये पुकार, शिकायत। किसी के किये हुए दोष या हानि के विरुद्ध

न्यायालय में निवेदन; अभियोग। विनती; प्रार्थना।

फ़र्यादी-(फा. वि.) फर्याद करनेवाला।

फ़र्राश-(अ. पु.) वह नौकर जो फर्श बिछाना आदि काम करता हो। नौकर; सेवक।

फ़र्राशी-(फ. वि.) फर्श से या फर्राश के काम से संबंध रखनेवाला।

-(स्त्री.) फर्राश का काम या पद।

फ़र्श-(अ. पु.) बैठने के लिये बिछाने का वस्त्र; "जमखाना"। समतल भूमि; धरातल। चूने, सुरखी से पिटी हुई और पक्की की हुई जमीन, गच।

फ़र्शबंद-(फा. पु.) वह ऊँचा और समतल स्थान जहाँ फर्श बना हो।

फ़र्शी-(फा. स्त्री.) धातु का वह बरतन जिस पर लंबी और लचीली नल आदि लगा कर तमाकू पीते हैं; गुडगुड़ी। छोटा हुक्का।

-(वि.) फर्श संबंधी, फर्श का।

फर्शी सलाम = जमीन तक झुक कर किया जानेवाला सलाम।

फ़र्हंग-(फा. स्त्री.) बुद्धि; विवेक। कोष; निघंटु। टीका; टिप्पणी; कुंजी।

फ़र्हत-(अ. स्त्री.) आनंद; प्रसन्नता। निष्कपटता।

फ़र्हाद-(फा. पु.) एक प्रसिद्ध प्रेमी का नाम।

फ़लक-(अ. पु.) आकाश। स्वर्ग।

फलदार-(उ. वि.) जिसमें फल लगे हों या लगें।

फ़लीता-(फा. पु.) दे. "पलीता"।

फ़वाइद-(अ. पु.) "फ़ायदा" का ब. रूप; लाभ। फल; फलितांश।

फ़व्वारा-(अ. पु.) पानी का झरना; सोता। जल को वह टोंटी या नली जिसमें से जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठ कर गिरा करते हैं; जलयंत्र।

फ़सल-(अ. स्त्री.) ऋतु; मौसिम। समय; काल, पर्व। खेत आदि की उपज; शस्य। पुस्तक का एक अंश या खंड।

फसल बुखार = जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर; विषम ज्वर।

फ़सली-(उ. वि.) ऋतु का; मौसिमी।

-(पु.) अकबर का चलाया हुआ एक संवत् जिसका प्रचार भारत में खेती-बारी आदि के कामों में होता है।

फ़साद-(अ. पु.) बिगाड़; वैमनस्य। विद्रोह; राजद्रोह। ऊधम; उपद्रव। झगड़ा; लड़ाई। विवाद; वाग्वाद।

फ़सादी-(फा. वि.) उपद्रवी; ऊधमी। झगड़ालू।

फ़साना–(फा पु) दे "अफसाना"
फसील–(अ स्त्री) किले की दीवार, परकोटा, प्राकार।
फ़सीह–(अ पु) अच्छा बोलनेवाला, सुवक्ता, वाग्मी।
फस्द–(अ स्त्री) नस या स्नायु को छेद कर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।
फहम–(अ स्त्री) समझ, बुद्धि।
फहमी–(फा वि) समझदार।
फ़ाइल–(अ पु) करनेवाला आदमी, कर्त्ता। कर्तृवाचक शब्द।
फाक़ा–(अ पु) उपवास।
फाक़ामस्त–(फा वि) जो खाने पीने का कष्ट उठा कर भी कुछ चिंता न करता हो।
फ़ाख़्ता–(अ पु) कबूतर की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी, पडुक।
फाख्तई–(उ वि) भूरापन लिये हुए लाल रंग।
फाजिल–(अ वि) आवश्यकता से अधिक, अतिरिक्त। खर्च या काम से बचा हुआ, फालतू। व्यर्थ, निरर्थक। विद्वान।
फातिह–(अ वि) विजयी।
फातिहा–(अ पु) प्रार्थना। वह चढ़ावा या नैवेद्य जो मरे हुए मुसलमानों के नाम पर दिया जाय, पिंड दान। नैवेद्य, चढ़ावा।
फ़ातिहा पढ़ना = मृतक को चढ़ावा देने के लिये मन्त्र पढ़ना।
फानी–(अ वि) नश्वर, अनित्य।
फानूस–(फा पु) एक प्रकार की बड़ी कदील। एक दंड में लगे हुए शीशे के कमल, हँडियाँ, गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं। दिये, कंदील आदि का ढक्कन।
फाम–(फा पु) रंग।
फायदा–(अ पु) लाभ, नफा। कार्य सिद्धि, सफलता। अच्छा फल या परिणाम। अच्छा असर, सत्प्रभाव।
फायदामद–(फा वि) लाभदायक। उपकारी, गुणकारी।
फारसी–(फा स्त्री) फारस देश की भाषा।
फारिगती–(उ स्त्री) दे "फारिगखत्ती"।
फारिग–(अ वि) काम से छुट्टी पाया हुआ, निवृत्त। निश्चिंत। छूटा हुआ, मुक्त।
फ़ारिग़ख़त्ती = ऋणमुक्तपत्र, रसीद, चुकता।

फ़ालतू–(फा. वि.) आवश्यकता से अधिक; अतिरिक्त। व्यर्थ; निरर्थक।

फ़ालसई–(उ. वि.) फालसे के रंग का, लाल रंग मिश्रित उदा।

फ़ालसा–(फा. पु.) एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने के बराबर छोटे छोटे खटमीठे फल लगते हैं।

फ़ालिज–(अ. पु.) एक रोग जिसमें शरीर के एक पार्श्व के सब अंग सुन्न या क्रियाहीन हो जाते हैं; पार्श्ववायु; पक्षाघात।

फ़ालूदा–(फा. पु.) गेहूँ के सत्त से बनाई हुई पीने की एक चीज़ या पानीय।

फ़ाश–(फा. वि.) खुला; प्रकट।

फ़ासिला–(अ. पु.) दूरी; अंतर।

फ़ाहिशा–(अ. स्त्री) व्यभिचारिणी स्त्री।

फ़िक़रा–(अ. पु.) वाक्य। छल कपट; बहकाना; भुलावा। ताना; व्यंग्य।

फ़िक़रेबाज़–(फा. वि.) बहकानेवाला; छली।

फ़िक़रेबाज़ी–(फा. स्त्री.) बहकाने का काम; धोखेबाज़ी।

फ़िक्र–(अ. स्त्री.) चिंता, सोच। ध्यान; ख्याल; विचार। उपाय का विचार; यत्न।

फ़िक्रमंद–(फा. वि.) चिंतायुक्त; चिंतित।

फ़िक्रमंदी–(फा. स्त्री.) चिंतायुक्तता।

फ़िज़ूल–(फा. वि.) व्यर्थ; अधिक।

फ़ितना–(अ. पु.) झगड़ा; वाद-विवाद एक प्रकार का नृत्य।

फ़ितरत–(अ. स्त्री.) स्वभाव; प्रकृति। बुद्धि। चालाकी।

फ़ितरती–(उ. वि.) चालाक; चतुर। धोखेबाज़; छली। नटखट।

फ़िदविया–(अ. स्त्री.) दासी; सेविका।

फ़िदवी–(अ. वि.) स्वामिभक्त; आज्ञाकारी।

–(पु) दास, नौकर।

फ़िरंग–(अं. पु.) गोरों का देश; युरोप। मेहरोग; गरमी।

फ़िरंगिस्तान–(उ. पु.) फ़िरंगियों का देश; युरोप।

फ़िरंगी–(उ. वि.) फ़िरंग देश का। फ़िरंग देश में रहनेवाला।

–(स्त्री.) विलायती तलवार।

फ़िरक़ा–(अ. पु.) जाति। जत्था। पंथ; संप्रदाय। वाक्य।

फ़िरदौस–(अ. पु.) स्वर्ग।

फ़िरनी–(फा. स्त्री.) दूध और चावल की कनकियों की पकाई हुई खीर; "परमान्न"।

फिराक–(अ पु) वियोग, विछोह, विरह।

फिरार–(अ पु) भागना, पलायन।

फिरारी–(फा वि) भागनेवाला, भगोड़ा, पलायक।

फिरिश्ता–(फा पु) देवता।

फिलसफा–(यू पु) दर्शनशास्त्र। वेदांत।

फिलहाल–(अ क्रिवि) इस समय।

फिहरिस्त–(फा स्त्री) दे "फेहरिस्त"।

फी–(अ अव्य) हर एक, प्रति एक। भेद, अन्तर।

फीता–(पुर्त पु) पतली धज्जी या मोटे सूत की बुनी हुई चौड़ी पट्टी, मोटा और चौड़ा नाड़ा।

फीरोजा–(फा पु) नीलमणि का एक भेद, इन्द्रनील।

फीरोजी–(फा वि) फीरोजे के रंग का, हरापन लिये हुए नीला।

फील–(फा पु) हस्ती, हाथी। छल, कपट।

फीलखाना–(फा पु) हाथी बाँधने का स्थान, गजशाला।

फीलपाँव, फीलपा–(फा पु) टाँग या पैर फूलने का रोग, श्लीपद।

फीलपाया–(फा पु) ईंट का बना हुआ मोटा खंभा जिस पर छत ठहराई जाती है।

फीलवान–(फा पु) हाथी हाँकनेवाला, हाथीवान, महावत।

फुगाँ–(अ पु) रोना पीटना।

फुतूर–(अ पु) विकार, दोष। हानि, नुकसान, नष्ट। विघ्न, बाधा। उपद्रव, झगड़ा।

फुतूरिया–(अ वि) उपद्रव मचाने वाला, उपद्रवी।

फुतूह–(अ स्त्री) "फतह" का ब० रूप, विजय, जीत। वह धन जो लड़ाई या लूट में मिला हो।

फुतूही–(अ स्त्री) बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती। विजय या लूट का धन।

फुरसत–(अ स्त्री) छुटकारा, विराम। अवसर, समय। आराम।

फुलाँ, फुलाना–(फा वि) कोई व्यक्ति या चीज जिसके नाम का जिक्र न हो, अनिर्दिष्ट व्यक्ति, अमुक।

फूलदान–(फा पु) जिस पर फूल पत्ते, बेल बूटे आदि काढ़कर, बुनकर, छाप कर या खोदकर बनाये गये हों।

फेल–(अ पु) कर्म, काम। शिष्टाचार।

फेहरिस्त–(फा स्त्री) सूची, सूचीपत्र।

वह सूची जिसमें माल का ब्योरा, दर और मूल्य आदि लिखा हो; बीजक; "इन्वायस"।

फ़ैज़–(अ. पु.) लाभ; वृद्धि। फल; परिणाम। दान।

फ़ैज़याब–(फा. वि.) प्रसादित; अनुगृहीत।

फ़ैयाज़–(अ. वि.) दे. "फ़य्याज़"।

फ़ैरोज़ा–(फा. पु.) दे. "फीरोज़ा"।

फ़ैलसूफ़–(उ. वि.) छली; कपटी।

फ़ैलसूफ़ी–(उ. स्त्री.) छल; कपट।

फ़ैसल–(अ. पु.) न्याय करना; झगड़ा निबटाना।

फ़ैसला–(अ. पु.) निबटेरा। निर्णय।

फोता–(फा. पु) मालगुजारी; भूमिकर। थैली; संचो। अंडकोष; वृषण।

फोतादार–(फा. पु.) कोषाधिकारी; खजांची। साहूकार।

फ़ोहश–(फा. पु.) अपशब्द।

फ़ौज–(अ. स्त्री.) जत्था; दल। सेना; सैन्य।

फ़ौजदार–(फा. पु.) सेनापति। दलपति।

फ़ौजदारी–(फा. स्त्री) लड़ाई-झगड़ा; मार-पीट। राजनियम या क़ानून के विरुद्ध काम करनेवाले अपराधियों के मुकदमों का निर्णय करनेवाली अदालत।

फ़ौजी–(फा. वि.) फ़ौज या सेना संबंधी; सैनिक।

फ़ौत–(अ. स्त्री.) मृत्यु; मौत।

फ़ौती–(अ. वि.) मृत्यु संबंधी।

फ़ौरन–(अ. क्रिवि.) तुरंत; तत्क्षण।

फ़ौलाद–(फा. पु.) एक प्रकार का कड़ा और अच्छा लोहा; लोहसार।

फ़ौलादी–(फा. वि.) फौलाद का बना हुआ।

फ़ौवारा–(अ. पु.) दे. "फव्वारा"।

फ्रांसीसी–(अ. वि.) फ्रांस देश का; फ्रांस देशवासी।

व

बंद–(अ. पु.) बाँधने की चीज़; बँधना। नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का घेरा या टीला; बांध; मेंड। शरीर के दो अवयवों का संधिस्थान; गाँठ, जोड़ डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो अँगरखे

आदि में उनका पल्ला बाँधने के लिये लगाया जाता है। कागज का लंबा और कम चौड़ा टुकड़ा, पट्टी। बंधन, क़ैद।

–(वि) जिसके चारों ओर कोई अवरोध या रोक हो। जिसके मुँह अथवा मार्ग पर ढक्कन या ताला आदि लगा हो। जो खुला न हो, मुँदा हुआ। जिसका कार्य रुका हुआ, स्थगित या समाप्त हो। अप्रचलित। जो किसी तरह के बंधन में हो, बँधा हुआ, बद्ध।

बंदगी–(फा स्त्री) भक्तिपूर्वक ईश्वर की वंदना। सेवा, परिचर्या। प्रणाम, सलाम।

बंदगोभी–(उ स्त्री) एक प्रकार की गोभी जिसमें केवल पत्तों का बँधा हुआ संपुट होता है।

बंदर–(फा पु) समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं।

बंदरगाह–(फा स्त्री) दे "बंदर"।

बंदसाल–(उ पु) कारागृह, "जेल"।

बंदा–(फा पु) सेवक दास।

बंदिश–(फा स्त्री) बाँधने की क्रिया या भाव। प्रबंध, रचना। षड्यंत्र, कपटपूर्ण आयोजन।

बंदी–(फा पु) बंधन में रहनेवाला, क़ैदी।

–(उ स्त्री) दासी, सेविका।

बंदीखाना–(फा पु) वह स्थान जहाँ बंदी लोग रखे जाते हैं, कारागृह।

बंदीघर–(उ पु) कारागृह।

बंदूक–(अ स्त्री) नली के रूप का एक प्रसिद्ध आयुध जिसमें गोली रखकर बारूद की सहायता से चलाई जाती है।

बंदूकची–(फा पु) बंदूक चलानेवाला सिपाही।

बंदोबस्त–(फा पु) प्रबंध, व्यवस्था, इंतज़ाम। खेती के लिये भूमि को नाप कर उसका लगान या कर निर्धारित करने का काम। वह सरकारी विभाग जिसके अधीन खेतों को नाप कर उनका लगान नियत करने का काम हो।

बंबुलिस–(उ स्त्री) मलविसर्जन के लिये "म्युनिसिपैलिटी" आदि का बनवाया हुआ सार्वजनिक स्थान, "म्युनिसिपल" या सार्वजनिक "पाखाना"।

बंबा–(उ पु) पानी की कल, पानी का नल। सोता, झरना।

बंबू–(उ पु) चंडू पीने की बाँस की छोटी पतली नली।

बकतर–(फा पु) युद्ध कवच।

बकर–(अ पु) बैल।

बकरा–(अ स्त्री) गाय।

बकलस–(अं.* पु.) एक प्रकार की टेढ़ी कील या कँटिया जो किसी बधन के दो छोरों को मिलाये रखने या कसने के काम में आती है।

बक़ाया–(अ. पु.) बचा हुआ; बाकी; अवशिष्ट। शेष; बचत।

बकावल–(फा. पु.) रसोइया; भंडारी।

बकावली–(फा. स्त्री.) दे. "गुल-बकावली"।

बक़िया–(अ. पु.) शेष; बचत।

बक़्क़ाल–(अ. पु.) बणिक; बनिया।

बक्स–(अं.* पु.) कपड़े आदि रखने का चौकोर संदूक। छोटा डिब्बा।

बख़रा–(फा. पु) भाग; हिस्सा।

बख़िया–(फा. पु.) एक तरह की सिलाई।

बख़ियाना–(उ. सक्रि) किसी कपड़े पर बखिया की सिलाई करना।

बख़ील–(अ वि.) कृपण, कंजूस।

बख़ीली–(अ. स्त्री.) कृपणता; कार्पण्य।

बख़ूबी–(फा. क्रिवि) अच्छी तरह; भली भाँति। पूर्ण रूप से; पूरे तौर से।

बख़्त–(फा. पु.) भाग्य।

बख़्तदार–(फा वि.) भाग्यवान।

बख़्शना–(उ. सक्रि.) देना; प्रदान करना। क्षमा करना; माफ करना।

बख़्शवाना, बख़्शाना–(उ. सक्रि.) "बख़्शना" का प्रे. रूप।

बख़्शिश–(फा. स्त्री.) उदारता। दान। इनाम; पारितोषक। क्षमा।

बग़ल–(फा. स्त्री.) कांख; कक्ष। छाती के दोनों किनारों का भाग; पार्श्व। इधर उधर का भाग; किनारे का भाग। कपड़े का वह टुकडा जो कुरते आदि के कंधे के जोड़ के नीचे लगाया जाता है। समीप का स्थान।

बग़लबंद–(फा. स्त्री.) कमर तक की एक प्रकार की कुरती।

बग़ली–(उ. वि.) बगल संबंधी; बगल का। –(स्त्री.) वह थैली जिसमें दरजी सूई, तागा आदि रखते हैं; तिलदानी। कुरते आदि में वह टुकडा जो कंधे के नीचे लगाया जाता है।

बग़ावत–(अ. स्त्री.) विद्रोह; राजद्रोह।

बग़ीचा–(फा.* पु) दे. "बागीचा"।

बग़ैर–(अ. अव्य.) बिना; छोड़कर।

बग्घी–(अं.* स्त्री) चार पहियों की घोडा गाडी; "सारट"।

बचपन–(उ. पु.) बच्चा या बालक होने का भाव, बालकता। बाल्य; बाल्यावस्था।

बच्चा–(फा. पु.) शिशु; वत्स। लड़का; बालक।

बच्ची–(उ स्त्री) "बच्चा" का स्त्री रूप

बच्चादान–(फा पु) गर्भाशय।

बजा–(फा वि) उचित, उपयुक्त, ठीक।
बजा लाना = पालन करना, पूरा करना।

बजाय–(फा अव्य) बदले में, स्थान पर। वास्ते, लिये।

बजार–(फा पु) दे "बाजार"।

बजुज–(फा अव्य) सिवा, अतिरिक्त।

बज्जाज–(अ पु) कपड़ा बेचनेवाला, 'जवलि" व्यापारी।

बज्जाजा–(फा पु) वह स्थान जहाँ कपड़े की दूकानें हों।

बज्जाजिन–(उ स्त्री) "बज्जाज" का स्त्री रूप।

बज्जाजी–(फा स्त्री) बज्जाज का काम। कपड़ा बेचने का पेशा।

बज्म–(फा स्त्री) मजलिस, सभा।

बटेरबाज–(उ पु) बटेर पक्षी पालने वाला या लड़ानेवाला।

बटेरबाजी–(उ स्त्री) बटेर पक्षी पालने या लड़ाने का काम या शौक़।

बतक–(अ स्त्री) हंस की जाति की एक सफ़ेद चिड़िया।

बतौर–(अ क्रिवि) रीति से, प्रकार से।

बद–(फा वि) बुरा, खराब। दुष्ट, नीच।
बदतर = बहुत बुरा।
बदतरीन = सबसे अधिक बुरा।

बद अमली–(फा स्त्री) राज्य का कुप्रबंध, अराजकता।

बद अंदेश–(फा पु) द्वेषी, वैरी।

बद इंतजामी–(फा स्त्री) कुप्रबंध, अव्यवस्था।

बदकार–(फा वि) कुकर्मी, दुराचारी। व्यभिचारी, लंपट।

बदकारी–(फा स्त्री) दुराचरण। व्यभिचार, लंपटता।

बदकिस्मत–(फा वि) अभागा।

बदकिस्मती–(फा स्त्री) दुर्भाग्य।

बदख्वाह–(फा वि) बुरा चाहनेवाला, अहितचिंतक।

बदगुमान–(फा वि) बुरा संदेह करने वाला।

बदगुमानी–(फा स्त्री) झूठा संदेह।

बदगोई–(फा स्त्री) दुर्वचन, निंदा। चुगली।

बदचलन–(फा वि) कुमार्गी, दुराचारी। व्यभिचारी, लंपट। भ्रष्ट।

बदचलनी–(फा स्त्री) दुराचरण। व्यभिचार। भ्रष्टता।

बदजबान–(फा वि) दुर्भाषी, कटुभाषी।

बदजात–(फा वि) खोटा, नीच, अधम।

बदजायका–(फा वि) स्वादहीन, नीरस, फीका।

बदतमीज़–(फा. वि) असभ्य; गँवार। अशिष्ट।

बददुआ–(फा. स्त्री.) शाप; कोसा-काटी।

बदन–(अ. पु.) शरीर; तनु। स्त्रियों की जननेंद्रिय; योनि।

बदनसीब–(फा. वि.) अभागा।

बदनसीबी–(फा. स्त्री.) दुर्भाग्य।

बदनाम–(फा. वि.) कलंकित; निंदित।

बदनामी–(फा. स्त्री.) लोकनिंदा; अपयश।

बदनीयत–(फा. वि.) जिसका उद्देश्य बुरा हो। कपटी; द्रोही।

बदनीयती–(फा. स्त्री.) दुर्भावना। बेईमानी; द्रोहचिंतन।

बदनुमा–(फा. वि.) कुरूप; भद्दा।

बदपरहेज़ी–(फा. स्त्री.) अपथ्य।

बदफ़ेल–(फा. वि.) कुकर्मी।

बदफ़ेली–(फा. स्त्री.) दुराचार; कुकर्म।

बदबख़्त–(फा. वि.) अभागा।

बदबख़्ती–(फा. स्त्री.) दुर्भाग्य।

बदबू–(फा. स्त्री.) दुर्गंध।

बदबूदार–(फा. वि.) दुर्गंधयुक्त।

बदमज़ा–(फा. वि.) बुरे स्वाद का; कटु।

बदमस्त–(फा. वि.) नशे में चूर; मदमत्त। कामुक; लपट।

बदमस्ती–(फा. स्त्री.) मदमत्तता। कामुकता; लंपटता।

बदमाश–(फा. वि.) बुरे कार्य से जीविका करनेवाला; दुर्वृत्त। दुष्ट; पाजी; गुंडा। दुराचारी; दुश्चरित्र।

बदमाशी–(फा. स्त्री.) दुर्वृत्ति; दुष्कर्म। दुष्टता; गुंडापन। व्यभिचार; दुश्चरित्रता।

बदमिज़ाज–(फा. वि.) बुरे स्वभाव का; दुःस्वभाव।

बदरंग–(फा. वि.) बुरे या भद्दे रंग का; जिसका रंग बिगड़ गया हो; विवर्ण।

बदर–(अ. पु.) पूर्णचंद्र।
–(फा. क्रिवि.) बाहर।

बदरक़ा–(अ. पु.) अनुपान।

बदरनवीसी–(फा. स्त्री.) हिसाब किताब की जाँच। हिसाब में गड़बड़ रकम अलग करना।

बदराह (फा. वि.) बुरे मार्ग पर चलनेवाला; कुमार्गी। कुकर्मी; दुष्ट।

बदल–(अ. पु) परिवर्तन; हेर-फेर। पलटा; प्रतिकार।

बदलना–(उ. अक्रि.) परिवर्तित हो जाना; फेरफार होना। एक के स्थान पर दूसरा हो जाना। एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्त होना।
–(सक्रि.) परिवर्तन करना; रूपांतर करना। एक वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु रखना। एक वस्तु लेकर उसके-

प्रति दूसरी वस्तु देना, विनिमय करना।

बदलवाना-(उ सकि) "बदलना" का प्रे रूप।

बदला-(उ पु) परस्पर लेने और देने का व्यवहार, विनिमय, प्रतिदान। प्रतिकार, प्रतिक्रिया। प्रतिफल, परिणाम।

बदली-(उ स्त्री) एक के स्थान पर दूसरे की उपस्थिति, प्रतिनिधित्व। एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति, स्थान परिवर्तन, स्थानांतर।

बदशकल-(फा वि) कुरूप, बेडौल।

बदसलीका-(फा वि) अशिष्ट, गँवार।

बदसलूकी-(फा स्त्री) बुरा व्यवहार या बरताव।

बदसूरत-(फा वि) कुरूप, भद्दा।

बदसूरती-(फा स्त्री) कुरूपता, भद्दापन।

बदस्तूर-(फा क्रिवि) जैसा है वैसा, ज्यों का त्यों, यथावत्। जैसा पहले था वैसा, यथापूर्व, यथा प्रकार।

बदहजमी-(फा स्त्री) अजीर्ण।

बदहवास-(फा वि) बेहोश, संज्ञाहीन, मूर्छित। व्याकुल, घबराया हुआ।

बदी-(फा स्त्री) अहित, बुराई।

बदौलत-(फा क्रिवि) द्वारा, सौभाग्य से; कृपा से। कारण से, हेतु से।

बनफशा-(फा पु) एक वनस्पति।

बनाम-(फा अव्य) किसी के प्रति या विरुद्ध। (खासकर क़ानूनी कारवाइ में जैसे—"राम बनाम श्याम"।)

बनिस्बत-(फा अव्य) तुलना में, अपेक्षाकृत, अपेक्षया।

बपतिस्मा-(अ * पु) ईसाई होने के समय किया जानेवाला जल संस्कार।

बबर-(फा पु) बड़ा बाघ। सिंह।

बम-(अ * पु) गरमी या आघात के कारण भभक उठने या फूट जानेवाले पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना वह गोला जो शत्रुओं पर फेंकने के लिये बनाया जाता है, "बॉम्ब"।

—(कन्नड़ * पु) बग्घी "कोच" आदि में आगे की ओर लगा हुआ वह लंबा बांस जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।

बमुकाबला-(फा क्रिवि) मुक़ाबले में, विरुद्ध, प्रति।

बमूजिब-(फा क्रिवि) अनुसार, मुताबिक।

बयान-(फा पु) जिक्र, वर्णन। विवरण, वृत्तांत।

बयाना-(फा पु) पेशगी, अगाऊ।

बयाबान-(फा पु) दे. "बियाबान"।

बर-(फा अव्य) ऊपर।

—(वि) बड़ा चढ़ा, श्रेष्ठ। पूरा, पूर्ण।

बशारत–(अ. स्त्री.) शुभसमाचार ।

बशीर–(अ. वि.) शुभ समाचार देनेवाला।

बश्शाश–(फा. वि.) आनंदित ।

बस–(फा. वि.) पर्याप्त; यथेष्ट; काफी। –(क्रिवि.) पर्याप्त; भरपूर; अलम्। केवल; मात्र ।

बसर–(फा. पु.) निर्वाह; काल-क्षेप ।

बसारत–(अ. स्त्री.) दृष्टि । बोध ।

बसीरत–(अ. स्त्री.) होशियारी; सतर्कता।

बस्त–(फ्र. वि.) बाँधा हुआ; बद्ध ।

बस्ता–(फा. पु.) वह कपडा जिसमें कागज, बही-खाता आदि बाँधकर रखे जाते हैं; बेठन ।

बस्तार–(फा पु.) एक में बँधा हुआ बहुत से वस्तुओं का समूह; मुट्ठा; पुलिंदा ।

बहम–(फा. क्रिवि.) सहित; एक साथ ।

बहर–(अ. पु.) समुद्र । गीत की लय ।

बहरहाल–(फा. क्रिवि.) किसी भी हालत में ।

बहरी–(अ. वि.) समुद्र का; समुद्री । –(स्त्री.) बाज की तरह की एक शिकारी चिडिया ।

बहस–(अ. स्त्री.) तर्क; वाद; खंडन मंडन की युक्ति । विवाद; झगडा ।

बहसना–(उ. अक्रि.) बहस करना ।

बहादुर–(फा. वि.) उत्साही; साहसी । शूरवीर; पराक्रमी ।

बहादुरी–(फा. स्त्री.) साहस; उत्साह । शूरता; पराक्रम ।

बहाना–(फा. पु.) किसी बात से बचने या मतलब निकालने के लिये झूठ बात कहना; हीला; मिष । उक्त उद्देश्य से कही हुई झूठी बात । कहने सुनने के लिये एक कारण, निमित्त ।

बहार–(फा. पु) वसंत ऋतु । मौज; आनंद; आमोद प्रमोद । यौवन का विकास; जवानी पर आना । रमणीयता; रम्यता । विकास; प्रफुल्लता । तमाशा; कौतुक।

बहाल–(फा. वि.) ज्यों का त्यों; यथा-स्थित । भला चंगा; स्वस्थ । प्रसन्न; खुश ।

बहाली–(फा. स्त्री.) फिर उसी स्थान पर नियोजन; पुनर्नियुक्ति ।

बहिश्त–(फा. स्त्री.) स्वर्ग ।

बांग–(फा. स्त्री.) पुकार; चिल्लाहट । नमाज के लिये बुलाने का ऊँचा शब्द; अजां । प्रात.काल के समय मुर्गे के बोलने का शब्द ।

बांदी–(उ. स्त्री.) दासी; लौंडी ।

बा–(फा.* क्रिवि.) साथ; सहित ।

बाइस–(अ पु) कारण, वजह।
बाकिला–(अ पु) एक प्रकार की बड़ी मटर।
बाक़ी–(अ वि) जो बचा हो, अवशिष्ट, शेष।
–(स्त्री) व्यवकलन। घटाने के बाद बची हुई संख्या या मान।
बाख़बर–(फा वि) जाननेवाला, ज्ञाता।
बाग़–(अ पु) उद्यान, वाटिका।
बाग़बाग़–(फा वि) गद्गद। खुशी खुशी।
बाग़बान–(फा पु) बाग को सींचने और पौधों को ठीक स्थान पर लगाने आदि काम करनेवाला आदमी, माली।
बाग़बानी–(फा स्त्री) बाग को सींचना, पौधे लगाना आदि काम। माली का काम या पद।
बाग़ी–(फा पु) बगावत करनेवाला, राजद्रोही।
बाग़ीचा–(फा पु) छोटा बाग, उपवन।
बाज़–(फा पु) गिद्ध की जाति का एक बड़ा पक्षी। कर, महसूल।
–(अ वि) कोई कोई, थोड़ा कुछ, कतिपय।
–(फा प्रत्य) एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर रखने, खेलने, करने या शौक़ रखनेवाले आदि का अर्थ देता है। जैसे—धोखेबाज़, कबूतरबाज़ नशेबाज़, रंडीबाज़।
–(फा वि) वंचित, रहित, विहीन। बाज़ आना = खोना, रहित होना। दूर होना, हट जाना।
बाज़गश्त–(फा स्त्री) फिरना, लौटना।
बाज़गुज़ार–(फा वि) महसूल अदा करनेवाला, कर या लगान देनेवाला।
बाज़दावा–(फा पु) अपने दावे, स्वत्व या अधिकारों से बाज़ आना।
बाज़ाब्ता–(फा क्रिवि) ज़ाब्ते के साथ, विधिपूर्वक।
–(वि) जो नियमानुसार हो।
बाज़ार–(फा पु) वह स्थान जहाँ अनेक दूकानें हों, पण्यवीथी, "मार्केट"। दूकान, पण्य, हट्ट। वह स्थान जहाँ हफ्ते में एक दिन या किसी तरह के निश्चित समय पर सब तरह की दूकानें लगती हों, हाट, पैंठ, "सनै"।
बाज़ारी, बाज़ारू–(फा वि) बाज़ार संबंधी, बाज़ार का। मामूली, साधारण, सामान्य। अशिष्ट।
बाज़ी–(फा स्त्री) किसी वस्तु या निर्धारण या ठहराव जीतने पर जिसे पा सके और हारने पर जिसे खोना

पड़े (जैसे जुए आदि में हुआ करता है), पण; "पंद्य"। आदि से अंत तक कोई ऐसा खेल जिसमें हार जीत के अनुसार कुछ लेन देन भी हो; हार-जीत का खेल; जूआ ।

वाज़ीगर–(फा. पु) जादूगर, मंत्रवादी। खिलाड़ी ।

वाज़ीगरन–(उ. स्त्री.) "वाजीगर" का स्त्री. रूप ।

वाज़ीगरी–(फा. स्त्री.) वाजीगर का काम; जादू; भोजविद्या ।

बाज–(फा. पु.) भुजा; बाँह; बाहु । बाहु पर पहनने का एक गहना; बाजूबंद । सेना का किसी ओर का एक पक्ष; पार्श्व । वह जो हर काम में साथ रहे और सहायता दे । पक्षी का डैना; पख ।

बाजूबंद–(फा. पु.) बाँह पर पहनने का एक गहना; विजायठ; अंगद ।

बातिन–(अ. पु.) अंतःकरण; हृदय ।

बाद–(अ. अव्य.) पश्चात; पीछे । अतिरिक्त; अलावा ।

–(वि.) अलग किया हुआ या छोड़ा हुआ; विच्छिन्न । दस्तूरी या कमीशन जो दाम में से काटा जाय ।

–(फा. पु.) वात; हवा ।

बादकश–(फा. पु.) बाँस या धातु की एक नली जिससे लोहार, सोनार आदि आग फूँकते हैं; धौंकनी ।

बादनुमा–(फा. पु.) वायु की दिशा सूचित करनेवाला यंत्र ।

बादबान–(फा. पु) वह लंबा चौड़ा कपड़ा जो हवा में फैलाने पर वायु के वेग के कारण नाव को ढकेले; नाव का पट; पाल ।

बादशाह–(फा. पु.) राजा; शासक; अधिराज । सबसे श्रेष्ठ पुरुष; अधिपति । इच्छानुसार काम करनेवाला; स्वतंत्र । शतरंज का एक मोहरा या ताश का एक पत्ता जो 'राजा' कहलाता है ।

बादशाहत–(फा. स्त्री.) शासन; राज्य। राजत्व ।

बादशाही–(फा. स्त्री.) राज्य; राज्य-भार । शासन; अधिकार; आधिपत्य । मनमाना व्यवहार; स्वेच्छाचार ।

–(वि.) बादशाह संबंधी; राजकीय ।

बादहवाई–(फा. क्रिवि.) यों ही; बिना कुछ उद्देश्य के ।

बादा–(फा. पु.) शराब; मदिरा ।

बादाम–(फा. पु.) एक मेवा ।

बादामी–(उ. वि.) बादाम के छिलके के रंग का; कुछ पीलापन लिये लाल। बादाम के आकार का; अंडाकार ।

—(पु) एक प्रकार की छोटी डिबिया। मछली खानेवाली छोटी चिड़िया, किलकिला। बादाम के रंग का घोड़ा।

बादिया—(फा पु) मरुभूमि।

बादियान—(फा स्त्री) जीरक की जाति का एक छोटा पौधा जिसके बीजों का औषध में तथा मसाले में भी व्यवहार करते हैं, सौंफ।

बादी—(फा वि) वायु संबंधी। वात विकार का। वात या विकार उत्पन्न करनेवाला।

—(स्त्री) वातदोष, वात प्रकोप।

बानी—(फा स्त्री) पेड़ों पर उगनेवाला एक पौधा। जड़ जमानेवाला।

—(अ पु) चलानेवाला, प्रवर्तक, सनातक।

बानू—(फा स्त्री) रानी, बेगम।

बाफ्ता—(फा पु) एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।

बाब—(अ पु) अध्याय, परिच्छेद।

बाबत—(अ स्त्री) संबंध, प्रकरण। विषय, बात।

बावरची—(फा पु) भोजन बनानेवाला, रसोइया।

बावरचीखाना—(फा पु) रसोई बनाने का स्थान या घर, रसोईघर, पाकशाला।

बाबा—(तु पु) पिता। साधु सन्यासियों के लिये आदर सूचक शब्द।

बाबूना—(फा पु) एक छोटा पौधा जिसके फूलों का तेल बनता है।

बाम—(फा पु) अटारी, अट्टालिका।

बाय—(फा वि) बेचनेवाला, विक्रेता।

बायन—(अ पु) दे "बयाना"।

बार—(फा पु) भार, बोझ।

बारगाह—(फा * पु) द्वार, फाटक। डेरा, खेमा।

बारदाना—(फा पु) व्यापार की चीजों के रखने का बरतन। सेना के खाने पीने का सामान, आहार सामग्री, रसद। बारीक साड़ी आदि के नीचे लगाकर पहनने का कपड़ा, अस्तर।

बारबरदार—(फा पु) बोझ ढोनेवाला, वाहक।

बारबरदारी—(फा स्त्री) सामान आदि ढोने का काम या मजदूरी।

बारहदरी—(उ स्त्री) चारों ओर से खुली वह हवादार बैठक जिसमें बारह द्वार हों। मंडप।

बारहा—(फा क्रिवि) बार बार, अक्सर।

बारा—(फा पु) बाबत, विषय।

बारानी—(फा वि) वर्षा संबंधी, बरसाती।

—(स्त्री) वह भूमि जिसमें केवल बरसात

के पानी से फसल उत्पन्न होती हो। पानी से बचने के लिये बरसात में ओढा जानेवाला कपडा, कंबल आदि।

वारिश–(फा. स्त्री.) वर्षा; वृष्टि। वर्षा-काल; वर्षाऋतु।

वारी–(अ. पु.) खुदा; ईश्वर।

वारीक़–(फा. वि.) महीन; पतला। बहुत ही छोटा; सूक्ष्म। जिसकी रचना में दृष्टि की सूक्ष्मता और कला की निपुणता प्रकट हो। जो अच्छी तरह सोचे विचारे बिना समझ में न आवे; गूढ।

वारीक़बीन–(फा. पु.) बारीक या सूक्ष्म बात को सोचने समझनेवाला।

वारीक़बीनी–(फा. स्त्री.) वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी समझ में आ जायं; सूक्ष्म दृष्टि।

वारीक़ी–(फा. स्त्री.) महीनपन; पतलापन; सूक्ष्मता। गूढ़ता। गुण; विशेषता।

बारूद–(तु स्त्री) गंधक, शोरे, कोयले आदि का चूर्ण जो तोप, बंदूक आदि दागने या आतिशबाजी खेलने के काम में आता है; अग्निचूर्ण। एक प्रकार का अनाज।

बारे–(फा. क्रिवि.) अंत को; आखिरकार।

बारे में–(उ. क्रिवि.) विषय में; संबंध में।

बालटी–(अं.* स्त्री.) लोहे का बरतन जिसमें उठाने के लिये एक दस्ता लगा रहता है; "बकेट"।

बाला–(फा. वि.) जो ऊपर की ओर हो; उन्नत; ऊंचा।

–बोलबाला रहना = मान मर्यादा का बना रहना।

बालाई–(फा. वि.) ऊपरी; ऊपर का। वेतन या नियत आय के अतिरिक्त।

–(स्त्री.) दूध की मलाई।

बालाख़ाना–(फा. पु.) कोठे या मकान के ऊपर का कमरा; अट्टालिका।

बालाबर–(फा. पु.) एक प्रकार का अंगरखा।

बालिग़–(अ. पु.) जो बाल्यावस्था को पार कर चुका हो; जवान; वयस्क।

बालिश–(फा. स्त्री.) रुई आदि भरा हुआ कपड़े का थैला जिसे लेटने के समय सिर के नीचे रखते हैं; तकिया।

बालिश्त–(फा. पु.) हाथ की सब उंगलियों फैलाने पर अंगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की दूरी; बित्ता।

बालूशाही–(उ. स्त्री.) (स्याही सुखाने की) बालू रखने की डिबिया।

बालूशाही–(उ. स्त्री) एक मिठाई।

बावजूद–(फा. क्रिवि.) तिस पर भी; तो भी।

बावर–(फा पु) विश्वास, यक़ीन।
बावरची–(फा पु) दे "बावरची"।
बाशिंदा–(फा पु) वास करनेवाला, निवासी।
बाहम–(फा क्रिवि) आपस में, परस्पर। उभयत।
बाहमी–(फा वि) आपस का, पारस्परिक। उभयपक्ष।
बिगुल–(अं पु) अंग्रेजी ढंग की एक प्रकार की तुरही।
बिदअत–(अ स्त्री) किसी मत में नया संप्रदाय। बुराई। जुल्म, अत्याचार।
बिदून–(अ क्रिवि) बगैर।
बियाबान–(फा पु) मरुभूमि।
बिरादर–(फा पु) भ्रातृ, भ्राता, भाई।
बिरादराना–(फा वि) भाईचारा, बांधव्य। एक ही जाति के लोगों का समूह, जातीय समाज।
बिल्टी–(अं * स्त्री) रेल के द्वारा भेजे जानेवाले माल की रसीद रेल रसीद।
बिलफेल–(अ क्रिवि) इस समय। मय।
बिला–(अ अव्य) बिना, बगैर।
बिलमुक्ता–(अ वि) जो घट बढ़ न सके।
–(पु) वह लगान जो घट बढ़ न सके।
बिल्लौर–(फा * पु) एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पारदर्शक पत्थर, स्फटिक।
बिल्लौरी–(उ वि) बिल्लौर का।
बिसमिल–(फा वि) तड़पता हुआ।
बिसमिल्लाह–(अ पु) श्रीगणेश, प्रारंभ।
बिसात–(अ स्त्री) हैसियत, पद, दरजा। पूंजी, मूलधन। सामर्थ्य। बिछाने की चीज। शतरंज आदि खेलने का कपड़ा जिस पर खाने बने होते हैं।
–(वि) अल्प।
बिसाती–(उ पु) चूड़ी, खिलौने, आइना, कंघी आदि फुटकर वस्तुओं का बेचनेवाला। लकड़ी का बना हुआ वह सहारा जिसे बगल में रखकर लंगड़े चलते हैं।
बिस्तर–(फा पु) बिछौना, बिछावन।
बिहिश्त–(फा स्त्री) स्वर्ग।
बिही–(फा स्त्री) अमरूद की जाति का एक पेड़।
बीनी–(फा स्त्री) नाक।
बीबी–(फा स्त्री) कुलीन स्त्री, कुलवधू। पत्नी, स्त्री।
बीम–(फा पु) भय, आशंका।
बीमा–(फा पु) किसी प्रकार की हानि

पहुँचने पर अथवा किसी आदमी की मृत्यु पर या कोई निर्दिष्ट उमर प्राप्त करने पर उसको या उसके वारिस को कुछ पूर्वनिश्चित रकम देने की जिम्मेदारी जो उक्त रकम का कुछ नियमित अंश पेशगी लेकर उसके बदले में ली जाती है। वह पत्र या "पार्सल" आदि जिसका इस प्रकार बीमा हुआ हो।

बीमादार–(फा. पु.) वह जिसने अपने जीवन का बीमा किया हो।

बीमापत्र–(उ. पु) बीमे की जिम्मेदारी के अंगीकार में लिखा हुआ इकरारनामा।

बीमार–(फा. वि.) रोगग्रस्त; रोगी; अस्वस्थ।

बीमारदार–(फा. वि.) रोगियों की सेवा शुश्रूषा करनेवाला।

बीमारदारी–(फा. स्त्री.) रोगियों की सेवा शुश्रूषा।

बीमारी–(फा. स्त्री.) रोग; व्याधि; अस्वस्थता। झंझट; झमेला; बखेड़ा। बुरी आदत; दुर्व्यसन।

बुक़चा–(तु. पु.) गठरी।

बुक़ची–(उ. स्त्री.) छोटी गठरी। दरज़ियों की वह थैली जिसमें वे सूई, तागा आदि रखते हैं; तिलदानी।

बुख़ार–(अ. पु.) वाष्प; भाप। ज्वर; ताप। शोक, क्रोध, दुःख आदि का आवेग।

बुज़–(फा. पु.) बकरा।

बुज़दिल–(फा. वि.) भीरु; डरपोक।

बुज़दिली–(फा. स्त्री.) भीरुता, कायरता।

बुज़ुर्ग–(फा. वि.) वृद्ध।

–(पु.) बाप-दादा; पूर्वज। गुरुजन।

बुत–(फा. पु.) मूर्त्ति; प्रतिमा। वह जिसके साथ प्रेम किया जाय; माशूक़।

बुतपरस्त–(फा. पु.) विग्रह की आराधना करनेवाला; मूर्त्तिपूजक।

बुताम–(पुर्त. पु) बुंदी; "बटन"।

बुन–(फा. स्त्री.) जड़; मूल।

बुनियाद–(फा. स्त्री.) जड़; मूल। असलियत; वास्तविकता।

बुरक़ा–(अ. पु.) मुसलमान स्त्रियों का एक ओढ़ना जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।

बुरादा–(फा. पु.) वह चूरा जो लकड़ी चीरने से निकलता है; लकड़ी का टुकड़ा।

बुर्ज–(अ. पु.) किले आदि की दीवारों में उठा हुआ गोल या पहलदार भाग जिसके बीच में बैठने या तोप आदि रखने के लिये थोड़ा सा स्थान होता है; गरगज। मीनार या गोपुर का ऊपरी भाग। गुंबद। राशि (ज्योतिष)।

बुर्द–(फा स्त्री) ऊपरी आमदनी। बाजी, होड़, पण। शतरंज के खेल में वह अवस्था जब सब मोहरे मर जाते हैं।

बुर्दबार–(फा वि) सहनशील। सौम्य।

बुलन्द–(फा वि) भारी। बहुत ऊँचा, उच्च।

बुलन्दी–(फा स्त्री) भारीपन। उच्चता।

बुलबुल–(अ स्त्री) गानेवाली एक काली चिड़िया।

बुलाक़–(तु पु) वह मोती जिसे स्त्रियाँ नथ में पहनती हैं।

बुलानी–(तु * स्त्री) घोड़की एक जाति।

बुहतान–(फा पु) दोषारोपण।

बू–(फा स्त्री) बास, गंध। दुर्गंध।

बूचड़–(अ * पु) कसाई।

बूचड़खाना–(अ पु) पशुओं की हत्या करने का स्थान।

बूता–(फा पु) मिट्टी का छोटा बरतन जिसमें सोना चाँदी गलाते हैं, घुठाली।

बे–(फा उप) अभाव सूचित करनेवाला एक उपसर्ग, बिना, रहित। जैसे—बेनाम।

बेअक़्ल–(फा वि) निर्बुद्धि, मूर्ख।

बेअक़्ली–(फा स्त्री) मूर्खता, नासमझी।

बेअदब–(फा वि) बड़ों का आदर सम्मान न करनेवाला, उद्दंड, ढीठ।

बेअदबी–(फा स्त्री) धृष्टता, ढिठाई।

बेअमल–(फा वि) अराजक, अव्यवस्थित।

बेअमली–(फा स्त्री) अव्यवस्था, अराजकता।

बेआब–(फा वि) जिसमें आब या चमक न हो, कांतिहीन। तुच्छ, अप्रतिष्ठित।

बेआबरू–(फा वि) अप्रतिष्ठित।

बेइंसाफ़–(फा वि) अन्यायी।

बेइंसाफ़ी–(फा स्त्री) अन्याय, अनीति।

बेइज़्ज़त–(फा वि) प्रतिष्ठारहित, अप्रतिष्ठित। अपमानित।

बेइज़्ज़ती–(फा स्त्री) अप्रतिष्ठा। अपमान, अनादर।

बेईमान–(फा वि) जिसे धर्माधर्म का विचार न हो, जो धर्मनिष्ठ न हो, अधर्मी। कपटी, अविश्वसनीय।

बेईमानी–(फा स्त्री) बेईमान होने का भाव। कपट, छल। अविश्वसनीयता।

बेउज्र–(फा वि) जो कोई आपत्ति न करे। विधेय।

बेक़दर–(फा वि) अप्रतिष्ठित।

बेक़द्री–(फा स्त्री) अप्रतिष्ठा।

बेक़रार–(फा वि) अधीर, व्याकुल, बेचैन।

बेक़रारी–(फा. स्त्री.) व्याकुलता; बेचैनी।
बेकल–(उ. वि.) घबराया हुआ; विकल।
बेकली–(उ. स्त्री.) घबराहट; व्याकुलता।
बेकस–(फा. वि.) निस्सहाय; निरुपाय; विवश। बेचारा; दीन। अनाथ।
बेकसी–(उ. स्त्री) निरुपायता; लाचारी। दीनता।
बेक़सूर–(फा. वि.) निर्दोष; निरपराध।
बेक़ानूनी–(फा. वि.) नियमविरुद्ध।
बेक़ाबू–(फा. वि) जिसका कुछ वश न चलता हो; विवश। जो किसी के वश में न हो; स्वतंत्र।
बेकाम–(फा. वि.) जो किसी काम का न हो; निष्प्रयोजक। जो कोई काम न करता हो; निरुद्यम; निष्कर्मा।
बेक़ायदगी–(फा. स्त्री.) अनीति।
बेक़ायदा–(फा. वि.) नियमविरुद्ध।
बेकार–(फा. वि.) जो कोई उद्योग या काम न करता हो; निरुद्योग। जिसमें कोई फल न हो; निष्फल; निरर्थक।
बेकारी–(फा. स्त्री.) काम धंधा का न होना; निरुद्योगिता। निष्फलता; निरर्थकता।
बेखटके–(उ. क्रिवि) बिना किसी प्रकार की रुकावट या आशंका के; निस्संकोच, निर्श्रम।
बेखतर–(फा. वि.) निर्भय; निडर।
बेखतरी–(फा. स्त्री.) निर्भयता।
बेख़ता–(फा. वि.) निरपराध; निर्दोष। अमोघ।
बेख़बर–(फा. वि.) अपरिचित; अनभिज्ञ। अचेत; संज्ञाहीन।
बेख़बरी–(फा. स्त्री.) अनभिज्ञता। अज्ञानता; अचेतनता; मूर्छा।
बेख़ौफ़–(फा. वि.) निर्भय; निर्भीक।
बेख़ौफ़ी–(फा. स्त्री.) निर्भयता; निर्भीकता।
बेगम–(तु. स्त्री) रानी; राज-पत्नी। ताश का एक पत्ता जो "रानी" कहलाता है।
बेग़रज़–(फा. वि.) जिसे कोई ग़रज या परवा न हो; निरपेक्ष।
बेग़रज़ी–(फा. स्त्री.) निरपेक्षता। निरुद्देश्यता।
बेगानगी–(फा. स्त्री.) अन्यत्व; परायापन।
बेगाना–(फा. वि.) अन्य; पराया; ग़ैर। अनजान; अपरिचित।
बेगार–(फा. स्त्री.) बिना मजदूरी का जबरदस्ती लिया हुआ काम। वह काम जो चित्त लगाकर न किया जाय।
बेगारी–(फा. पु.) बलात्कार के कारण

और बिना मजदूरी के काम करने वाला। चित्त लगाकर न काम करने वाला।

बेगुनाह–(फा वि) निरपराध।

बेचारगी–(फा स्त्री) दीनता, असहायता।

बेचारा–(फा वि) दीन और निस्सहाय, असहाय।

बेचिराग–(फा वि) उजड़ा हुआ।

बेचैन–(फा वि) जिसे चैन न पड़ता हो, अशांत, व्याकुल।

बेचैनी–(फा स्त्री) अशांति, व्याकुलता, घबराहट।

बेजबान–(फा वि) गूंगा, मूक। दीन।

बेजा–(फा वि) जो अपने उचित स्थान पर न हो, स्थानभ्रष्ट। असमय। अनुचित अनुपयुक्त। खराब, बुरा।

बेजान–(फा वि) जीव रहित, निर्जीव, मृतक। जिसमें कुछ भी दम या सत्ता न हो। मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ। निबल, कमजोर।

बेजाब्ता–(फा वि) क़ानून के विरुद्ध, नियम विरुद्ध।

बेज़ार–(फा वि) व्यथित, खिन्न।

बेजोड़–(उ वि) जिसमें जोड़ न हो, अखंड। अनुपम, अद्वितीय। असबद्ध, असंगत।

बेठिकाने–(उ वि) जो अपने उचित स्थान पर न हो, स्थानच्युत। असबद्ध, अंडबंड। व्यर्थ, निरर्थक।

बेठीक–(उ वि) अनुचित, अयुक्त।

बेडौल–(उ वि) जिसका डौल या रूप अच्छा न हो, भद्दा। जिसका ढंग या प्रकार ठीक न हो।

बेढंगा–(उ वि) जिसका ढंग ठीक न हो। जो ठीक तरह से रखा या सजाया न गया हो, जो क्रमानुसार न हो। भद्दा, कुरूप, विकृत।

बेढब–(उ वि) जिसका ढब या ढंग अच्छा न हो। भद्दा, कुरूप।
–(क्रिवि) बुरी तरह से।

बेतकल्लुफ–(फा वि) जिसे तकल्लुफ या शिष्टाचार की कोई परवा न हो। जो अपने हृदय की बात साफ़ साफ़ कह दे, स्पष्टवक्ता। निर्व्याज, सरल।
–(क्रिवि) बिना किसी प्रकार के तकल्लुफ या शिष्टाचार के। निस्संकोच।

बेतकल्लुफी–(फा स्त्री) बेतकल्लुफ होने का भाव। सरलता, सादगी।

बेतकसीर–(फा वि) निरपराध।

बेतमीज–(फा वि) जिसे तमीज या विवेचना शक्ति न हो, अविवेकी।

बेतमीजी–(फा स्त्री) अविवेकता।

बेतरतीब–(फा. वि.) क्रमविरुद्ध; अक्रम।

बेतरह–(फा. क्रिवि.) बुरी तरह से; अनुचित रूप से।

–(वि.) बहुत अधिक; अत्यधिक।

बेतरीक़ा–(फा. वि.) नियमविरुद्ध; अनुचित।

बेतहाशा–(फा. क्रिवि.) बहुत अधिक तेजी या फुरती से; बिना रुके हुए; दौड़ादौड़। बहुत घबराकर; व्याकुलता से। बिना सोचे समझे।

बेताब–(फा. वि.) दुर्बल; अशक्त। व्याकुल; घबराया हुआ।

बेताबी–(फा. स्त्री.) दुर्बलता; कमजोरी। घबराहट; व्याकुलता।

बेतार–(उ. वि.) बिना तार या तंतु का। बेतार का तार = विद्युत् की सहायता से भेजा हुआ वह समाचार जो साधारण तार की सहायता के बिना ही भेजा गया हो।

बेतुका–(उ. वि.) जसमें सामंजस्य या मेल न हो; असंबद्ध। जो अच्छा या ठीक न हो।

बेतौर–(फा. क्रिवि.) बेतरह।

बेदख़ल–(फा. वि) जिसका दखल या अधिकार न हो; अधिकारच्युत। अधिकार खोया हुआ।

बेदख़ली–(फा. स्त्री.) सपत्ति पर से दखल या हटाया जाना; अधिकार में न रहने देना; स्वत्वापहरण।

बेदम–(फा. वि.) निर्जीव; मृतक। मृतप्राय; अधमरा। अशक्त; शिथिल।

बेदमजनूं–(फा. पु.) एक वनस्पति।

बेदमुश्क–(फा. पु.) एक वृक्ष।

बेदर्द–(फा. वि.) जिसे सहानुभूति न हो; निर्दय; क्रूर।

बेदर्दी–(फा. स्त्री.) सहानुभूति का अभाव; निर्दयता; क्रूरता।

बेदाग़–(फा. वि.) जिसमें कोई दाग या धब्बा न हो; निर्मल। निर्दोष; शुद्ध। निरपराध।

बेदिली–(फा. स्त्री.) अप्रसन्नता।

बेधड़क–(उ. क्रिवि.) निस्संकोच। निर्भयता से; निडर होकर। बिना आगा पीछा किये; बिना पसोपेश के।

–(वि.) जिसे किसी प्रकार का संकोच या खटका न हो। निर्भय; निडर।

बेनज़ीर–(फा. वि) अनुपम, अद्वितीय।

बेनसीब–(फा. वि) भाग्यहीन, अभागा।

बेनसीबी–(फा. स्त्री.) भाग्यहीनता।

बेपरदगी–(फा. स्त्री.) परदा या आवरण का अभाव। नग्नता।

बेपरदा–(फा. वि.) जिसके आगे कोई ओट न हो; अनावृत। नंगा; नग्न।

बेपरवा, बेपरवाह-(फा वि) जिसे कोई परवा न हो, निश्चिंत। मन की मौज या तरंग के अनुसार काम करने वाला, मनमौजी, स्वेच्छाचारी। उदार, "धाराल"।

बेपीर-(उ वि) दूसरों के कष्ट को कुछ न समझनेवाला, क्रूर, निर्दय।

बेपेंदी-(उ वि) जिसमें पेंदी या आधार न हो, निराधार।

बेपेंदी का लोटा=किसी के कहने से कहने पर अपना विचार बदलनेवाला आदमी।

बेफायदा-(फा वि) व्यर्थ, निरर्थक।

बेफिकरा, बेफिक्र-(फा वि) निश्चिंत; स्वस्थचित्त, शांत।

बेफिक्री-(फा स्त्री) निश्चिंतता।

बेबस-(उ वि) जिसका कुछ वश न न चले, विवश, लाचार। पराधीन, परवश।

बेबसी-(उ स्त्री) विवशता, लाचारी। पराधीनता, परतंत्रता।

बेबाक-(फा वि) चुकता किया हुआ, निःशेष, अदा।

बेबाकी-(फा स्त्री) मूल्य या देन चुकाना, अदायगी, भुगतान।

बेबुनियाद-(फा वि) निर्मूल, निराधार।

बेभाव-(उ वि) जिसकी कोई गिनती न हो, अपार, अपरिमित।

बेमक-(फा वि) सीधासादा, निष्कपट।

बेमजा-(फा वि) जिसमें कोई आनंद न हो, निरानंद।

बेमन-(फा क्रिवि) बिना मन लगाये।

बेमरम्मत-(फा वि) बिना सुधरा, टूटा फूटा, जीर्ण।

बेमसरफ-(फा वि) अनुपयोगी, निष्प्रयोजन, निरर्थक।

बेमालूम-(फा क्रिवि) बिना किसी को पता लगे, चुपके से, चुपचाप। -(वि) जो मालूम न पड़ता हो, अज्ञात।

बेमिलावट-(उ वि) जिसमें मिलावट न हो, विशुद्ध।

बेमुनासिब-(फा वि) अनुचित, अयुक्त।

बेमुनासिबत-(फा स्त्री) अनौचित्य, अयुक्तता।

बेमुरव्वत-(फा वि) शील संकोच रहित, "निर्मुरव्वत"।

बेमुरव्वती-(फा स्त्री) शील संकोच का अभाव, 'निर्मुरव्वत'।

बेमेल-(उ वि) असंबद्ध, बेमेल, फूट। जो मिलनेवाला न हो परस्पर विरुद्ध,

असंबद्ध। जिसका मेल या टक्कर न हो; अनुपम; अद्वितीय।

बेमौक़ा–(फा. वि) जो अपने उपयुक्त अवसर पर न हो; अनवसर; अनामयिक।

बेमौसिम–(फा. वि.) उपयुक्त मौसिम या ऋतु के बाहर का; अकालिक।

बेरस–(उ. वि.) रसहीन; नीरस। जिसमें रुचि या स्वाद न हो; अरुचिकर।

बेरहम–(फा. वि.) निर्दय; निठुर; क्रूर।

बेरहमी–(फा. स्त्री.) निर्दयता; क्रूरता।

बेरुख़–(फा. वि.) जो रुख़ फेर ले; पराङ्मुख। नाराज़, क्रुद्ध।

बेरुख़ी–(फा. स्त्री.) विमुखता, कृपाशून्यता। क्रुद्धता; नाराज़गी।

बेरोक, बेरोकटोक–(उ. क्रिवि.) बिना किसी रोक या प्रतिबंध के, निर्विघ्न।

बेरोज़गार–(फा. वि.) बिना काम धंधे का; वृत्तिरहित।

बेरौनक़–(फा. वि.) कांतिहीन; निस्तेज। उदास।

बेल–(फा. पु.) मिट्टी खोदने का एक औज़ार; छोटी कुदाली। सड़क आदि बनाने में सीमा निर्धारित करने के लिये चूने आदि से जमीन पर डाली हुई रेखा।

बेलचा–(फा. पु.) मिट्टी खोदने का एक औजार; कुदाल।

बेलज़्ज़त–(फा. वि.) रुचिरहित; स्वादहीन। सुखरहित।

बेलदार–(फा. पु.) मिट्टी खोदने या जमीन गोड़ने आदि काम करनेवाला मज़दूर; फावड़े का काम करनेवाला।

बेलदारी–(फा. स्त्री) बेलदार का काम; मिट्टी खोदने का काम।

बेलबूटेदार–(उ. वि.) जिस पर बेल बूटे, फूल-पत्तियाँ आदि नक्काशी का काम किया गया हो।

बेलाग–(उ. वि) बिलकुल अलग; भिन्न। साफ़; खरा; विशुद्ध।

बेलुत्फ़–(फा. वि.) नीरस; फीका।

बेलुत्फ़ी–(फा. स्त्री.) नीरसता; फीकापन।

बेलौस–(फा. वि.) सच्चा; खरा; शुद्ध।

बेवकूफ़–(फा. वि.) अविवेकी; मूर्ख; नासमझ।

बेवकूफ़ी–(फा. स्त्री.) अविवेकता; मूर्खता।

बेवक़्त–(फा. क्रिवि.) कुसमय में; असमय में।

बेवतन–(फा. वि.) बिना घर द्वार का।

बेवफ़ा–(फा. वि.) जो कर्तव्य का पालन न करे; कर्तव्यभ्रष्ट। विश्वासघातक; द्रोही। दुश्शील।

बेवा–(फा. स्त्री.) विधवा; रांड।

बेवापन–(उ. पु.) वैधव्य।

बेशऊर–(फा वि) निर्बुद्धि, मूर्ख।
बेशऊरी–(फा स्त्री) मूर्खता।
बेश–(फा वि) बहु, अधिक।
बेशक–(फा क्रिवि) निस्संदेह, अवश्य, सचमुच।
बेशकीमत, बेशकीमती, बेशबहा–(फा वि) जिसकी कीमत अधिक हो, बहुमूल्य।
बेशर्म–(फा वि) निर्लज्ज।
बेशर्मी–(फा स्त्री) निर्लज्जता।
बेशी–(फा स्त्री) अधिकता, बहुतायत।
बेशुमार–(फा वि) अगणित, असंख्य।
बेसबब–(फा क्रिवि) अकारण, निष्कारण।
बेसब्रा–(फा वि) जिसे सब्र या सहिष्णुता न हो, अधीर।
बेसमझ–(उ वि) नासमझ, मूर्ख।
बेसमझी–(उ स्त्री) मूर्खता।
बेसरा–(फा वि) जिसे ठहरने का स्थान न हो, आश्रयहीन।
बेसरोसामान–(फा वि) जिसके पास कुछ सामग्री या पदार्थ न हो, दरिद्र, कंगाल।
बेसाख्ता–(फा क्रिवि) आपसे आप, स्वयं।
बेसिलसिलापन–(उ पु) असंगति, अस्तव्यस्तता।
बेसिलसिले–(फा वि) असंगत, असम्बद्ध।
बेसुध–(उ वि) अनजान, अनभिज्ञ। संज्ञाहीन, अचेत, मूर्छित।
बेसुर, बेसुरा–(उ वि) अस्वर का। असमय का, अकालिक।
बेस्वाद–(उ वि) स्वादहीन, अरुचिकर।
बेह–(फा वि) अच्छा।
बेहतर–(फा वि) किसी से बढ़कर, अपेक्षाकृत अच्छा, उत्तम।
–(अव्य) स्वीकृति सूचक शब्द। अच्छा।
बेहतरी–(फा स्त्री) बेहतर होने का भाव, अच्छापन, उत्तमता।
बेहतरीन–(फा वि) सबसे अच्छा, सर्वोत्तम।
बेहद–(फा वि) असीम, अपार, अपरिमित। अत्यधिक, बहुत ज्यादा।
बेहबूद, बेहबूदी–(फा स्त्री) भलाई, हित।
बेहया–(फा वि) जिसे हया या लज्जा बिलकुल न हो, निर्लज्ज।
बेहयाई–(फा स्त्री) निर्लज्जता।
बेहाल–(फा वि) व्याकुल, घबराया हुआ, बेचैन।
बेहाली–(फा स्त्री) घबराहट, व्याकुलता।

बेहिसाब–(फा. वि.) अगणित। अत्यधिक।

बेहुनरा–(फा. वि.) जिसे कोई हुनर या कला न आती हो; अकुशल; अनाड़ी।

बेहुरमत–(फा. वि.) अप्रतिष्ठित; मर्यादारहित।

बेहूदगी–(फा. स्त्री.) असभ्यता; अशिष्टता।

बेहूदा–(फा. वि.) असभ्य; अशिष्ट। अशिष्टतापूर्ण।

बेहूदापन–(उ. पु.) अशिष्टता; असभ्यता।

बेहैफ़–(फा. वि.) निश्चित।

बेहोश–(फा. वि.) संज्ञाहीन; अचेत; मूर्छित।

बेहोशी–(फा. स्त्री.) अचेतनता; संज्ञाहीनता; मूर्छा।

बै–(अ. स्त्री.) विक्रय; बिक्री।

बैज़ा–(अ. पु.) अंडकोष; वृषण। अंडा।

बैत–(अ. स्त्री.) पद्य; श्लोक।

बैरंग–(अं.* वि.) बिना टिकट या "स्टांप" की वह चिट्ठी आदि जिसका डाक महसूल पानेवाले से वसूल किया जाय; "नॉट पेड"।

बैरख–(तु. पु.) झंडा; ध्वजा।

बोज़ा–(फा. स्त्री.) चावल से बना हुआ मद्य।

बोतल–(अं.* स्त्री.) काँच या शीशे का एक लंबोतरा बरतन; "बाटल्"।

बोरिया–(फा. स्त्री.) चटाई। बिस्तर।

बोसा–(फा. पु.) चुंबन।

म

मंज़िल–(अ. स्त्री.) यात्रा में ठहरने का स्थान; पड़ाव; शिविर। मकान का खंड; महडी। नक्षत्र; तारामंडल।

मंज़ूर–(अ. वि.) जो मान लिया गया हो; स्वीकृत; अंगीकृत।

मंज़ूरी–(उ. स्त्री.) स्वीकृति; अनुमति।

मअश–(अ. स्त्री.) वृत्ति; जीविका।

मआनी–(अ. पु.) तात्पर्य, अर्थ।

मक़तब–(अ. पु.) पाठशाला; विद्यालय।

मक़तूल–(अ. वि.) क़त्ल किया हुआ; मारा हुआ।

मक़दूर–(अ. पु.) सामर्थ्य; शक्ति। वश; अधिकार। गुंजाइश, अवकाश।

मक़दूर भर = भरसक, यथाशक्ति।

मक़नातीस-(यू पु) चुम्बक पत्थर, लोहचुम्बक।

मक़फूल-(अ वि) बंधक या गिरवी रखा हुआ।

मक़बरा-(अ पु) वह इमारत या भवन जिसमें किसी की लाश गाड़ी गई हो, समाधि।

मक़बूज़ा-(अ वि) क़ब्ज़े या अधिकार में आया हुआ, अधिकृत, उपलब्ध।

मक़बूला-(अ वि) कबूल या अंगीकार किया हुआ, स्वीकृत।

मकर-(अ. पु) छल कपट, धोखा। नखरा, हाव भाव।

मक़रूज़-(अ वि) कर्ज़दार, ऋणी।

मकरूह-(फा वि) नापाक, अपवित्र। घृणित, नीच।

मक़सद-(अ पु) मनोरथ, इष्टार्थ।

मक़सूद-(अ वि) इच्छित, अभिकथित, वांछित। लक्ष्य, उद्देश्य।

मक़सूम-(अ पु) भाग्य, विधि। भाज्य। (गणित)

मकान-(फा पु) गृह, घर, भवन। निवासस्थान, वास।

मक़ूला-(अ पु) कहावत, लोकोक्ति।

मक्का-(अ पु) अरब देश का एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थस्थान है।

मक्कार-(अ वि) कपटी, छली।

मक्कारी-(अ स्त्री) कपट व्यवहार, धोखेबाज़ी।

मख़ज़न-(अ पु) धान्य आदि रखने का स्थान, खत्ता, भंडार।

मख़दूम-(अ पु) स्वामि, मालिक। पूज्य व्यक्ति।

मख़मल-(अ स्त्री) एक प्रकार का बहुत बढ़िया रेशमी कपड़ा।

मख़मली-(अ वि) मख़मल का बना हुआ। मख़मल की तरह का।

मख़रज-(अ पु) उत्पत्ति स्थान, उद्भव स्थान, निकास।

मख़लूक़-(अ पु) प्राणी, जीव। सृष्टि। जड़, चराचर।

मख़लूत-(अ वि) मिलावट का, मिश्रित।

मग़ज़-(अ पु) मस्तिष्क, दिमाग़, भेजा। बीज के अंदर का गूदा, मींगी, गिरी।

मग़ज़पच्ची-(उ स्त्री) बहुत देर तक सोच विचार करना, बुद्धि का खर्च करके खूब विचार करना।

मग़ज़ी-(अ वि) मग़ज़ संबंधी।

मगर–(फा. अव्य.) लेकिन; परंतु ।

मग़रिब–(अ. पु.) पश्चिम; प्रतीची ।

मग़रिबी–(अ. वि.) पश्चिमी; पाश्चात्य।

मग़रूर–(अ. वि.) गर्वी, घमंडी ।

मग़रूरी–(अ. स्त्री.) गर्वीलापन; घमंड; अभिमान ।

मगलूब–(फा. वि.) विजित; पराजित ।

मज़कूर–(अ. वि.) जिक्र किया हुआ; उल्लिखित, उक्त ।

मज़दूर–(फा. पु.) बोझ ढोनेवाला; मोटिया; कुली। कल-कारखानों में काम करनेवाला आदमी; श्रमजीवी।

मज़दूरनी, मज़दूरिन–(उ. स्त्री.) "मज़दूर" का स्त्री० रूप ।

मज़दूरी–(फा. स्त्री.) मजदूर या कुली का काम । बोझ ढोने या और कोई छोटा मोटा काम करने के लिये दिया जानेवाला धन या पुरस्कार; काम करने का वेतन । किसी भी प्रकार के परिश्रम के बदले में मिला हुआ धन; पारिश्रमिक; श्रमदक्षिणा ।

मजनूं–(अ. पु.) पागल; उन्मत्त । अरब देश का कैस नामक एक प्रसिद्ध प्रेमी जो लैला नाम की एक कन्या पर आसक्त होकर उसके लिये पागल हो गया था । आशिक; प्रेमी; प्रेमासक्त । बेदमजनूं नामक एक वनस्पति ।

मज़बूत–(अ. वि.) दृढ; पुष्ट । पक्का; टिकाऊ । बलवान; बलिष्ठ ।

मज़बूती–(उ. स्त्री.) दृढता; पुष्टि । बलिष्टता; सबलता ।

मजबूर–(अ. वि.) बद्ध; विवश, लाचार ।

मजबूरन–(अ. क्रिवि.) विवशता के कारण; लाचारी से ।

मजबूरी–(फा. स्त्री.) असमर्थता; विवशता; लाचारी ।

मजमा–(अ. पु.) बहुत से लोगों का जमाव; जमघट; भीड़ ।

मजमुआ–(अ. वि.) इकट्ठा किया हुआ, एकत्रित; संगृहीत ।

मज़मून–(अ. पु.) विषय जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय । लेख; प्रबंध; निबंध ।

मजरिया–(फा. वि.) जो जारी हो; प्रचलित ।

मजरूआ–(फा. वि.) जोता और बोया हुआ ।

मज़रूब–(अ. वि.) गुण्य । (गणित)

मजरूह–(फा. वि.) घायल ।

मजलिस–(अ. स्त्री.) सभा; समाज; सदस्। नाच रंग का स्थान; नटन सभा; "कचेरी" ।

मजलिसी–(अ. वि.) निमंत्रित व्यक्ति;

समासद। मजलिस के योग्य, सभ्य। सब को प्रफुल्लित करनेवाला।

मजलूम–(अ वि) अत्याचार पीड़ित, सताया हुआ।

मजहब–(अ पु) धार्मिक सम्प्रदाय, मत, पथ।

मजहबी–(अ वि) किसी धार्मिक मत से सबध रखनेवाला, मत सबधी।

मजा–(फा पु) स्वाद, रुचि। आनद, सुख। दिल्लगी, हसी, परिहास।

मजा चखाना = किये का प्रतिफल देना, अपराध का दड देना।

मजाक–(अ पु) हसी, परिहास। रुचि।

मजाकन्, मजाकिया–(फा क्रिवि) परिहास के लिये, हसी दिल्लगी के तौर पर।

मजाज–(अ पु) अधिकार, स्वत्व, प्रभुत्व। लक्षणा।

मजाजी–(अ वि) कल्पित; आरोपित।

मजार–(अ पु) वह भवन जिसमें किसी का मृत शरीर गाड़ा गया हो, समाधि, मकबरा। शव को जमीन में गाड़ने का स्थान, कब्र।

मजाल–(अ स्त्री) सामर्थ्य, शक्ति।

मजाहिब–(अ वि) मतावलबी।

मतीद–(अ वि) प्रतिष्ठित, गण्यमान्य, श्रेष्ठ।

मतीद–(अ पु) अभिवृद्धि; उन्नति।

मजूस–(अ पु) अग्निपूजक, पारसी।

मजेदार–(फा वि) स्वादिष्ट, रुचिर। अच्छा, बढ़िया। जिसमें आनद आता हो; आनददायक, सुखद। विनोदात्मक, हास्यकर।

मजेदारी–(फा स्त्री) स्वादिष्टता, स्वाद। आनद, हर्ष। हास्य, विनोद।

मटरगश्त–(उ पु) टहलना, विचरण, विहार। घूमना फिरना, दौड़धूप।

मतलब–(अ पु) तात्पर्य, अभिप्राय, आशय। अर्थ, मानी। अपना हित, स्वार्थ। उद्देश्य विचार, इरादा। सबध, वास्ता।

मतलबी–(अ वि) स्वार्थी; स्वार्थ परायण।

मतलूब–(अ पु) तात्पर्य, आशय।

मतहम्मिल–(अ वि) सहनशील।

मद–(अ स्त्री) विभाग, कार्यालय का विभाग, महकमा। खाता, बाबत।

मदखला–(अ स्त्री) वह जिसमें कोई चीज प्रविष्ट की जाय। भगद्वार, योनि। वह स्त्री जिसे कोई बिना विवाह किये ही रख ले, रखेली।

मदद–(अ स्त्री) सहायता; सहारा। मकान आदि बनाने के काम में नियुक्त राज, मजदूर आदि।

मददगार–(फा. वि.) मदद करनेवाला; सहायक।

मदरसा–(अ. पु.) पाठशाला।

मदाख़िलत–(अ. स्त्री.) अटचन; हस्तक्षेप। अधिकार; स्वाधीन; कब्जा।

मदारिया–(अ. पु.) एक प्रकार के मुसलमान फ़कीर जो बंदर, भालू आदि नचाते और तमाशे आदि दिखाते हैं; कलंदर।

मदारी–(अ. पु.) बाजीगर; मंत्रवादि।

मदे–(उ. क्रिवि.) मद में।

मनकूला–(अ. वि.) जंगम; चर। ग़ैर-मनकूला = स्थावर; स्थिर।

मनकूहा–(अ. वि.) जिसके साथ निकाह हुआ हो; धर्मपत्नी।

मनमौज–(उ. स्त्री.) मनमाना काम करने की प्रवृत्ति; निरंकुशता; स्वेच्छाचार।

मनमौजी–(उ. वि.) मन की मौज या उमंग के अनुसार काम करनेवाला; मनस्वी; स्वेच्छाचारी।

मनशा–(अ. स्त्री.) इच्छा; कामना; चाह। विचार; संकल्प; इरादा। आशय; अभिप्राय; तात्पर्य।

मनसब–(अ. पु.) पद; पदवी; स्थान। काम; कर्म; कर्तव्य। अधिकार।

मनसबदार–(फा. वि.) वह जो किसी मनसब पर हो; ओहदेदार; पदाधिकारी।

मनसूबा–(अ. पु.) युक्ति; ढंग। इरादा; विचार; संकल्प।

मनहूस–(अ. वि.) अशुभ; अमंगल। निस्तेज; कांतिहीन। आलसी; सुस्त।

मनहूसी–(अ. स्त्री.) अकल्याण; अशुभ। मलिनता; कांतिहीनता। आलस्य। रोने धोने की वृत्ति; रोदन।

मना–(अ. वि.) निषिद्ध; वर्जित। वारण किया हुआ; निवारित। अनुचित; अनर्ह; अयुक्त।

मनाही–(अ. स्त्री.) न करने की आज्ञा; निषेध; निरोध।

मनी–(अ. स्त्री.) वीर्य; रेतस्। अहम्मति; अहंकार।

मफ़ूल–(अ. वि.) किया हुआ।

ममीरा–(अ. पु.) एक मूलिका जो आँख के रोगों की अपूर्व औषधि है।

मय–(अ. क्रिवि.) साथ; सहित। –(फा. स्त्री.) शराब।

मयख़ाना–(फा. पु.) शराब बेचने का स्थान।

मयस्सर–(अ. वि.) मिला हुआ; प्राप्त; लब्ध। सहज में मिलनेवाला; सुलभ; लभ्य।

मय्यत–(अ स्त्री) लाश, शव।
मरकज–(अ पु) वृत्त के ठीक मध्य का बिंदु, केंद्र। चक्र का मध्य भाग, नाभि। बीच का स्थान, मध्य प्रदेश। मुख्य या प्रधान स्थान, केंद्रस्थान।
मरगोल, मरगोला–(अ पु) गिट किरी, स्वर कंपन। (संगीत)
मरगूब–(अ वि) पसंद। शोभायमान, सुंदर।
मरज–(अ पु) रोग, बीमारी। बुरी आदत, दुर्व्यसन।
मरदूद–(अ वि) तिरस्कृत, घृणित। नीच।
मरमर–(यू पु) एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर, श्वेतशिला।
मरम्मत–(अ स्त्री) किसी वस्तु के टूटे फूटे अंगों को ठीक करना, फटी पुरानी वस्तुओं का फिर से सुधार, जीर्णोद्धार।
मरसिया–(अ पु) शोकसूचक कविता जो किसी की मृत्यु पर रची जाती है। मृत्युशोक, रोना पीटना।
मरहम–(अ पु) औषधियों का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव भरने के लिये लगाया जाता है, लेप।
मरहला–(अ पु) वह स्थान जहाँ से यात्रियों का कूच शुरू होता है। मकान का खंड, मंजिल। दरजा, श्रेणी।
मरहून–(अ वि) जो रेहन या बंधक रखा गया हो।
मरहूम–(अ वि) स्वर्गीय, दिवंगत, मृत।
मरातिब–(अ पु) दरजा श्रेणी। उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थायें। मकान का खंड, "महड़ी"। ध्वजा, झंडा, पताका।
मरियम–(अ स्त्री) कुमारी, कन्या। ईसामसीह की माता का नाम।
मरीज–(अ वि) रोगी, बीमार।
मर्ग–(फा पु) मृत्यु।
मर्जी–(अ स्त्री) इच्छा, कामना, चाह। प्रसन्नता, खुशी। आज्ञा, अनुमति।
मर्तबा–(अ पु) पद, पदवी, ओहदा। बार, दफा।
मर्द–(फा पु) मनुष्य, आदमी। साहसी पुरुष, बहादुर पराक्रमी। वीर, योद्धा। पुरुष, नर। पति, भर्ता।
मर्दानगी–(फा स्त्री) पुरुषत्व, पौरुष।
मर्दाना–(फा वि) पुरुष संबंधी, पौरुषेय। पुरुष का। मनुष्योचित। वीरोचित। साहसी पुरुष का सा।
मर्दुम–(फा पु) मनुष्य। पुरुष।
मर्दुमशुमारी–(फा स्त्री) किसी देश

में रहनेवाले मनुष्यों की गणना; जन-गणना। जनसंख्या; आबादी।

मर्दुमी–(फा. स्त्री.) मनुष्यत्व। पुरुषत्व; पौरुष।

मलंग–(फा. पु.) मुसलमान साधु।

मलका–(अ. स्त्री.) दे. "मलिका"।

मलामत–(अ. स्त्री.) दुतकार; धिक्कार; फिटकार। निकृष्ट या खराब अंश; गंदगी; गलीज।

मलामती–(अ. वि.) दुतकारने या फिटकारने योग्य। निकृष्ट; घृणित।

मलाल–(अ. पु.) दुख; शोक। उदासीनता।

मलिक–(अ. पु.) राजा। अधीश्वर; अधिपति।

मलिका–(अ. स्त्री.) रानी; पटरानी। अधीश्वरी।

मलीदा–(फा. पु.) रोटी या पूरी को चूर चूर करके घी, चीनी आदि मिलाया हुआ एक खाद्य पदार्थ; चूरमा। एक प्रकार का मुलायम ऊनी वस्त्र।

मलूल–(अ. वि.) दुखित; खिन्न।

मलोला–(अ. पु.) मानसिक व्यथा या दुख। प्रबल इच्छा; लालसा।

मल्लाह–(अ. पु.) एक अंत्यज जाति जो नाव चलाकर और मछलियां मार कर अपना निर्वाह करती है; केवट; धीवर।

मल्लाहिन–(उ. स्त्री.) "मल्लाह" का स्त्री० रूप।

मवाजिब–(अ. पु.) नियमित मात्रा या परिमाण में नियमित समय पर मिलनेवाली वस्तु, जैसे वेतन आदि।

मवाज़ी–(अ. वि.) अंदाज़ किया हुआ; अनुमानित।

मवाद–(अ. पु.) फोड़े या घाव के भीतर से निकलनेवाला सफेद लसदार पदार्थ; पीब; पूय।

मवेशी–(अ.* पु.) गाय, बैल, भैंस आदि पशु; ढोर; चौपाया।

मवेशीख़ाना–(फा. पु.) वह बाड़ा जिसमें मवेशी या चौपाये रखे जाते हैं; पशुशाला।

मशक़्क़त–(अ. स्त्री.) परिश्रम; मेहनत।

मशगूल–(अ. वि.) काम में लगा हुआ; दत्तचित्त; तन्मय।

मशरू–(अ. पु.) एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

मशविरा–(अ. पु.) परामर्श; मंत्रणा; सलाह।

मशहूर–(अ. वि.) विख्यात; प्रसिद्ध।

मशाल–(अ. पु.) डंडे में लगी हुई एक प्रकार की बहुत मोटी बत्ती; बड़ी दस्ती; उल्का।

मशालचिन–(उ स्त्री) "मशालची" का स्त्री० रूप।

मशालची–(फा पु) मशाल हाथ में लेकर दिखानेवाला नौकर।

मशीखत–(अ स्त्री) धन संबंधी अपने ज्ञान और श्रेष्ठता का गर्व, आत्माभिमान।

मश्क–(फा स्त्री) चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर ले जाते हैं।

मश्क–(अ पु) अभ्यास, अनुशीलन। आदत।

मश्शाक–(अ वि) जिसने अभ्यास किया हो, अभ्यस्त, दक्ष।

मश्शाता–(अ स्त्री) जेवर, कपड़ा आदि पहनाने या चोटी कंघी करनेवाली बाँदी।

मसक्ला–(अ पु) एक औजार जिसे किसी वस्तु पर रगड़ने से उसके मलीन कण छूटकर गिरते हैं, रेती। हथियारों को मांजने और उन पर सान धरने की क्रिया, सिकली।

मसका–(फा पु) मक्खन, नवनीत। दही का पानी। चूना।

मसखरा–(अ पु) बहुत हँसी मजाक करनेवाला, हँसोड़, विदूषक, विकटकवि।

मसखरापन–(उ पु) हँसी ठट्ठा, दिल्लगी, परिहास।

मसखरी–(फा स्त्री) हँसी, परिहास।

मसजिद–(अ स्त्री) मुसल्मानों के नमाज पढ़ने का स्थान, मुसलमानों का देवालय।

मसदर–(अ पु) शब्दों का धातु। क्रियाओं का भावार्थ रूप।

मसनद–(अ स्त्री) बड़ा तकिया। राजा, रईस आदि के बैठने की गद्दी, पट्ट।

मसनद नशीन–(फा वि) मसनद पर बैठनेवाला।

मसनूई–(अ वि) कृत्रिम, कृतक।

मसरफ–(अ पु) काम में आना, उपयोग, व्यवहार।

मसरूका–(अ वि) चुराया हुआ।

मसरूफ–(अ वि) काम करता हुआ।

मसल–(अ वि) कहावत, लोकोक्ति।

मसलन्–(अ क्रिवि) उदाहरणार्थ, यथा, जैसे।

मस्लहत–(अ स्त्री) समयोचित काम या युक्ति।

मसला–(अ पु) विचारणीय विषय, समस्या।

मसविदा–(अ पु) काट छाँट करने और साफ करने के उद्देश्य से पहले बार लिखा हुआ लेख, पांडुलिपि। उपाय, युक्ति।

मसविदाबाज़–(फा. पु.) अच्छी युक्ति सोचनेवाला। चालाक।

मसाना–(अ. पु.) पेट की वह थैली जिसमें मूत्र संचित रहता है; मूत्राशय।

मसायल–(अ. पु.) "मसला" का ब. रूप; समस्यायें।

मसाला–(फा. पु.) वे चीजें जिनकी सहायता से कोई चीज तैयार होती हो; सामग्री। औषधियों अथवा रासायनिक द्रव्यों का योग या समूह। मिर्च, धनिया, तज, दालचीनी आदि जो तरकारी आदि में पड़ते हैं; सुगंध-द्रव्य; "संभार" द्रव्य। साधन; उपकरण। तेल। आतशबाजी।

मसालेदार–(फा. वि.) जिसमें किसी प्रकार का मसाला हो।

मसीह–(अ. पु.) ईसाइयों के धर्मगुरु हज़रत ईसा।

मसीही–(उ. वि.) मसीह संबंधी।

मसौदा–(अ. पु.) दे. "मसविदा"।

मस्त–(फा. वि.) जो नशे आदि के कारण मत्त हो; मतवाला; मत्त। सदा प्रसन्न और निश्चिंत रहनेवाला; उल्लासक। यौवन मद से भरा हुआ। जिसमें मद या नशा हो; मादक; मदपूर्ण। अत्यानंदित।

मस्तगी–(अ. स्त्री.) एक प्रकार का बढ़िया गोंद।

मस्ताना–(फा. वि.) मस्तों का सा; मस्तों की तरह का। मस्त; मत्त।

–(उ अक्रि.) मस्त होना। संभोग की प्रबल इच्छा या कामना होना; कामोन्मत्त होना।

–(उ. सक्रि.) मस्ती पर लाना; कामोद्दीपन करना।

मस्ती–(फा. स्त्री.) मस्त होने की क्रिया या भाव; मत्तता; मतवालापन। वह स्राव जो मतवाले हाथियों या अन्य कुछ विशिष्ट पशुओं के मस्तक, कान आदि के पास से बहता है; मद; मदजल। वह स्राव जो कुछ विशिष्ट वृक्षों अथवा पत्थरों आदि में से होता है। संभोग करने की प्रबल इच्छा या कामना; कामोद्दीपन।

मस्तूल–(पुर्त्त. पु.) बड़ी नावों आदि में गाड़ा जानेवाला बड़ा लट्ठा या शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं; पटस्तंभ।

महकमा–(अ. पु.) कार्यालय का विभाग; सरकारी विभाग।

महकूम–(अ. वि.) शासित; प्रजा।

महज़–(अ. वि.) खालिस; विशुद्ध। केवल; मात्र।

महजबीं–(फा वि) चंद्रमुखी।

महताब–(फा स्त्री) चाँदनी, चंद्रिका। एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

–(पु) चाँद, चंद्रमा।

महतावी–(फा स्त्री) एक तरह की आतिशबाज़ी। बाग आदि के बीच में बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चबूतरा।

महदूद–(अ वि) हद बाँधा हुआ, परिमित।

महफिल–(अ स्त्री) सभा, जलसा। नाच गाना होने का स्थान, नटनसभा।

महफूज–(अ वि) हिफाज़त किया हुआ, सुरक्षित।

महबूब–(अ पु) वह जिससे प्रेम किया जाय, प्रिय, माशूक़।

महबूबा–(अ स्त्री) प्रिया, प्यारी, माशूक़ा।

महमेज–(फा स्त्री) एक प्रकार की लोहे की नाल या जूते में एड़ी के साथ लगाई जाती है और जिसकी सहायता से घुड़सवार घोड़े को आगे बढ़ाने के लिये एड़ से मारते हैं।

महरम–(अ पु) मुसलमानोंमें किसी कन्या या स्त्री के लिये उसका कोई ऐसा बहुत पास का संबंधी जिसके साथ उसका विवाह निषेधित हो। जैसे–पिता, चाचा, भाई, मामा आदि। भेद का जाननेवाला, ममज्ञ।

–(स्त्री) स्त्रियों की चोली या अँगिया का वह जुड़ा हुआ भाग जिसके भीतर स्तन रहते हैं। अँगिया, चोली।

महरूम–(अ वि) जिसे न मिले, वंचित।

महल–(अ पु) बहुत बड़ा और बढ़िया मकान, विशाल भवन, प्रासाद। रनिवास, अंतःपुर। बड़ा कमरा, 'हॉल'। अवसर, मौक़ा।

महलसरा–(फा पु) अंतःपुर, रनिवास। अंतःपुर का नपुंसक सेवक, खवास।

महली–(उ वि) महल संबंधी, महल का।

महल्ला–(अ पु) शहर का कोई विभाग जिसमें बहुत से मकान हों, पेठ, टोला।

महशर–(अ पु) सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े हो जायेंगे और ईश्वर के सामने उनकी सुनाई होगी, कयामत।

महसूर–(अ वि) घेरा हुआ।

महसूल–(अ पु) वह धन जो राजा या कोई अधिकारी किसी विशिष्ट कार्य

के लिये ले; कर; गजरत। भाड़ा; किराया। वह भूमि-कर जो जमींदार से सरकार लेती है; मालगुजारी।

महारत–(फा. स्त्री.) अभ्यास; मश्क, निपुणता।

महाल–(अ. पु.) "महल्ल" का ब० रूप; महल्ला। बंदोबस्त में जमीन का एक विभाग जिसमें कई गाँव होते हैं। भाग; हिस्सा।

–(वि.) असंभव, असाध्य।

महोला–(अ. पु.) हीला हवाला, बहाना। धोखा; भुलावा।

मह्–(अ. वि.) अन्तर्गत।

मांदगी–(फा. स्त्री.) बीमारी; रोग। थकावट; श्रांति।

मांदा–(फा. वि.) थका हुआ, श्रमित। बचा हुआ; शेष। रोगी; बीमार।

माउल्लहम–(अ. पु.) मांस का बना हुआ एक प्रकार का पुष्टिकारक अर्क या कषाय।

माकूल–(अ. वि.) उचित; उपयुक्त; ठीक। लायक; योग्य; अर्ह। अच्छा; बढ़िया, उत्कृष्ट। जिसने वाद-विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ली हो; निरुत्तर।

माजरा–(अ. पु.) हाल; वृत्तांत; समाचार; संवाद। घटना।

माजिद–(अ. पु.) गुम्बज; बुर्ज।

माजून–(अ. पु.) औषध के रूप में खाने जानेवाली चटनी; अवलेह।

माजूफल–(अ. पु.) माजू नामक झाड़ी का गोटा या गाँठ जो औषधि तथा रंगाई के काम में आता है।

मात–(अ. स्त्री.) पराजय; हार।

–(वि.) पराजित; परास्त।

मातम–(अ. पु.) किसी की मृत्यु पर शोक मनाना; रोना-पीटना; विलाप।

मातमपुर्सी–(फा. स्त्री.) मृतक के संबंधियों को सांत्वना देना; मृताश्वासन।

मातमी–(फा. वि.) शोक संबंधी; शोकसूचक।

मातहत–(अ. वि.) किसी की अधीनता में काम करनेवाला; अधीनस्थ; आश्रित।

मातहती–(अ. स्त्री.) अधीनता; आश्रय; अवलंबन।

मादन–(अ. पु.) खान।

मादर–(फा. स्त्री.) मातृ; माता।

मादरज़ाद–(फा. वि.) जन्म का; पैदाइशी। सहोदर; माँ जाया। बिलकुल नंगा; नग्न।

मादरी–(फा. वि.) मातृ संबंधी; मातृ। मादरी जबान = मातृभाषा।

मादा–(फा. स्त्री.) स्त्री जाति का प्राणी।

माद्दा–(अ पु) मूल तत्व, भूत। योग्यता, क्षमता। फोड़े या घाव के भीतर से निकलनेवाला सफेद लसदार पदार्थ, मवाद, पीब।

माना–(इबरानी पु) एक प्रकार का मीठा रेचक निर्यास या गोंद।

मानिंद–(फा वि) समान, सदृश, तुल्य।

मानी–(अ स्त्री) अर्थ, तात्पर्य।

माने–(उ पु) अर्थ, तात्पर्य।

माफ–(अ वि) दे "मुआफ"।

माफिक–(अ वि) दे "मुआफिक"।

मामलत, मामलती–(अ स्त्री) व्यवहार की बात, मामला। विवादास्पद विषय।

मामला–(अ पु) दे "मुआमिला"।

मामा–(फा स्त्री) माता, माँ। रोटी पकानेवाली स्त्री। सेविका, नौकरानी।

मामूल–(अ पु) रीति, रवाज, पद्धति।

मामूली–(अ वि) नियमित, नियत। सामान्य, साधारण।

मायल–(फा वि) किसी बात की ओर झुका हुआ प्रवृत्त। मिला हुआ, मिश्रित।

मायूब–(फा वि) दुष्ट।

मायूस–(फा वि) निराश, हताश।

मायूसी–(फा स्त्री) निराशा।

मार–(फा पु) साँप। अत्याचारी।

मारका–(अ पु) चिह्न, निशान। विशेषता सूचक चिह्न।
–(अ पु) युद्ध, लड़ाई। बहुत बड़ी या महत्वपूर्ण घटना।

मारखोर–(फा पु) एक तरह की बकरी या भेड़।

मारपेच–(उ पु) चालबाजी, कपट व्यवहार।

मारफत, मार्फत–(अ क्रिवि) द्वारा, जरिये से।
–(स्त्री) ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मविद्या।

माल–(अ पु) संपत्ति, धन। सामग्री, सामान।

मालकियत–(अ स्त्री) स्वामित्व, प्रभुत्व।

मालखाना–(फा पु) माल असबाब रखने का स्थान, भंडार।

मालगाड़ी–(उ स्त्री) वह "रेल" गाड़ी जिसमें केवल माल लादा जाता है, 'गुड्स' गाड़ी।

मालगुजार–(फा पु) मालगुजारी देने वाला, जमींदार।

मालगुजारी–(फा स्त्री) भूमि कर, लगान, राजस्व।

मालदार–(फा. वि.) धनी; धनाढ्य ।

मालमता–(अ. पु.) सारी संपत्ति; सर्वस्व ।

मालामाल–(फा. वि.) बहुत धनी; संपन्न । भरा हुआ; संपूर्ण ।

मालिक–(अ. पु.) ईश्वर; भगवान् । अधिपति; प्रभु । स्वत्वाधिकारी; स्वामि; "यजमान" । पति; भर्ता ।

मालिका–(अ. स्त्री.) अधीश्वरी; स्वामिनी । पत्नी ।

मालिकाना–(फा. पु.) स्वामि का अधिकार या स्वत्व; स्वामित्व ।

–(वि.) मालिक की तरह का ।

मालिकिन–(अ. स्त्री.) दे. "**मालिका**" ।

मालिकी–(उ. स्त्री.) मालिक होने का भाव । मालिक का स्वत्व ।

मालियत–(अ. स्त्री.) मूल्य; दाम । बहुमूल्य वस्तु । संपत्ति; धन ।

मालिश–(फा. स्त्री.) मलने का भाव या क्रिया; मर्दन ।

माली–(फा. वि.) माल या धन संबंधी; आर्थिक ।

मालीदा–(फा. पु.) दे. "**मलीदा**" ।

मालूम–(अ. वि.) जाना हुआ; ज्ञात, विदित ।

माश–(अ. स्त्री.) मूंग ।

माशकी–(फा. पु.) मशक या चमड़े की थैली द्वारा पानी ढोनेवाला आदमी; भिश्ती ।

माशूक़–(अ. पु.) वह जिससे प्रेम करे; प्रेम-पात्र; प्रियतम, प्रियतमा ।

माशूक़ा–(अ. स्त्री.) प्यारी, प्रेमिका ।

मासिवा–(अ. क्रिवि.) दे. "**सिवा**" ।

माह–(फा. पु.) चाँद । मास; महीना ।

माहताब–(फा. पु.) चाँद । एक तरह की आतशबाजी ।

माहताबी–(फा. स्त्री.) मोटी बत्ती के आकार की एक तरह की आतशबाजी । बाग आदि के बीच में बना हुआ चबूतरा । एक प्रकार का कपड़ा ।

माहली–(उ. पु.) अंतःपुर का सेवक; ख्वाजा । सेवक; दास ।

माहवार–(फा. क्रिवि.) प्रति मास, हर महीना ।

–(वि.) हर महीने का; मासिक ।

–(पु.) मासिक वेतन ।

माहवारी–(फा. वि.) हर महीने का, मासिक ।

माहियत–(अ. स्त्री.) भेद । प्रकृति; स्वभाव । विवरण; ब्यौरा ।

माहियाना–(फा. वि.) प्रति मास का । मासिक ।

–(पु.) मासिक वेतन ।

माहिर–(अ वि) ज्ञाता, जानकार।

माही–(फा स्त्री) मछली।

माहीगीर–(फा पु) मछली पकड़ने वाला, मछुआ।

माही मरातिब–(फा पु) राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदि की आकृतियाँ बनी होती हैं।

मिकृद–(फा स्त्री) मलद्वार, गुदा।

मिक्दार–(फा स्त्री) मात्रा, परिमाण।

मिक्नातीस–(फा पु) चुंबक पत्थर।

मिजगा–(फा पु) पलक।

मिजराब–(अ स्त्री) तार का एक प्रकार का छल्ला या वलय जिससे सितार, सारंगी आदि बजाते हैं।

मिजाज–(अ पु) किसी पदार्थ का मूल गुण, प्रभाव। स्वभाव, प्रकृति। शरीर या मन की दशा, तबीयत, दिल। अभिमान, घमंड।

मिजाजअली–(अ) एक वाक्यांश जिसका व्यवहार किसी का शारीरिक कुशलमंगल पूछने के समय होता है, आप मिजाज अली है?

मिजाजदार–(फा वि) घमंडी, अभिमानी।

मिजाजपुर्सी–(फा स्त्री) तबीयत का हाल पूछना, कुशल प्रश्न।

मिजाजशरीफ–(अ) दे "मिजाज आली"।

मिजाजी–(उ वि) घमंडी, अहंकारी।

मिनकार–(अ स्त्री) चोंच।

मिनवाल–(अ पु) कपड़ा बुनने के यंत्र में लगा हुआ गोल और दंड के आकार का कोई बड़ा पुरजा, करघे का बेलन या "रोलर"।

मिनहा–(अ वि) (रकम) जो काट या घटा ली गयी हो।

मिनजानिब–(अ क्रिवि) ओर से, तरफ से।

मिनजुमला–(फा क्रिवि) सब में से।

मिन्नत–(अ स्त्री) प्रार्थना, निवेदन।

मिमियाई–(फा स्त्री) दे "मोमियाई"।

मियाँ–(फा पु) स्वामि, मालिक, "यजमान"। पति, भर्ता। महाराज महाराय। शिक्षक, उपदेशक। राजपूतों की एक उपाधि। मुसलमान।

मियाँमिट्ठू–(उ पु) मीठी बोली बोलनेवाला, मधुर भाषी। तोता। मूर्ख, बेवकूफ।

मियाद–(अ स्त्री) दे "मीआद"।

मियान–(फा स्त्री) तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना, खड्गकोष। अन्नमय कोष, शरीर।

–(पु) बीच का हिस्सा, मध्यभाग।

मियानतह–(फा. स्त्री.) वह साधारण कपड़ा जो किसी अच्छे कपड़े के नीचे उसकी रक्षा आदि के लिये दिया जाता है; "लाइनिंग"।

मियाना–(फा. वि.) मध्यम आकार का। –(पु.) एक प्रकार की पालकी।

मियानी–(फा. स्त्री.) पायजामे में वह कपड़ा जो दोनों पांयचों के बीच में पड़ता है।

मिरज़ई–(फा. स्त्री.) एक प्रकार का अंगा।

मिरज़ा–(फा. पु.) मीर या अमीर का लड़का; सपत्कुमार। कुंवर; राजकुमार। मुगलों की एक उपाधि।

मिल्क–(अ. स्त्री.) भूसंपत्ति; जमींदारी। जागीर।

मिल्कियत–(अ. स्त्री.) जमींदारी। जागीर; "इनाम" जमीन। धन-संपत्ति; जायदाद। वह धन संपत्ति जिस पर मालिकों का सा हक हो।

मिल्की–(अ. पु.) जमींदार। जागीरदार।

मिल्लत–(अ. स्त्री.) मजहब; संप्रदाय; पथ।

मिसकीन–(अ. वि.) दीन; असहाय। साधु। दरिद्र। भोला, निष्कपट। सुशील।

मिसरा–(अ. पु.) उर्दू या फारसी आदि की कविता का एक चरण; पद।

मिसरातरह–(फा. स्त्री.) किसी श्लोक आदि का वह अंतिम पद जो पूरा श्लोक बनाने के लिये तैयार करके दूसरों को दिया जाता है; समस्या।

मिसरी–(उ. स्त्री.) मिस्र देश की भाषा। दोबारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार चीनी या शक्कर।

मिसाल–(अ. स्त्री.) उपमा। उदाहरण; दृष्टांत। कहावत।

मिसिल–(अ. वि.) समान; सदृश। –(उ. स्त्री.) किसी एक विषय से संबंध रखनेवाले कुल कागज-पत्र; कागजों का पुलिंदा; "फाइल"।

मिस्क़ला–(अ. पु.) सिकलीगरों का एक औजार, सान धरने का एक उपकरण।

मिस्कीन–(अ. वि.) बेचारा; दीन; असहाय। दरिद्र; निर्धन। सीधा-सादा।

मिस्कीनता–(उ. स्त्री.) दीनता; निस्सहायता।

मिस्कीनी–(अ. स्त्री.) दीनता; लाचारी। दरिद्रता; गरीबी। सुशीलता।

मिस्तर–(अ. पु.) डोरे में लपेटा हुआ दफ्ती का वह टुकड़ा जो लिखने के समय लकीरें सीधी रखने के लिये लिखे

जानेवाले पाखाने के नीचे रख दिया जाता है। मुहल्लादार भंगी, मेहतर।

मिस्तरी-(अ॰ पु) वह जो हाथ का बहुत अच्छा कारीगर हो।

मिस्तरीखाना-(अ पु) वह स्थान जहां लोहार, बढ़ई आदि काम करते हैं।

मिस्र-(अ पु) इजिप्ट नाम का एक प्रसिद्ध देश जो आफ्रिका में है।

मिस्री-(अ स्त्री) दे "मिसरी"।

मिस्सी-(फा स्त्री) एक तरह का प्रसिद्ध मंजन जो सधवा स्त्रियां दांतों में लगाती हैं।

मीआद-(अ स्त्री) किसी कार्य की समाप्ति के लिये नियत समय, नियत समय, अवधि।

मीआदी-(अ वि) जिसके लिये कोई अवधि नियत हो। जो कारागार में रह चुका हो।

मीआदी हुंडी = वह हुंडी जिसका रुपया तुरंत न देना पड़े, दर्शनी हुंडी का उलटा।

मीज़ान-(अ स्त्री) कुल संख्याओं का जोड़ फल, टोटल। योगफल। तराजू।

मीठा ज़हर-(फा पु) एक स्थावर विष जो नेपाल में होनेवाले एक पौधे की जड़ है, बछनाग, वत्सनाभ।

मीना-(फा पु) एक प्रकार का नीले रंग का कीमती पत्थर। सोने चांदी आदि पर किये जानेवाले रंग बिरंग के काम। शराब रखने का शीशे का बरतन, सुराही।

मीनाकार-(फा पु) चांदी सोने आदि पर रंगीन काम बनानेवाला, मीनाकारी करनेवाला।

मीनाकारी-(फा स्त्री) सोने या चांदी पर होनेवाला रंगीन काम। किसी काम में दिखाई या की हुई बहुत बड़ी बारीकी।

मीनार-(अ पु) स्तंभ के आकार का बहुत अधिक ऊंचा और गोलाकार गोपुर, लाट और ऊंचा खंभा।

मीर-(फा पु) प्रधान, मुखिया, सरदार। धार्मिक गुरु, आचार्य। सैयद जाति की उपाधि। वह जो सबसे पहले कोई काम, विशेषतः प्रतियोगिता का काम कर डाले। ताश के खेल में सब से बड़ा पत्ता।

मीर अर्ज़ = वह कर्मचारी जो बादशाह की सेवा में लोगों के निवेदन पत्र आदि उपस्थित करे।

मीर मजलिस = वह व्यक्ति (सभापति) जो मजलिस में प्रधान हो।

मीर फ़र्श = वे बड़े बड़े गोल पत्थर आदि जो बिछावनों या फ़र्शों आदि के कोनों पर उन्हें उड़ने से रोकने के लिये रखे जाते हैं।

मीर मजलिस = सभापति; प्रधान।

मीर मुंशी = प्रधान मुंशी, "हेड" मुंशी।

मीरज़ा–(फ़ा. पु.) दे. "**मिरज़ा**"।

मीरास–(अ. स्त्री.) बाप से आई हुई जायदाद; पित्रार्जित संपत्ति; बपौती।

मीरासिन–(फ़ा. स्त्री.) "**मीरासी**" का स्त्री. रूप।

मीरासी–(फ़ा. पु.) एक प्रकार के मुसलमान जो प्रायः मसखरापन या गाने-बजाने का काम करते हैं।

मील–(अ.* पु.) १७६० गज़ की दूरी; "माइल"।

मुंतक़िल–(अ. वि.) एक स्थान से दूसरे स्थान पर गया हुआ; स्थानांतरित।

मुंतज़िम–(अ. वि.) इंतज़ाम करनेवाला, प्रबंधक।

मुंतज़िर–(अ. वि.) इंतज़ार करनेवाला, प्रतीक्षा करनेवाला।

मुंतशिर–(अ. वि.) छिन्न भिन्न।

मुंशियाना–(फ़ा. वि.) मुंशियों की तरह का।

मुंशी–(अ. पु.) निबंध या लेख आदि लिखनेवाला; लेखक।

मुंशीख़ाना–(फ़ा. पु.) दफ़्तर।

मुंशीगिरी–(फ़ा. स्त्री.) मुंशी का काम या पद।

मुंसरिम–(अ. पु.) इंतज़ाम करनेवाला; मुंतज़िम। दफ़्तर या कचहरी का प्रधान कर्मचारी।

मुंसलिक–(अ. वि.) साथ में बाँधा या नत्थी किया हुआ।

मुंसिफ़–(अ. पु.) इंसाफ़ करनेवाला। दीवानी अदालत का एक न्यायाधीश।

मुंसिफ़ी–(अ. स्त्री.) न्याय करने का काम। मुंसिफ़ का काम। मुंसिफ़ की कचहरी।

मुंहज़ोर–(हि. वि.) बहुत अधिक बोलने वाला, बकवादी। ओछी या कटु बात कहने में संकोच न करनेवाला। तेज़; उद्दंड।

मुअज़्ज़िन–(अ. पु.) मसजिद में अज़ान या नमाज़ की पुकार देनेवाला।

मुअज़्ज़िज़–(अ. वि.) ग़ालिब; विजयी।

मुअत्तल–(अ. वि.) जो काम से कुछ दिनों के लिये, दंड-स्वरूप, अलग कर दिया गया हो, "सस्पेंड" किया हुआ।

मुअत्तली–(अ. स्त्री.) काम से कुछ दिन के लिये दंड-स्वरूप अलग कर दिया जाना; "सस्पेन्शन"।

मुअन्नस–(अ. पु.) स्त्रीलिंग।

मुअम्मा–(अ पु) रहस्य, भेद। पहेलिका, पहेली। घुमाव फिराव की बात।

मुअर्रिखा–(अ वि) लिखित, लिपिबद्ध।

मुअल्लिम–(अ पु) शिक्षक, अध्यापक।

मुआफ़–(अ वि) जो क्षमा कर दिया गया हो, क्षमित, क्षमा प्राप्त।

मुआफ़िक़–(अ वि) जो विरुद्ध न हो, अनुकूल। सदृश, समान। मनोनुकूल, इच्छानुसार।

मुआफ़िक़त–(अ स्त्री) अनुकूलता। समानता, सादृश्य। मनोनुकूल होने का भाव। मैत्री, मेल।

मुआफ़ी–(अ स्त्री) क्षमा। वह भूमि जिसका कर सरकार न ले, बिना लगान की ज़मीन, "इनाम" ज़मीन।

मुआमिला–(अ पु) काम, उद्यम। कार्यनिर्वाह, कारबार। पारस्परिक व्यवहार। व्यावहारिक, व्यापारिक या विवादास्पद विषय। झगड़ा, विवाद। मुक़दमा, अभियोग, "व्याज्य"।

मुआयना–(अ पु) देख भाल करना, जाँच पड़ताल, निरीक्षण।

मुआरिज़–(अ वि) निवेदक। प्रतिपादक।

मुआलिज–(अ वि) इलाज करनेवाला, चिकित्सक।

मुआलिजा–(अ स्त्री) इलाज, चिकित्सा।

मुआवज़ा–(अ पु) बदला, पलटा। वह धन जो किसी कार्य अथवा हानि आदि के बदले में मिले, परिहार द्रव्य। वह रकम जो ज़मींदार को ज़मीन के बदले में मिले।

मुआशिरत–(अ वि) सामाजिक।

मुआहिदा–(अ पु) दृढ़ निश्चय, प्रतिज्ञा, करार।

मुक़तदा–(अ पु) ऋषि, महान्।

मुक़त्ता–(अ वि) ठीक तरह से बनाया हुआ, सुघटित। सभ्य, शिष्ट।

मुक़दमा–(अ पु) दो पक्षों के बीच का धन या अधिकार आदि से सम्बन्ध रखनेवाला कोई विवादास्पद विषय अथवा किसी क़ानूनी अपराध का मामला जो विचार के लिये न्यायालय में जाय, अभियोग, "व्याज्य व्यवहार"। दावा, नालिश।

मुक़दमेबाज़–(फ़ा पु) वह जो प्रायः मुक़दमे लड़ा करता हो।

मुक़दमेबाज़ी–(फ़ा स्त्री) मुक़दमा लड़ने का काम।

मुक़द्दम–(अ वि) पुरातन, पुराना। सर्वश्रेष्ठ, प्रमुख। नेता, मुखिया, प्रधान। आवश्यक, ज़रूरी।

मुक़द्दमा–(अ पु) दे "मुक़दमा"।

मुक़द्दर–(अ. पु.) भाग्य; विधि।

मुक़फ़्फ़ल–(अ. वि.) ताले में बंद; यश्रित।

मुकम्मल–(अ. वि.) पूरा किया हुआ; समाप्त।

मुकर्रर–(अ. क्रिवि.) दोबारा; पुनश्च।

मुक़र्रर–(अ. वि.) जिसका इक़रार किया गया हो; सुनिश्चित, निर्धारित। नियुक्त, नियोजित।

मुक़र्ररी–(अ. स्त्री.) इक़रार करना; निर्धारण; नियति। नियुक्ति; नियोजन।

मुक़व्वी–(अ. वि.) बलवर्द्धक; पुष्टिकारक।

मुक़ाबला–(अ. पु.) आमना; सामना। भेंट; संदर्शन; साक्षात्कार। मुठभेड़; भिड़ंत; लड़ाई। बराबरी; समता; सादृश्य। मिलान, तुलना; तारतम्य। विरोध।

मुक़ाबिल–(अ. क्रिवि.) सम्मुख; सामने। –(पु.) प्रतिद्वंद्वी। प्रतियोगी। शत्रु; दुश्मन।

मुक़ाम–(अ. पु.) ठहरने का स्थान; टिकान; पड़ाव। ठहरने की क्रिया; अवस्थान; विराम। रहने का स्थान; निवास; घर। अवसर; मौक़ा; प्रसंग। सरोद, वीणा आदि का कोई परदा।

मुक़िर–(अ. वि.) प्रतिज्ञा करनेवाला। किसी दस्तावेज़ या जमींदारी आदि लिखकर देनेवाला।

मुक़ीम–(अ. वि.) रहनेवाला; अवस्थित।

मुक्केबाज़–(उ. वि.) मुष्टियुद्ध करनेवाला; मल्ल।

मुक्केबाज़ी–(उ. स्त्री.) मुष्टियुद्ध; मल्लयुद्ध।

मुख़तार–(अ. पु.) दे. "मुख़्तार"।

मुख़न्नस–(अ. वि.) नपुंसक।

मुख़फ़्फ़फ़–(अ. वि.) जो घटा कर कम किया गया हो; संक्षिप्त।

मुख़बिर–(अ. वि.) ख़बर लानेवाला; दूत। गुप्तचर; जासूस।

मुख़बिरी–(उ. स्त्री.) मुख़बिर का काम।

मुख़मसा–(अ. पु.) झगड़ा; टंटा; बखेड़ा।

मुख़म्मस–(अ. वि.) जिसमें पांच कोने या अंग आदि हों। पाच चरणों की उर्दू कविता।

मुख़लिसी–(अ. स्त्री.) छुटकारा, विमुक्ति।

मुख़ातिब–(अ. वि.) जिससे बात की जाय; संबोधित।

मुख़ालिफ़–(अ. वि.) जो ख़िलाफ़ हो; विरोधी। शत्रु; दुश्मन। प्रतिद्वंद्वी; प्रतियोगी।

मुखालिफ्त–(अ स्त्री) विरोध। शत्रुता।

मुख्तलिफ–(अ वि) अलग, पृथक्। भिन्न, अन्य। अनेक प्रकार का, विविध।

मुख्तसर–(अ वि) जो थोड़े में हो, संक्षिप्त। छोटा, लघु। थोड़ा, अल्प।

मुख्तार–(अ पु) वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिये नियुक्त हो, प्रतिनिधि। एक प्रकार का कानूनी सलाहकार।

मुख्तार आम = वह प्रतिनिधि जिसे सब प्रकार के काम करने, मुकदमा लड़ने आदि का अधिकार दिया गया हो।

मुख्तार खास = वह जो किसी विशिष्ट कार्य या मुकदमे के लिये प्रतिनिधि बनाया गया हो।

मुख्तारकार–(फा पु) वह जो किसी काम की देखरेख के लिये नियुक्त किया गया हो।

मुख्तारकारी–(फा स्त्री) मुख्तार का काम या पद, प्रतिनिधित्व।

मुख्तारनामा–(फा पु) वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने के लिये मुख्तार या प्रतिनिधि बनाया जाय।

मुख्तारी–(अ स्त्री) मुख्तार हो कर दूसरे के मुकदमे लड़ने का काम या पेशा। प्रतिनिधित्व। स्वतन्त्रता।

मुगल–(फा पु) मंगोल देश का निवासी। तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग। मुसलमानों की एक जाति।

मुगलई–(अ वि) मुगलों की तरह का, मुगलों का सा।

मुगलाई–(अ वि) मुगलों का सा।

–(स्त्री) मुगल होने का भाव।

मुगलानी–(फा स्त्री) मुगल की स्त्री।

मुगा–(अ पु) अग्निपूजक।

मुगालता–(अ पु) धोखा, छल।

मुचलका–(तु पु) वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो।

मुजक्कर–(अ वि) पुल्लिंग। पुरुष का।

मुजरा–(अ पु) वह जो जारी किया गया हो, प्रचारित। वह रक़म जो किसी रक़म में से काट ली गयी हो। बड़ों को प्रणाम करना, अभिवादन। पारितोषिक, पुरस्कार। वेश्या का वह गाना जो बैठकर हो और जिसमें उनका नाच न हो, वेश्या की "संगीत कचेरी"।

मुजरिम–(अ पु) जिस पर किसी जुर्म

या अपराध का अभियोग लगाया गया हो; अभियुक्त; आपादित।

मुजर्रद–(अ. वि.) बिना साथी का; अकेला। संसार-त्यागी; अनासक्त।

मुजर्रब–(अ. वि.) आजमाया हुआ; परीक्षित।

मुजल्लद–(अ. वि.) जिसकी जिल्द बाँधी गयी हो; जिल्ददार।

मुजस्सिम–(अ. वि.) मशरीर; प्रत्यक्ष।

मुज़ाफ़–(अ. वि.) संबद्ध। संबंधी; नातेदार।

मुजावर–(अ. पु.) वह मुसलमान जो किसी दरगाह या समाधि पर रह कर वहाँ का चढ़ावा आदि लेता हो।

मुज़िर–(अ. वि.) हानिकारक; अनर्थकारी।

मुज़्तर–(अ. वि.) अशांत; बेचैन।

मुतअल्लिक़–(अ. वि) संबंध रखनेवाला; संबंधी। सबद्ध; सम्मिलित।
–(क्रिवि.) संबंध में; विषय में; बारे में।

मुतदायरा–(अ. वि.) (मुकदमा) जो दायर किया गया हो।

मुतफ़क्किर–(अ. वि.) फिक्रमंद; चिंता-ग्रस्त।

मुतफ़न्नी–(अ. वि.) चालबाज; कूट-नीतिज्ञ। धोखेबाज; छली।

मुतफ़र्रिक़–(अ. वि.) अलग किया हुआ; विभिन्न। अनेक प्रकार का; विविध।

मुतबन्ना–(अ. पु.) गोद लिया हुआ लड़का; दत्तक पुत्र।

मुतमइन–(अ. वि.) संतुष्ट; पूर्ण।

मुतमौवल–(अ. वि.) धनवान; अमीर।

मुतरज्जिम–(फा. वि.) तर्जुमा करने-वाला; अनुवादक।

मुतलक़–(अ. वि.) विशुद्ध; निरा।
–(क्रिवि.) जरा भी; तनिक भी।

मुतवफ़्फ़ा–(फा. वि.) मृत; स्वर्गीय।

मुतवल्ली–(फा. वि.) वसीभूत करने-वाला; अभिभावक।

मुतवातिर–(फा. क्रिवि.) लगातार; निरंतर।

मुतसद्दी–(अ. पु.) मुंशी; लेखक। हाकिम के सामने कागज पत्र पेश करनेवाला कर्मचारी; पेशकार। इंतजाम करनेवाला; प्रबंधकर्ता। साहूकारों का हिसाब किताब रखनेवाला; मुनीम।

मुतहम्मिल–(अ वि.) सहिष्णु; सहन-शील।

मुताबिक़–(अ. क्रिवि.) अनुसार।
–(वि) अनुकूल; सदृश।

मुतालबा–(अ. पु.) उतना धन जितना पाना हो; बाकी रुपया; देना।

मुताह–(अ. पु.) मुसलमानों में एक तरह का अस्थायी विवाह।

मुताही–(अ स्त्री) वह स्त्री जिसके साथ मुताह किया गया हो। रखेली स्त्री।

मुत्तफिक़–(अ वि) सहमत।

मुत्तसिल–(अ क्रिवि) समीप, पास। लगातार।

मुदर्रिस–(अ पु) अध्यापक, शिक्षक।

मुदाम–(फ़ा क्रिवि) सदा, हमेशा। निरंतर, लगातार। ठीक ठीक, हू बहू।

मुदामी–(फ़ा वि) जो सदा होता रहे, शाश्वत।

मुद्दआ–(अ पु) अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य।

मुद्दइया–(अ स्त्री) "मुद्दई" का स्त्री रूप।

मुद्दई–(अ पु) वादी। शत्रु।

मुद्दत–(अ स्त्री) अवधि। बहुत दिन का समय, बहुकाल।

मुद्दती–(अ वि) वह जिसके साथ कोई मुद्दत या अवधि लगी हो।

मुद्दाअलेह, मुद्दालेह–(अ पु) प्रतिवादी।

मुनक्का–(अ पु) एक प्रकार की बड़ी किशमिश।

मुनब्बतकारी–(अ स्त्री) पत्थरों पर उभरे हुए बेल बूटों का काम।

मुनहसिर–(अ वि) आश्रित; अवलंबित।

मुनादी–(अ स्त्री) वह घोषणा जो डुग्गी या ढोल आदि पीटते हुए सारे देश में हो; ढिंढोरा।

मुनाफ़ा–(अ पु) लाभ, नफ़ा। फायदा।

मुनासिब–(अ वि) उचित, उपयुक्त।

मुनासिबत–(फ़ा स्त्री) उपयुक्तता, औचित्य।

मुनीम, मुनीम–(अ पु) मददगार, सहायक। साहूकारों का हिसाब किताब लिखनेवाला, अभलेखक।

मुफ़लिस–(अ वि) निधन, दरिद्र।

मुफ़लिसी–(अ स्त्री) दरिद्रता, गरीबी।

मुफ़सिद–(अ वि) फ़साद खड़ा करनेवाला, उपद्रवी। झगड़ालू।

मुफ़स्सल–(अ वि) ब्योरेवार; विस्तृत। –(पु) किसी राजधानी या केंद्रस्थ नगर के चारों ओर के कुछ दूर के स्थान; देहात।

मुफ़ाजात–(अ वि) आकस्मिक।

मुफ़ासला–(अ पु) दूर।

मुफ़ीद–(अ वि) फायदेमंद, लाभकारी। सार्थक।

मुफ़्त–(अ वि) जिसमें कुछ मूल्य न लगे, बिना दाम का। निरर्थक, व्यर्थ का।

मुफ़्तख़ोर = वह व्यक्ति जो दूसरों के धन पर सुख भोग करे।

मुफ़्ती–(अ. पु.) मुसलमान धर्मशास्त्रज्ञ; धर्मशास्त्री।

–(वि. वि.) मुफ़्त का।

मुबतिला–(अ. वि.) फँसा हुआ; ग्रस्त।

मुबादिला–(अ. पु.) बदला; प्रतीकार।

मुबारक–(अ. वि.) जिसके कारण बरकत या कृपा हो। शुभ; मंगल प्रद। अच्छा।

–(अव्य.) स्वागतम्; "पराक्"।

मुबारकबाद–(फा. पु.) कोई शुभ बात होनेपर बधाई देना; अभिनंदन।

मुबारकबादी–(फा. स्त्री.) बधाई।

मुबारकी–(फा.स्त्री.) दे. "मुबारकबाद"।

मुबालिग़ा–(फा. पु.) बहुत बढा कर कही हुई बात; अत्युक्ति।

मुबाहिसा–(अ. पु) बहस; चर्चा; वाग्वाद। वादार्थ; शास्त्रार्थ।

मुमकिन–(फा. वि.) संभव; सभाव्य।

मुमतहिन–(अ. पु.) इम्तहान करनेवाला; परीक्षक।

मुमताज़–(फा. वि.) श्रेष्ठ; उन्नत।

मुमानियत–(अ. स्त्री.) वारण। निषेध।

मुरग़ा–(फा. पु.) एक प्रसिद्ध पक्षी; कुक्कुट।

मुरग़ाबी–(फा. स्त्री.) मुरगे की जाति का एक जल पक्षी; जलकाक।

मुरग़ी–(फा. स्त्री.) "मुरग़ा" का स्त्री. रूप।

मुरतहिन–(अ. पु.) वह जिसके पास कोई जायदाद बंधक या गिरवी रखी हो; रेहनदार।

मुरदा–(अ. पु.) वह जो मर गया हो; मृतक।

–(वि.) मरा हुआ; मृत। निर्जीव; प्राणहीन। मुरझाया हुआ।

मुरदार–(फा. वि.) मरा हुआ; मृत। प्राणहीन; निर्जीव। अपवित्र।

मुरदासंख–(फा. पु.) सिंदूर। एक प्रकार की औषध।

मुरब्बा–(अ. पु.) शक्कर आदि का चाशनी में रक्षित किया हुआ फलों या मेवों का पाक।

मुरब्बी–(फा. पु.) पालन करनेवाला; परिपालक; रक्षक। सहायक; मददगार।

मुरव्वत–(अ. स्त्री.) शील; संकोच; "दाक्षिण्य"। भलमनसी; सौजन्य।

मुरशिद–(अ. पु.) मार्गदर्शक, गुरु। पूज्य; श्रेष्ठ।

मुरस्सा–(अ. वि.) जडाऊ, जटित।

मुरस्साकार–(फा. वि.) गहनों में रत्न आदि जड़नेवाला; जड़िया।

मुरस्साकारी–(फा स्त्री) गहनों में रत्न आदि जड़ने का काम।

मुराद–(अ स्त्री) अभिलाषा, मनोरथ। अभिप्राय, आशय।

मुरादी–(अ वि) अभिलाषी, आकांक्षी।

मुराफा–(फा पु) अधीनस्थ अदालत के फैसले के विरुद्ध ऊंची अदालत में फिर से विचार के लिये अभियोग उपस्थित करना, "अपील"।

मुरीद–(अ पु) शिष्य, चेला। अनुगामी; अनुयायी।

मुरौवत–(अ स्त्री) दे "मुरव्वत"।

मुर्ग–(फा पु) एक प्रसिद्ध पक्षी, कुक्कुट।

मुर्गकेश–(उ पु) मरसे की जाति का एक पौधा, जटाधारी।

मुर्गखाना–(फा पु) मुर्गों के रहने के लिये बनाया हुआ स्थान।

मुर्तकिब–(अ वि) अपराधी, अभियुक्त।

मुर्दनी–(फा स्त्री) मुख पर प्रकट होने वाले मृत्यु के चिह्न। शव के साथ उसकी अंत्येष्टि क्रिया को जाना।

मुलजिम–(अ वि) जिस पर कोई इलजाम या अभियोग हो, अभियुक्त।

मुलमची–(उ पु) मुलम्मा या गिलट चढ़ानेवाला।

मुलम्मा–(अ वि) किसी चीज पर चढ़ाए हुई सोने या चांदी की पतली तह, "गिलट"। ऊपरी तड़क भड़क, आडंबर।

मुलम्मासाज–(फा पु) मुलम्मा चढ़ाने वाला, मुलमची।

मुलम्मासाजी–(फा स्त्री) मुलम्मा चढ़ाने का काम।

मुलाकात–(अ स्त्री) आपस में मिलना, भेंट, मिलन। मेल मिलाप, घनिष्ठता। सहवास, संग, सोहबत।

मुलाकाती–(उ वि) जान पहचान रखनेवाला, परिचित, मेली।

मुलाजिम–(अ पु) नौकर, सेवक।

मुलाजिमत–(अ स्त्री) नौकरी, सेवा।

मुलाजिमा–(अ स्त्री) चेरी, दासी।

मुलायम–(अ वि) जो कड़ा न हो, मृदु। धीमा, मंद। कोमल, मृदुल, सुकुमार। जिसमें किसी प्रकार की कठोरता या खिंचाव न हो।

मुलायमत–(अ स्त्री) मुलायम होने का भाव, मृदुता। कोमलता, सुकुमारता।

मुलायमियत, मुलायमी–(उ स्त्री) दे 'मुलायमत'।

मुलाहिजा–(अ पु) देख भाल निरीक्षण, पर्यवेक्षण। संकोच, लज्जा।

कोमल और दयापूर्ण व्यवहार; रिआयत।

मुल्क–(अ. पु.) देश। प्रांत, प्रदेश। संसार; दुनिया।

मुल्की–(अ. वि.) अपने देश का; देशी।

मुल्तवी–(अ. वि.) जो कुछ समय के लिये रोक दिया गया हो; स्थगित।

मुल्ला–(अ. पु.) अरबी भाषा का पंडित। मुसलमान धर्म का आचार्य; गुरु।

मुवक्किल–(अ. पु) वह जो अपने किसी काम करने के लिये कोई वकील नियुक्त करे। संरक्षक।

मुवन्नस–(अ. पु.) स्त्रीलिंग।

मुशज्जर–(अ. पु.) एक प्रकार का छपा हुआ कपड़ा।

मुशफ़िक़–(अ. वि.) कृपालु; दयावान। मित्र; दोस्त।

मुशब्बा–(अ. पु.) उपमेय।
मुशब्बा बिही = उपमान।

मुशाबिहत–(अ. स्त्री.) तुलना; तारतम्य। उपमा।

मुशिद–(अ. पु.) स्वामि।

मुशीर–(अ. पु.) सलाह या परामर्श देनेवाला। मंत्री; अमात्य।

मुश्क–(अ. पु.) मृगमद; कस्तूरी। गंध; बू।

मुश्कदाना–(फ़ा. पु.) एक प्रकार की लता का बीज जिससे कस्तूरी की सी सुगंध निकलती है।

मुश्कनाफ़ा–(फ़ा. पु.) कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृग की नाभि में होती है।

मुश्कबिलाई–(उ. स्त्री.) एक प्रकार का जंगली बिलाव जिसके अंडकोशों का पसीना बहुत सुगंधित होता है; गंध बिलाव।

मुश्किल–(अ. वि.) कठिन; दुष्कर।
–(स्त्री.) कठिनता; दिक्कत। विपत्ति; संकट।

मुश्की–(फ़ा. वि.) कस्तूरी के रंग का; काला। जिसमें मुश्क या कस्तूरी पड़ी हो।
–(पु.) काले रंग का घोड़ा।

मुश्त–(फ़ा. पु.) मुट्ठी; मुष्टि।

मुश्तहिर–(अ वि.) जो प्रसिद्ध किया गया हो; प्रकटित।

मुश्ताक़–(अ. वि.) चाहनेवाला; आसक्त।

मुसज्जर–(अ. पु.) दे. "मुशज्जर"।

मुसद्दस–(अ. पु.) षट्कोण।

मुसद्दिक़–(अ. वि.) जाँचा हुआ; परीक्षित।

मुसन्ना–(अ. पु.) असल कागज़ या दस्तावेज की दूसरी नकल; प्रामाणिक प्रतिलिपि। रसीद आदि का वह दूसरा

भाग जो रसीद देनेवाले के पास रह जाता है, "ड्यूप्लिकेट" ।

मुसन्निफ–(अ पु) ग्रंथकर्ता, ग्रंथकार। रचयिता। निर्माता।

मुसब्बर–(अ पु) जमाया हुआ घीकुवार का रस जिसका व्यवहार औषधि के रूप में होता है।

मुसम्मा–(अ वि) नामक, नाम्ना।

मुसम्मात–(अ वि) "मुसम्मा" का स्त्री रूप, नाम्नी, नामधारिणी।
–(स्त्री) स्त्री, औरत।

मुसलमान–(फा पु) इस्लाम धर्म को माननेवाला, मुहम्मदी।

मुसलमानी–(फा वि) मुसलमान संबंधी। मुसलमान का।
–(स्त्री) मुसलमानों की एक रस्म जिसमें लड़के की लिंगेंद्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है, सुन्नत। मुसलमानों का धर्म।

मुसल्लिम–(फा पु) मुसलमान।

मुसल्लम–(फा वि) जिसके खंड न किये गये हों, अखंड। पूरा, संपूर्ण।
–(पु) मुसलमान।

मुसल्लह–(अ वि) मुसल्लिह।

मुसल्ला–(अ पु) वह दरी या बिछौना जिस पर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं।

मुसव्विर–(अ पु) चित्रकार।

मुसव्विरी–(फा स्त्री) चित्र बनाने की विद्या, चित्रकला, चित्रकारी।

मुसहिल–(अ वि) दस्त लानेवाला, विरेचक।

मुसाफिर–(अ पु) सफर या यात्रा करनेवाला, पथिक, यात्री।

मुसाफिरखाना–(फा पु) यात्रियों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला, सत्र।

मुसाफिरत, मुसाफिरी–(अ स्त्री) मुसाफिर होने की दशा। यात्रा, प्रवास।

मुसालहत–(अ स्त्री) मेल, संधि।

मुसाहब–(अ पु) धनवान या राजा आदि का मन बहलानेवाला, पार्श्ववर्ती, पार्षद। सहचर।

मुसाहबत, मुसाहबी–(अ स्त्री) मुसाहब का पद या काम।

मुसीबत–(अ स्त्री) विपत्ति, संकट। तकलीफ, कष्ट।

मुस्तकबिल–(अ वि) होने वाला, भविष्य का।

मुस्तकिल–(अ वि) अटल, स्थिर। पक्का, दृढ़।

मुस्तगीस–(अ, पु) फरियादी, वादी, दावेदार।

मुस्तदई–(अ वि) दावा करनेवाला, मांगनेवाला।

मुस्तनद–(अ. वि.) प्रामाणिक ।

मुस्तशना–(फा. वि.) छाँटा हुआ । भिन्न । जो अपवाद स्वरूप हो; छूटा हुआ ।

मुस्तहक़–(अ. वि) हकदार; अधिकार रखनेवाला । सुयोग्य ।

मुस्तहसन–(अ. वि) श्लाघनीय ।

मुस्तैद–(अ. वि.) तत्पर; सन्नद्ध । चालाक, फुर्तीला ।

मुस्तैदी–(अ. स्त्री.) सन्नद्धता; तत्परता । फुरती; चालाकी ।

मुस्तौफ़ी–(अ. पु.) हिसाब की जाँच पड़ताल करनेवाला; आय-व्यय-परीक्षक ।

मुहकम–(अ. वि.) दृढ; पक्का ।

मुहकमा–(अ. पु.) कार्यालय का विभाग; शाखा ।

मुहज्जब–(अ. वि.) सभ्य ।

मुहतमिम–(फा. पु.) व्यवस्थापक; प्रबंधक ।

मुहतरफ़ा–(अ. पु.) वह कर जो व्यापार आदि पर लगाया जाय ।

मुहताज–(अ. वि.) दरिद्र; गरीब । चाहनेवाला; आकांक्षी; अर्थी ।

मुहताजगी, मुहताजी–(फा. स्त्री.) दरिद्रता; गरीबी ।

मुहब्बत–(अ. स्त्री.) प्रेम; चाह । मित्रता; दोस्ती । लगन; आसक्ति ।

मुहम्मद–(अ. पु.) अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जिन्होंने इस्लाम या मुसलमानी धर्म का प्रवर्त्तन किया था ।

मुहम्मदी–(अ. पु.) मुहम्मद का अनुयायी; मुसलमान ।

मुहर–(फा. स्त्री.) अक्षर, चिन्ह आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा या मुद्रा । उपर्युक्त वस्तु की छाप जो कागज या कपड़े आदि पर ली गयी हो । रुपया, अशर्फी आदि; सिक्का: "नाएय" ।

मुहर्रम–(अ. पु.) अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसैन शहीद हुए थे ।

मुहर्रमी–(अ. वि.) मुहर्रम संबंधी; मुहर्रम का । खेद प्रकट करनेवाला; शोक-व्यंजक । अशुभ; अमंगल ।

मुहर्रिर–(अ. पु.) मुंशी, लेखक ।

मुहर्रिरी–(अ. स्त्री.) मुंशी का काम; मुंशीगिरी ।

मुहलत–(अ. स्त्री.) फुर्सत; सावकाश; विराम ।

मुहल्ला–(फा. पु.) शहर का कोई हिस्सा जिसमें बहुत से मकान हों ।

मुहसिन–(अ. वि) उपकारी ।

मुहसिल–(अ. वि.) तहसील वसूल करनेवाला; उगाहनेवाला ।
–(पु.) प्यादा; पदाति ।

मुहाफिज–(अ वि) हिफाजत करने वाला, सरक्षक।

मुहाफिजखाना–(फा पु) कचहरी में वह स्थान जहाँ सब प्रकार की मिसिलें रहती है।

मुहाफिजदफ्तर–(फा पु) कचहरी का वह कर्मचारी जिसके निरीक्षण में मुहाफिजखाना रहता है।

मुहाल–(अ वि) असभव, नामुमकिन। कठिन, दुष्कर, दुरसाध्य।

–(पु) मुहल्ला।

मुहावरा–(अ पु) लक्षणा द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग जो किसी एक ही भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो, भाषासप्रदाय। रोजमर्रा; बोलचाल। अभ्यास, आदत।

मुहासिब–(अ पु) हिसाब जाननेवाला, गणितज्ञ। हिसाब जाँचनेवाला।

मुहासिबा–(अ पु) हिसाब, लेखा। पूछ-ताछ।

मुहासिरा–(अ पु) किले या शत्रु सेना को चारों ओर से घेरना; घेरा।

मुहासिल–(अ पु) आय, आमदनी। लाभ, मुनाफा।

मुहिब्ब–(अ पु) दोस्त, मित्र।

मुहिम–(अ स्त्री) कठिन या बड़ा काम। लड़ाई, युद्ध। फौज की चढ़ाई, आक्रमण।

मूजी–(अ पु) कष्ट पहुँचानेवाला; पीड़क। दुष्ट, दुर्जन।

मेख–(फा स्त्री.) गाड़ने के लिये एक ओर नुकीली गढ़ी हुई कील, खूँटी। कील, काँटा। लकड़ी की वह गुल्ली जिसे लकड़ी की बनी चीजों में जोड़ कर कसने के लिये ठोंकते हैं, काठ का पेवद।

मेज–(फा स्त्री) लंबी चौड़ी ऊँची चौकी जो खाना खाने या लिखने पढ़ने के लिये रखी जाती है, "टेबुल"।

मेजपोश–(फा स्त्री) मेज पर बिछाने का कपड़ा।

मेजबान–(फा पु) आतिथ्य करनेवाला, मेहमानदार।

मेजबानी–(फा स्त्री) अतिथि सत्कार, मेहमानदारी।

मेड़बदी–(ह स्त्री) मेड़ या हद बाँधना। सीमा का चिह्न।

मेदा–(अ पु) पाकाशय, पेट।

मेम–(अ * स्त्री) यूरोप या अमेरिका आदि की स्त्री। ताश का एक पत्ता जो 'रानी' भी कहलाता है।

मेमार–(अ. पु.) इमारत बनानेवाला; राज; थवई।

मेवा–(फा. पु.) किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाये हुए बढ़िया फल।

मेवाटी–(उ. स्त्री.) एक पकवान जिसके अंदर मेवे भरे रहते हैं।

मेवाफ़रोश–(फा. पु.) मेवा आदि बेचनेवाला।

मेश–(फा. पु.) मेष; अज।

मेह–(फा. पु.) मेघ; बादल। वर्षा; वृष्टि।

मेहतर–(फा. पु.) एक मुसलमान जाति जिसका काम मलमूत्र आदि उठाना है; मुसलमान भंगी।

मेहतरानी–(फा. स्त्री.) "मेहतर" की स्त्री।

मेहनत–(अ. स्त्री.) श्रम; प्रयास।

मेहनताना–(फा. पु.) किसी काम की मजदूरी; पारिश्रमिक; श्रमदक्षिणा।

मेहनती–(उ. वि.) मेहनत करनेवाला; परिश्रमी।

मेहमान–(फा. पु.) अतिथि; अभ्यागत।

मेहमानदार–(फा. पु.) आतिथ्य करनेवाला।

मेहमानदारी–(फा. स्त्री.) अतिथि सत्कार; आतिथ्य।

मेहमानी–(उ. स्त्री.) आतिथ्य; अतिथि सत्कार। मेहमान या अतिथि बनकर रहने का भाव।

मेहर–(फा. स्त्री.) कृपा; दया। सूरज; सूर्य।

मेहरबान–(फा. वि.) कृपालु; दयावान।

मेहरबानी–(फा. स्त्री.) कृपा; दया।

मेहराब–(अ. स्त्री.) द्वार या दरवाज़े के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग।

मेहरावदार–(फा. वि.) जिसकी मेहराब हो; ऊपर की ओर गोल कटा हुआ।

मैदा–(फा. पु.) बहुत महीन आटा।

मैदान–(फा. पु.) लंबा चौड़ा समथल स्थान जिसमें पहाड़ी या घाटी आदि न हो; सपाट भूमि। वह लंबी चौड़ी भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय। युद्ध क्षेत्र।

मैलख़ोरा–(उ. वि) (रंग आदि) जिस पर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे।

मोआसिर–(अ. वि.) समकालीन।

मोज़ा–(फा. पु.) पैरों में पहनने की एक प्रकार की बुनी हुई थैली जिससे उंगलियों से लेकर पूरी या आधी टांग ढकी रहती है; पायताबा।

मोटा ताज़ा–(उ. वि) स्थूल शरीर-वाला; मांसल; हृष्ट-पुष्ट।

मोतक़िद–(अ. वि.) निष्ठावान्; नैष्ठिक।

मोतदिल–(अ. वि.) जो गुण के विचार

से न बहुत ठंडा हो, न बहुत गरम।

मोतबर–(अ वि) जिस पर एतबार हो, विश्वसनीय।

मोतबरी–(अ स्त्री) विश्वसनीयता, विश्वास-पात्रता। विश्वास।

मोतमिद–(अ वि) प्रामाणिक, विश्वासी।

मोदीखाना–(उ पु) आटा, दाल, चावल आदि रखने का घर, भंडार, "उन्नाण"।

मोम–(फा पु) वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहद की मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं।

मोमजामा–(फा पु) वह कपड़ा जिस पर मोम का लेप या रोगन चढ़ाया गया हो।

मोमबत्ती–(उ स्त्री) मोम या वैसे ही किसी और पदार्थ की बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।

मोमिन–(फा पु) धर्मनिष्ठ मुसलमान। जुलाहों की एक जाति।

मोमियाई–(फा स्त्री) नकली शिलाजीत।

मोमी–(फा वि) मोम का बना हुआ, मोम संबंधी।

मोरचा–(फा पु) लोहे का जंग। दर्पण पर जमी मैल। वह गड्ढा जो गढ़ के चारों ओर उसकी रक्षा के लिये खोदा जाता है, खाई, खंदक। वह स्थान जहाँ से सेना गढ़ या नगर आदि की रक्षा की जाती है।

मोरचाबंदी–(फा स्त्री) गढ़ के चारों ओर उसकी रक्षा के लिये यथास्थान सेना की नियुक्ति।

मोहब्बत–(फा स्त्री) दे "मुहब्बत"।

मोहर–(फा स्त्री) दे "मुहर"।

मोहरा–(फा पु) शतरंज की कोई गोटी। मिट्टी का साँचा जिसमें चीजें ढालते हैं। रेशमी वस्त्र को चिकना या चमकीला करने के लिये उसे बार बार रगड़ने का औजार घोटना। एक स्थावर विष, सिंगिया विष। एक काला पत्थर जिसमें विष दूर करने का गुण है, विषघ्न पत्थर।

मौका–(अ पु) किसी दुर्घटना का स्थान, घटनास्थल। देश, स्थान, जगह। अवसर, समय।

मौकूफ–(अ वि) रोका हुआ, बंद किया हुआ, स्थगित। नौकरी से अलग किया हुआ, बरखास्त। रद्द किया गया। अवलंबित, निर्भर।

मौकूफी–(फा स्त्री) स्थगित रखना। नौकरी से छुड़ाया जाना, नौकरी से निवृत्ति। अवलंबन, निर्भरता।

मौज़–(अ. स्त्री.) लहर; तरंग। मन की उमग; जोश। धुन; लगन; प्रवृत्ति। सुख; भोग-विलास; आनद। विभव; विभूति।

मौज़ा–(अ. पु.) ग्राम; गाँव।

मौज़ी–(उ. वि.) मनमाना काम करनेवाला; स्वेच्छाचारी। सदा प्रसन्न रहनेवाला; सुप्रसन्न।

मौजूद–(अ. वि.) उपस्थित; विद्यमान; हाज़िर। प्रस्तुत; तैयार।

मौजूदगी–(फा. स्त्री.) उपस्थिति; हाज़िरी।

मौजूदा–(फा. वि.) वर्त्तमान काल का; प्रस्तुत।

मौत–(अ. स्त्री) मरण; मृत्यु। मरने का समय; काल। अत्यंत कष्ट; आपत्ति।

मौतक़िद–(अ. वि.) एतक़ाद करनेवाला; विश्वास करनेवाला।

मौताद–(अ. स्त्री.) एक बार खाने योग्य औषध; मात्रा।

मौरूसी–(अ. वि.) बाप-दादा के समय से चला आया हुआ; पैतृक।

मौलवी–(अ. पु.) अरबी भाषा का पंडित। मुसलमान धर्म का आचार्य।

मौला–(अ. पु.) स्वामि। ईश्वर।

मौलाना–(अ. पु) मुसलमान पंडित या आचार्य।

मौलूद–(अ. पु.) मुहम्मद का जन्मदिन।

मौसिम–(अ. पु.) उपयुक्त समय। वर्ष का एक विभाग; ऋतु। विकास का समय; बहार।

मौसिमी–(उ. वि.) काल या ऋतु के अनुसार होनेवाला।

म्याद–(अ. स्त्री.) दे. "मीआद"।

म्यान–(फा. पु.) दे. "मियान"।

य

यकता–(फा. वि.) जो अपनी विद्या या विषय में एक ही हो; अद्वितीय।

यकताई–(फा. स्त्री.) अद्वितीयत्व।

यक-बयक, यकबारगी–(फा. क्रिवी.) अचानक; अकस्मात्; सहसा।

यकसां–(फा. वि.) समान; अनुरूप।

यकायक–(फा. क्रिवि.) अचानक।

यक़ीन–(अ. पु.) विश्वास। निश्चय। यथार्थ; सत्य।

यक़ीनन्–(अ. क्रिवि.) अवश्य; जरूर।

यखनी–(फा स्त्री) उबले हुए मांस का रसा, शोरवा।

यगानगी–(फा स्त्री) सबध, शत्रुत्व। मित्रता।

यगाना–(फा वि) अपना, स्वकीय। एक ही वश या गोत्र का ज्ञाति, स्वजन। अकेला।

यतीम–(फा वि) अनाथ।

यतीमखाना–(फा पु) अनाथालय।

यशब, यशम–(अ पु) एक प्रकार का हरा पत्थर जिसकी चौकोर टिकिया हृदय की रोग बाधा दूर करने के लिये यत्र की तरह गले में पहनी जाती है।

या–(फा अव्य) अथवा, वा।

–(अ अव्य) हे, ऐ।

याकूत–(अ पु) लाल रंग का एक बहुमूल्य पत्थर, लाल, माणिक।

याकूब–(अ पु) मुसलमानों के एक पैगंबर।

याद–(फा स्त्री) स्मरण, स्मृति। स्मरण करने की क्रिया, सस्मरण।

यादगार–(फा स्त्री) वह कृत्य या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाये रखने के लिये प्रस्तुत की जाय, स्मृति-चिह्न, स्मारक।

याददाश्त–(फा स्त्री) याद रखने की शक्ति, स्मरणशक्ति, स्मृति। स्मरण रखने के लिये लिखी हुई कोई बात।

यानी, याने–(अ अव्य) अर्थात्, तात्पर्य यह कि।

याबू–(फा पु) छोटा घोड़ा, टट्टू।

यार–(फा पु) मित्र, दोस्त। उपपति, जार।

याराना–(फा पु) मित्रता स्नेह। स्त्री और पुरुष का अनुचित सबध या प्रेम।

–(वि) मित्रों का सा, मित्रता का।

यारी–(फा स्त्री) मित्रता, मैत्री। स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम या सबध।

यारीबाश–(फा पु) रसिक। प्रेमी।

याल–(तु स्त्री) घोड़े की गर्दन के ऊपर के लंबे बाल, केसर।

यास–(फा स्त्री) निराशा।

यूनान–(अ पु) अयोनिया नामक युरोप का एक देश, यवन देश।

यूनानी–(अ वि) यूनान देश सबधी, यूनान का।

–(स्त्री) यूनान देश की भाषा। यूनान देश की चिकित्सा प्रणाली।

यौम–(अ पु) रोज, दिन।

र

रंगमहल–(उ. पु.) भोग विलास करने का स्थान।

रंगरूट–(अं. पु.) सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला सिपाही; "रिक्रूट"। किसी काम में पहले पहल हाथ डालनेवाला आदमी।

रंगरेज़–(फा. पु.) कपड़े रंगने का काम करनेवाला आदमी।

रंगरेज़िन–(उ. स्त्री.) "रंगरेज़" का स्त्री. रूप।

रंगसाज़–(फा. पु.) चीज़ों पर रंग चढ़ानेवाला। रंग बनानेवाला।

रंगसाज़ी–(फा. स्त्री.) रंग बनाने का काम।

रंगीन–(फा. वि.) रंगा हुआ। विलास-प्रिय; विलासी। चमत्कारपूर्ण; मजेदार।

रंगीनी–(फा. स्त्री.) विलासप्रियता।

रंगीला–(उ. वि.) आनंदी, विलासी; रसिक। सुंदर; खूबसूरत। प्रेमी; आसक्त।

रंज–(फा. पु.) दुख; खेद। शोक; व्यथा।

रंजकदान–(उ. पु.) बंदूक की प्याली जिस पर थोड़ी सी बारूद बत्ती लगाने के वास्ते रखी जाती है; रंजक रखने की प्याली।

रंजिश–(फा. स्त्री.) रंज होने का भाव; व्याकुलता। मनमुटाव; वैमनस्य। शत्रुता।

रंजीदगी–(फा. स्त्री.) दुख; व्यथा। अप्रसन्नता।

रंजीदा–(फा. वि.) दुखित; व्यथित। नाराज; अप्रसन्न।

रंडीबाज़–(उ. वि.) वेश्यागामी।

रंडीबाज़ी–(उ. स्त्री.) वेश्यागमन।

रंदा–(फा. पु.) एक औजार जिससे लकड़ी की सतह छीलकर चिकनी की जाती है।

रअय्यत–(अ. स्त्री.) प्रजा। किसान; कृषिक।

रईस–(फा. पु.) वह जिसके पास कई गाँव या जागीर हो; जागीरदार। बड़ा आदमी; धनी।

रक़बा–(अ. पु.) विस्तीर्ण। क्षेत्रफल (गणित)।

रक़म–(अ. स्त्री.) लिखने की क्रिया या भाव। छाप; मुहर। धन; संपत्ति। गहना; आभूषण। प्रकार; रीति; तरह। लगान की दर।

रक़मी–(उ. पु) वह किसान जिसके साथ कोई खास रिआयत की जाय।

रकाब–(फा स्त्री) घोड़ों की जीन का काठ का पावदान, जिससे बैठने में सहारा लिया जाता है, जीन पर से लटकाया हुआ लोहे का वलय जिस पर सवार पाँव रखते हैं।

रकाबदार–(फा पु) मिठाई बनाने और बेचनेवाला, हलवाई। अंग्रेजों मुसलमानों आदि का रसोइया, खानसामा, "बटलर"। घोड़े की खबरदारी और सेवा करनेवाला, साईस।

रकाबा–(फा पु) बड़ी थाली, परात।

रकाबी–(फा स्त्री) एक प्रकार की छिछली छोटी थाली, "प्लेट"।

रकीक–(अ वि) पतला।

रकीब–(अ पु) किसी पुरुष की प्रेमिका का दूसरा प्रेमी, एक ही स्त्री पर आसक्त होनेवाले दो पुरुष। प्रतियोगी।

रक्स–(फा पु) नृत्य, नाट्य, नाच।

रग–(फा स्त्री) शरीर की नस या नाड़ी। पत्तों की नस।

रगपट्ठा–(उ पु) शरीर के भीतरी भिन्न भिन्न अंग।

रगबत–(अ स्त्री) चाह, रुच्छा।

रगरेशा–(फा पु) पत्तों की नसें। शरीर के अंदर का प्रत्येक अंग। किसी विषय की भीतरी और सूक्ष्म बातें।

रजा–(अ स्त्री) मरजी, इच्छा, अभिरुचि। रुखसत, छुट्टी। आज्ञा, अनुमति। स्वीकृति।

रज़ाई–(फा स्त्री) एक प्रकार का रुईदार ओढ़ना।

रजामद–(फा वि) जो किसी बात पर राजी हो गया हो, सहमत।

रजामदी–(फा स्त्री) स्वीकृति, अंगीकार।

रजील–(अ वि) छोटी जाति का, नीच।

रजीलपन–(उ पु) नीचता।

रदीफ–(अ स्त्री) अक्षर क्रम।

रद्द–(अ वि) जो काट, छांट, तोड़ या बदल दिया गया हो। जो खराब या निकम्मा हो गया हो, रद्दी। –(स्त्री) वमन, "वांति"।

रद्दबदल–(फा पु) अदल बदल, काट छांट, परिवर्तन।

रद्दी–(फा वि) निकम्मा, बेकार, निष्प्रयोजन।

रद्दीखाना–(फा पु) वह स्थान जहाँ रद्दी या खराब चीजें रखी या फेंकी जावें।

रपट–(अं॰ स्त्री) सूचना "रीपोर्ट"।

रफल–(अं॰ स्त्री) विलायती ढंग की एक प्रकार की बंदूक।

रफा–(अ वि) दूर किया हुआ, निवारित। शांत, निवृत्त।

रफ़ादफ़ा = निबटाया हुआ; शांत ।

रफ़ीदा–(अ. पु.) वह गद्दी जिसके ऊपर जीन कसा जाता है । कबूतरों के रहने के लिये काठ का बनाया हुआ खानेदार संदूक; दरबा । गोल पगडी ।

रफ़ू–(अ. पु.) फटे हुए कपडे के छेद में तागे भरकर उसे बराबर करना; फटे कपड़े को दुरुस्त करना ।

रफ़ूगर–(फा. वि.) रफ़ू करनेवाला ।

रफ़ूगरी–(फा. स्त्री.) रफ़ू करने का काम।

रफ़ूचक्कर–(उ. वि.) चंपत; गायब ।

रफ़्तनी–(फा. स्त्री.) जाने की क्रिया या भाव; गमन; निर्गमन । माल का बाहर या विदेश जाना ।

रफ़्तार–(फा. स्त्री.) चाल; गति ।

रफ़्ता रफ़्ता–(फा. क्रिवि.) शनैः शनैः, धीरे धीरे ।

रब–(अ. पु) खुदा; ईश्वर ।

रबड़–(अं.* पु.) एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों के दूध या निर्यास से बनता है ।

रबाब–(अ. पु) सारंगी की तरह का एक बाजा ।

रबाबिया–(उ. पु.) रबाब बजानेवाला ।

रबी–(अ. स्त्री.) वसंत ऋतु । वह फ़सल जो वसंत ऋतु में काटी जाय ।

रब्त–(अ. पु.) अभ्यास; साधन; मश्क । संबंध; मेल ।

रब्त जब्त = मेल जोल; घनिष्ठता ।

रमज़ान–(अ. पु.) एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान उपवास व्रत का आचरण करते हैं ।

रमल–(अ. पु.) एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पासे फेंक कर शुभाशुभ फल जाना जाता है ।

रमूज़–(अ. स्त्री.) तिरछी चितवन; कटाक्ष । सैन; संकेत; इंगित । प्रहेलिका; पहेली । श्लेष ।

रम्माल–(अ. पु.) पासा फेंककर शुभाशुभ फल बतलानेवाला; ज्योतिषी ।

रयाज़त–(अ. स्त्री.) तप; तपस्या ।

रयाज़ी–(अ. पु.) तपस्वी ।

रय्यत–(अ. पु.) दे. "रअय्यत" ।

रवन्ना–(फा. पु.) वह नौकर जो स्त्रियों के कामकाज करने या सौदा लाने को ड्योढी पर रहता है । वह कागज जिस पर रवाना किये हुए माल का ब्योरा लिखा रहता है; बीजक; "इन्वायस" । राहदारी का परवाना ।

रवां–(फा. वि.) बहता हुआ; प्रचलित ।

रवा–(फा. वि.) उचित, ठीक । प्रचलित । प्रगतिशील ।

रवाज–(फा स्त्री) परिपाटी, प्रथा, रीति।

रवादार–(फा वि) संबंध या लगाव रखनेवाला।

–(उ वि) जिसमें कण या दाने हों।

रवानगी–(फा स्त्री) रवाना होने की क्रिया या भाव, प्रस्थान। विदाई।

रवाना–(फा वि) जो कहीं से चल पड़ा हो, प्रस्थित। भेजा हुआ।

रवानी–(फा स्त्री) बहाव, प्रवाह।

रवायत–(अ स्त्री) कहानी, कथा।

रविश–(फा स्त्री) गति, चाल। तौर, तरीक़ा, ढंग। क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।

रवैया–(फा पु) दे "रवाज"।

रश्क–(फा पु) ईर्ष्या, डाह।

रसद–(फा स्त्री) बाँट, भाग, हिस्सा। आहार सामग्री जो पकाया न गया हो, आम पदार्थ।

रसदार–(उ वि) जिसमें रस हो, रस भरित। स्वादिष्ट, रुचिपूर्ण।

रसाई–(फा स्त्री) पहुँचने की क्रिया, पहुँच।

रसीद–(फा स्त्री) प्राप्ति पहुँच। प्राप्ति का प्रमाणपत्र।

रसूम–(अ पु) 'रस्म' का ब० रूप, नियम, विधि। वह धन जो किसी को किसी प्रचलित रस्म या प्रथा के अनुसार दिया जाता हो, नेग, लाग। वह धन जो भेंट के रूप में दिया जाय। दक्षिणा।

रसूल–(अ पु) ईश्वर का दूत।

रसोईदार–(उ वि) रसोई बनानेवाला, भोजन पकानेवाला।

रस्ता–(फा पु) दे 'रास्ता'।

रस्म–(अ स्त्री) मेल जोल। परिपाटी, संप्रदाय, प्रथा।

रहगीर–(फा पु) दे "राहगीर"।

रहजन–(फा पु) दे "राहजन"।

रहम–(अ पु) दया, करुणा। अनुकंपा, अनुग्रह। गर्भाशय, कोख।

रहमत–(अ स्त्री) दया, कृपा।

रहमदिल–(फा वि) दयालु, कृपालु।

रहमान–(अ पु) बड़ा दयालु दया निधि। ईश्वर।

रहल–(अ स्त्री) पढ़ने के समय पुस्तक रखने की एक प्रकार की छोटी चौकी, व्यासपीठ।

रहीम–(अ वि) दयालु, कृपालु। ईश्वर।

राज–(फा पु) रहस्य, भेद।

राजी–(अ वि) बड़ी हुई बात मानने को तैयार सहमत। नीरोग, स्वस्थ, चंगा। खुश, प्रसन्न। सुखी। अनुकूल।

राज़ीनामा–(फा. पु.) वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें, सधि-पत्र।

रातिब–(अ. पु.) पशुओं का आहार। दैनिक भत्ता।

रान–(फा. स्त्री.) जाघ; ऊरु।

राय–(फा. स्त्री.) सम्मति; मत; सलाह।

रायज–(अ. वि.) जिसका रवाज हो; प्रचलित।

राशी–(अ. वि.) रिश्वत लेनेवाला।

रास–(अ. स्त्री.) घोड़े की लगाम; बागडोर।

रास्त–(फा वि.) सीधा; सरल। सही, ठीक। उचित; उपयुक्त।

रास्तगीर–(फा. पु.) पथिक; यात्री।

रास्तगो–(फा. वि.) ठीक या सच बोलने वाला; सत्यवादी।

रास्तबाज़–(फा. वि.) सदाचारी।

रास्तबाज़ी–(फा. स्त्री.) सदाचार।

रास्ता–(फा. पु.) मार्ग; राह; पथ। प्रथा; पद्धति। उपाय; युक्ति। नियम; कायदा।

रास्ती–(फा. स्त्री.) सत्य; यथार्थ।

राह–(फा. स्त्री.) मार्ग; पथ। प्रथा; चाल। नियम, कायदा।

राहखर्च–(फा. पु.) मार्ग-व्यय।

राहगीर–(फा. पु.) पथिक, यात्री।

राहज़न–(फा. पु.) डाकू; लुटेरा।

राहज़नी–(फा. स्त्री.) डकैती; लूट।

राहत–(अ. स्त्री.) आराम; सुख।

राहदारी–(फा. स्त्री.) राह पर चलने का महसूल; सड़क का कर। चुंगी; महसूल।

राहबर–(फा. पु.) मार्गदर्शक। नेता।

राही–(फा. पु.) यात्री; पथिक।

रिंद–(फा. पु.) धार्मिक बंधनों को न माननेवाला पुरुष। मनमौजी आदमी; स्वच्छद पुरुष। मतवाला; मदमत्त।

रिआयत–(अ. स्त्री.) कोमल और दया-पूर्ण व्यवहार; नरमी। कमी; न्यूनता। ध्यान; विचार।

रिआया–(अ. पु.) आश्रित। प्रजा।

रिकाब–(फा. स्त्री.) दे. "रकाब"।

रिज़्क–(अ. पु.) जीविका; वृत्ति।

रियासत–(अ. स्त्री.) राज्य; "समस्थान"। नेतृत्व; आधिपत्य। ऐश्वर्य; वैभव।

रिवाज़–(अ. पु.) परिपाटी; प्रथा।

रिश्ता–(फा. पु.) नाता; संबंध।

रिश्तेदार–(फा. पु.) बंधु; सबंधी।

रिश्वत–(अ. स्त्री.) वह द्रव्य जो किसी को अपने अनुकूल कोई कार्य कराने

के लिये अनुचित रीति से दिया जाय, घूस, उत्कोच, "लच"।

रिश्वतखोर–(फा पु) रिश्वत या "लच" लेनेवाला।

रिश्वतखोरी–(फा स्त्री) उत्कोच या "लच" लेने की क्रिया या आदत।

रिसालदार–(फा पु) घुड़सवार सेना का एक अफसर।

रिसाला–(फा पु) घुड़सवारों का दल, अश्वसेना।

–(अ स्त्री) छोटी किताब, पुस्तिका। मासिक पत्र, पत्रिका।

रिहल–(अ स्त्री) दे "रहल"।

रिहा–(फा वि) विमुक्त, छूटा हुआ।

रिहाई–(फा स्त्री) मुक्ति, विमोचन, छुटकारा।

रुआब–(अ पु) दे "रोब"।

रुक्का–(अ पु) छोटा पत्र, चिट्ठी। वह लेख या कागज जो हुंडी या ऋण लेने वाले रुपया लेते समय लिखकर महाजन को देते हैं।

रुख–(फा पु) गाल, कपोल। मुख, मुँह। मुख का भाव, सूरत। मन की इच्छा जो मुख के भाव से प्रकट हो। कृपादृष्टि। सामने या आगे का भाव। शतरंज का एक मोहरा। बाजार का भाव।

–(क्रिवि) तरफ, ओर। सामने।

रुखसत–(अ स्त्री) जाने की आज्ञा, अनुमति। रवानगी, प्रस्थान। फुरसत, विराम।

–(वि) जो चल पड़ा हो।

रुखसती–(अ स्त्री) विदाई।

रुखसार–(फा पु) गाल, कपोल।

रुजू–(अ वि) झुका हुआ, प्रवृत्त।

रुतबा–(अ पु) ओहदा, पद। इज्जत, प्रतिष्ठा।

रुबाई–(अ स्त्री) फारसी की एक प्रकार की कविता या गाना।

रुमाली–(फा स्त्री) एक तरह का लंगोट। मुगदर हिलाने का एक ढंग।

रुसवा–(फा वि) निंदित, अपमानित।

रुसवाई–(फा स्त्री) बदनामी, अपमान।

रुमूख–(अ स्त्री) मेल जोल, स्नेह।

रुस्तम–(फा पु) फारस के एक प्राचीन वीर का नाम। बड़ा वीर।

रू–(फा पु) मुँह, चेहरा। द्वारा, कारण। आगा, सामना।

रूदाद–(फा स्त्री) समाचार, वृत्तांत। दशा, हालत। विवरण। अदालत की कार्रवाई।

रूपोश–(फा वि) छिपा हुआ। भागा हुआ, पलायित।

रूपोशी–(फा. स्त्री.) छिपाव; गुप्तता। भाग जाना; पलायन।

रूबकार–(फा. पु) सामने उपस्थित करने का भाव; पेशी। अदालत का हुक्म। आज्ञापत्र।

रूबरू–(फा. क्रिवि) सम्मुख; सामने।

रूम–(फा. पु.) तुर्की देश; टर्की।

रूमाल–(फा. पु.) कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जो हाथ मुँह पोंछने के काम आता है। चौकोना शाल या दुपट्टा।

रूमाली–(फा. स्त्री) एक तरह का लंगोट।

रूमी–(फा. वि.) रूम या तुर्की देश संबंधी। रूम देश का निवासी।

रूस–(फा. पु.) रशिया देश।

रूसी–(फा. वि) रूस देश का। रूस देश का निवासी।
–(स्त्री.) रूस देश की भाषा।

रूह–(अ. स्त्री) आत्मा; जीव। सत्त; सार। एक प्रकार का इत्र।

रेख़ता–(फा. पु.) एक प्रकार की गजल। उर्दू का पुराना नाम।

रेग–(फा. स्त्री.) बालू; रेत।

रेगिस्तान–(फा. पु.) बालू का मैदान; मरुभूमि।

रेज़गी–(फा. स्त्री.) टुकड़ा। छोटे सिक्के; "चिल्लर"।

रेज़ा–(फा. पु) बहुत छोटा टुकड़ा; सूक्ष्म खंड। सुनारों का एक औजार। संख्या; अदद।

रेज़िश–(फा. स्त्री) सर्दी से होनेवाली एक बीमारी जिसमें नाक और मुँह से कफ निकलता है; जुकाम।

रेल, रेल-गाड़ी–(अं. स्त्री.) भाप के जोर से चलनेवाली गाड़ी; वाष्पयान।

रेवंद–(फा. पु.) एक पहाड़ी पेड़।

रेशम–(फा. पु.) एक प्रकार का महीन चमकीला और दृढ तंतु जिसे एक तरह के कीड़े तैयार करते हैं और जिससे पीतांबर आदि कपड़े बुने जाते हैं; कौशेय; "पट्ट"।

रेशमी–(फा. वि.) रेशम का बना हुआ।

रेशा–(फा. पु.) तंतु या महीन सूत जो पौधों की छालों से निकलता है।

रेहन–(फा. पु.) महाजन के पास माल या जायदाद इस शर्त पर रखकर कर्जा लेना कि कर्जा चुकाने पर माल या जायदाद वापस कर दिया जाय; बंधक; गिरवी।

रेहनदार–(फा. पु) वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो।

रेहननामा–(फा. पु.) वह कागज़ या पत्र जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों।

रैयत–(अ स्त्री) प्रजा। किसान, कृषिक।

रोगन–(फा पु) तेल, चिकनाई। वह पतला लेप जिसे किसी वस्तु पर पोतने से चमक आवे, "पालिश"। वह मसाला जिसे मिट्टी के बरतनों पर चढ़ाते हैं।

रोगनी–(फा वि) रोगन किया हुआ।

रोज–(फा पु) दिन, दिवस।
–(क्रिवि) प्रति दिन, नित्य।

रोजगार–(फा पु) जीविका के लिये काम, वृत्ति, धंधा। व्यापार, वाणिज्य।

रोजगारी–(फा पु) व्यापारी, वणिक।

रोजनामचा–(फा पु) दिनचर्या की पुस्तक, दैनंदिनी, "डायरी"।

रोजमर्रा–(फा क्रिवि) प्रतिदिन, नित्य।
–(पु) नित्य के व्यवहार में आनेवाली भाषा, प्रचलित या बोलचाल की भाषा।

रोजा–(फा पु) उपवास व्रत। वह उपवास जो मुसल्मान रमजान के महीने में करते हैं।

रोजाना–(फा वि) नित्य का, दैनिक।
–(पु) दैनिक भत्ता।

रोजी–(फा स्त्री) नित्य का भोजन या भत्ता। जीवन वृत्ति, जीविका।

रोजीदार–(फा पु) दैनिक भत्ता पानेवाला।

रोजीना–(फा वि) रोज का।
–(पु) दैनिक वेतन या भत्ता।

रोजेदार–(फा वि) रमजान के महीने में उपवास रखनेवाला।

रोब–(अ पु) प्रताप, आतंक, भय।
रोबदाब = गुण, प्रताप।

रोबदार–(फा पु) जिसका आतंक हो, प्रभावशाली, तेजस्वी।

रोबीला–(उ वि) प्रभावशाली, प्रतापी।

रोशन–(फा वि) जलता हुआ, प्रदीप्त। उज्ज्वल, प्रकाशमान्। प्रसिद्ध, नामी। प्रकट, जाहिर।

रोशनचौकी–(फा स्त्री) फूंककर बजाने का एक बाजा, नफीरी।

रोशनदान–(फा पु) प्रकाश आने का छिद्र, गवाक्ष।

रोशनाई–(फा स्त्री) लिखने की स्याही, मसि। प्रकाश, उजाला।

रोशनी–(फा स्त्री) उजाला, प्रकाश। दीपक, दिया। दीपमाला का प्रकाश। ज्ञान का प्रकाश।

रौंद–(अ * स्त्री) चक्कर, गश्त।

रौ–(फा स्त्री) गति, चाल। वेग, झोंक। पानी का तेज बहाव; प्रवाह। किसी बात की धुन, उमंग। ढंग, तौर, तरीका।

रौग़न–(अ. पु.) तेल। लाख आदि का बना हुआ पक्का रंग।

रौज़ा–(अ. पु.) कब्र; समाधि। बाग, उपवन।

रौनक़–(अ. स्त्री.) वर्ण और आकृति; स्वरूप। दीप्ति; चमक दमक; कांति। प्रफुल्लता; विकास। शोभा; छटा; सुहावनापन।

रौनक़दार–(फा. वि.) चमकीला, कांतियुक्त। सुहावना; रम्य।

ल

लंग–(फा. पु.) लंगड़ापन।

लंगड़ा–(फा. वि.) जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हो; पंगु। जिसका एक पाया टूटा हो।

लंगड़ाई–(उ. स्त्री.) लंगड़ा होने का भाव।

लंगड़ाना–(उ. अक्रि.) लंगड़ा होकर चलना।

लंगड़ी–(उ. स्त्री.) कुश्ती का एक दाव।

लंगर–(फा. पु.) लोहे का एक प्रकार का बहुत बड़ा काँटा जिसका व्यवहार बड़ी बड़ी नावों या जहाजों को एक ही स्थान पर ठहराये रखने के लिये होता है। लकड़ी का वह कुंदा जो हरहाई या उपद्रवी गाय के गले में बाँधा जाता है। लटकती हुई कोई भारी चीज। लोहे की मोटी और भारी जंजीर या शृंखला। चाँदी की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर या तोड़ा जो पैर में पहना जाता है। पहलवानों का लंगोट। कपड़े में के वे टाके जो दूर दूर पर डाले जाते हैं; कच्ची सिलाई। वह भोजन जो प्रायः प्रतिदिन दरिद्रों को बाँटा जाता है; सदावर्त। वह स्थान जहाँ दरिद्रों आदि को भोजन बाँटा जाता हो; अन्नसत्र।

–(वि.) भारी; वजन का। नटखट; उपद्रवी; ऊधमी।

लंगरख़ाना–(उ. पु.) अन्नसत्र।

लंगरगाह–(फा. पु.) समुद्र के किनारे पर का वह स्थान जहाँ लंगर डालकर जहाज ठहराये जाते हैं।

लंतरानी–(अ. स्त्री.) व्यर्थ की बड़ी बड़ी बातें; गप्प।

लंबर–(उ. पु.) दे. "नंबर"।

लंबरदार-(उ पु) दे "नंबरदार"।

लकदक-(फा वि) मैदान जिसमें पेड़ आदि न हों। साफ सुथरा, स्वच्छ।

लकब-(अ पु) उपाधि, विरद। पद, "खिताब"।

लकलक-(अ पु) लंबी गर्दन का एक जल पक्षी, ढेंक।

—(वि) बहुत दुबला पतला।

लकवा-(अ पु) एक वातरोग जिसमें प्राय चेहरा टेढ़ा हो जाता है।

लक्का-(अ पु) एक प्रकार का कबूतर।

लखलखा-(फा पु) मूर्छा दूर करने का कोई सुगंधित द्रव्य।

लगन-(फा पु) एक प्रकार की थाली।

लगनी-(फा स्त्री) छोटी थाली परात।

लगाम-(फा स्त्री) वह ढाँचा जो घोड़े के मुँह में रखा जाता है और जिसके दोनों ओर रस्सा या चमड़े का तसमा बंधा रहता है। इस ढाँचे के दोनों ओर बंधा हुआ रस्सा या चमड़े का तसमा हाँकनेवाले या सवार के हाथ में रहता है, बाग, बागडोर।

लजीज-(अ वि) जायकेदार, स्वादिष्ट।

लज्जत-(अ स्त्री) स्वाद, रुचि।

लज्जतदार-(फा वि) रुचिर, स्वादिष्ट।

लट्ठाबंदी-(उ स्त्री) जमीन की साधारण नाप।

लतखोर, लतखोरा-(उ वि) सदा लात खानेवाला। नीच, कमीना। दरवाजे पर पड़ा हुआ पैर पोंछने का बिछावन, पायदाज।

लताफत-(अ स्त्री) माधुर्य। कोमलता।

लतीफ-(अ वि) चित्ताकर्षक, मनोहर। बढ़िया।

लतीफा-(अ पु) हँसी की बात, चुटकुला। चमत्कारपूर्ण बात।

लफंगा-(फा वि) लंपट, व्यभिचारी। कुमार्गी, दुराचारी।

लफ्ज-(अ पु) शब्द, बात, वचन।

लफ्जी-(अ वि) शब्द संबंधी, शाब्दिक।

लफ्फाज-(अ वि) बहुत बातें करने वाला, बातूनी।

लफ्फाजी-(अ स्त्री) बढ़ बढ़ कर बातें करना, डींग मारना।

लब-(फा पु) ओष्ठ, ओंठ, अधर। पास, समीप।

लबादा-(फा पु) मोटे कपड़े का बना हुआ या रूईदार अँगरखा; दगला। पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा, चोगा, जैसा "गाउन"।

लबालब (फा क्रि वि) मुँह या किनारे तक, परिपूर्ण, भरपूर।

लमहा-(अ पु) क्षण, निमिष।

लरज़ा–(फा. पु.) कंपन; थरथराहट। भूकंप। विषम-ज्वर; जूड़ी।

लवाज़मत–(अ. स्त्री.) सामग्री; उपकरण।

लवाज़मा–(अ. पु.) किसी के साथ रहनेवाला दल बल और साज़-सामान; परिवार। आवश्यक सामग्री।

लशकर–(फा. पु.) सेना; सैन्य; फ़ौज। भीड़भाड़; दल। सेना का पड़ाव; छावनी। जहाज में काम करनेवालों का दल।

लशकरी–(फा वि) फ़ौज का; सेना संबंधी; सैनिक। जहाज पर काम करनेवाला; खलासी।
–(स्त्री.) खलासियों की भाषा।

लहजा–(अ. पु) गाने या बोलने का ढंग; स्वर।

लहज़ा–(अ. पु.) पल; निमिष; क्षण।

लहद–(अ. स्त्री.) कब्र, समाधि।

लहनदार–(उ. पु) लहन या ऋण देनेवाला; महाजन।

लहमा–(अ. पु.) पल; क्षण; निमिष।

ला–एक अरबी उपसर्ग जो अभाव सूचित करता है; जैसे–लाइंतहा = अनंत, लाइब्तदा = अनादि।

लाकलाम–(अ. क्रिवि.) निस्संदेह।

लाग़र–(अ. वि.) दुबला; कृश।

लाचार–(फा. वि.) जिसका कुछ वश न चलता हो; विवश; मजबूर।
–(क्रिवि) विवश या मजबूर होकर।

लाचारी–(फा. स्त्री.) विवशता।

लाजवर्द–(फा. पु.) एक प्रकार का प्रसिद्ध बहुमूल्य पत्थर; राजवर्तक।

लाजवाब–(फा. वि.) अनुपम; बेजोड़। निरुत्तर; चुप; मौन।

लाज़िम–(अ. वि.) जो अवश्य कर्तव्य हो; आवश्यक। उचित; उपयुक्त।

लाज़िमी–(अ. वि.) ज़रूरी; आवश्यक। अनिवार्य।

लाट–(अं. पु.) किसी प्रांत या देश का सबसे बड़ा शासक; "गवर्नर"।

लादावा–(फा. वि.) जिसका कोई दावा न रह गया हो।

लानत–(अ. स्त्री.) धिक्कार; निंदा।

लापता–(उ. वि.) जिसका पता न लगे। खोया हुआ। गुप्त।

लापरवा, लापरवाह–(फा. वि.) जिसे किसी बात की परवा न हो; निश्चिंत। असावधान; अजागरूक।

लापरवाही–(फा. स्त्री.) निश्चिंतता। असावधानी।

लाम–(फा. पु.) सेना; फौज। बहुत से लोगों का समूह, भीड़।

लामा–(तिब्बती पु) तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य ।

लायक़–(अ वि) उचित, ठीक । मुनासिब, उपयुक्त । सुयोग्य, गुणवान। समर्थ, सामर्थ्यवान ।

लायक़ी–(उ स्त्री) लायक़ होने का भाव या धर्म, योग्यता, उपयुक्तता ।

लालटेन–(अं स्त्री) दे "कंदील" ।

लाला–(फा पु) पोस्त या अफ़ीम के पौधे का लाल रंग का फूल ।

लावल्द–(फा वि) निस्संतान, अपुत्र ।

लावल्दी–(फा स्त्री) निस्संतान होने की अवस्था, संतानहीनता ।

लावारिस–(अ वि) जिसका वारिस या उत्तराधिकारी न हो ।

लाश–(फा स्त्री) मृतक देह, शव ।

लाशा–(फा वि) कमज़ोर निर्बल ।

लासानी–(फा वि) अनुपम, अद्वितीय।

लाहौल–(अ पु) एक अरबी वाक्य का पहला शब्द जिसका व्यवहार प्राय भूत प्रेत को भगाने के लिये किया जाता है ।

लिफाफा–(अ पु) चिट्ठी आदि भेजने की कागज़ की चौकोर थैली, 'कवर'। दिखावटी कपड़े-लत्ते; सजावट की पोशाक । ऊपरी आडंबर, बनावटीपन । जल्दी नष्ट होनेवाली वस्तु, नश्वर पदार्थ ।

लिबास–(अ पु) पहनने का कपड़ा, पहनावा, पोशाक ।

लियाक़त–(अ स्त्री) योग्यता, अर्हता। गुण, हुनर । सामर्थ्य, शक्यता । शील, शिष्टता ।

लिल्लाह–(अ पु) अल्लाह के नाम पर ।

लिहाज–(अ पु) व्यवहार या बरताव में किसी बात का ध्यान । मेहरबानी का ख्याल, कृपादृष्टि । मुरव्वत, शील संकोच । सम्मान या मर्यादा का ध्यान। लज्जा, शर्म । पक्षपात, तरफ़दारी ।

लिहाफ़–(अ पु) रात को सोते समय ओढ़ने का रूईदार कपड़ा भारी रज़ाई।

लुआब–(अ पु) लसदार गूदा, चिपचिपा गूदा, लासा ।

लुआबदार–(फा वि) लसदार ।

लुक़मा–(अ पु) कौर, ग्रास, कवल ।

लुत्फ़–(अ पु) कृपा, दया । खूबी, उत्कृष्टता । मज़ा, आनन्द । मनोरंजकता, रोचकता ।

लुब्बेलुबाब–(अ पु) किसी बात का तत्व, सारांश ।

लैजम–(फा स्त्री) एक प्रकार की नरम और लचकदार कमान जिससे

धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है। वह कमान जिसमें लोहे की जंजीर लगी रहती है और जिससे कसरत करते हैं।

लेनदार–(उ. वि.) वह जिससे ऋण लिया गया हो; महाजन। जिसका कुछ बाकी हो।

लेहाज़ा–(अ. क्रिवि.) इस वास्ते; इसलिये।

लैस–(अ. वि.) फौजी पोशाक और हथियारों से सजा हुआ; सन्नद्ध; कटिबद्ध।

–(पु.) कपड़े पर चढ़ाने का फीता।

लोबान–(अ. पु.) एक वृक्ष का सुगंधित गोंद जो जलाने और दवा के काम में आता है, धूप; "साम्राणि"।

लौंडेबाज़–(उ. वि.) बालकों के साथ प्रकृति-विरुद्ध आचरण करनेवाला।

व

व–(फा अव्य.) और।

वक़अत–(अ. स्त्री.) गौरव; मान।

वकालत–(अ. स्त्री.) दूत-कर्म। दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बातचीत करना। मुक़दमे में किसी भी पक्ष की तरफ से बहस करने का पेशा; वकील का काम।

वकालतनामा–(फा. पु.) वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ से मुकदमे में बहस करने के लिये नियुक्त करता है।

वकील–(अ. पु.) दूत। राजदूत। प्रतिनिधि। दूसरे का पक्ष मंडन करने वाला। वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और न्यायालय में वादी या प्रतिवादी की ओर से बहस करे।

वक़ूफ़–(अ. वि.) परिचित।

वक़्त–(अ. पु.) समय; काल। अवसर, मौका। सावकाश; विराम। मृत्युकाल।

वक़्तन् फ़वक़्तन्–(अ. क्रिवि.) कभी-कभी। यथासमय।

वक़्फ़–(अ. पु.) वह संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गयी हो; धर्म के काम में लगी हुई जायदाद। धर्मार्थ दान।

वक़्फ़नामा–(फा. पु.) दानपत्र।

वक्फा–(अ स्त्री) छुट्टी।

वगैरह–(अ अव्य) इत्यादि, आदि।

वजन–(अ पु) भार, बोझ। तौल। मान, मर्यादा। शब्द की मात्रा।

वजनी–(अ वि) भारी, बोझल।

वजह–(अ स्त्री) हेतु, कारण।

वजा–(अ स्त्री) बनावट, रचना। सजधज, रूप रंग। दशा, अवस्था। रीति, प्रणाली। वह रकम जो किसी रकम में से काट ली गयी हो, कटौती।

वजादार–(फा वि) जिसकी बनावट आदि बहुत अच्छी हो, सुन्दर।

वजादारी–(फा स्त्री) बनाव सिंगार। मान मर्यादा का निर्वाह।

वजारत–(अ स्त्री) वजीर या मंत्री का काम या पद।

वजीफा–(अ पु) वह आर्थिक सहायता जो विद्वानों, छात्रों आदि को दी जाती है, छात्रवृत्ति आदि। जप या पाठ।

वजीर–(अ पु) मंत्री, अमात्य। शतरंज की एक गोटी।

वजीरी–(अ स्त्री) वजीर का काम या पद।

–(पु) घोड़ों की एक जाति।

वजू–(अ पु) नमाज पढ़ने के पूर्व हाथ पाँव आदि धोना, पादप्रक्षालन।

वजूहात–(अ स्त्री) "वजह" का बहु रूप।

वतन–(अ पु) जन्मभूमि। वासस्थान।

वफा–(अ स्त्री) अपने वचन का पालन करना, बात निबाहना। निर्वाह, पूर्णता। मुरव्वत, सुशीलता।

वफात–(अ स्त्री) मृत्यु।

वफादार–(फा वि) वचन या कर्तव्य का पालन करनेवाला, कर्तव्यपरायण। अपने काम को ईमानदारी से करनेवाला, सत्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ।

वफादारी–(फा स्त्री) कर्तव्यपरायणता। धर्मनिष्ठता।

वबा–(अ स्त्री) "प्लेग" आदि भयंकर संक्रामक रोग।

वबाल–(अ पु) बोझ, भार। आपत्ति, कठिनाई। ईश्वरीय कोप। पाप का फल।

वरक–(अ पु) पत्र। पुस्तकों का पन्ना, पृष्ठ। सोने चाँदी आदि का ऐसा पत्तर जिसका एकदम हलका करके पीटकर तैयार किया गया हो, सोने चाँदी के पत्तर।

वरजिश–(फा स्त्री) कसरत, व्यायाम।

वर्दी–(अ स्त्री) वह पहनावा जो किसी विशेष विभाग के अफसरों और नौकरों के लिए नियत हो, ऐसा

पुलिस आदि विभाग के कर्मचारियों की पोशाक या "उड़ुपु"।

वरना–(अ. अव्य.) नहीं तो; यदि ऐसा न होगा तो; अन्यथा।

वलवला–(अ. पु.) आवेश; उमंग।

वली–(अ. पु.) मालिक; स्वामी। शासक; अधिपति। साधू; संत।

वल्द–(अ. पु.) औरस पुत्र।

वल्दियत–(अ. स्त्री.) पिता के नाम का परिचय; प्रवर।

वल्ला–(अ. अव्य.) अल्लाह की कसम। शाबाश।

वसअत–(अ. स्त्री.) विस्तार; फैलाव। समाई, अटने की जगह; गुंजाइश। चौड़ाई। सामर्थ्य; शक्ति।

वसमा–(अ. पु.) सफेद बालों को काला करने की औषधि, केश कल्प। शरीर पर मलने के लिये सरसों, तिल आदि का लेप; अभ्यंग। एक प्रकार का छपा कपड़ा।

वसवास–(अ. पु.) संदेह, भ्रम। प्रलोभन; मोह।

वसीक़ा–(अ. पु) वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी खज़ाने में जमा किया जाय कि उसका सूद उस आदमी के वारिसों को मिला करे। ऐसे धन से आया हुआ सूद; वर्षाशन।

वसीयत–(अ. स्त्री.) अपनी संपत्ति के विभाग और प्रबंध आदि के संबंध में की हुई व्यवस्था जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है; मरण-शासन; "उइल"।

वसीयतनामा–(फा. पु.) वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी संपत्ति का विभाग और प्रबंध मेरे मरने के पीछे किस प्रकार हो; मृतिपत्र।

वसीला–(अ. पु.) संबंध। सहारा; आश्रय। जरिया, द्वार।

वसूल–(अ. वि.) मिला हुआ; प्राप्त। जो चुका लिया गया हो।

वसूलयाबी–(फा. स्त्री.) प्राप्ति।

वसूली–(उ. स्त्री.) दूसरे से रुपया-पैसा या वस्तु लेने का काम; प्राप्ति।

वस्फ़–(अ. पु.) प्रशंसा, स्तुति। गुण; धर्म। विशेषता।

वस्ल–(अ. पु) दो चीज़ों का मेल; मिलन। संयोग; मिलाप; भेंट।

वहम–(अ. पु.) मिथ्या धारणा; झूठा ख्याल। भ्रम; भ्रांति। व्यर्थ की शंका; मिथ्या संदेह।

वहमी–(उ. वि.) वहम करनेवाला; भ्रांत। जो व्यर्थ संदेह में पड़े।

वहशत–(अ स्त्री) असभ्यता। उजड्डपन। पागलपन। चित्त की चचलता, अधीरता। विकलता, खिन्नता। डरावनापन, भयकरता।

वहशी–(अ वि) जगल में रहनेवाला। जो पालतू न हो, जगली। असभ्य। भड़कीला।

वहाबी–(अ वि) अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ मुसलमानों का एक सप्रदाय। इस सप्रदाय का अनुयायी।

वाईज–(फा पु) उपदेशक, धर्मगुरु।

वाकई–(अ वि) सच, वास्तव।
–(अव्य) वास्तव में, सचमुच।

वाक्फ–(अ स्त्री) श्रद्धा।

वाकफियत–(अ स्त्री) जानकारी, ज्ञान। परिचय, जान पहचान।

वाक्या–(अ पु) घटना, दुर्घटना। वृत्तांत, समाचार।

वाक़ा–(अ वि) होनेवाला, घटनेवाला। स्थित, खड़ा।

वाक़िआ–(अ पु) दे "वाकया"।

वाक़िफ–(अ वि) जानकार, ज्ञाता। जानकारी रखनेवाला, अभिज्ञ, अनुभवी।

वाज–(अ पु) उपदेश, शिक्षा। धार्मिक व्याख्यान।

वाजिब, वाजिबी–(अ वि) उचित, ठीक। आवश्यक।

वादा–(अ पु) वचन, प्रतिज्ञा। शराब।
वादा खिलाफी = वचन विरुद्ध।

वापस–(फा वि) लौटा हुआ, प्रत्यागत।

वापसी–(फा वि) लौटा हुआ, फिरा हुआ। वापस होने के संबंध का। लौटती।
–(स्त्री) लौटने की क्रिया या भाव, प्रत्यागमन।

वारदात–(अ स्त्री) कोई भीषण कांड, दुर्घटना। मार पीट, दंगा फसाद। हाल, परिस्थिति।

वारिस–(अ पु) वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी हो, उत्तराधिकारी।

वालिद–(अ पु) पिता, बाप।

वालिदा–(अ स्त्री) माता, मां।

वालिदैन–(अ पु) माता पिता।

वावैला–(अ पु) रोना पीटना, विलाप। शोरगुल, कोलाहल।

वासिल–(अ वि) पहुँचाया हुआ। जो वसूल हुआ हो।

वास्ता–(अ पु) संबंध, लगाव।

वास्ते–(अ अव्य) लिए, निमित्त। हेतु, कारण।

वाह–(फा अव्य) प्रशंसासूचक शब्द, धन्य। आश्चर्य, घृणा आदि सूचक शब्द।

वाह वाही = लोगों की प्रशंसा; साधुवाद; शाबाशी।

वाहिद–(अ. पु.) ईश्वर का नाम। एक। एकवचन।

वाहियात–(फा. वि.) व्यर्थ; फिजूल। बुरा; खराब।

वाही–(अ. वि.) सुस्त; ढीला। निकम्मा; निष्प्रयोजन। मूर्ख। आवारा; लुच्चा।

वाही-तबाही–(फा. वि.) अशिष्ट; असभ्य। आवारा; लुच्चा; दुराचारी। बे-सिर पैर का; अंडबंड; असंगत।

–(स्त्री.) अंडबंड बातें; ऊटपटाग।

विज़ारत–(अ. स्त्री.) दे. "वज़ारत"।

विदा–(अ. स्त्री.) रवाना होना; प्रस्थान। कहीं से चलने की अनुमति।

विदाई–(उ. स्त्री.) रुखसती; प्रस्थान। विदा होने की आज्ञा या अनुमति। वह धन जो विदा होने के समय दिया जाय।

विरासत–(अ. स्त्री.) उत्तराधिकार।

विलादत–(अ. स्त्री) जन्म।

विलायत–(अ. पु.) पराया देश; विदेश। दूर का देश।

विलायती–(अ. वि.) विलायत का; विदेशी। दूसरे देश में बना हुआ।

विसाल–(अ. पु.) संयोग; मिलन। प्रेमी और प्रेमिका का मिलन। मृत्यु; मरण।

वीरान–(फा. वि.) उजड़ा हुआ, निर्जन। शोभारहित।

श

शंजरफ़–(फा. पु.) दे. "शिंगरफ़"।

शअबान–(अ. पु.) मुसलमानों का आठवाँ महीना।

शऊर–(अ. पु.) योग्यता; निपुणता, कलाकौशल्य। बुद्धि।

शऊरदार–(फा. वि.) निपुण; कला-कुशल। समझदार; बुद्धिमान।

शक–(अ. पु.) शंका; संदेह।

शकर–(फा. स्त्री.) शर्करा; चीनी।

शकरकंद–(उ. पु.) एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद जो मीठा होता है।

शकरपारा–(फा. पु.) एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बड़ा होता है। चौकोर कटा हुआ एक प्रकार का प्रसिद्ध

पकवान, "मैसूरपाक"। शकरपारे के आकार की चौकोर सिलाई।

शकल–(अ स्त्री) मुख की बनावट, चेहरा, रूप। मुख का भाव, चेष्टा। बनावट, गढ़न। आकृति, स्वरूप। उपाय, युक्ति।

शकील–(फा वि) अच्छी शकलवाला, खूबसूरत, सुंदर।

शकी–(फा वि) जिसे हर बात में संदेह हो, संशयात्मा।

शख्स–(अ पु) मनुष्य, आदमी। व्यक्ति।

शख्सियत–(अ स्त्री) व्यक्तित्व।

शख्सी–(फा वि) मनुष्य का, मानुषी।

शगल–(अ पु) काम धंधा, व्यापार। मनोविनोद।

शगाल–(फा पु) शृगाल, गीदड़।

शगुफ्ता–(फा पु) बिना खिला हुआ फूल, कली। पुष्प, फूल। कोई नयी और विलक्षण घटना।

शजर–(अ पु) वृक्ष, पेड़।

शजरा–(अ पु) वंशवृक्ष, वंशावली। लेखों का नक्शा।

शतरंग–(फा स्त्री) एक खेल जो चौंसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है चतुरंग।

शतरंजबाज–(फा वि) शतरंज खेलने वाला।

शतरंजबाजी–(फा स्त्री) शतरंज खेलने का काम या व्यसन।

शतरंजी–(फा स्त्री) रंग बिरंगे मोटे सूतों का बुना हुआ बिछौना या दरी, रतवंदन। शतरंज खेलने का कपड़ा या चौकी, शतरंज की बिसात।

–(वि) शतरंज का अच्छा खिलाड़ी।

शदीद–(अ वि) भारी, गहरी।

शनाख्त–(फा स्त्री) पहचान। ज्ञान।

शफक–(अ स्त्री) प्रातःकाल या सायंकाल के समय आकाश में दिखाई पड़नेवाली ललाई।

शफकत–(अ स्त्री) कृपा, दया। प्रेम।

शफ्तालू–(फा पु) एक फल जिसका स्वाद खट्टा मीठा होता है, सतालू।

शफा–(अ स्त्री) शरीर का स्वस्थ होना, चंगा होना। चिकित्सा।

शफाखाना–(फा पु) चिकित्सालय।

शब–(फा स्त्री) रात, रात्री।

शबोरोज = रात दिन।

शबनम–(फा स्त्री) तुषार, ओस। एक प्रकार का बारीक और बढ़िया कपड़ा।

शबनमी–(फा स्त्री) ऐसा पर्दा जिसके ऊपर और चारों ओर मच्छरों से बचने

के लिये जालीदार कपड़ा या मसहरी लटकायी गयी हो; छपरखट ।

शबाब–(अ. पु.) यौवनकाल; युवावस्था। बहुत अधिक सौंदर्य; अति सुंदरता ।

शबाहत–(अ. स्त्री.) साम्यता; अनुरूपता । सूरत; शकल ।

शबीह–(अ. स्त्री.) चित्र; भावचित्र । समानता; अनुरूपता ।

शमशेर–(फ़ा. स्त्री.) तलवार ।

शमा–(अ. स्त्री.) मोमबत्ती ।

शमादान–(फ़ा. पु.) मोमबत्ती या दिया रखने का आधार ।

शरअ–(अ. स्त्री.) क़ुरान में दी हुई आज्ञा; क़ुरान की विधि। धर्म; मजहब। तरीक़ा; रीति । मुसलमानों का धर्मशास्त्र ।

शरई–(अ. वि.) मुसलमानी धर्मशास्त्र या क़ुरान के अनुसार का ।

–(पु.) शरअ पर चलनेवाला मनुष्य; धर्मशील; धर्मात्मा ।

शरफ़–(अ. स्त्री.) योग्यता ।

शरबत–(अ. पु.) पीने की मीठी वस्तु; रस; पानक । चीनी आदि में पका हुआ किसी ओषधि का अर्क़ या कषाय। पानी में घोली हुई शक्कर या खाँड । विवाह का निश्चय; सगाई; मँगनी ।

शरबती–(उ. पु.) हल्का पीला रंग । एक प्रकार का रस । नीबू की एक जाति । एक तरह का बढ़िया कपड़ा ।

–(वि.) रसीला; रसदार ।

शरम–(फ़ा. स्त्री.) लज्जा । लिहाज; संकोच । प्रतिष्ठा; मान ।

शरमसार–(उ. वि.) जिसे शरम हो; लजीला । लज्जित; शरमिंदा ।

शरमसारी–(उ. स्त्री.) लाज; लज्जा ।

शरमाऊ–(उ. वि.) दे. "शरमीला" ।

शरमाना–(उ. अक्रि.) लज्जित होना; लजाना ।

–(सक्रि.) लज्जित करना ।

शरमिंदगी–(फ़ा. स्त्री.) लज्जित होने का भाव; लाज; लजीलापन ।

शरमिंदा–(फ़ा. वि.) शरम में पड़ा हुआ; लज्जित ।

शरमीला–(उ. वि.) जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे; लज्जालु । संकोची ।

शरह–(अ. स्त्री.) टीका; भाष्य; व्याख्या । दर; भाव ।

शरहाद–(अ. वि.) ख़ुदा की राह में मरा हुआ ।

शराकत–(अ. स्त्री.) शरीक होने का भाव; सम्मिलन । साझा; हिस्सेदारी ।

शराफ़त–(अ. स्त्री.) शरीफ़ होने का भाव; सज्जनता । श्रेष्ठता ।

शराब–(अ स्त्री) मदिरा, मद्य, सुरा। हकीमों की परिभाषा में शरबत।

शराबखाना–(फा पु) वह स्थान जहाँ शराब बिक्री हो।

शराबखोर–(फा पु) शराब पीनेवाला।

शराबखोरी–(फा स्त्री) मद्यपान, सुरापान।

शरावी–(उ वि) शराब पीनेवाला।

शरायोर–(फा वि) जल आदि से बिलकुल भीगा हुआ, लथपथ, आर्द्र।

शरायत–(अ स्त्री) 'शर्त' का बहु रूप।

शरारत–(अ स्त्री) पाजीपन, दुष्टता।

शरीअत–(अ स्त्री) मुसलमानों का धर्मशास्त्र।

शरीक (अ वि) मिला हुआ, सम्मिलित।
–(पु) साथी, संगी। हिस्सेदार, भागस्वामी। सहायक।

शरीफ–(अ पु) कुलीन, सज्जन, भद्रपुरुष। मक्के नगर के प्रधान अधिकारी की पदवी।
–(वि) पाक, पवित्र।

शरीर–(अ वि) दुष्ट, नालायक।

शर्त–(अ स्त्री) किसी वस्तु का निर्धारण या ठहराव जीतने पर जिसे पा सकें और हारने पर जिसे खोना पड़े, बाजी, पण, 'पण"। किसी कार्य की सिद्धि के लिये आवश्यक या अपेक्षित कार्य, नियम, 'निबंधना"।

शर्तिया–(अ क्रिवि) शर्त बदकर, निश्चय के साथ, दृढ़तापूर्वक।
–(वि) बिलकुल ठीक, निश्चित।

शर्म–(फा स्त्री) दे "शरम"।

शलगम, शलजम–(फा पु) गाजर की तरह का एक कंद।

शल्लूका–(फा पु) आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।

शशमाही–(फा वि) छ माही, अर्द्ध वार्षिक।

शस्त–(फा पु) वह जिस पर तीर आदि चलाया जाता है, लक्ष्य।

शहंशाह–(फा पु) दे 'शाहंशाह'।

शह–(फा पु) बादशाह, महाराज। वर दूल्हा।
–(वि) बड़ा चढ़ा, अग्रगण्य।
–(स्त्री) शतरंज के खेल में कोई मोहरा ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ा हो, किश्त। गुप्त रूप से किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव।

शहजादा–(फा पु) राजकुमार।

शहजोर–(फा वि) बलवान, बलिष्ठ।

शहतीर–(फा पु) लकड़ी का बहुत बड़ा और लंबा कुंदा।

शहतूत–(फा. पु.) एक पेड़ जिसके फल खाये जाते हैं।

शहद–(अ. पु.) मधु।

शहना–(अ. पु.) खेत की चौकसी करने वाला; कोतवाल।

शहनाई–(फा. स्त्री.) फूंककर बजाने का एक प्रकार का बाजा; नफीरी।

शहबाला–(फा. पु.) वह छोटा बालक जो विवाह के समय वर के साथ पालकी या घोड़े पर बैठकर जाता है।

शहमात–(फा. स्त्री.) शतरंज में एक प्रकार की मात।

शहर–(फा. पु.) नगर; पट्टन।

शहरपनाह–(फा. स्त्री.) शहर की चहार दीवारी; प्राचीर; नगर-कोट।

शहरी–(फा. वि.) शहर का। नगरवासी, नागरिक।

शहवत–(अ. स्त्री.) भोग-विलास। कामातुरता। स्त्री-संभोग, मैथुन।

शहादत–(अ. स्त्री.) गवाही; साक्ष्य। प्रमाण, सबूत। शहीद होने का भाव।

शहाना–(फा. वि.) शाही; राजा के योग्य। बहुत बढ़िया; उत्तम।

शहाब–(फा. पु.) एक प्रकार का गहरा लाल रंग।

शहाबी–(फा. वि.) शहाब रंग का।

शहीद–(फा. पु.) अपने मत या धर्म के लिये बलिदान होनेवाला व्यक्ति; धर्म के लिये लड़ाई में मारा जानेवाला मनुष्य।

शाइस्तगी–(फा. स्त्री.) शिष्टता; सभ्यता। भलमनसी, सज्जनता।

शाइस्ता–(फा. वि.) शिष्ट; सभ्य। विनीत; नम्र।

शाकिर–(अ. वि.) कृतज्ञ।

शाख–(फा. स्त्री.) पेड़ की टहनी; डाल। लगा हुआ टुकड़ा; खंड। नदी आदि की शाखा। विभाग।

शाखदार–(फा. वि.) जिसमें बहुत सी शाखायें हों; टहनीदार।

शागिर्द–(फा. पु.) शिष्य; चेला।

शागिर्दगी, शागिर्दी–(फा. स्त्री.) शिष्यता।

शाद–(फा. वि.) खुश; प्रसन्न। शुभ; मंगल। भरा पूरा; संपन्न।

शादमान–(फा. वि.) प्रसन्न; सुखी।

शादमानी–(फा. स्त्री.) प्रसन्नता; सौख्य।

शादाब–(फा. वि.) हरा भरा; ताजा।

शादियाना–(फा. पु.) खुशी का बाजा; मंगलवाद्य। बधावा; बधाई; आनंद मंगल।

शादी–(फा. स्त्री.) खुशी; आनंद; प्रसन्नता। आनंदोत्सव; कल्याण। विवाह; ब्याह।

शादीशुदा = विवाहित।

शान–(अ स्त्री) तड़क भड़क, ठाट बाट, सजावट। गर्वीली चेष्टा, ठसक, दर्प। विशालता, भव्यता। दिव्य या अलौकिक शक्ति, विभूति, करामात। प्रतिष्ठा, इज्जत, मान।

शानदार–(फा वि) भड़कीला, ठाट बाट का। ठसकवाला, दर्प का। देखने में भारी और सुंदर, भव्य।

शान शौकत–(अ स्त्री) तड़क भड़क, ठाट बाट, आडंबर।

शाना–(फा पु) कंधा। कंघी।

शाबाश–(फा अव्य) एक प्रशंसा सूचक शब्द, वाह वाह, "भेरा भेरा"।

शाबाशी–(फा स्त्री) वाह वाही, प्रशंसा, साधुवाद।

शाम–(फा स्त्री) साय, संध्या, सांझ। धातु का वह छल्ला जो लकड़ियों या औजारों के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिये लगाया जाता है।

शामत–(अ स्त्री) दुर्भाग्य। विपत्ति, आफत। दुर्दशा, दुरवस्था।

शामतजदा–(फा वि) अभागा, भाग्यहीन।

शामती–(फा वि) निर्भाग्य। दुर्दशा ग्रस्त।

शामियाना–(फा पु) बड़ा तंबू या डेरा।

शामिल–(फा वि) जो साथ में हो, मिला हुआ, सम्मिलित।

शामिलहाल–(फा वि) साथी, संगी।

शामिलात–(फा स्त्री) हिस्सेदारी, साझा।

शायक–(अ वि) शौकीन। इच्छुक, आकांक्षी। आसक्त।

शायद–(फा अव्य) कदाचित, किसी अवसर पर। प्राय।

शायर–(अ पु) कवि।

शायरा–(अ स्त्री) कवित्री।

शायरी–(अ स्त्री) कविता, काव्य।

शाया–(अ वि) प्रकट, जाहिर।

शाल–(फा स्त्री) एक तरह की ऊनी या रेशमी चादर।

शाहशाह–(फा पु) बादशाहों का बादशाह, राजाधिराज।

शाहशाही–(फा स्त्री) शाहशाह का कार्य या भाव। लेन देन में खरापन, "गाणय"।

शाह–(फा पु) राजा, महाराज। मुसलमान फकीरों की उपाधि।
–(वि) बड़ा, भारी, महान।

शाहजादा–(फा पु) राजकुमार।

शाहजादी–(फा स्त्री) राजकुमारी।

शाहबाज–(फा पु) एक शिकारी पक्षी।

शिकारी–(फा वि) शिकार करनेवाला, आखेटक। शिकार में काम आनेवाला।

शिगाफ–(फा पु) चीरकर बनाया हुआ घाव, चीरा। वह खाली जगह जो किसी चीज के फटने पर पड़ जाती है, दरार, दरज। छेद, रंध्र। कलम या "निब" के बीच का चीरा हुआ भाग, कलम का चिराव।

शिगूफा–(फा पु) दे "शगूफा"।

शिताब–(फा क्रिवि) जल्द, शीघ्र।

शिताबी–(फा स्त्री) जल्दी, शीघ्रता।

शिद्दत–(अ स्त्री) उग्रता, तीव्रता, जोर। कष्ट, कठिनाई।

शिनाख्त–(फा स्त्री) दे "शनाख्त"।

शिमाल–(अ पु) उत्तर दिशा।

शिया–(अ पु) मददगार, सहायक। मुसलमानों के दो प्रधान सम्प्रदायों में से एक।

शिरकत–(अ स्त्री) खर्च का भाग, साझा, हिस्सा। किसी काम में भागी होना, सम्मिलन।

शिराकत–(अ स्त्री) साझा, हिस्सेदारी। कार्य में योग।

शिस्त–(फा स्त्री) मछली पकड़ने का कांटा। लक्ष्य, निशाना।

शीर–(फा पु) क्षीर, दूध।

शीरख्वार–(फा पु) दूध पीता बच्चा; दुधमुँहा। अनजान बालक।

शीरमाल–(फा पु) एक तरह की रोटी।

शीरा–(फा पु) चीनी या गुड़ को पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस, चाशनी।

शीराजा–(फा पु) वह बुना हुआ रंगीन या सफेद फीता जो किताबों की सिलाई की छोर पर शोभा और मजबूती के लिये लगाया जाता है। प्रबंध, व्यवस्था।

शीरीं–(फा वि) मीठा, मधुर। प्रिय प्यारा, प्रियतम।

शीरीनी–(फा स्त्री) मिठास, माधुर्य। मिठाई, मिष्टान्न। प्रेम।

शीशम–(फा पु) एक पेड़।

शीशमहल–(फा पु) वह कोठरी जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों, कांच का मकान।

शीशा–(फा पु) एक मिश्र धातु जो बालू और खारी मिट्टी को गलाने से बनती है और पारदर्शक होती है, कांच, स्फटिक। दर्पण, आईना। झाड़ फानूस आदि कांच के बने सामान।

शीशी–(फा स्त्री) शीशे का छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं, बोतल, "सीसा"।

शुक्र–(अ. पु.) धन्यवाद; कृतज्ञता।

शुक्रगुज़ार–(फा. वि.) आभारी, कृतज्ञ।

शुक्रगुज़ारी–(फा. स्त्री.) कृतज्ञता। धन्यवाद समर्पण।

शुकराना–(फा. पु.) मुक्ति; कृतज्ञता। वह धन जो कार्य हो जाने पर धन्यवाद के रूप में दिया जाय; दक्षिणा; पारिश्रमिक।

शुक्रिया–(फा. पु.) धन्यवाद। कृतज्ञता प्रकाश।

शुग़ल–(अ. स्त्री.) नियोग; नियुक्ति।

शुजा–(अ. वि.) बहादुर; वीर।

शुजाअत–(अ. स्त्री.) बहादुरी; वीरता।

शुतुर–(फा. पु.) ऊँट; उष्ट्र।

शुतुरमुर्ग़–(फा. पु.) अरब और आफ्रिका देश का एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह बहुत लंबी होती है; उष्ट्रपक्षी।

शुदनी–(फा. स्त्री.) होनेवाली बात; नियति; भवितव्यता।

शुबहा–(अ. पु.) संदेह; शक; संशय। धोखा, भ्रम।

शुमार–(फा. पु.) संख्या। गिनती।

शुमारी–(फा. स्त्री.) गणना; गिनती।

शुमाल–(अ. पु.) उत्तर दिशा।

शुमाली–(अ. वि.) उत्तर का; उत्तरी।

शुरू–(फा. पु.) आरंभ; प्रारंभ। वह स्थान जहाँ से किसी वस्तु का आरंभ हो।

शुरूआत–(अ. स्त्री.) प्रस्तावना; भूमिका।

शेख़–(अ. पु.) पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। मुसलमानों के चार वर्गों में से सबसे पहला वर्ग। इस्लाम धर्म का आचार्य; पीर।

शेख़चिल्ली–(उ. पु.) एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके संबंध में बहुत सी विडंबना और हँसानेवाली कहानियाँ प्रचलित हैं। बैठे बैठे बड़े बड़े मंसूबे बाँधनेवाला; मनोराज्य करनेवाला।

शेख़ानी–(उ. स्त्री.) "शेख़" का स्त्री. रूप।

शेख़ी–(फा. स्त्री.) गर्व; अहंकार; घमंड। ऐंठ; अकड़। अभिमान भरी बात; डींग; "जंम"।

शेख़ीबाज़–(फा. वि.) डींग मारनेवाला; जंम करनेवाला। अभिमानी; घमंडी।

शेर–(फा. पु.) बाघ; व्याघ्र। अत्यंत वीर और साहसी पुरुष।

–(अ. पु.) फारसी, उर्दू आदि की कविता के दो चरण।

शेरदहाँ–(फा. वि.) जिसका मुँह शेर का सा हो; व्याघ्रमुख। जिसके ओठों पर शेर का मुँह बना हो।

–(पु) वह मकान जो आगे चौड़ा और पीछे सकरा हो।

शेरनी–(फा स्त्री) "शेर" का स्त्री रूप।

शेरपंजा–(उ पु) एक हथियार जिसमें बाघ के नख के समान चिपटे टेढ़े कांटे निकले रहते हैं, बघनहाँ।

शेरबच्चा–(उ पु) एक तरह की छोटी बंदूक।

शेरबबर–(फा पु) सिंह, केसरी।

शैतान–(अ पु) वह दुष्ट देवता जो मनुष्यों को बहकाकर धर्म मार्ग से भ्रष्ट करता है। दुष्ट देवयोनि; भूत प्रेत। दुष्ट, पापात्मा।

शैतानी–(उ स्त्री) दुष्टता, पाजीपन। –(वि) शैतान संबंधी, शैतान का। नटखट, उपद्रवी।

शैदा–(अ वि) आसक्त, प्रेमी।

शोख–(फा वि) धृष्ट, ढीठ। नटखट, शरारती। चंचल, चपल। गहरा और चमकदार, चटकीला (रंग)।

शोखी–(फा स्त्री) धृष्टता, ढिठाई। चंचलता, हाव भाव। चटकीलापन, रंग की गहराई।

शोबदा–(अ पु) जादू, इंद्रजाल।

शोर–(फा पु) शोर की आवाज़, कोलाहल। धूम; प्रसिद्धि।

शोरबा–(फा पु) किसी उबाली हुई वस्तु का पानी, जूस, रस्सा।

शोरा–(फा पु) एक प्रकार का लवण या क्षार जो मिट्टी में से निकलता है।

शोरिश–(फा स्त्री) हलचल, कोलाहल। बलवा, दंगा, उधम।

शोला–(अ पु) आग की लपट, ज्वाला। अंगारा, चिनगारी।

शोशा–(फा पु) निकली हुई नोक। अद्भुत या अनोखी बात।

शोहदा–(अ पु) व्यभिचारी, लंपट। गुंडा, बदमाश, कुमार्गी।

शोहदापन–(उ पु) लंपटता, व्यभिचार। गुंडापन, लुच्चापन।

शोहरत–(अ स्त्री) नामवरी, प्रसिद्धि। धूम, जनरव।

शोहरा–(अ पु) प्रसिद्धि, ख्याति। दूर दूर फैली हुई खबर।

शौक़–(अ पु) किसी वस्तु की प्राप्ति या भोग के लिये होनेवाली तीव्र अभिलाषा; प्रबल लालसा। आकांक्षा, उत्कंठा। किसी वस्तु या कार्य से मिला हुआ आनंद, जो उस चीज़ को पुनः पाने या उस काम के पुनः करने की इच्छा उत्पन्न करता है, चसका, व्यसन। प्रवृत्ति, झुकाव।

शौक़त–(अ. स्त्री.) ठाट-बाट; तड़क भड़क; बाह्याडंबर।

शौक़िया–(अ. क्रिवि.) शौक़ से।
–(वि) शौक से भरा हुआ।

शौक़ीन–(अ. पु.) वह जिसे किसी बात का बहुत शौक हो, शौक करनेवाला। सदा बना ठना रहनेवाला; बनाव सिंगार में रहनेवाला।

शौक़ीनी–(अ. स्त्री.) शौकीन होने का भाव या काम।

शौहर–(फा. पु.) पति; भर्ता।

शौहरी–(फा. वि.) पति या भर्ता का।

स

संग–(फा. पु.) पत्थर।

संग-जराहत–(फा. पु.) एक सफेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी होता है।

संग-तराश–(फा. पु.) पत्थर काटने या गढ़नेवाला मजदूर; पत्थर-कट; सिलावट।

संग दिल–(फा. वि.) कठोर हृदय; निर्दय।

संग-दिली–(फा. स्त्री.) कठोर-हृदयता; निर्दयता, क्रूरता।

संगमर्मर–(फा. पु) एक प्रकार का बहुत चिकना, मुलायम और सफेद प्रसिद्ध कीमती पत्थर।

संगमूसा–(फा. पु.) एक प्रकार का काला चिकना पत्थर।

संगयशब–(फा. पु.) एक प्रकार का हरा कीमती पत्थर जिसकी चौकोर टिकिया हृदय की रोग-बाधा दूर करने के लिये यंत्र की तरह पहनी जाती है।

संगी–(फा. वि.) पत्थर का।

संगीन–(फा. पु.) लोहे का एक नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है।
–(वि) पत्थर का बना हुआ। मोटा। टिकाऊ, दृढ़। कठिन; विकट। पेचीदा।

संजाफ़–(फा. स्त्री) किसी चीज के किनारे पर शोभा के लिये बनाया या लगाया हुआ वह फीता या गोट जो लटकती रहती है; झालर।
–(पु.) घोड़े का एक रंग।

संजाफ़ी–(उ. वि.) झालरदार; पट्टीदार।
–(पु.) संजाफ़ रंग का घोड़ा।

सजीदगी–(फा स्त्री) गभीरता। सौम्यता। समझदारी, बुद्धिमत्ता।

सजीदा–(फा वि) गभीर, शांत। समझदार, बुद्धिमान।

सतरी–(अ पु) पहरा देनेवाला, पहरेदार। द्वारपाल।

सदल–(फा पु) चदन, श्रीखड।

सदली–(फा वि) सदल के रंग का। चदन का।

–(पु) एक प्रकार का हलका पीला रग। एक तरह का हाथी। घोडे की एक जाति।

सदूक–(अ पु) पिटारा, पेटी।

सदूकचा–(फा पु) छोटा सदूक।

सकील–(अ वि) जो जल्दी हजम न हो।

सकूत–(अ वि) मौन।

सकूनत–(अ स्त्री) रहने का स्थान।

सकेला–(अ स्त्री) एक तरह की तलवार।

सक्का–(अ पु) चमड़े की बनी हुई थैली आदि में पानी भरकर ले जाने वाला आदमी, मशक द्वारा पानी ढोने वाला, भिश्ती।

सखावत–(अ स्त्री) दानशीलता, उदारता।

सखी–(अ वि) दाता, दानी।

सखुन–(फा पु) बातचीत, वार्त्तालाप। कविता, काव्य। बोल, वचन। कथन, उक्ति।

सखुनचीन–(फा वि) इधर उधर बात लगानेवाला, चुगलखोर।

सखुनचीनी–(फा स्त्री) चुगलखोरी।

सखुनतकिया–(फा स्त्री) वह शब्द या शब्द समूह जो आदत पड़ जाने के कारण बोलते समय मुँह से बार बार निकलता है और जो प्राय कुछ माने नहीं रखता।

सखुनदान–(फा वि) बातचीत को समझनेवाला। काव्यमर्मज्ञ।

सखुनदानी–(फा स्त्री) बातचीत की समझदारी। काव्य-रसिकता।

सखुनपरवर–(फा वि) अपनी बातपर अड़नेवाला, हठी।

सखुनवर–(फा वि) कवि।

सखुनशनास–(फा वि) दे "सखुनदान"।

सखुनसाज–(फा वि) कवि। झूठी बातें बनाकर कहनेवाला।

सखुनसाजी–(फा स्त्री) झूठी बातें गढ़ने का काम।

सख्त–(फा वि) कठोर, कठिन। क्रूर।

सख्ती–(फा स्त्री) कठिनता। क्रूरता।

सग–(फा पु) कुत्ता।

सगज़बान–(फा. पु.) वह घोड़ा जिसकी ज़बान या जीभ कुत्ते के समान पतली और लंबी हो।

सज़ा–(फा. स्त्री.) दंड। कारावास का दंड।

सज़ायाफ़्ता, सज़ायाब–(फा. वि.) जो कैद की सजा भोग चुका हो; दंडित।

सज़ावार–(फा. वि.) योग्य; उचित।

सज्जादा–(अ. पु.) नमाज़ पढ़ने की दरी या बिछावन; जानमाज़। फ़कीर या संन्यासियों का आसन; पीठ।

सज्जादानशीन–(फा. पु.) मुसल्मान पीर या मठाधिपति, महंत।

सतर–(अ. स्त्री.) रेखा; लकीर। पंक्ति; क़तार। कमर से घुटने तक का भाग। ओट; आड़।

सतह–(अ. स्त्री.) किसी वस्तु का ऊपरी भाग; तल। वह विस्तार जिसमें केवल लंबाई और चौड़ाई हो।

सतून–(फा. पु.) स्थाणु; स्तंभ।

सद–(फा. वि.) शत; सौ।

सदक़ा–(अ. पु.) दान; दान-धर्म। वह सामग्री जो प्रेत-बाधा या रोग की शांति के लिये किसी व्यक्ति के शरीर के चारों ओर घुमाकर जाकर दान की जाती है; उतारे की वस्तु; निछावर।

सदबर्ग–(फा. पु.) शतदल; गेंदा।

सदमा–(अ. पु.) आघात; प्रहार। दुख; व्यथा। भारी नुकसान; हानि।

सदर–(अ. वि.) प्रधान; मुख्य। अध्यक्ष; सभापति। छाती।

सदरनशीन–(फा. वि.) सभाध्यक्ष।

सदरी–(अ. स्त्री.) एक तरह की कुरती; "वेस्टकोट"।

सदहा–(फा. वि.) कई सौ; सैकड़ों।

सदा–(अ. स्त्री.) गूँज; प्रतिध्वनि। आवाज़; शब्द। पुकार।

सदा-बहार–(उ. वि.) जो सदा फूले। जो सदा हरा रहे।

सदारत–(अ. स्त्री.) अध्यक्षता।

सदी–(फा. स्त्री.) शताब्दी। सैकड़ा; शत।

सन्–(अ. पु.) वर्ष; साल। कोई विशेष वर्ष; संवत्।

सनअत–(अ. स्त्री.) कारीगरी। कला-कौशल्य। कारबार; रोज़गार। सौंदर्य। अलंकार (साहित्य)।

सनद–(अ. स्त्री.) प्रमाण; आधार। अधिकारपत्र। प्रमाणपत्र; "सर्टिफ़िकेट"।

सनदयाफ़्ता–(फा. वि.) जिसे सनद या प्रमाणपत्र मिला हो। किसी परीक्षा में उत्तीर्ण।

सनम–(अ पु) प्रतिमा। प्रेमिका, माशूक।

सनाय–(अ स्त्री) एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर या विरेचक होती हैं, सोनामुखी।

सनोबर–(अ पु) देवदारु वृक्ष।

सफ–(अ स्त्री) पंक्ति, कतार। वह लंबी चटाई जो मसजिद के बीच में बिछाई जाती है।

सफर–(अ पु) प्रयाण, यात्रा।

सफरा–(अ पु) पित्त।

सफरी–(अ वि) सफर में काम आनेवाला, सफर का।

–(पु) राह खर्च, मार्ग व्यय। अमरूद का फल।

सफहा–(अ पु) पुस्तक का कोई पृष्ठ, पन्ना।

सफा–(अ वि) साफ, स्वच्छ। पाक, पवित्र। चिकना, बराबर।

सफाई–(उ स्त्री) स्वच्छता, निर्मलता। मैल या कूड़ा-करकट आदि हटाने की क्रिया। मन में मैल या कुटिलता का अभाव, निष्कपटता। स्पष्ट करना, स्पष्टीकरण। दोषारोप का हटना, निर्दोषता। कर्ज या हिसाब का चुकता होना। मामले का निबटारा, निर्णय।

सफाचट–(उ वि) एकदम स्वच्छ, बिलकुल साफ या चिकना।

सफीना–(अ पु) नाव, किश्ती। अदालत का आज्ञापत्र, "समन"।

सफीर–(अ पु) दूत। राजदूत। पक्षियों की आवाज। वह सीटी जो पक्षियों को बुलाने के लिये दी जाय।

सफूफ–(अ पु) चूर्ण, बुकनी।

सफेद–(फा वि) श्वेत। उजला। जिस पर कुछ लिखा न हो, कोरा, सादा।

सफेदपोश–(फा पु) साफ कपड़े पहननेवाला। भलमानस।

सफेदा–(फा पु) जस्ते का भस्म या चूर्ण जो दवा तथा रंगाई के काम में आता है। आम का एक भेद। खरबूजे का एक भेद।

सफेदी–(फा स्त्री) सफेद होने का भाव, श्वेतता। दीवार आदि पर सफेद रंग या चूने की पोताई, चूनाकारी। प्रभात, उषा।

सबक–(फा पु) पाठ। शिक्षा, उपदेश।

सबक्त–(अ स्त्री) विशेषता प्राप्त करना।

सबब–(अ पु) कारण, हेतु। द्वार, साधन।

सबर–(अ पु) दे "मुसब्बर"।

सबा–(अ स्त्री) प्रात वायु की हवा।

सबील–(अ स्त्री) मार्ग, सड़क। उपाय,

तरकीब। वह स्थान जहाँ सर्व-साधारणों को पानी पिलाया जाता हो; पनसाल; प्याऊ।

सबू–(फा. पु) मिट्टी का घड़ा।

सबूत–(अ. पु.) आधार; प्रमाण।

सब्ज़–(फा. वि.) कच्चा और ताज़ा (फल)। हरा; हरित। शुभ। उत्तम।

सब्ज़क़दम–(फा. वि.) जिसके कहीं पहुँचने ही कोई अशुभ घटना हो; जिसके चरण अशुभ हों।

सब्ज़ा–(फा पु.) हरी घास का विस्तार; हरियाली। भांग की पत्तियाँ; भाँग। पन्ना नामक रत्न; मरकत। घोड़े का एक रंग जिसमें सफ़ेदी के साथ कुछ कालापन होता है।

सब्ज़ी–(फा. स्त्री) हरे भरे पेड़ पौधों का समूह, हरियाली।

सब्र–(अ. पु.) संकट, बाधा आदि उपस्थित होने पर चित्त की स्थिरता; धीरता। उतावला या आतुर न होने का भाव।

सभंद–(फा. पु.) घोड़ा।

सम–(अ. पु.) जहर; विष।

समझदार–(उ. वि.) बुद्धिमान।

समझदारी–(उ. स्त्री.) बुद्धिमानी।

समन–(अ. पु.) अदालत में उपस्थित होने का आज्ञापत्र; अदालत की तलबी।

सर–(फा. पु.) सिर; शिर। चोटी; सिरा। समय।

–(वि.) जीता हुआ; पराजित।

सरअंजाम–(फा. पु.) सामान, सामग्री। अंत; परिणाम।

सरकश–(फा. वि.) उद्धत; उद्दंड। विरोध में सिर उठानेवाला।

सरकशी–(फा. स्त्री) उद्दंडता। उपद्रव; ऊधम।

सरकार–(फा. स्त्री) प्रभु; स्वामी। राज्य संस्था। शासन सत्ता। राज्य।

सरकारी–(फा. वि.) सरकार का। राज्य का; राजकीय।

सरख़त–(फा. पु.) वह दस्तावेज़ जिस पर मकान आदि किराये पर दिये जाने की शर्तें होती हैं। दिये और चुकाये हुए ऋण आदि का ब्योरा। आज्ञापत्र; परवाना।

सरग़ना–(फा. पु.) दुष्टों या बागियों का मुखिया।

सरगर्म–(फा. वि.) जोशीला; आवेशपूर्ण। उमंग से भरा हुआ; उत्साही।

सरगर्मी–(फा. स्त्री.) जोश; आवेश। उमंग; उत्साह।

सरज़ोर–(फा. वि.) जबरदस्त; बलवान। उद्दंड; उद्धत।

सरजोरी–(फा स्त्री) जबरदस्ती, बलात्कार।

सरतां–(अ पु) कर्क, केकड़ा। कर्क राशि, कर्क राशि।

सरताज–(फा पु) प्रधान, मुखिया। किरीट, मुकुट।

सरदई–(फा वि) सरदे के रंग का, हरापन लिये पीला।

सरदा–(फा पु) एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा।

सरदार–(फा पु) नायक, नेता। रामक, हाकिम। अमीर, रईस।

सरदारिन–(फा स्त्री) "सरदार" का स्त्री० रूप।

सरदारी–(फा स्त्री) सरदार का पद या काम, नेतृत्व, नायकत्व।

सरनाम–(फा वि) प्रसिद्ध, विख्यात।

सरनामा–(फा पु) वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख के ऊपर हो, शीर्षक, अभिधान। पत्र का आरंभ या संबोधन। पत्र पर लिखा जानेवाला पता, "विलास"।

सरपंच–(ह पु) पंचों में बड़ा व्यक्ति, पंचायत का अध्यक्ष।

सरपरस्त–(फा पु) रक्षक, संरक्षक।

सरपरस्ती–(फा स्त्री) संरक्षण, संरक्षता।

सरपेच–(फा पु) पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।

सरपोश–(फा पु) थाली या परात ढकने का कपड़ा। टोपी।

सरफराज–(फा वि) धन्य, कृतार्थ।

सरबराह–(फा पु) इंतजाम करनेवाला प्रबंधक। मजदूरों भोजन परोसनेवालों आदि का मुखिया या निरीक्षक।

सरबराहकार–(फा पु) किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला।

सरबराही–(फा स्त्री) प्रबंध, व्यवस्था। भोजन परोसने का काम। माल असबाब की निगरानी।

सरमाया–(फा पु) मूलधन, पूँजी। सामग्री, साधन।

सरशार–(फा वि) डूबा हुआ, मग्न। मदमस्त, नशे में चूर।

सरसब्ज–(फा वि) हरा भरा, लहलहाता हुआ। जहाँ हरियाली हो।

सरसरी–(फा क्रिवि) ऊपर से, जमकर या अच्छी तरह नहीं। काम चलाने भर को। स्थूल रूप से, मोटे तौर पर।

सरसाम–(फा पु) सन्निपात ज्वर।

सरहद–(फा स्त्री) किसी वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान, सीमा। किसी भूमि के चारों ओर की सीमा निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न।

सरहदी–(उ. वि.) सरहद संबंधी।

सराफ़–(अ. पु.) दे. "सर्राफ़"।

सराय–(फा. स्त्री.) घर; मकान। यात्रियों के ठहरने का स्थान; धर्मशाला।

सरासर–(फा. क्रिवि.) एक सिरे से दूसरे सिरे तक; बिलकुल। साक्षात्; स्वयं।

सरासरी–(फा. स्त्री.) आसानी; लाघव। शीघ्रता; जल्दी। मोटा अंदाज; अटकल। –(क्रिवि.) जल्दी में; शीघ्र। मोटे तौर पर; अंदाज से।

सरिश्ता–(फा. पु.) अदालत; न्यायालय। कार्यालय का विभाग; शाखा। रीति; पद्धति।

सरिश्तादार–(फा. पु.) किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। न्यायालय में देशी भाषाओं में मुकद्दमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिश्तादारी–(फा. स्त्री.) सरिश्तादार का काम या पद।

सरूर–(फा. पु.) खुशी; प्रसन्नता। हलका नशा।

सरेदस्त–(फ. क्रिवि.) इस समय; फिलहाल।

सरेबाज़ार–(फा. क्रिवि.) बाज़ार में; सब के सामने; बहिरंग में।

सरेश–(फा. पु.) एक लसदार पदार्थ या गोंद जिससे लकड़ी आदि चिपकायी जाती है; "मर-वज्र"।

सरो–(फा. पु.) देवदारु की जाति का एक लंबा पेड़।

सरोकार–(फा पु.) परस्पर व्यवहार या संबंध। लगाव; वास्ता।

सरोद–(फा. पु.) वीणा की तरह का एक बाजा। गाना।

सरोसामान–(फा. पु.) सामग्री; सामान।

सर्क़ा–(अ. पु.) चोरी।

सर्द–(फा. वि.) ठंढा; शीतल। सुस्त, ढीला। मंद; धीमा। नामर्द; नपुंसक। सर्द मिजाज = बे-मुरव्वत; रूखा।

सर्दी–(फा. स्त्री.) सर्द होने का भाव; ठंढ; शीतलता। जाड़ा; शीत। जुकाम; प्रतिश्याय।

सर्फ़–(अ. वि.) खर्च या व्यय किया हुआ।

सर्फ़ा–(अ. पु.) खर्च; व्यय।

सर्राफ़–(अ. पु.) सोने चाँदी का व्यापारी। बदले के लिये रुपये पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार। रुपये पैसे का लेन-देन करनेवाला; महाजन। खजाने, बैंक आदि का वह कर्मचारी जो लोगों से रुपया पैसा गिनकर लेता हो।

सर्राफ़ा–(अ. पु.) सर्राफ का काम;

सोने चाँदी का व्यापार। रुपये पैसे का लेन देन, महाजनी। सर्राफ़ों का बाज़ार। वह स्थान जहाँ रुपये पैसे का लेन देन हो, कोठी, "बैंक"।

सर्राफी-(उ स्त्री) चाँदी सोने का व्यापार। रुपये पैसे के लेन देन का व्यवसाय या वृत्ति, महाजनी। एक तरह की लिपि जो सर्राफ़ों या महाजनों के यहाँ बही खाता लिखने में काम आती है, कोठीवाली, मुड़िया।

सल्तनत-(अ स्त्री) राज्य, बादशाहत। साम्राज्य। इन्तज़ाम, प्रबंध। सुभीता, सौम्य।

सल्ब-(अ वि) नष्ट, बरबाद।

सल्मा-(अ पु) सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है।

सलाख-(फ़ा स्त्री) धातु का बना हुआ छड़, सलाखा।

सलाम-(अ पु) प्रणाम, नमस्कार।

सलामत-(अ वि) सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ, सुरक्षित। तंदुरुस्त, भला चंगा। कायम, स्थिर। -(क्रि वि) कुशल से, क्षेमपूर्वक।

सलामती-(उ स्त्री) तंदुरुस्ती, स्वस्थता। कुशल, क्षेम।

सलामी-(उ स्त्री) सलाम या प्रणाम करने की क्रिया। सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली, सिपाहियाना सलाम। तोपों या बंदूकों की बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है और जो फ़ौजी सलाम माना जाता है।

सलाह-(अ स्त्री) सम्मति, परामर्श, सत्परामर्श।

सलाहकार-(फ़ा पु) सलाह या परामर्श देनेवाला, मंत्री।

सलाही-(उ पु) दे "सलाहकार"।

सलीका-(अ पु) कारीगरी, हस्त कौशल्य। गुण, प्रभाव। चालचलन, बरताव। सभ्यता।

सलीक़ामंद-(फ़ा वि) कला कुशल, निपुण। गुणकारी। सभ्य।

सलीस-(अ वि) सहज, सुगम। मुहावरेदार और चलती हुई (भाषा)। समतल।

सलूक-(अ पु) बरताव, व्यवहार, आचरण। मिलाप, मेल, स्नेह। भलाई, उपकार।

सवानेह-(अ पु) "सानिहा" का बहुवचन रूप।

सवाब-(अ पु) सत्कार्य का फल; पुरस्कार। भलाई, उपकार।

सवार–(फ़ा. पु.) वह जो घोड़े पर चढ़ा हो; अश्वारोही। अश्वारोही सैनिक। वह जो किसी चीज़ पर चढ़ा हो; आरोही।
–(वि.) आरूढ़।

सवारी–(फ़ा. स्त्री.) किसी चीज़ पर चढ़ने की क्रिया; आरोहण। सवार होने की चीज़; चढ़ने की वस्तु। वह व्यक्ति जो सवार हो; आरोही। जुलूस; उत्सव यात्रा।

सवाल–(अ. पु.) पूछने की क्रिया। वह जो कुछ पूछा जाय; प्रश्न। माँग; प्रार्थना। विनती; निवेदन। भिक्षा की याचना। गणित का प्रश्न।

सवाल जवाब–(अ. पु.) उत्तर प्रत्युत्तर; वादविवाद। तकरार; झगड़ा।

सहतरा–(फ़ा. पु.) एक झाड़ जिसका उपयोग औषध के रूप में होता है; पितपापड़ा; पर्पटक।

सहन–(अ. पु.) मकान के बीच में या सामने का खुला छोड़ा हुआ भाग; दरामदा। आँगन; चौक। एक तरह का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

सहनक–(अ. स्त्री.) मिट्टी की रिकाबी।

सहम–(फ़ा. पु.) डर; भय। संकोच; लिहाज़।

सहमना–(उ. अक्रि.) डरना।

सहमाना–(उ. सक्रि.) डराना।

सहर–(अ. स्त्री.) प्रातःकाल; प्रभात।

सहरगही–(फ़ा. स्त्री.) दे. "सहरी"।

सहरा–(अ. पु.) जंगल; वन।

सहरी–(फ़ा. स्त्री.) वह भोजन जो निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के किया जाता है।

सहल–(अ. वि.) सरल; सहज; आसान।

सही–(फ़ा. वि.) सत्य; सच। प्रामाणिक; यथार्थ; वास्तविक। शुद्ध, ठीक।
–(स्त्री.) दस्तख़त; हस्ताक्षर।
सही सलामत = भला चंगा; स्वस्थ। जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो; ठीक ठीक।

सहूलत–(अ. स्त्री.) आसानी; सुगमता; सौलभ्य।

सहूलियत–(उ. स्त्री.) दे. "सहूलत"।

साअत–(अ. स्त्री) ढाई घटी या एक घटे का समय। क्षण, निमिष। मुहूर्त्त; शुभ लग्न।

साकिन–(अ. वि.) रहनेवाला; निवासी।

साक़ी–(अ. पु.) शराब पिलानेवाला। मस्ती उत्पन्न करनेवाला। माशूक़; प्रेमिका।
–(उ. पु.) किराये पर हुक्का पिलानेवाला।

सागर-(फा पु) शराब का प्याला।

साज-(फा पु) सजावट का काम, अलंकार। सजावट का सामान; उपकरण, सामग्री। वाद्य, बाजा। लड़ाई के हथियार। मेल जोल।

-(प्रत्य) एक प्रत्यय जो मरम्मत करनेवाला, तयार करनेवाला, बनानेवाला, छल करनेवाला आदि का अर्थ देता है।

साजबाज-(उ पु) तैयारी। मेल-जोल।

साज सामान-(फा पु) उपकरण, सामग्री। ठाठ बाट, सज धज।

साजिंदा-(फा पु) साज या बाजा बजानेवाला। वेश्या के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला, सपरदाई।

साजिश-(फा स्त्री) मेल, मिलाप। किसी के विरुद्ध कोई कपटपूर्ण आयोजन, षड्यंत्र।

साझेदार-(उ वि) शरीक होनेवाला, हिस्सेदार।

सादगी-(फा स्त्री) सादापन, सरलता। सीधापन, निष्कपटता।

सादा-(फा वि) जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। बिना आडंबर का, साधारण। बिना मिलावट का, विशुद्ध। निष्कपट, सरल हृदय, सीधा। मूर्ख।

सादापन-(उ पु) सादा होने का भाव। सरलता।

सादिक-(अ वि) सच्चा।

सादी-(उ स्त्री) एक चिड़िया। वह पूरी जिसमें पीठी, दाल आदि नहीं भरी होती।

सानिहा-(अ पु) संभव, घटना।

सानी-(अ वि) दूसरा, द्वितीय। बराबरी का, जोड़ का।

साफ-(अ वि) स्वच्छ, निर्मल। शुद्ध, पवित्र। निर्दोष। स्पष्ट। उज्ज्वल। जिसमें कोई बखेड़ा या झंझट न हो। चमकीला। समतल, चौरस। सादा, कोरा। परिष्कृत। जिसमें कुछ तत्व न रह गया हो। बेबाक, चुकता।

-(क्रिवि) बिना किसी प्रकार के दोष, कलंक या अपवाद के। बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाये हुए। इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे। बिलकुल, नितांत।

साफा-(अ पु) पगड़ी।

साफी-(अ स्त्री) रूमाल, अंगोछा। वह कपड़ा जो गांजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। भांग छानने का

कपड़ा। लकड़ी को सतह छील कर चिकनी करने का औजार; रंदा।

साबिक़–(अ. वि.) पहले का; पूर्व का।

साबिक़ा–(अ. पु.) मुलाक़ात; भेंट। संबंध; सरोकार। उपसर्ग।

साबित–(अ. वि.) जिसका सबूत या प्रमाण दिया गया हो; प्रमाणित। स्थापित; दृढ़। संपूर्ण; पूरा। दुरुस्त; ठीक।

साबिर–(अ. वि.) सहनशील।

साबुन–(अ. पु.) शरीर और वस्त्रादि साफ करने का एक प्रसिद्ध पदार्थ; "सोप"।

सामान–(फा. पु.) किसी कार्य के साधन की आवश्यक वस्तुयें; उपकरण; सामग्री। वस्तु; प्रयोजनीय पदार्थ; माल। बंदोबस्त; व्यवस्था।

सायत–(अ. स्त्री.) दे. "साअत"।

सायबान–(फा. पु.) मकान के आगे की वह छाजन जो छाया के लिये बनाई गयी हो; बरामदा।

साया–(फा. पु.) छाया। परछाईं; प्रतिबिंब। जिन, भूत, प्रेत आदि। असर; प्रभाव।

सायिर–(अ पु.) वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगाया जाय। विविध; फुटकर।

सायिल–(अ. पु.) सवाल करनेवाला; प्रार्थिक। मांगनेवाला। भिखारी; भिखमंगा। प्रार्थना करनेवाला; प्रार्थी। उम्मेदवार; आकांक्षी।

साल–(फा. पु.) वर्ष; संवत्सर।

सालगिरह–(फा. स्त्री.) वरसगांठ; जयंती।

सालबमिश्री–(उ. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा जिसका कंद पुष्टिवर्द्धक होता है।

सालाना–(फा. वि.) वार्षिक।

सालिम–(अ. वि.) संपूर्ण।

सालिस–(अ. पु.) दो पक्षों के झगड़े का निपटारा करनेवाला; मध्यस्थ। पंच।

सालिसी–(अ. स्त्री.) मध्यस्थता। पंचायत।

साहब–(अ. पु.) मित्र; दोस्त। स्वामि; अधिपति। ईश्वर। महाशय। गोरी जाति का कोई व्यक्ति; फिरंगी।
मेम साहब = युरोप या अमेरिका की स्त्री।
साहब सलामत = परस्पर अभिवादन; बंदगी।

साहबी–(अ. वि.) साहब का।
–(स्त्री) साहब होने का भाव। प्रभुता; आधिपत्य। बड़ाई; बड़प्पन।

साहिब–(अ. पु.) दे. "साहब"।

साहिबा–(अ. स्त्री.) "साहिब" का स्त्री. रूप।

साहिल–(अ पु) दरिया का किनारा।
सिंगरफ–(फा पु) सिंदूर, कुंकुम।
सिकंज, सिकंजबीन–(फा स्त्री) नीबू या ईंख के रस में पका हुआ शर्बत।
सिकत्तर–(अ * पु) सेक्रेटरी, मंत्री।
सिकली–(अ स्त्री) दे "सैकल"।
सिक्का–(अ पु) मुहर, छाप। रुपये आदि पर मुद्रित राजकीय चिह्न। रुपया पैसा आदि, नाण्य, मुद्रा। स्वर्ण या रजत पदक, तमगा। मुहर पर ऊक बनाने का ठप्पा।
सिजदा–(अ पु) प्रणाम, दंडवत।
सितम–(फा पु) अनर्थ। अत्याचार।
सितमगर–(फा पु) अनर्थ करनेवाला। अत्याचारी।
सितार–(फा पु) वीणा की तरह का एक बाजा।
सितारा–(फा पु) तारा, नक्षत्र। भाग्य, विधि। चांदी या सोने के पत्तर की छोटी गोल बिंदी जो शोभा के लिये माथे पर या चीजों पर लगाई जाती है।
सितारिया–(उ पु) सितार बनानेवाला।
सिदरी–(फा स्त्री) तीन दरवाजोंवाला कमरा।
सिद्क–(अ पु) सच, सत्य।
सिन–(अ पु) वय, वयस।
सिपर–(फा स्त्री) ढाल।
सिपह–(फा पु) सिपाही लोग, योद्धा। सेना।
सिपहगरी–(फा स्त्री) सिपाही का काम।
सिपहर–(फा पु) आसमान, आकाश।
सिपहसालार–(फा पु) सेनापति।
सिपहसालारी–(फा स्त्री) सेनापतित्व।
सिपास–(फा पु) स्तोत्र। अभिनंदन।
सिपासनामा–(फा पु) निवेदनपत्र, अभिनंदनपत्र।
सिपाह–(फा पु) दे "सिपह"।
सिपाहगरी–(फा स्त्री) दे "सिपहगरी"।
सिपाहियाना–(फा वि) सिपाहियों का सा।
सिपाही–(फा पु) सैनिक, योद्धा। "कांस्टेबुल"। चपरासी।
सिफत–(अ स्त्री) विशेषता, गुण। स्वभाव। लक्षण। गुणवाचक शब्द, विशेषण।
सिफर–(अ पु) शून्य, सुन्ना।
सिफलगी–(फा स्त्री) नीचता। तुच्छता।
सिफला–(अ वि) नीच। तुच्छ।
सिफलापन–(उ पु) नीचता, तुच्छता।
सिफारिश–(फा स्त्री) किसी के दोषा

क्षमा करने के लिये या किसी के पक्षमें कुछ कहना-सुनना। किसी के गुणों का उल्लेख या प्रशंसा करना। किसी काम के उपयोग्य बतलाना।

सिफ़ारिशी–(फा. वि.) जिसमें सिफ़ारिश हो। जिसकी सिफ़ारिश की गयी हो।

सिम्त–(अ. स्त्री.) ओर; तरफ।

सियापा–(फा. पु.) मरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों का इकट्ठा होकर रोने की रीति।

सियासत–(अ. स्त्री.) राजनीति।

सियासी–(अ. वि.) राजनैतिक।

सियह, सियाह–(फा. वि.) काला।

–(पु.) घोड़े की एक जाति।

सियाहगोश–(फा. पु.) वन बिलाव।

सियाहा–(फा. पु.) आय-व्यय की बही। सरकारी ख़ज़ाने का वह रजिस्टर जिसमें ज़मींदारों से प्राप्त मालगुज़ारी की रक़में लिखी जाती हैं।

सियाही–(फा. स्त्री.) लिखने की मसी। कालापन। कालिख। अंधकार।

सिरका–(फा. पु.) धूप में पका कर खट्टा किया हुआ ईख, अंगूर आदि का रस।

सिरकाकश–(फा. पु.) सिरका या रस खींचने का एक यंत्र।

सिर्फ़–(अ. क्रिवि.) केवल; मात्र।

–(वि.) एकमात्र; अकेला। शुद्ध।

सिल–(अ. पु.) क्षयरोग।

सिलसिला–(अ. पु.) क्रम; परंपरा। श्रेणी; पंक्ति। ज़ंजीर; शृंखला। व्यवस्था। वंशपरंपरा।

सिलसिलेवार–(फा. क्रिवि.) क्रमानुसार; क्रमशः।

सिलह–(अ. पु.) हथियार; अस्त्र।

सिलहख़ाना–(फा. पु.) अस्त्रशाला।

सिला–(अ. पु.) बदला; प्रतीकार।

सिलाह–(अ. पु.) बकतर; कवच। अस्त्र-शस्त्र; हथियार।

सिलाहबंद–(फा. वि.) शस्त्रों से सुसज्जित; सशस्त्र।

सिलाहसाज़–(फा. वि.) हथियार बनानेवाला।

सिलाही–(उ. पु.) सिपाही; सैनिक।

सिवा, सिवाय–(अ. अव्य.) अतिरिक्त; अलावा।

–(वि.) अधिक; ज़्यादा। ऊपरी।

सीख़–(फा. स्त्री.) लोहे की पतली छड़; शलाका।

सीख़चा–(फा. पु.) छोटी सीख़। लोहे की सींक या शलाका जिस पर मांस लपेट कर भूनते हैं।

सीगा–(अ पु) विभाग, शाखा।
सीना–(फा पु) वक्ष स्थल, छाती। स्तन।
सीनाबद–(फा पु) स्त्रियों की कुरती, चोली।
सीनी–(फा स्त्री) तश्तरी।
सीम–(फा पु) रूपा, चांदी।
सीमाब–(फा पु) पारा, पादरस।
सीसताज–(उ पु) वह ढक्कन जो शिकारी जानवरों के सिर पर रहता और शिकार के समय खोला जाता है।
सीसमहल–(फा पु) दे "शीश महल"।
सुद्दा–(अ स्त्री) पेट का जमा हुआ सूखा मल।
सुरत–(अ स्त्री) रस्म, रवाज, पद्धति। खतना।
सुन्नी–(अ पु) मुसलमानों की एक शाखा।
सुपुर्द–(फा पु) वश, हवाला, स्वाधीन।
सुपुर्दगी–(फा स्त्री) सौपना, स्वाधीन कर देना।
सुफ्रा–(फा पु) खाने के समय तश्तरी या रिकाबी के नीचे बिछाने का कपड़ा।
सुबह–(अ स्त्री) प्रात काल।
सुबुक–(फा वि) जो भारी न हो, हलका। सुदर। कोमल।
–(पु) घोड़े की एक जाति।
सुबूत–(अ पु) दे "सबूत"।
सुम–(फा पु) घोड़े या दूसरे चौपायों का खुर, टाप।
सुरखाब–(फा पु) चक्रवाक पक्षी।
सुरबहार–(उ पु) सितार की तरह का एक बाजा।
सुरमई–(फा वि) सुरमे के रग का, हलका नीला।
–(पु) एक तरह का हलका नीला रग। इस रग का कपड़ा।
सुरमा–(फा पु) काजल, अजन।
सुरमादानी–(उ स्त्री) सुरमा रखने की डिब्बी।
सुराग–(अ पु) खोज, पता।
सुराही–(अ स्त्री) जल रखने का एक प्रकार का गोल और लबोतरा पात्र।
सुराहीदार–(फा वि) सुराही की तरह गोल और लबोतरा।
सुर्ख–(फा वि) लाल।
–(पु) लाल रग।
सुर्खरू–(फा वि) तेजस्वी। प्रतिष्ठित। यशस्वी।
सुर्खरूई–(उ स्त्री) यश। मान, प्रतिष्ठा।
सुर्खी–(फा स्त्री) लाली। रक्त, खून। ईंटों का महीन चूरा जो इमारत बनाने

के काम में आता है। लेख आदि का शीर्षक; अभिधान।

सुल्तान-(अ. पु.) बादशाह।

सुल्ताना-(अ. स्त्री.) बादशाहिनी।

सुल्तानी-(फा. स्त्री.) बादशाहत; राज्य। एक तरह का रेशमी कपड़ा। -(वि.) लाल रंग का।

सुल्फ़ा-(फा. पु.) वह तमाकू जो चिलम में रखकर पिया जाता है।

सुल्फ़ाबाज़-(फा. वि.) सुल्फ़ा पीनेवाला।

सुलह-(अ. स्त्री.) मेल; मिलाप। वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई समाप्त होने पर हो; संधि।

सुलहनामा-(फा. पु.) संधिपत्र।

सुलेमान-(फा. पु) यहूदियों का एक राजा जो पैगंबर माना जाता है। एक पहाड़ जो बलूचिस्तान और पंजाब के बीच में है।

सुलेमानी-(फा. वि.) सुलेमान संबंधी। -(पु.) वह घोड़ा जिसकी आँखें सफेद हों। एक प्रकार का दोरंगा पत्थर।

सुस्त-(फा. वि.) दुर्बल। उदास; दुखित। शिथिल। आलसी। धीमी चालवाला।

सुस्ताना-(ह. अक्रि.) थकावट दूर करना; विश्राम करना।

सुस्ती-(फा. स्त्री.) सुस्त होने का भाव। आलस्य।

सुहबत-(अ. स्त्री.) संग, सहवास। संभोग; मैथुन।

सुहबती-(अ. वि.) संगी; साथी।

सुहेल-(अ. पु.) एक चमकीला तारा जिसका उदय शुभ माना जाता है।

सूजाक-(फा. पु.) एक प्रमेह रोग जिसमें मूत्रेंद्रिय में जलन होती है; मूत्रकृच्छ्र।

सूद-(फा. पु.) लाभ; फायदा। ब्याज, वृद्धि; कुसीद।

सूदख़ोर-(फा. वि.) ब्याज या सूद लेनेवाला।

सूदख़ोरी-(फा. स्त्री.) सूद लेने का काम।

सूदी-(फा. वि.) सूद या ब्याज पर दी हुई (रकम), ब्याजू।

सूफ़-(अ. पु.) पशम; ऊन। कपड़े का वह टुकड़ा जो स्याहीवाली दावात में डाला जाता है।

सूफ़ियाना-(फा. वि.) सूफ़ियों का।

सूफ़ी-(अ. पु.) मुसलमानों में वेदांती या ब्रह्मज्ञानी।

सूबा-(फा. पु.) किसी देश का कोई भाग; प्रांत।

सूबेदार-(फा. पु.) किसी सूबे या प्रांत का शासक। एक छोटा फौजी ओहदा।

सूबेदारी–(फा स्त्री) सूबेदार का पद या काम।
सूम–(अ वि) कंजूस, कृपण।
सूये–(फा स्त्री) तरफ, ओर।
सूरत–(फा स्त्री) रूप, आकृति। छवि, शोभा। उपाय, युक्ति। दशा स्थिति।
–(अ स्त्री) कुरान का अध्याय।
सूराख–(फा पु) छेद, रंध्र।
सेगा–(अ पु) दे "सीगा"।
सेब–(फा पु) नाशपाती की जाति का एक फल, 'आप्ल्'।
सेर–(फा वि) तृप्त।
सेरा, सेराब–(फा वि) पानी से भरा हुआ। सिंचा हुआ।
सेसर–(फा पु) ताश का एक खेल। छल, कपट। धोखेबाजी।
सेसरिया–(उ वि) धोखेबाज, ठग।
सेहत–(अ स्त्री) सुख, चैन। रोगमुक्ति।
सेहतखाना–(फा पु) पाखाने, पेशाब आदि की कोठरी।
सेहर–(अ पु) जादू, इंद्रजाल।
सैकल–(अ पु) हथियारों को माँजने और उन पर सान धरने का काम। सान धरने का औजार।
सैकलगर–(फा पु) हथियारों पर सान धरनेवाला।
सैकलगरी–(फा स्त्री) सैकलगर का काम।
सैफ–(अ स्त्री) तलवार।
सैफी–(फा वि) तिरछा।
–(अ स्त्री) शाप।
सैयद–(अ पु) मुहम्मद के नाती हुसैन के वंश का आदमी। मुसलमानों की एक जाति।
सैयाद–(अ पु) शिकारी। चिड़ीमार।
सैर–(फा स्त्री) मन बहलाने के लिये घूमना फिरना, विहार। मौज, आनंद, आमोद प्रमोद। मित्र मंडली का कहीं बगीचे आदि में खान पान और नाच रंग। मनोरंजक दृश्य, तमाशा।
सैर सपाटा = घूमना फिरना, दौड़ धूप।
सैरगाह–(फा स्त्री) सैर करने की जगह।
सैल–(फा स्त्री) बाढ़, जलप्लावन। प्रवाह बहाव।
सैलानी–(उ वि) मनमाना घूमनेवाला। मनमौजी, आनंदी।
सैलाब–(फा पु) जलप्लावन, बाढ़।
सैलाबी–(फा वि) जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो।
–(स्त्री) आर्द्रता, नमी, तरी।
सौदागरदार–(उ पु) चोबदार, द्वार पाल।

सोख़्ता–(फा. पु.) एक तरह का कागज जो स्याही को सोख या चूस लेता है; "ब्लाटिंग"।
–(वि.) जला हुआ।
सोज़–(फा. पु.) जलन। संकट।
सोज़न–(फा. पु.) सूई। कांटा।
सोज़नी–(फा. स्त्री.) बिछाने की बड़ी चादर। कथरी, गुदड़ी।
सोज़ाक–(फा. पु.) दे. "सूज़ाक"।
सोज़िश–(फा. स्त्री.) जलन।
सोफ़ी–(अ. पु.) दे. "सूफ़ी"।
सोहनहलवा–(उ. पु.) एक मिठाई।
सोहबत–(अ. स्त्री.) दे. "सुहबत"।
सौग़ात–(तु. स्त्री.) वह वस्तु जो परदेश से इष्ट मित्रों को देने के लिये लाई जाय; भेंट; उपहार। अपरूप वस्तु।
सौग़ाती–(फा. वि.) जो सौगात में दिया गया हो।
सौदा–(अ. पु.) पागलपन।
–(फा. पु.) क्रय विक्रय की वस्तु; पदार्थ। लेन-देन; व्यवहार। क्रय-विक्रय; व्यापार। पूछ-ताछ कर दाम पक्का करना; "बेरम"।
सौदा-सुलफ = खरीदने की वस्तु; "शरकु"।
सौदासूत = व्यवहार; व्यापार।
सौदाई–(फा. पु.) पागल; उन्मत्त।
सौदागर–(फा. पु.) व्यापारी; वणिक।
सौदागरी–(फा. स्त्री.) व्यापार; वाणिज्य।
स्याह–(फा. वि.) दे. "सियाह"।
स्याहा–(फा. पु.) दे. "सियाहा"।
स्याही–(फा. स्त्री.) दे. "सियाही"।

ह

हंगामा–(फा. पु.) लड़ाई झगड़ा; उपद्रव। शोरगुल, हल्ला। भीड़; जमघट।
हक़–(अ. वि.) सत्य; सच। ठीक; उचित, उपयुक्त।
–(पु.) स्वत्व। अधिकार। कर्तव्य। वह वस्तु जिस पर नियमानुसार अधिकार हो। दस्तूर के अनुसार मिलने-वाली कुछ रकम; दस्तूरी। ठीक बात; युक्तिसंगत बात। न्याय का पक्ष। ईश्वर।
हक़-नाहक़ = जबरदस्ती; हठात्। व्यर्थ, निष्कारण।
हक़दार–(फा. पु.) स्वत्व या अधिकार रखनेवाला।
हकम–(अ. पु.) मध्यस्थ।

हकीकत-(अ स्त्री) तत्व, सत्यता। तथ्य। ठीक बात। वास्तविक स्थिति, यथार्थ।
हकीकतन्-(अ क्रिवि) यथार्थतः, वास्तव में।
हकीकी-(अ वि) खास अपना, निजी। सगा। उचित, ठीक। ईश्वरोन्मुख।
हकीम-(अ पु) विद्वान, पंडित। यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला वैद्य।
हकीमी-(अ स्त्री) यूनानी चिकित्सा शास्त्र। वैद्यक। हकीम की वृत्ति या काम।
हकीर-(अ वि) तुच्छ। कमजोर।
हक्काक-(अ पु) रत्न आदि को काटने, सान पर चढ़ाने, जड़ने आदि का काम करनेवाला।
हज-(अ पु) मक्का देखने के लिये की यात्रा।
हजम-(अ पु) पेट में पचने की क्रिया या भाव, पाचन।
-(वि) पचा हुआ, पीन।
हजरत-(अ पु) महात्मा, महापुरुष। महाराज, महोदय।
हजामत-(अ स्त्री) क्षौर। क्षौर करने की मजदूरी। सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल जिन्हें कटाना या मुड़ाना हो।
हजार-(फा वि) सहस्र। अनेक।
-(स्त्री) बुलबुल नामक पक्षी।
हजारहा-(फा वि) सहस्रों। बहुत से।
हजारा-(फा वि) हजार पंखुड़ियोंवाला। सहस्रदल। जल के छींटे। जल छींटने का यंत्र। एक तरह की आतशबाजी।
हजारी-(फा पु) हजार सिपाहियों के दल का सरदार। वर्ण संकर।
हजारी बजारी = अमीर और गरीब, छोटे और बड़े।
हजो-(अ स्त्री) निंदा।
हज्जाम-(अ पु) हजामत बनानेवाला, नाई।
हतक-(अ स्त्री) बेइज्जती, अपमान।
हथियारबंद-(उ वि) सशस्त्र।
हद-(अ स्त्री) सीमा, अवधि। पहुँच।
हदीस-(अ स्त्री) बातचीत। कथन, वचन। वह ग्रंथ जिसमें पैगंबर मुहम्मद के वचनों का संग्रह है।
हनफी-(अ स्त्री) मुसलमानों की एक जाति, सुन्नी।
हनोज-(फा अव्य) अभी। अभी तक।
हफ्त-(फा वि) सात, सप्त।
हफ्ता-(फा पु) सप्ताह। शनिवार।
हबशी-(फा पु) हबश या अबीसिनिया देश का निवासी।

हबाब–(अ. पु.) पानी का बुलबुला।
हबीब–(अ. वि.) प्रिय। दोस्त; मित्र।
हब्स–(अ. पु) कैद; कारावास।
हम–(फा. अव्य.) सम; समान। सह; सहित।
हमजोली–(इ. पु.) सहयोगी, संगी।
हमदम–(फा. पु.) साथी; मित्र।
हमदर्द–(फा. पु.) सहानुभूति या समवेदना रखनेवाला।
हमदर्दी–(फा. स्त्री.) समवेदना; सहानुभूति।
हमनशीन–(फा. वि.) साथ बैठनेवाला। मित्र; दोस्त।
हमनाम–(फा. वि.) एक ही नामवाले।
हमराह–(फा. क्रिवि.) साथ या सग में।
हमराही–(फा. पु.) सहचर, साथी।
हमल–(अ. पु.) गर्भ।
हमला–(अ. पु.) युद्ध के लिये धावा; चढाई। मारने के लिये झपटना; आक्रमण। प्रहार; आघात। विरोध में कही हुई बात; खंडन।
हमवार–(फा. वि.) समतल; सपाट।
हमशीर–(फा. स्त्री.) सहोदरी।
हमसबक़–(फा. पु.) सहपाठी।
हमसर–(फा. पु.) समान व्यक्ति; जोड का आदमी।
हमसरी–(फा. स्त्री.) बराबरी; साम्य।
हमसाज़–(फा. पु.) मित्र।
हमसाज़ी–(फा. स्त्री.) मित्रता।
हमसाया–(फा. पु.) पडोसी।
हमाइल–(अ. स्त्री.) तलवार की दुआली; परतला। गले में पहनने की कोई चीज।
हमामदस्ता–(फा. पु.) दे. "हावन दस्ता"।
हमाल–(अ. पु.) बोझ उठानेवाला; वाहक। रक्षक। मजदूर; कुली।
हमेशगी–(फा. स्त्री.) सदैवता; नित्यता।
हमेशा–(फा. अव्य) सब समय; सदा।
हम्माम–(अ. पु.) स्नानगृह।
हया–(अ. स्त्री.) लज्जा; शर्म।
हयात–(अ. स्त्री.) जीवन; जिंदगी।
हयादार–(फा. वि.) लज्जाशील।
हयादारी–(फा. स्त्री.) लज्जाशीलता।
हर–(फा. अव्य.) प्रति; प्रति एक।
हरकत–(अ. स्त्री.) गति; चलन। चेष्टा; क्रिया। दुष्ट व्यवहार। स्वर (अक्षर)।
हरकारा–(फा. पु.) चिट्ठी-पत्री या संदेश ले जानेवाला।
हरगह, हरगाह–(फा. अव्य.) जब कभी; सर्वदा।
हरगिज़–(फा. अव्य.) कदापि; कभी।
हरचंद–(फा. अव्य.) कितना ही। यद्यपि।

हरज, हरजा–(अ पु) अड़चन, विघ्न। हानि, घाटा।

हरजाई–(फा पु) हर जगह घूमने वाला। आवारा।

–(स्त्री) व्यभिचारिणी स्त्री, छिनाल।

हरजाना–(फा पु) घाटा भरना, क्षतिपूर्ति। हानि के बदले में दिया जानेवाला धन।

हरबा–(अ पु) हथियार, शस्त्र।

हरम–(अ पु) अंतःपुर, रनिवास। काबा।

–(स्त्रि) रखेली स्त्री। दासी। पत्नी।

हरमजदगी–(फा स्त्री) दे "हरामजादगी"।

हरमसरा–(फा पु) अंतःपुर।

हरवली–(तु स्त्री) सेनापतित्व।

हराम–(अ वि) विधि विरुद्ध, निषिद्ध। –(पु) वह बात जिसका धर्मशास्त्र में निषेध हो। अधम, पाप। व्यभिचार।

हरामखोर–(फा पु) पाप की कमाई खानेवाला। मुफ्तखोर। आलसी।

हरामजादगी–(फा स्त्री) दुष्टता, पाजीपन।

हरामजादा–(फा पु) व्यभिचार से उत्पन्न आदमी, जारज। वर्णसंकर। दुष्ट, पाजी।

हरामी–(फा वि) व्यभिचार से उत्पन्न। दुष्ट, पाजी।

हरारत–(अ स्त्री) गरमी, ताप। हलका ज्वर।

हरावल–(तु पु) सिपाहियों का वह दल जो सब के आगे रहता है।

हरीफ–(अ पु) शत्रु, विरोधी। प्रतिद्वंद्वी।

हरीरा–(अ पु) एक तरह की खीर या पायस।

हरीरी–(अ पु) रेशमी कपड़ा।

हर्फ–(अ पु) अक्षर।

हल–(अ पु) हिसाब लगाना, गणित करना। किसी समस्या का समाधान या उत्तर निकालना।

हल्क–(अ पु) गले की नली, कंठनाल।

हल्का–(अ पु) वृत्त, मंडल। घेरा, परिधि। फंदा। महल्ला, झुंड। हाथियों का झुंड। कई गाँवों का समूह।

हल्फ–(अ पु) कसम, सौगंध, "आण"।

हल्फनामा–(फा पु) कसम खाकर लिखा हुआ कागज।

हलवा–(अ पु) एक तरह की मिठाई। गीली और मुलायम चीज।

हलवाइन–(उ स्त्री) "हलवाई" का स्त्री रूप।

हलवाई–(उ पु) मिठाई बनाने और बेचनेवाला।

हलाक–(अ. वि.) मारा हुआ; वध किया हुआ।

हलाकत–(अ स्त्री.) हत्या; वध। मौत।

हलाल–(अ. वि.) जो मुसलमान धर्मशास्त्र के अनुसार हो। वह पशु जिसका मास खाने की मुसलमानी धर्मशास्त्र में आज्ञा हो।

हलालख़ोर–(फा. पु.) परिश्रम करके और ईमानदारी से जीविका करनेवाला। –(उ. पु.) पाख़ाना आदि साफ़ करनेवाला; भंगी।

हलालख़ोरिन, हलालख़ोरी–(उ. स्त्री.) "हलालख़ोर" का स्त्री. रूप।

हलीम–(अ. वि.) सीधा। शांत। गंभीर।

हवलदार–(फा. पु.) मुग़ल राजत्वकाल में मालगुजारी वसूल करनेवाला कर्मचारी। फ़ौज का एक ओहदेदार।

हवस–(अ. स्त्री.) लालसा। तृष्णा।

हवा–(अ. स्त्री.) वायु; पवन। भूत; प्रेत। ख्याति; कीर्ति। साख; "नाणय"। सनक; धुन।

हवाई–(अ. वि.) हवा का; वायु संबंधी। हवा में चलनेवाला। कल्पित या झूठा। –(स्त्री.) एक तरह की आतशबाजी। हवाई जहाज = व्योमयान; विमान।

हवादार–(फा. वि.) जिसमें हवा आने के लिए खिड़कियाँ और दरवाजे हों। –(पु) एक तरह की पालकी।

हवाला–(अ. पु.) प्रमाण का उल्लेख। उदाहरण। स्वाधीन; वश।

हवालात–(अ. स्त्री.) पहरे में रखे जाने की क्रिया या भाव। बंधन; कारावास। कारागृह।

हवास–(अ. पु.) इंद्रियाँ। सुख, दुःख आदि का अनुभव। चेतना; संज्ञा।

हवेली–(अ. स्त्री.) बड़ा मकान; भवन।

हशमत–(अ. स्त्री) गौरव; महत्व। वैभव; ऐश्वर्य।

हश्र–(अ. पु.) क़यामत। परिणाम।

हसद–(अ. पु) ईर्ष्या।

हसब–(अ. पु) ख़ानदान; कुल।

हसरत–(अ. स्त्री.) रंज; खेद। प्रबल कामना; चाह।

हसीन–(अ. वि) सुन्दर।

हस्ब–(अ. अव्य.) अनुसार।

हस्ती–(फा. स्त्री.) अस्तित्व।

हाकिम–(अ. पु) हुकूमत करनेवाला; शासक। बड़ा अफ़सर।

हाकिमी–(अ. स्त्री.) हाकिम का काम। हुकूमत; शासन।
–(वि.) हाकिम का।

हाजत–(अ. स्त्री.) आवश्यकता; ज़रू-

रत। चाह, इच्छा। पेशाब या पाखाने की आवश्यकता।

हाजिम–(अ वि) हजम करनेवाला।

हाजिमा–(अ पु) पाचन क्रिया। जीर्ण शक्ति।

हाजिर–(अ वि) सम्मुख, उपस्थित। विद्यमान, प्रस्तुत।

हाजिर जवाब = चटपट उत्तर देने में निपुण।

हाजिरबाश–(अ वि) सामने रहकर सेवा करनेवाला।

हाजिरात–(अ स्त्री) किसी के ऊपर कोई आत्मा या पक्षिणी आदि बुलाना।

हाजी–(अ पु) वह जो 'हज' कर आया हो।

हातिम–(अ पु) दानशील या उदार मनुष्य।

हाथीखाना–(उ पु) गजशाला।

हादिसा–(अ पु) दुर्घटना।

हादी–(अ पु) हिदायत या उपदेश करनेवाला।

हाफिज–(अ पु) रक्षा करनेवाला, रक्षक। वह मुसलमान जिसे कुरान कंठस्थ हो।

हाफिजा–(अ पु) स्मरण शक्ति।

हामिला–(अ वि) गर्भवती।

हायल–(अ वि) दो वस्तुओं के बीच में पड़नेवाला। रुकावट का।

°हाल–(अ पु) दशा। परिस्थिति। समाचार, वृत्तांत। ब्योरा, विवरण। कथा, आख्यान। ईश्वर में तन्मयता।

–(वि) वर्तमान, प्रस्तुत।

–(क्रिवि) अभी, इस समय। तुरंत।

हालत–(अ स्त्री) दशा, अवस्था। परिस्थिति।

हालांकि–(फा अव्य) यह होते हुए, यद्यपि।

हाली–(अ क्रिवि) जल्दी, शीघ्र।

हालिक–(अ वि) नाशक। हत्यारा।

हावनदस्ता–(फा पु) खल और बट्टा।

हाशिया–(अ पु) किनारा, कोर। कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोट। कागज के किनारे का वह भाग जो खाली छोड़ दिया जाता है, "मार्जिन"। इस जगह पर लिखी हुई टिप्पणी आदि, 'नोट'।

हासिद–(अ वि) ईर्ष्यालु।

हासिल–(अ वि) प्राप्त, लब्ध।

–(पु) गणित का फल, प्राप्तांक। जोड़, योग। उपज, उत्पत्ति। लाभ। आय, आमदनी।

हिंद–(फा पु) हिंदुस्तान, भारतवर्ष।

हिंदवाना–(फा. पु.) तरबूज ।
हिंदवी–(फा. स्त्री.) हिन्दी भाषा ।
हिंदसा–(अ. पु.) अंक; संख्या ।
हिंदी–(फा. वि.) हिन्दुस्तान का ।
–(पु) हिंद का रहनेवाला ।
–(स्त्री.) हिंदुस्तान की भाषा ।
हिंदुस्तान–(फा. पु.) भारत देश । भारतवर्ष का उत्तरीय मध्य भाग ।
हिंदुस्तानी–(फा. वि.) हिंदुस्तान का ।
–(पु.) भारतवासी ।
–(स्त्री) हिंदुस्तान की भाषा । बोल-चाल या व्यवहार की वह हिंदी जिसमें न तो बहुत अरबी, फारसी के शब्द हों, न संस्कृत के ।
हिंदू–(फा. पु.) भारतवर्ष की आर्य जाति के वंशज; सनातन धर्म के अनुसार चलनेवाला ।
हिकमत–(अ. स्त्री.) विद्या । तत्वज्ञान । कला-कौशल । बुद्धि; विवेक । युक्ति; उपाय । चतुराई का ढंग; चाल । हकीम का काम या वृत्ति; वैद्यक ।
हिकमती–(अ. वि.) कार्यदक्ष । चतुर ।
हिकायत–(अ. स्त्री.) कथा; कहानी ।
हिक़ारत–(अ. स्त्री.) घृणा; तिरस्कार ।
हिजरत–(अ. स्त्री.) देश त्याग । त्याग ।
हिजरी–(अ. पु.) मुसलमानी संवत् जो मुहम्मद के मक्के छोड़कर मदीने चले जाने की तारीख़ से आरंभ होता है ।
हिजाब–(अ. पु.) पर्दा । शर्म; लाज ।
हिज्जा–(अ. पु.) किसी शब्द में आये हुए अक्षरों को मात्रा सहित कहना; अक्षर-विन्यास ।
हिज्र–(अ. पु.) वियोग; जुदाई ।
हिदायत–(अ. स्त्री.) आदेश; आज्ञा । रास्ता दिखाना; मार्ग-दर्शन ।
हिना–(अ. स्त्री.) मेंहदी ।
हिफ़ाज़त–(अ. स्त्री.) बचाव; रक्षा । देख-रेख; सरक्षण ।
हिफ़्ज़–(अ. क्रिवि.) कंठस्थ ।
हिबा–(अ. पु.) दान ।
हिबानामा–(फा. पु.) दानपत्र ।
हिमयानी–(फा. स्त्री.) रुपया-पैसा रखने की जालीदार लंबी थैली जो कमर में बाँधी जाती है ।
हिमाक़त–(अ. स्त्री.) बेवकूफी; मूर्खता ।
हिमायत–(अ. स्त्री.) पक्षपात । मंडन; समर्थन ।
हिमायती–(फा. वि.) समर्थन या मंडन करनेवाला । सहायक ।
हिम्मत–(अ. स्त्री.) साहस; जीवट । पराक्रम; वीरता ।
हिम्मती–(अ. वि.) साहसी । वीर ।

हिरास-(फा स्त्री) भय, डर। आशंका। खटका। नैराश्य।
हिरासत-(अ स्त्री) पहरा, चौकी। कैद, बंधन।
हिरासाँ-(फा वि) हिम्मत हारा हुआ, निराश।
हिर्फत-(अ स्त्री) हाथ की कारीगरी। कला-कौशल। चतुराई, चालाकी। चालबाजी।
हिर्फतबाज-(फा वि) चालबाज।
हिर्स-(अ स्त्री) लालच, लोभ। चाव, उत्कंठा। स्पर्द्धा, "होंस"।
हिलाल-(अ पु) दूज का चाँद।
हिस-(अ पु) चेतना, प्रज्ञा। बोध।
हिसाब-(अ पु) गिनती, गणना। लेखा, उचापत। गणित शास्त्र। गणित का प्रश्न। भाव, दर। नियम। धारणा, मत। हाल, अवस्था। चाल, व्यवहार। ढंग, रीति।
हिसाब किताब = आय व्यय का लिखा हुआ ब्यौरा। प्रथा।
हिसार-(अ पु) किला, दुर्ग।
हिस्सा-(अ पु) भाग, अंश। खंड, टुकड़ा। विभाग। अंग, अवयव। अंतर्गत वस्तु। साझा।
हिस्सेदार-(फा वि) भागरथ। साझेदार।
हीन-(अ पु) समय, काल।
हीन हयात-(अ स्त्री) जीवन काल। -(क्रिवि) जीवन भर।
हीला-(अ पु) बहाना। निमित्त, व्याज।
हुकूक-(अ पु) "हक" का ब रूप।
हुकूमत-(अ स्त्री) प्रभुत्व। शासन।
हुक्का-(अ पु) तमाकू का धुआँ खींचने का एक प्रकार का नल यंत्र, गुड़गुड़ी।
हुक्का पानी = आने जाने और खाने-पीने आदि का सामाजिक व्यवहार, सरोकार।
हुक्काम-(अ पु) 'हाकिम' का ब रूप, अधिकारी वर्ग।
हुक्म-(अ पु) आज्ञा, आदेश। अनुमति। अधिकार, शासन। ताश का एक रंग, "तुरूप"।
हुक्मनामा-(फा पु) आज्ञापत्र।
हुक्मबरदार-(फा वि) आज्ञाकारी। सेवक।
हुक्मबरदारी-(फा स्त्री) आज्ञापालन, सेवा।
हुक्मी-(अ वि) अचूक, अव्यर्थ।
हुजरा-(अ पु) कोठरी।
हुजूम-(अ पु) भीड़, जमघट।
हुजूर-(अ पु) किसी बड़े का सान्निध्य,

सन्निधान। दरबार; कचहरी। बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द।

हुजूरी–(अ. पु.) खास सेवा में रहने-वाला नौकर। दरबारी; सभासद।
–(वि.) हुजूर का।

हुज्जत–(अ. स्त्री.) कुतर्क। वाग्वाद।

हुज्जती–(अ. वि.) तर्क करनेवाला।

हुदहुद–(अ. पु.) कठफोड़वा पक्षी।

हुनर–(फा. पु.) कला; कारीगरी। गुण; विशेषता। कौशल; चतुराई।

हुनरमंद–(फा. वि.) कला-कुशल।

हुब्ब–(अ. पु.) प्रेम; प्यार। खुशी।

हुमा–(फा. स्त्री) एक कल्पित पक्षी।

हुरमत–(अ. स्त्री.) मान; गौरव।

हुरूफ़–(अ. पु.) "हर्फ़" का ब० रूप; वर्णमाला।

हुलिया–(अ. पु.) शक्ल; आकृति। रूप-रंग।

हुस्न–(अ. पु.) सौंदर्य; लावण्य। उत्कृष्टता; खूबी।

हू-बहू–(उ. क्रिवि.) ज्यों का त्यों; बिल-कुल समान। तद्रूप।

हूर–(अ. स्त्री.) परी, अप्सरा। सुंदरी।

हेच–(फा. वि.) तुच्छ। निस्सार।

हैज़–(अ. पु.) स्त्रियों का मासिक धर्म; रजोदर्शन।

हैज़ा–(अ. पु.) "कालरा"; "वांतिभेदि"।

हैफ़–(अ. अव्य.) हा; हाय।

हैबत–(अ स्त्री.) भय; डर।

हैबतनाक–(फा. वि.) भयानक।

हैरत–(अ. स्त्री.) आश्चर्य।

हैरान–(अ. वि.) चकित। व्यग्र।

हैरानी–(अ. स्त्री.) विस्मय। व्यग्रता।

हैवान–(अ. पु.) पशु; जानवर। गंवार; मूर्ख।

हैवानी–(अ. वि.) पशु का। पशु के करने योग्य।

हैसियत–(अ. स्त्री.) योग्यता; सामर्थ्य। आर्थिक दशा। श्रेणी; दरजा। प्रतिष्ठा। धन; ऐश्वर्य।

होश–(फा. पु.) चेतना; संज्ञा। स्मरण; सुध। बुद्धि।
होश हवास = सुध बुध; चेतना।

होशियार–(फा. वि.) बुद्धिमान; समझ-दार। दक्ष; निपुण। सचेत; सावधान। सयाना। चालाक।

होशियारी–(फा. स्त्री.) बुद्धिमानी। निपुणता। सावधानी। चालाकी।

हौज़–(अ. पु.) पानी जमा करने का गड्ढा; चहबच्चा।

हौज़ा, हौदा–(फा. पु.) हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला छज्जेदार आसन; अंबारी।

हौल–(अ पु) भय, डर।
हौलदिल–(फा पु) दिल का धड़कना। दिल धड़कने का रोग।
–(वि) जिसका दिल धड़कता हो। भयभीत।
हौलनाक–(फा वि) भयानक।
हौवा–(अ पु) पैगंबरी मतों के अनुसार सृष्टि की सब से पहली स्त्री, जो 'आदम' की पत्नी थी।
हौसला–(अ पु) किसी काम को करने की आनंद पूर्ण इच्छा। उत्साह। प्रफुल्लता, उमंग।
हौसलामंद–(फा वि) हौसला रखने वाला। उत्साही। उमंग भरी।

परिशिष्ट

अंदाम–(फा पु) देह, शरीर।
अकारिब–(अ पु) बंधु नातेदार।
अख्तर–(फा पु) तारा, नक्षत्र।
अगियार–(फा वि) अपरिचित बेगाना।
अजम–(अ पु) वह जो अरब नहीं हो। ईरानी।
अजम–(अ पु) दृढ़ संकल्प।
अजल–(अ स्त्री) मृत्यु, मौत।
अजल–(अ स्त्री) अनादि।
अजलाफ–(अ वि) नीच। तुच्छ।
अजली–(अ वि) अनादि का, सनातन।
अजां–(अ स्त्री) नमाज पढ़ने की आवाज।
अजाब–(अ पु) पापों का दंड।
अतिब्बा–(अ पु) वैद्य लोग।
अत्तार–(अ पु) इत्र बनानेवाला, गंधी।
अदब–(अ पु) साहित्य।
अदबी–(अ वि) साहित्यिक।
अदू–(अ पु) दुश्मन, शत्रु।
अनवर–(अ वि) बहुत नूरवाला, जाज्वल्यमान।
अनादिल–(अ पु) बुलबुल।
अनासिर–(अ पु) "उनसुर" का ब० रूप, पंचतत्व, पंचभूत।
अफई–(अ पु) नागमणि।

अबद–(अ. स्त्री.) अनंत ।
अबस–(अ. वि.) व्यर्थ ।
अमर–(फा. पु.) विधि; आदेश ।
अमराज़–(अ. पु) बीमारियाँ ।
अयादत–(अ. स्त्री.) बीमार को देखने जाना ।
अरकान–(अ. पु.) "रुक्न" का ब० रूप; सदस्यगण ।
अलालत–(अ. स्त्री.) बीमारी ।
अवाम–(अ. पु.) साधारण लोग; जन-सामान्य ।
अहद–(अ. पु.) जमाना, काल ।

आग़ोश–(अ. पु.) गोद ।
आन–(अ. स्त्री.) क्षण; निमिष ।
आरिज़–(अ. पु.) कपोल ।
आहवज़ारी–(फा. स्त्री.) रोना पीटना ।

इख़्तलाक–(अ. पु.) लोकनीति ।
इख़्तिलात–(अ. पु.) स्नेह; मित्रता । मेल जोल । सहवास; समागम ।
इज़तराब–(अ. पु.) बेचैनी । उतावली ।
इदबार–(अ. पु.) दुर्भाग्य ।
इद्दआ–(अ. पु.) दावा करना ।
इद्दत–(अ. स्त्री.) तलाक़ के बाद तीन हैज़ या तीन बार रजस्वला होने तक का समय अथवा पति की मृत्यु के बाद चार महीने दस दिन का समय जिस अवधि के अदर, मुसलमानी धर्मशास्त्रों के अनुसार, स्त्री दूसरा विवाह नहीं कर सकती ।
इनाद–(अ. पु.) वैर ।
इन्शा–(अ. स्त्री.) निबंध; रचना ।
इफ़्शा–(अ. वि.) प्रकट ।
इफ़्तख़ार–(अ. पु.) गर्व । प्रतिष्ठा ।
इश्क़बाज़–(फा. वि.) प्रेम लीला करने-वाला । प्रेम करने में प्रवृत्त ।
इस्तग़ना–(अ. वि.) स्वाधीन; स्वतंत्र ।
इस्तग़ासा–(अ. पु.) अर्जी; निवेदन । मदद चाहना । मुकदमा ।
इस्ला–(अ. क्रिवि.) कदापि; हरगिज़ ।

उमूर, उमूरात–(अ. पु.) "अमर" का ब० रूप; काम; कार्य । व्यवहार ।
उसरत–(अ. स्त्री.) गरीबी; दीनता ।
उसूल–(अ. पु.) "असल" का ब० रूप; तत्व; सिद्धांत ।
उहार–(फा. पु.) पर्दा ।

एहसास–(अ पु) अनुभव करना।

औबाश–(फा वि) लफंगा। दुराचारी।
औला–(अ वि) उत्तम, उत्कृष्ट।

कसीर–(अ वि) कई, अनेक।
कस्दन्–(अ क्रिवि) इरादे से जान बूझकर।
काइनात–(अ स्त्री) सर्वस्व, सब।
कामरानी–(फा स्त्री) सफलता।
किनायत, किनाया–(अ पु) इंगित, इशारा।
किनायतन्–(अ क्रिवि) इंगित से।

ख़न्नास–(अ पु) भूत, जिन। दुष्ट।
खुलअ–(अ पु) पत्नी का पति को विधिपूर्वक त्याग देना विवाह विच्छेद।
ख्वुर्र–(फा वि) खुश, सुखी।
खुरसंद–(फा वि) प्रफुल्लित, सुखी।
ख़ैरमकदम–(फा पु) स्वागत।

गद्दार–(अ पु) गदर मचानेवाला, विद्रोही।
गुज़न्द–(फा पु) नुकसान, चोट।
गयूर–(अ वि) प्रतिष्ठित इज्जतदार।

गुरबत–(अ स्त्री) प्रवास। गरीबी।

चिरागी–(फा स्त्री) वह धन जो मज़ार पर चिराग जलानेवाले को दिया जाय, "कालिंदे"।
चीरादस्ती–(फा स्त्री) अत्याचार, जुल्म।
चुरट–(तमिल पु) तमाकू के पत्ते की बीड़ी, "सिगार"।

ज़र्फ़–(अ पु) बरतन, पात्र।
जलील–(अ वि) बड़ा, श्रेष्ठ।
जाफरी–(अ स्त्री) घेरा। एक फूल।
जिनहार–(फा पु) आश्रय, शरण। रक्षा।
जीनसाज़–(फा वि) जीन बनानेवाला।
जुनूनी–(फा वि) पागल।

तअजील–(अ पु) जल्दी।
तअम्मुक–(अ पु) गहराई। गांभीर्य।
तअल्लुम–(अ पु) पढ़ना अध्ययन।
तअश्शुक–(अ पु) प्रेम करना।
तख़रीब–(अ पु) खराब करना।
तखल्लुल–(अ पु) मना करना। रोकना।
तजर्रुद–(अ पु) ब्रह्मचर्य।
तजल्लुम–(अ पु) जुल्म करना।
तजहीक–(अ पु) परिहास करना।

बूदोबाश–(फा स्त्री) वासस्थान।
बेदार–(फा वि) सजग, होशियार।
बोल–(अ पु) मूत्र।

मतानत–(अ स्त्री) गांभीर्य।
मदहोश–(फा वि) मदमस्त, मत्त।
मदार–(फा पु) आस्तिकता। आस्था। पहिये की धुरी, अक्ष। भरोसा। सहायता।
मयकश–(फा वि) मद्य पीनेवाला।
मयकशी–(फा स्त्री) मद्यपान।
माजूर–(फा वि) अशक्त।
मामूर–(अ वि) भरा हुआ, परिपूर्ण।
माया–(फा पु) पूंजी, मूलधन।
मारूफ–(अ वि) प्रसिद्ध।
मासिवा–(अ पु) दुनिया और उसकी चीजें, लोक।
मासूम–(अ वि) पवित्र, निर्मल।
मिकराज–(अ स्त्री) कैंची।
मुअय्यन–(अ वि) नियुक्त, नियमित।
मुअल्लिफ–(अ पु) संग्रहकर्त्ता।
मुअस्सर–(अ वि) प्रभावित।
मुआखजा–(अ पु) अभियोग में छेद करना। दंड।
मुकद्दस–(अ वि) पवित्र, पाक।
मुकबिल–(अ वि) इकबाल वाला; भाग्यशाली।
मुजफ्फर–(अ वि) विजयी। श्रेष्ठ।
मुजारा–(अ पु) किसान।
मुजाहिद–(अ वि) जहाद या धर्मयुद्ध करनेवाला।
मुजैयन–(अ वि) अलंकृत।
मुतअल्लिम–(अ वि) शिष्य, विद्यार्थी।
मुदबिर–(अ वि) अभागा।
मुदाखिलत–(अ स्त्री) हस्तक्षेप।
मुदीर–(अ पु) संपादक।
मुनज्जिम–(अ वि) ज्योतिषी।
मुनासिबत–(अ स्त्री) उपयुक्तता।
मुबतदी–(अ वि) नौसिखुआ।
मुबलग–(अ पु) पूंजी, मूलधन।
मुबहम–(अ वि) अस्पष्ट।
मुबाह–(अ पु) सत्कर्म, सुकृत।
मुबल्लज–(अ वि) व्यर्थ का, निरर्थक।
मुरक्कब–(अ पु) मिश्रण। समास पद।
मुशायरा–(अ पु) कवियों की मंडली, साहित्य गोष्ठी।
मुशाहरा–(अ पु) मासिक वेतन।
मुश्तरक–(अ वि) सामान्य।
मुश्तरी–(फा स्त्री) एक ग्रह, गुरु।
मुश्तमफी–(अ वि) निवृत्त।
मुस्तकीम–(अ वि) सीधा।
मुहलिक–(अ वि) हिंसक। खतरनाक।
मुहाफ़ज़त–(अ स्त्री) संरक्षण।

मुहीब–(अ. वि.) भयंकर।
मूजिब–(अ. पु.) कारण। अनुसार।
मूसीक़ी–(यू. स्त्री.) संगीत; गायन।

रकूब–(अ. पु.) सवारी; वाहन।
रुकना–(अ. पु.) बाधा; रुकावट।
रमूज़–(अ. पु.) भेद; रहस्य।
राग़िब–(अ. वि.) चाहनेवाला; इच्छुक।
रिज़ालत–(अ. स्त्री.) नीचता।
रिफाक़त–(अ. स्त्री.) मित्रता। सहाय।
रिवाक़–(अ. पु.) छत। छतगीर।
रीश–(फा. पु.) घाव।
रुक्न–(अ. पु.) स्थंभ। बल; सहारा। सदस्य; "मेंबर"।
रेज़गारी–(फा. स्त्री.) "चिल्लर"।

लाग़री–(अ. स्त्री.) दुर्बलता; दुबलापन।
लाहिक़ा–(अ. पु.) प्रत्यय।

वजूद–(अ. पु.) अस्तित्व। रहना।
वज्द–(अ. पु.) अत्यानंद।
वहदत–(अ. स्त्री.) एकाई; एकता।
वहीद–(अ. वि.) एक। अकेला।
वाजह–(अ. वि.) प्रकट; विदित।

शक़ावत–(अ. स्त्री.) दुर्भाग्य। कष्ट।
शफ़ाअत–(अ. स्त्री.) सिफारिश करना। सिफारिश करके मुक्ति दिलवाना।
शरार, शरारा–(फा. पु.) चिनगारी।
शहरयार–(फा. वि.) अधिपति; राजा।
शिकोह–(फा. स्त्री.) रोबदाब।
शुगुफ़्ता–(फा. वि.) प्रफुल्लित; विकसित।
शैवा–(फा. पु.) तरीका; उपाय। आदत।
शै–(अ. स्त्री.) चीज।

समर–(अ. पु.) फल।
समाअत–(अ. स्त्री.) श्रवण शक्ति।
सादिर–(अ. वि.) जारी; प्रचारित।
सालार–(फा. पु.) नेता; अगुआ।
सालेह–(अ. वि.) साधु; धर्मिष्ठ।
सुवम–(फा. वि.) तीसरा।
–(पु.) मृत्यु के बाद तीसरे दिन का संस्कार।
सैयार–(अ. पु.) सैर करनेवाला।
सैयारा–(अ. पु.) तारा; नक्षत्र।

हाजिक–(अ. वि.) बुद्धिमान।
हातिफ़–(अ. पु.) देवता। देववाणी।

❀ इति ❀